भगवत्पादश्रीमदादिशङ्कराचार्यविरचिता

# सौन्दर्य-लहरी

सदानन्द ब्रह्मचारी

भगवत्पादश्रीमदादिशङ्कराचार्यविरचिता

# सौन्दर्य-लहरी

तारा प्रिंटिंग वर्क्स,

Library

भगवत्पादश्रीमदादिशङ्कराचार्यविरचिता

# सौन्दर्य-लहरी

संस्कृत-हिन्दी-गुजराती-अंग्रेजीभावार्थ,प्रयोगयन्त्र

तथा पूजा-अनुष्ठानविधिसहित


व्याख्याकार:

## सदानन्द ब्रह्मचारी

सचिवः श्रीमदादिशङ्कराचार्यवर्यप्रतिष्ठापितश्रीद्वारकाशारदापीठस्य-
तत्सञ्चालितानामनेकसंस्थानाञ्च,व्यवस्थापकः मध्यप्रदेशस्य
नरसिंहपुरमण्डलान्तर्गतश्रीधामापरनामख्यातश्रीविद्यापीठमन्दिरज्योतेश्वर-
स्थितस्य परमहंसीगङ्गाआश्रमस्य, प्रतिनिधिः अनन्तश्रीविभूषित-
द्वारकाज्योतिष्पीठद्वयाधीश्वरस्य जगद्गुरोः शङ्कराचार्यस्य
श्रीस्वरूपानन्दसरस्वतीमहास्वामिनः, कार्यनिर्वाहकः गुर्जर-
प्रदेशस्य अहमदाबादनगरस्थ शाहपुरदरवाजा-
स्थितस्य अद्वैत-आश्रमस्य, निदेशकः
द्वारकाशारदापीठ सञ्चालितायाः
मासिक गुर्जरपत्रिका-
**'नवभारती'**
इत्यस्याश्च



प्रकाशक

**शारदापीठ विद्यासभा**

द्वारकाधीश संस्कृत एकेडमी एण्ड इण्डोलोजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट

**द्वारका,जामनगर,गुजरात (भारत)**

भगवत्पादश्रीमदादिशङ्कराचार्यविरचिता

# सौन्दर्य-लहरी

संस्कृत-हिन्दी-गुजराती-अंग्रेजीभावार्थ, व्याख्या, टिप्पणी,
प्रयोगयन्त्र तथा पूजा-अनुष्ठानविधिसहित

व्याख्याकार

**सदानन्द ब्रह्मचारी**

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण
प्रयाग महाकुम्भ 2057 वि.
**मूल्य 200 रूपये**

प्रकाशक
**शारदापीठ विद्यासभा**
द्वारकाधीश संस्कृत एकेडमी एण्ड इण्डोलोजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट
द्वारका, जामनगर, गुजरात

मुद्रक
**श्रीमाता कम्प्यूसिस प्रा.लि.**
बी.4/60हनुमानघाट वाराणसी-21001
दूरभाष-0542-275272,275274
e-mail - info@shrimata.com

SAUNDARYA LAHARI of Adi Shankaracharya
Commentary/Translation/Notes/Prayoga/Yantra and Illutrations By
SADANAND BRAHMACHARI

Bhagavatpada Śrīmadādi Śaṅkarāchārya virachita

# Saundarya-Lahari

**contains with its comprehended meaning in sanskrit-Hindi-Gujrati-English-Prayoga-Yantra and the systamatic procedure of worship and ritual rites**


## ILLUSTRATOR

## SADANAND BRAHMACHARI

Secretory of Śrimadādi Śhaṅkrāchārya pratishthāpita
Śri Śri Dwārka Shārda Pītha & its Allied Institution.
Manager of Śri Vidyā Pītha situated at Paramahansi Gaṅgā
Ashram in Jhoteshwer Narsinghpur Madhya Pradesh.
Representative of Dwarka and Jyotishpithadhishwar
Ananta Sri Vibhushit Jagatguru Śaṅkarāchārya
Śri Swāmi Swarūpānand Saraswatī maharaj.
Executor of Advaita Āshram situated at Shahpur
Darwaja, Ahmadabad, Gujrat.
Director of Navabhārati, Gurjarati Monthly Magazine.


Published by Dwārka Shārda Pītha.

**Publisher**

## Sharadapeeth Vidya Sabha

**Dwarakadheesha Sanskrit Academy & Indological Research Institute, Dwarka, Jamnagar, Gujrat (India)**

Bhagavatpad Srimadadi Shankaracharya Virachita

# Saundarya Lahari

**Contains with its comprehended meaning in Sanskrit-Hindi-Gujarati-English, Prayoga Tantra and The Systamatic Procedure of Worhip & Ritual's Rites.**

**ILLUSTRATOR**

**Sadanand Brahmachari**

© Publisher

I[st] Edition
Prayag Mahakumbh 2057
**Prize 200 Rs.**

Publisher
**Sharadapeeth Vidyasabha**
Dwarkadheesh Sanskrit Achadany & indological Research Institute
Dwarka, Jamnagar, Gujrat

Printed by
**Shrimata Compusys Pvt. Ltd.**
B. 4/60, Hanuman, Varanasi-221 001
Ph.: 0542-275272, 275274
e-mail - info@shrimata.com

SAUNDARYA LAHARI of Adi Shankaracharya
Commentary/Translation/Notes/Prayoga/Yantra and Illutrations By
SADANAND BRAHMACHARI

सौन्दर्यलहरी के रचयिता
श्रीमदादि शङ्कराचार्य भगवत्पाद

**या क्रिया समभिहारतस्त्रिधा दीक्षितस्य गुरुभावनाधिका ।**
**सा विभेदलयभावनाधिका लभ्यतां परशिवैक्य सिद्धये ॥**

साधक की बुद्धि से भेदभाव को मिटानेवाली,शिष्य के मन में रहने वाली श्रेष्ठगुरुभावनामयी, अद्वैतज्ञानप्रदायिका ऐसी त्रिगुणात्मिका होकर भी एकस्वरूपा अद्वैतप्रदायिनी क्रिया शिष्यकल्याणकरी हो ।

# आभार प्रदर्शन

भगवत्पाद आदिशङ्कराचार्यवर्य ने सौन्दर्यलहरी नामक गूढ़तम शास्त्र की रचना कर साधकों पर जो उपकार किया है उसके लिए उनका आभार सम्भव नहीं है । वह गुरुऋण स्वाध्याय-प्रवचनादि के द्वारा अपाकरणीय है ।

साथ ही साधकों को शान्ति-दान्ति और सिद्धि देने वाले इस महान् स्तोत्र की व्याख्या करने वाले भी निश्चय ही महानतम व्यक्तित्व के संधारक रहे हैं । प्रस्तुत व्याख्यान में भगवत्पाद की परम्परा की दो-दो पीठों के संधारक आचार्यश्री की कृपावर्षास्नात शिष्य ब्रह्मचारी श्री सदानन्द जी ने अनेक व्याख्याकारों के भावों का ही यथावसर आलम्बन लिया है । अत: हम उन सभी व्याख्याकारों, चिन्तकों और लेखकों के आभारी हैं जिन्होंने सौन्दर्य-लहरी पर कुछ भी कार्य किया है । इस सन्दर्भ में ब्रह्मचारी जी का कहना है - "**इस व्याख्यान में मेरा कुछ भी नहीं है सब पूर्व-पूर्वकृत व्याख्याकारों तथा विद्वानों का है ।**"

उन समस्त विद्वानों, प्रकाशन-संस्थाओं का हम आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने सौन्दर्य-लहरी को अपने भावों से भरकर जनसामान्य के समक्ष रखा है । विशेषकर नाग पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित और श्री ए. कुप्पुस्वामी द्वारा सम्पादित १० टीका सम्वलित सौन्दर्य-लहरी से जिनका कि अंग्रेजी भावानुवाद हमने यथावत साभार लिया है तथा श्री श्री १००८ बाबा मोतीलाल जी महाराज कृत '**सार्थ सौन्दर्यलहरी**' से हमने अनेक स्थल यथावत् तथा अनेक स्थलों पर पूज्य बाबा की लेखनी के आलोक का साहाय्य लिया है, अत: पूज्य बाबा के प्रति आभार मात्र न प्रकट कर यह कहना होगा कि उनकी साधक कल्याण कामनारूपी भावना को ही ब्रह्मचारी जी ने आगे बढ़ाया है ।

ब्रह्मचारी जी ने एतद्तिरिक्त पं० लक्ष्मीधर देशिक की टीका, जगद्विजयी श्रीराम कवि की डिम-डिम व्याख्या, स्वामी कैवल्याश्रम जी की टीका, स्वामी अच्युतानन्द जी की टीका, श्री १०८ स्वामी विष्णुतीर्थ जी महाराज की टीका, रामकृष्ण मठ मद्रास द्वारा प्रकाशित स्वामी तपस्यानन्द जी की टीका, पं० गोपीनाथ कविराज जी की टीका, श्रीवत्स भचेच स्मारक प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित टीका आदि सौन्दर्य-लहरी की अनेक टीकाओं तथा श्रीविद्यासाधना के मूल

निदेशक अनेक ग्रन्थों, त्रिपुरार्णवतन्त्र, परमानन्दतन्त्र, त्रिपुरा रहस्यम्, नित्याषोडशिकार्णव, श्रीविद्यार्णव आदि अनेक ग्रन्थों का परिशीलन कर इनसे प्राप्त सामग्री का ही उपयोग कर इस व्याख्या को मूर्त रूप दिया है ।

इन समस्त कृतियों और कृतिकारों का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए हम उनका आधमर्ण्य व्यक्त करते हैं तथा पूज्यपाद ज्योतिष् एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के श्री चरणों में विनयप्रणति द्वारा अपनी कृतज्ञता भी, जिनके श्रीचरणसंश्रयण से श्रीविद्या मिली हैं ।

ग्रन्थ के प्रणयन में अनेक सज्जनों तथा साधकों का सहयोग मिला है, इसे भुलाया नहीं जा सकता है । परन्तु उनके द्वारा नामोल्लेख न करने का आग्रह उनके प्रति हमारे भाव को और भी पुष्ट करता है,एतावता हम उनके आग्रह को स्वीकार कर हृदय से उनके सर्वविध अभ्युदय की कामना करते हैं । श्रीमाता कम्प्यूसिस प्रा. लि. वाराणसी की निदेशक सुश्री सरला पाण्डेय का स्मरण भी इस अवसर पर अपरिहार्य है जिन्होंने अल्पीयान् काल में ही ग्रन्थ को मुद्रित कर दिखाया ।

अन्त में सभी के प्रति अपने आत्मीय भाव अर्पित करते हुये निवेदन है कि ग्रन्थ में रह गयी त्रुटियों का निर्देश अवश्य करें जिससे आगमी संस्करणों में सुधार सम्भव हो सके । पाठकों की प्रतिक्रिया भी अपेक्षित है ।

**आनन्दस्वरूप ब्रह्मचारी**

सम्पादक

---

श्रीविद्यामठ

केदारघाट, वाराणसी-२२१००१

**पूज्यपाद ज्योतिष् एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर**
**जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज**

**स्वप्रकाशशिवमूर्तिरेकिका, तद्विमर्शतनुरेकिका तयोः ।**
**सामरस्य वपुरिष्यते परा, पादुका परशिवात्मनो गुरोः ॥**

(चिद्विलास)

शिवनाम से जानी जाने वाली स्वप्रकाशरूपमूर्ति तथा शक्तिनामिका उसी की विमर्शरूप दूसरी मूर्ति, इन्हीं दोनों का सामरस्य पराशक्ति है जिसका परशिवात्मक सद्गुरु की पादुका के ध्यान से स्मरण होता है ।

# श्रीविद्या

## उपासना, स्वरूप एवं विमर्श

जगज्जननीसूनुः
**सदानन्द ब्रह्मचारी**
श्री शारदापीठ, द्वारका

## भूमिका

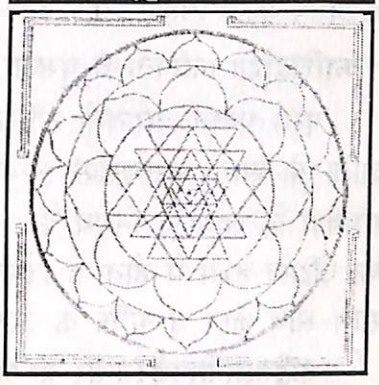

'शक्ति'शब्द शक् धातु से स्त्रीलिङ्ग क्तिन् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है, जिसके अर्थ हैं- सामर्थ्य, अर्थबोधकता, देवी किंवा स्त्रीदेवता आदि । संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध शब्दकोश 'वाचस्पत्यम् ' में इस शब्द की व्याख्या कुल १४९ पंक्तियों में की गय। है क्योंकि इसकी महत्ता प्राग्वैदिक काल से ही स्वत: प्रमाणित है। ऋग्वेद काल में सूर्य के साथ उषस् ,वरुण के साथ वरुणानी, इन्द्र की इन्द्राणी व यम के साथ यमी आदि की उपासना शक्ति के महत्त्व के जाज्ज्वल्यमान प्रमाण हैं । यथा -**सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्** .... इत्यादि । कालान्तर में इसी परम्परा के अनुरूप शिव-पार्वती, विष्णु-लक्ष्मी, ब्रह्मा-सरस्वती, राधा-कृष्ण, राम-सीता, प्रकृति पुरुष, माया-ब्रह्म तथा शची-पुरन्दर प्रभृति युग्मों की आराधनाएं भारतीय-चिन्तन-पद्धति में शक्ति की उपासनागत महत्ता को प्रतिपादित करती रही हैं। तत्पश्चात् ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, भाष्य, सूत्र वार्तिक, पुराणोपपुराण, टीका, वृत्ति, प्रटीका एवं उपवृत्ति वाङ्मय की श्रृंखला में शक्ति के बिना कहीं कुछ भी वर्णित नहीं है। यहां तक कि समुद्र-मन्थन के चतुर्दश रत्नों में भी रम्भा, लक्ष्मी व कामधेनु का स्थान सर्वोपरि स्वीकृत रहा है, क्योंकि शक्ति व शक्तिमान् का परस्पर न केवल समवाय सम्बन्ध है प्रत्युत् शक्ति शक्तिमानों की शारीरिक शक्ति के दुरुपयोग को बौद्धिक रूप धारणकर रोकती भी है । यही कारण है कि अमृत के विभाजन में उपस्थित देवासुर-संग्राम को जब रोकना हुआ, तो सारे त्रैलाक्य को अपने तीन डग से नापने में समर्थ व्यापक भगवान् विष्णु को भी शक्ति किंवा स्त्रीरूप ही धारण करना पड़ा ।

शक्ति वह तत्त्व है, जिसकी आराधना में शिव व विरञ्चि को उसका अनुगामी और ब्रह्मा के मानस-पुत्र महर्षि नारद को विद्रूप तक हो जाना पड़ता है । भगवान् के सभी रूप ईश्वर के अवतार हैं, किन्तु षोडश कलाधारी आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्र स्वयं भगवान् हैं - **कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्** । किन्तु उन्हें भी पूर्णता के लिए राधारूप धारण करन। पड़ता है। तन्त्र राजतन्त्र

में कहा गया है कि पराशक्ति ललितादेवी कभी पुरुष मूर्ति धारण करती हैं और कभी रमणीरूप। जब वे पुरुषरूप धारण करती हैं, तो निखिलरसामृतमूर्ति श्रीकृष्णस्वरूप में प्रकट होकर वंशीनाद से जगद् को विमोहित कर लेती हैं ; यथा-

**काचिदाद्या ललिता वै पुंरूपा कृष्णविग्रहा ।वंशीनादसमारम्भादकरोत् विवशं जगत् ।।**

परम पावनी भगवती ललिताम्बा व विपिनबिहारी भक्तजनार्तिहारी भवभयहारी बनवारी की शक्ति के साथ पारस्परिक अभिन्नताविषयक कारण यह है कि प्राय: उपासना पद्धति में जप समर्पण के सामान्य नियम के अनुसार स्त्रीदेवता का जप समर्पण वामहस्त में और पुरुष देवता का दक्षिण हस्त में होता है किन्तु ललिताम्बा का जपसमर्पण दक्षिणहस्त में ही होता है। इसके साथ-साथ ज्ञान व भक्ति के आपसी समन्वय को लक्ष्य में रखकर शास्त्र में कहा गया है कि-

**अद्वैतज्ञानोत्पत्तेरनन्तरं या भक्तिरुदिता भवति सा निर्व्याजाऽहैतुकी भक्तिरेवाऽद्वैतभक्तिरिति कथ्यते ।**

शाक्तदर्शन के अनुसार एतादृशी भक्ति को ही लक्ष्य में रखकर कहा गया है कि-

**आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्थाप्युरुक्रमे । कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थम्भूतगुणो हरिः।।**

(श्रीमद्भागवत महापुराण १/७/१०)

बोधसार में विद्वद्धुरीण नरहरि जी ने भी कहा है कि-

**द्वैतं मोहाय बोधात् प्राक् प्राप्ते बोधे मनीषया ।भक्त्यर्थं कल्पितं द्वैतमद्वैतादपि सुन्दरम्।**
**जाते समरसानन्दे द्वैतमप्यमृतोपमम् । मित्रयोरिव दम्पत्योर्जीवात्मपरमात्मनोः ।।**

(३२/४२-४३)

यद्यपि काश्मीरी शैवागमोक्त प्रत्यभिज्ञादर्शन (त्रिक्सिद्धान्तसम्बद्ध) और त्रिपुरामतोपासना पद्धति की दृष्टि से दोनों उपासनाएं पृथक्-पृथक् हैं, फिर भी तात्त्विक दृष्टिकोण से परिणाम रूप में दोनों में कोई भेद नहीं है । यही कारण है कि त्रिपुरासिद्धान्त सम्बन्धी ग्रन्थों की रचना के समय प्राचीन विद्वानों ने शिवसूत्र, प्रत्यभिज्ञादर्शन, हृदयेश्वर प्रत्यभिज्ञानविमर्शिनी और तन्त्रालोक आदि ग्रन्थों को प्रमाणस्वरूप स्वीकार किया है तथा उत्पलदेव क्षेमराज, अभिनवगुप्त व महेश्वरानन्द आदि शैवाचार्यों ने प्रयोजनानुसार योगिनीहृदय, कामकलाविलास और त्रिपुरसुन्दरी मन्दिर प्रभृति ग्रन्थों से प्रमाण उद्धृत किया है ।

जहां तक भगवती त्रिपुरसुन्दरी और ललितादेवी के स्वरूप वर्णन का प्रश्न है, उस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि शैवागम में तत्त्वातीत परमसत्ता ही शिव नाम से कही गयी है और त्रिपुरसुन्दरी मत में भगवती ललिताम्बा । जिस प्रकार प्रत्यभिज्ञानदर्शन में शिवतत्त्व व शक्तितत्त्व स्वीकृत हैं, उसी प्रकार त्रिपुरा मत में कामेश्वर और कामेश्वरी तथा गौड़ीय वैष्णवमत में श्रीकृष्ण-

राधा मान्य है । दर्शनशास्त्र में कामेश्वर और कामेश्वरी की साम्यावस्था किंवा सामरस्य त्रिपुरसुन्दरी के नामसे विख्यात है। भगवती त्रिपुरा सर्वाधिष्ठानरूपा, सत्यस्वरूपा, समरसा, सच्चिदानन्दमयी तथा समानाधिकवर्जिता हैं । ये सर्ववेदान्तभूमि, निरतिशय सौन्दर्यमूर्ति एवं निखिल सौन्दर्याधार हैं । इसीलिए इनके बारे में श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य जी महाराज ने सौन्दर्यलहरी में कहा है कि-

**त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं, कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरञ्चिप्रभृतयः ।**
**यदालोक्यौत्सुक्यादमरललना यान्तिमनसा, तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम्।।**

अर्थात् हे नगराज हिमालय की कन्या ! तुम्हारे सौन्दर्यवर्णन में ब्रह्मादि मनीषी असमर्थ हैं। समुत्सुकचित्त देवकन्याएं आपके अलोकसामान्य सौन्दर्य को देखकर कष्टसाध्य व दुष्प्राप्य शिव सायुज्यमुक्ति को प्राप्त करती हैं।

भगवान् शङ्कराचार्य जी महाराज का कहना है कि भगवान् विष्णु ने भगवती ललिताम्बा के स्वल्प सौन्दर्य को ही ग्रहणकर अपना मोहिनीरूप बनाया था, जिसपर भगवान् शंकर भी मुग्ध हो गये थे । इनके कृपाकटाक्ष से मदन जितेन्द्रियों का चित्त भी हर लेता है, यथा-

**हरिस्तामाराध्य प्रणतजनसौभाग्य जननीं, पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् ।**
**स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयन लेह्येन वपुषा, मुनीनामप्यन्तःप्रभवति हि मोहाय महताम्।**

जगज्जननी राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की उपासना षोडशकलान्वित भगवान् कलाधर के रूप में की जाती है; क्योंकि उनकी षोडश कलाएं नित्य हैं । इसलिए भगवती को नित्याषोडशिका भी कहा गया है । चन्द्रमा की प्रथम पञ्चदश कलाओं में ह्रास-वृद्धि की स्थितियां होती रहती हैं किन्तु षोडशी में उदय-ह्रास प्रभृति की स्थितियां नहीं होतीं । यही कारण है कि उसे अमृत-कला कहते हैं । कहना न होगा कि इन्हें वैयाकरणों की पश्यन्ती, दार्शनिकों की आत्मा व मंत्रशास्त्र का मन्त्रस्वरूप देवता कहा जाता है । भगवती ललिताम्बारूपिणी षोडशीकला नित्योदिता, अमृतरूपा, अखण्डा, ललिता, सौन्दर्यधाम, महात्रिपुरसुन्दरी, परकला, चिदेकरसा व श्रीविद्या के नाम से जानी जाती हैं । ये नित्यज्योतिर्मय सहस्रदलकमलकर्णिकास्थनित्यकलायुक्त श्रीचक्रात्मक चन्द्रबिम्बरूपा हैं । इनके विषय में 'सुभगोदय' में कहा गया है -

**षोडशी तु कला ज्ञेया सच्चिदानन्दरूपिणी ।**

यह वह भगवती हैं, जिनकी अहैतुकी भक्ति आत्माराम अविद्याग्रन्थिशून्य ऋषिगण भी करते हैं । कहना न होगा कि श्रीहरि का भी ऐसा ही सर्वाकर्षी स्वभाव है। बोधसारकार के अनुसार तो ज्ञानोदय के पूर्व द्वैतभाव मोह के लिए होता है, किन्तु ज्ञानोदय के बाद भक्ति के लिए जिस द्वैतभाव का उदय होता है, वह अद्वैतापेक्षा भी सुन्दर है। इसी प्रकार जीव व ब्रह्म के एकरसाविर्भाव की स्थिति में भक्ति के उद्देश्य से जीव व परमात्मा के मध्य जिस पार्थक्य की कल्पना होती है, वह मुक्तिसुख की भाँति सुख की अनुभूति कराती हैं । ठीक वैसे ही जैसे परस्पर

प्रेमाकृष्ट दम्पत्ति का पार्थक्य परस्पर सुख का कारण बनता है ।

श्रीविद्या १० महाविद्याओं में प्रमुख है। इसकी साधना से ऐहिक किंवा आमुष्मिक मंगल फल की प्राप्ति होती है । इनके जिन प्रमुख द्वादश उपासकों की चर्चा शास्त्र में है,उनके नाम हैं-

**मनुश्चन्द्रः कुबेरश्च लोपामुद्रा च मन्मथः।अगस्तिरग्निः सूर्यश्च इन्द्रः स्कन्दःशिवस्तथा।।**
**क्रोधभट्टारको देव्या द्वादशामी उपासकाः ।।**

इनकी उपासना के प्रमुख ग्रन्थों की शृङ्खला में परशुराम कल्पसूत्र, बिन्दुसूत्र, तन्त्रराज त्रिपुरा रहस्य, नित्यहृदय, वामकेश्वर तन्त्र व सौभाग्य रत्नाकर आदि के नाम हैं । इसके अतिरिक्त कामकलाविलास, कामराजविद्या, लोपामुद्राविद्या, अगस्त्यप्रणीतशिवसूत्र, दुर्वासा प्रणीत त्रिपुरामहिम्नस्तोत्र, ललितास्तवरत्न तथा दत्तात्रेयकृतदत्तसंहिता आदि भी इसी परम्परा के प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं ।

भारतीय संस्कृति की परम्परा में श्रीविद्या उपासकों की जो नामावली स्वीकृत है, उनमें सुभगोदय एवं श्रीविद्यारत्नसूत्र के प्रणेता श्री गौड़पादाचार्य का नाम सर्वोपरि है । तत्पश्चात् भगवानाद्यशङ्कराचार्य का नाम है जिन्होंने सौन्दर्यलहरी और आनन्दलहरी की रचना की जिस पर आज ललितात्रिशतीभाष्य भी सुलभ है। भगवानाद्यशङ्कराचार्य ने जिन चार पीठों की स्थापना की, उन सबमें श्रीविद्या की उपासना अविच्छिन्नतः चल रही है। कहते है कि **श्रीविद्यायंत्र** की स्थापना स्वयं उन्होंने ने ही की थी । इसके बाद इस उपासना शृङ्खला में पुण्यानन्दनाथ, अमृतानन्दनाथ व उन भास्कर राय का नाम रेखांकित किये जाने के योग्य है जिनकी कृतियों के नाम हैं-- वरिवस्या रहस्यम् , सौभाग्यभास्करः, ललितासहस्रनामभाष्यम् , सेतुबन्धः, गुप्तवती (श्रीचण्डी टीका) और कौलत्रिपुरा (कौलभाव की टीका) प्रभृति ।

आगे चलकर भास्करराय के शिष्य उमानन्दनाथ ने नित्योत्सवपद्धति और प्रशिष्य रामेश्वर सूरि ने परशुकल्पसूत्र की सौभाग्यसुधोदय नाम्नी टीका की। इस प्रकार त्रिपुरोपनिषद् और त्रिपुरातापनीयोपनिषद् आदि ग्रन्थों के विपुल वाङ्मय व समाज पर उनके प्रभाव तथा उनकी उपलब्धियों को देखते हुए तदाभ्यन्तरीय गूढरहस्य और तद्विस्तार का अनुभव सहज ही किया जा सकता है । आज देश के चारों पीठों के सार्द्धद्वयसहस्रवर्षीय शाङ्करपरम्परा में भगवती की अक्षुण्ण उपासना देवी की लोकप्रियसाधना का देदीप्यमान प्रमाण है; क्योंकि -

**अस्माकं क्षेमलाभाय जागर्ति जगदम्बिका ।**

विलक्षणस्वरूपा त्रिपुरसुन्दरी के उपासकों में भगवान् परशुराम अत्यन्त प्रमुख हैं । उनके सन्दर्भ में एक कथा प्रचलित है कि त्रेतायुग में दाशरिथ राम से जनक द्वारा आयोजित सीतास्वयंवर के अन्तर्गत पराजित परशुराम लज्जित व उदास हो गये । उस समय संवर्त नामक ऋषि ने उन्हें परमार्थतत्त्व का उपदेश देकर उन्हें शोक मुक्त किया, किन्तु उस समय परशुराम

जी को संवर्तोपदेश का पूर्ण अर्थबोध न हो सका । अत: बाद में वे उस उपदेश के रहस्य को समझने के लिए गुरु दत्तात्रेय के पास गये तथा दत्तात्रेय ने उन्हें संवर्तोपदेशरहस्य को व्याख्यायित कर व्यवस्थित रीति से समझाया । तदनुसार देवी त्रिपुरा सभी की हृदयाकाश स्वरूपा हैं तथापि वह अपने अनन्यशरण भक्त के लिए शीघ्र ही मूर्तिमती हो जाती हैं और उसके अन्त:करण में आविर्भूत होकर उसे मृत्युपाश से मुक्त कर देती हैं ; यथा-

**स्वात्मानमारोहन्ति पदे परमपावने । सा देवी त्रिपुरा सर्वहृदयाकाशरूपिणी ।।**
**अनन्यशरणं भक्तं प्रत्येवंरूपिणी द्रुतम् । हृदयान्त:परिणता मोचयेन्मृत्युजालत: ।।**

(त्रिपुरा रहस्य, ज्ञानखण्ड २/३२-३३)

भगवती का स्वरूपाङ्कन करते हुए इसी ग्रन्थ के २/७०-७१ में बताया गया है कि आराधना करने पर महादेवी त्रिपुरा प्रसन्न होकर विचार रूप में परिणत हो सूर्य के समान हृदयाकाश में प्रकट हो जाती हैं । वे आत्मस्वरूपा, सर्वान्तरयामिनी, महदैश्वर्यशालिनी, चिन्मयी और कल्याणरूपिणी हैं ; यथा -

**राधिता परमा देवी सम्यक् तुष्टा सती तदा। विचाररूपतां याति चित्ताकाशे रविर्यथा।**
**तस्मान्निजातरूपां तां त्रिपुरां परमेश्वरीम् ।सर्वान्तरनिकेतां श्रीमहेशीं चिन्मयीं शिवाम् ।।**

भगवान् श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य जी महाराज ने श्रीविद्यातंत्र का परिचय देते हुए कहा है कि-

**चतुष्षष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं स्थितस्ततत्सिद्धि प्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः ।**
**पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैक घटना स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम् ।।**

(सौन्दर्यलहरी श्लोक -३१)

अर्थात्

**६४ तन्त्र सिद्धियों को परतन्त्र बनाकर पशुपति ने जैसे धरती को ठग डाला था।**
**हठ तेरे ही एक सकल पुरुषार्थ योजना तंत्र स्वतंत्र तुम्हारा यह धरती पर लाया था ।**

इसकी महिमा पर दृष्टिपात करते हुए किसी विद्वान् ने कहा है कि-

**अणिमा आदि देह की किरणों से आपूरित ध्याता तुझको सदा स्वयं एकात्मभाव जो ।**
**तृण-सा तीन नेत्र वैभव, न कोई विस्मय।महा प्रलय की अग्नि आरती उसकी करती ।।**

भगवती की आराधना साधकजन कैसे करते हैं, इस पर सौन्दर्यलहरीकार कहते हैं कि -

**शिव: शक्ति:काम:क्षितिरथ रवि:शीतकिरणः स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः।**
**अमी हल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता:भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम् ।।**

(सौन्दर्यलहरी श्लोक -३२)

प्राय: ऐसा देखा जाता है कि जहां भोग है, वहां मोक्ष नहीं है । और जहां मोक्ष है, वहां भोग नहीं है, किन्तु पञ्चदशाक्षरी की आराधना से उपासक को भोग व मोक्ष दोनों करतलआमलक

की भाँति होते हैं । यथा -

**यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षः,यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः ।**
**श्रीसुन्दरीसाधनतत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ।।**

श्रीविद्या की उपासना के लिए जिस महत्त्वपूर्ण मन्त्र का शास्त्रों में विधान है, उसे पञ्चदशाक्षरी कहते हैं । स्पष्ट ही है कि इस मन्त्र में कुल १५ अक्षरों का समावेश होता है । इन १५ वर्णों में सभी के अलग-अलग अर्थ हैं और इनकी तन्त्रविद्या में व्यवस्थित व्याख्याएं भी की गई हैं जिनके लोक व परलोक के साथ बहुविध सम्बन्ध हैं । पञ्चदशाक्षरी के गुह्यातिगुह्य विषयों को अध्यात्मविद्या की पराकाष्ठा कहा जा सकता है - **सा काष्ठा सा परागतिः ।**

इस मन्त्र के आरम्भ में हकार है, एतावता इसे हादि विद्या कहते हैं; जिनकी उपासना से भक्त में शान्ति आती है, सौभाग्य का उदय होता है, वह ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त होता है तथा अन्त में सायुज्य की प्राप्ति करता है। इससे कवित्व की सिद्धि, व्यक्ति में कलाओं का आगम, शारीरिक स्वास्थ्य की उपलब्धि, निर्भयता, सर्वसाध्यता एवं सात्त्विकवाक् की प्राप्ति होती है। यह कामकला का बीज, शक्ति का केन्द्र, अर्धनारीश्वर का साक्षात् रूप, त्रैगुण्य का समन्वय, परमसत्ता का आधान, कोमलता का प्रतीक तथा करुणा का सागर है और साथ ही तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि भी है । इनके प्रभाव को मात्र निम्नांकित पंक्तियों से समझा जा सकता है -

**अरालं ते पालीयुगलनगराजन्य तनये न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम् ।**
**तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लङ्घ्य विलसन्नपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसन्धानधिषणाम् ।।**

सौन्दर्यलहरी में न केवल महाशक्ति का साङ्गोपाङ्ग वर्णन है प्रत्युत् उनके आर्शीवचन, पूजापद्धति, पूजा के महत्त्व, उनके शृङ्गार, समर्पण, अभ्यर्थना, प्रार्थना, महासतीत्व, पर्यङ्क, हृदयचक्र, विशुद्धिचक्र, सर्वव्यापकता, परमानन्द समता, श्रीचक्र, अन्वयभूमिका, मोहिनीरूपध्यान,सर्वसाध्यता,अनन्तता, मूलाधारचक्र, मणिपूरचक्र, आज्ञाचक्र, सर्वाधिष्ठानचक्र और सहस्रार-कमल का भी सविस्तार वर्णन किया गया है । सौन्दर्य लहरी के श्लोक ४२ से १०० तक देवी के मुकुट, अलक, सीमन्त, ललाट, भ्रू, नेत्र, कर्ण, मुख, नासिका, ग्रीवा चिबुक व चिकुर प्रभृति का व्यवस्थित चिन्तन किया गया है । एतदतिरिक्त शक्ति की उपासना के अनेक प्रामाणिक एवं प्रतिष्ठित ग्रन्थों में भगवती के स्वरूप, कार्य, पराक्रम, आभूषण, व्याप्ति, अस्त्र-शस्त्र, मित्र-शत्रु, तथा उनके परिवेश आदि का सुन्दर चित्रण किया गया है, जैसे- देवीभागवत एवं चिद्विलास इत्यादि।

ध्यातव्य है कि चिद्विलास श्रीविद्यारहस्य निरूपण का अप्रतिम ग्रन्थ है, जिसकी पश्चाद्भूमिका की निम्नांकित पंक्तियां प्रकृत प्रसंग में उद्धरणीय हैं यथा-

**''सच्चिदानन्दस्वरूपिणी राजराजेश्वरी भगवती त्रिपुरसुन्दरी परतत्त्व हैं । चिद्संविद्**

**परब्रह्म उन्हीं के पर्याय हैं । तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि आदि महावाक्यों में इन्हीं पराशक्ति का निरूपण है । उपनिषदों की प्रतिपाद्य ब्रह्मविद्या तथा ब्रह्म पृथक्-पृथक् नहीं हैं । समस्त आध्यात्मिक दर्शनों का पर्यवसान यहीं होता है । आगम शास्त्र में अनन्त तेजोराशिमयी अखिल ब्रह्माण्ड नायिका श्रीविद्या ही प्रभावरूप से विराजमान है। निगमागम का समस्त वाङ्मय इसी परब्रह्म की आराधना में संलग्न है''।**

इस ग्रन्थ के अनुसार संविद्रूपिणी पराशक्ति में अपना लय ही शक्ति की पूजा है तथा इस पराशक्ति से भिन्न समूचा मायामय संसार मिथ्या है । इस ग्रन्थ के कुल ३८ श्लोकों में मात्र चिच्छक्ति की ही सविस्तार चर्चा है । इसमें कहीं शक्तिरूपी तट को ही अद्वैतसागर की मर्यादा माना गया है, तो कहीं इस सागर में मनोमल का त्याग ही स्नान कहा गया है । कहीं इसे विश्वमोहिनी माया रूपी रात्रि स्वीकारा गया है, तो कहीं शिव को प्रकाशरूपी दिवस । इसी ग्रन्थ के एक स्थल में इन दोनों के सामरस्य को श्रीविद्या भी कहा गया है ; यथा -

**सानिशा सकललोकमोहिनी वासरः खलु सर्वबोधकः ।**
**सामरस्यमिह सन्धिरेतयोः श्रीः परैव ननु सन्ध्यदेवता ।।**
**तीर्थमद्वय सुधारसोदधेर्वारितं निविमर्शवेलया ।**
**आणवादिमलमोचनोचितं स्नानमत्रविधिना निमज्जनम् ।।**

(श्लोक ४-५)

चिद्विलासकार का मानना है कि परमार्थस्वरूप संवित् तत्त्व की महिमा से संसार के समस्त मायिक कार्यों से मुक्ति मिल जाती है और उसके पारमार्थिक रूप का बोध हो जाता है, जिससे इस दृश्यमान जगत् का मायामय चक्र उसी प्रकार विलुप्त हो जाता है जैसे प्रकाश द्वारा रज्जु का ज्ञान होने पर सर्पबुद्धि दूर हो जाती है ।

शास्त्रों में श्रीविद्या और इसकी दीक्षा का बहुत महत्त्व बताया गया है । एतदनुसार गुरुगम्य यह गुह्य तत्त्व सुयोग्य को ही देय है । इस सन्दर्भ में ये पंक्तियाँ निश्चप्रचरूपेण उद्धरणीय हैं -

**अतिप्रियतमं देयं सुतदाराधनादिकम् । राज्यं देयं शिरो देयं न देया पञ्चदशाक्षरी ।।**

इसी प्रकार ब्रह्माण्डपुराण के अंशभूत ललितासहस्रनाम (ललितोपाख्यान) में भी श्रीविद्या और श्रीचक्र का महत्त्व प्रतिपादित है तथा त्रिशती, त्रिपुरारहस्य, ललितास्तवरत्न व त्रिपुरामहिम्नस्तोत्रम् प्रभृति भी इसी के प्रतिपादक ग्रन्थ हैं । इनके अनुसार श्रीचक्र का स्वरूप देखें -

**बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्म,मन्वश्र-नागदल संयुतषोडशारम्।**
**वृत्तत्रयञ्च धरणीसदनत्रयञ्च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः।।**

अर्थात् श्रीचक्र ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। इसके आविर्भाव और लय दोनों बिन्दु में माने जाते हैं । चक्र की सृष्टि अथवा विश्व या ब्रह्म की सृष्टि भी बिन्दु से ही होती है । बिन्दु ही चक्र का

मूल है और यह बिन्दु शिव व शक्ति का सामरस्य है। शिव को संहारात्मक अग्नि तथा शक्ति को सर्गात्मक सोम कहा जाता है । रवि दोनों शक्तियों का सामञ्जस्य किंवा सामरस्य है। यही बिन्दु चक्र के मध्य में है और उसके बाद त्रिकोण, अष्टकोण, अन्तर्दशार, बहिर्दशार, चतुर्दशार, अष्टदल, षोडशदल, तीनवृत्त व तीन भूपुर हैं । इस यन्त्र में कुल ४३ त्रिकोण, २८ मर्मस्थल और २४ सन्धियां होती हैं।

ललितासहस्त्रनाम की भूमिका में ब्रह्माण्ड के समान ही मानव देह में भी श्रीचक्र की भावना की गयी है । शरीर को श्रीचक्र, ब्रह्मरन्ध्र को बिन्दु चक्र, मस्तक को त्रिकोण, ललाट को अष्टकोण, भूमध्य को अन्तर्दशार, कण्ठ को बर्हिदशार, हृदय को चतुर्दशार, कुक्षि को वृत्त, नाभि को अष्टदलकमल, कटि को अष्टदल के बाहर का वृत्त , स्वाधिष्ठान को षोडशदलकमल, मूलाधार को षोडशदल कमल का बाह्यवृत्तत्रय, जानु को भूपुर की प्रथम रेखा, जंघा को द्वितीय रेखा और करों को तीसरी रेखा मानते हैं । इसीलिए श्रीचक्र को चक्रराज स्वीकार किया गया है, क्योंकि योगिनीहृदय के अनुसार अपनी देह और ब्रह्माण्ड को श्रीचक्र समझने वाला व्यक्ति महान् तपस्वी होता है । यथा -

**पिण्डब्रह्माण्डयोर्ज्ञानं श्रीचक्रस्य विशेषतः। ज्ञात्वा शम्भु फलावाप्तिर्नास्त्यस्य तपसः फलम्।।**

दस महाविद्याओं में तृतीय स्थानीय श्रीविद्या शिवशक्त्यैकरूपिणी पराभट्टारिका मानी जाती हैं, जिनके पञ्चदशी, षोडशी दीपनी और कामराज आदि अनेक भेद हैं। ज्ञानार्णव तन्त्र के अनुसार यह सर्वसिद्धिदायिनी है । इसीलिए उसमें कहा गया है -

**कामराजाख्यमन्त्रोक्ते श्रीबीजेन समन्विता । षोडशाक्षरविद्येयं श्रीविद्येति प्रकीर्तिता ।।**
**वर्णितुं नैव शक्येयं श्रीविद्या षोडशाक्षरी ।ब्रह्मविद्यास्वरूपा हि भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।।**

जगज्जननी, जगद्वन्द्या,त्रैलोक्यपूजिता भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी वर्णनातीत, अगम्य, अच्छेद्य एवं अभेद्य हैं । शास्त्रकारों ने इन्हें नेति-नेति के विशेषण से विभूषित किया है । इसलिए संक्षिप्ततया मैं महर्षि दुर्वासा के शब्दों द्वारा उनके पादपद्मों में अपनी बात को पूर्णता देते हुए प्रणामाञ्जलि अर्पित करता हूँ, यथा -

**वन्दे वाग्भवमैन्दवात्मसदृशं वेदादिविद्यागिरो**
**भाषादेश समुद्भवाः पशुगताश्छन्दांसि सप्तस्वरान् ।**
**तालान् पञ्चमहाध्वनीन् प्रकटयत्यात्मप्रसारेण यत्**
**तद्बीजं पदवाक्यमानजनकं श्रीमातृके ते परम् ।।**

*-सदानन्द ब्रह्मचारी*

# समर्पण

जन्मदात्री माँ मानकुँवर के श्रीचरणों में
जिन्होंने जन्म देकर जगज्जननी माँ के चरण पाने का सौभाग्य दिया ....

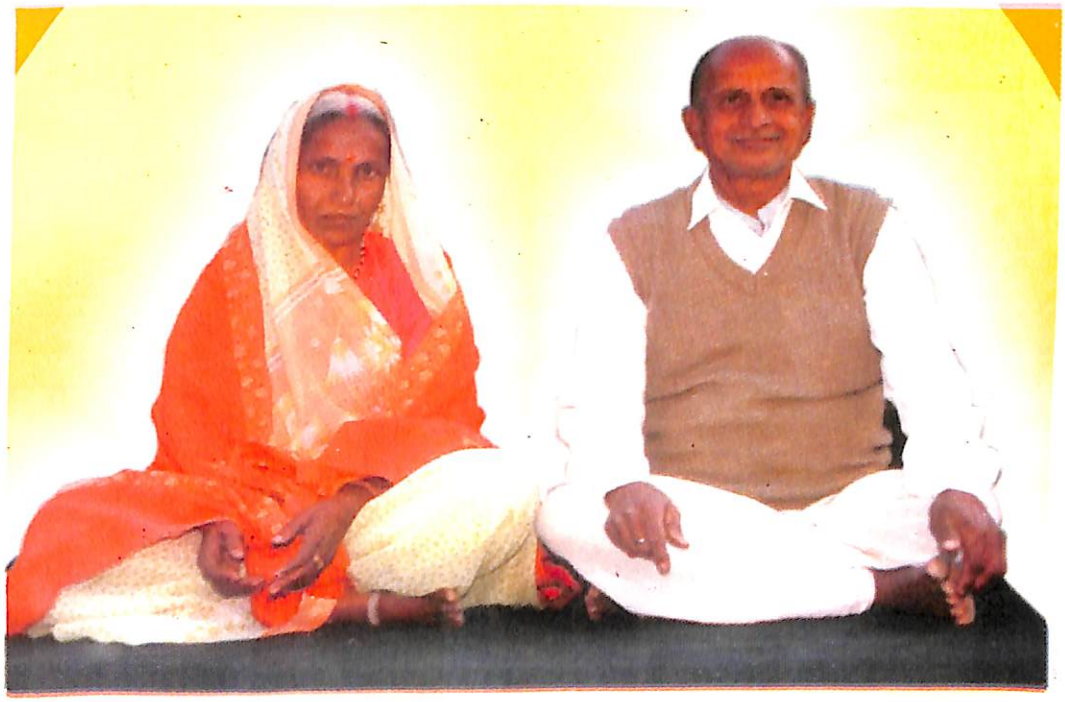

पूजनीया माता सौ. मानकुँवर देवी एवं पिता आयुर्वेदरत्न पं. विद्याधर अवस्थी जी

**स्वर्णतरणि माँ चरण तरण को भव वरुणालय,**
**निज अक्षय मणिद्वीप तिमिर जिससे मन का क्षय ।**
**कोटि स्वर्ग अपवर्ग मातृपद पर न्यौछावर,**
**जननी ही निज तीर्थ प्रकट जिससे तीर्थंकर ।।**

# विषयसूची


| क्र. | श्लोक | पृष्ठ | प्रयोग | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| १ | शिवःशक्त्या युक्तो० | २ | सर्वार्थसिद्धि | ३ |
| २ | तनीयांसं पाशुं० | ४ | कालभय निवारण | ५ |
| ३ | अविद्यानामकवस्तिगिर० | ६ | दारिद्र्य निवारण | ७ |
| ४ | त्वदन्यः पाणिभ्या० | ८ | सङ्कट निवारण | ९ |
| ५ | हरिस्त्वामाराध्य० | १० | सन्तान प्राप्ति | ११ |
| ६ | धनुः पौष्पं मौर्वी० | १२ | सन्तानप्राप्ति | १३ |
| ७ | क्वणत्काञ्चीदामा० | १४ | शत्रुविजय | १५ |
| ८ | सुधासिन्धोर्मध्ये० | १६ | कारागारनिवृत्ति | १७ |
| ९ | महीं मूलाधारे० | १८ | पंचभूत विजय | १९ |
| १० | सुधासिन्धोर्मध्ये० | २० | शरीर/वीर्य शुद्धि | २१ |
| ११ | चतुर्भिः श्रीकण्ठैः० | २२ | बन्ध्यातव निवृत्ति | २३ |
| १२ | त्वदीयं सौन्दर्यं० | २४ | कवित्वशक्ति प्राप्ति | २५ |
| १३ | नरं वर्षीयांसं० | २६ | वशीकरण | २७ |
| १४ | क्षितौ षट्पञ्चाशत्० | २८ | दुर्भिक्ष/रोग निवारण | २९ |
| १५ | शरज्ज्योत्स्ना शुभ्रां० | ३० | विद्या कवित्व प्राप्ति | ३१ |
| १६ | कवीन्द्राणां चेतः० | ३२ | कवित्व सिद्धि | ३३ |
| १७ | सवित्रीभिर्वाचां० | ३४ | सकलकलानैपुण्य | ३५ |
| १८ | तनुच्छायाभिस्ते० | ३६ | सर्ववशीकरण | ३७ |
| १९ | मुखं बिन्दुं कृत्वा० | ३८ | सर्वलोकवशीकरण | ३९ |
| २० | किरन्तीमंगेभ्यः० | ४० | रोगनिवारण | ४१ |
| २१ | तटिल्लेखातन्वीं० | ४२ | आत्मसाक्षात्कार | ४३ |
| २२ | भवानि त्वं दासे० | ४४ | सकलैश्वर्य प्राप्ति | ४५ |
| २३ | त्वया हृत्वा वामं० | ४६ | ऋणविमोचन | ४७ |
| २४ | जगत्सूते धाता० | ४८ | प्रेतबाधा निवारण | ४९ |
| २५ | त्रयाणां देवानां० | ५० | उच्चपदवीं प्राप्त | ५१ |
| २६ | विरञ्चिः पञ्चत्वं० | ५२ | शत्रुविजय | ५३ |
| २७ | जपो जल्पः शिल्पं० | ५४ | आत्मज्ञान | ५५ |

| क्र. | श्लोक | पृष्ठ | प्रयोग | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| २८ | सुधामप्यास्वाद्य० | ५६ | अपमृत्यु निवारण | ५७ |
| २९ | किरीटं वैरिञ्चं० | ५८ | सर्ववश्यकर | ५९ |
| ३० | स्वदेहोद्भूताभि० | ६० | अष्टसिद्धिकर | ६१ |
| ३१ | चतुष्षष्ट्या तन्त्रै० | ६२ | सर्वकामनापूरण | ६३ |
| ३२ | शिवः शक्तिः कामः० | ६४ | रसायन सिद्धिद | ६५ |
| ३३ | स्मरं योनिं लक्ष्मीं० | ६६ | भूरिधनद | ६७ |
| ३४ | शरीरं त्वं शम्भोः० | ६८ | विद्याबुद्धिद | ६९ |
| ३५ | मनस्त्वं व्योम त्वं० | ७० | क्षयरोग निवारक | ७१ |
| ३६ | तवाज्ञा चक्रस्थं० | ७२ | भीतिनिवारक | ७३ |
| ३७ | विशुद्धौ ते शुद्ध० | ७४ | ब्रह्मराक्षसबाधा निवारक | ७५ |
| ३८ | समुन्मीलत्संवित्० | ७६ | बालारिष्ट निवारक | ७७ |
| ३९ | तव स्वाधिष्ठाने० | ७८ | बाधा निवारक | ७९ |
| ४० | तटित्वन्त्रं शक्त्या० | ८० | अभीष्टलक्ष्मीदर्शक | ८१ |
| ४१ | तवाधारे मूले० | ८२ | उदरपीड़ा निवारक | ८३ |
| ४२ | गतैर्माणिक्यत्वं० | ८४ | महोदरव्याधिनाशक | ८५ |
| ४३ | धुनोतु ध्वान्तं० | ८६ | सर्वजनवशीकरण | ८७ |
| ४४ | तनोतु क्षेमं नः० | ८८ | कल्याणप्राप्तिकर | ८९ |
| ४५ | अरालैः स्वाभाव्याद्० | ९० | वाक्सिद्धिद | ९१ |
| ४६ | ललाटं लावण्य० | ९२ | गर्भधारण | ९३ |
| ४७ | भ्रुवौ भुग्ने किञ्चिद्० | ९४ | सर्वजनवशीकरण | ९५ |
| ४८ | अहस्सूते सव्यं० | ९६ | नवग्रहशान्तिद | ९७ |
| ४९ | विशाला कल्याणी० | ९८ | निधिदर्शक | ९९ |
| ५० | कवीनां सन्दर्भ | १०० | साध्यविद्वेषण | १०१ |
| ५१ | शिवे शृङ्गारार्द्रा० | १०२ | इष्टसिद्धिद | १०३ |
| ५२ | गते कर्णाभ्यर्णं० | १०४ | कर्ण/नेत्ररोगहर | १०५ |
| ५३ | विभक्तत्रैवर्ण्यं० | १०६ | ज्ञानप्राप्ति | १०७ |
| ५४ | पवित्रीकर्तुं न० | १०८ | पापमोचन | १०९ |
| ५५ | निमेषोन्मेषाभ्यां० | ११० | अण्डरोगनिवृत्ति | १११ |
| ५६ | तवापर्णे कर्णे० | ११२ | वृष्टिद | ११३ |
| ५७ | दृशा द्राघीयस्या० | ११४ | सकलसौभाग्यकर | ११५ |

| क्र. | श्लोक | पृष्ठ | प्रयोग | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| ५८ | अरालं ते पाली० | ११६ | साध्याकर्षण | ११७ |
| ५९ | स्फुरद्गण्डाभोगं० | ११८ | सर्वजनवशीकरण | ११९ |
| ६० | सरस्वत्यास्सूक्ती० | १२० | सकलविद्यासंप्राप्ति | १२१ |
| ६१ | असौनासावंशः० | १२२ | ऐश्वर्यप्राप्ति | १२३ |
| ६२ | प्रकृत्या रक्तायाः० | १२४ | सम्यक् निद्राप्राप्ति | १२५ |
| ६३ | स्मितज्योत्स्नाजालं | १२६ | सम्मोहन | १२७ |
| ६४ | अविश्रान्तं पत्युः | १२८ | वाक्सिद्धि | १२९ |
| ६५ | रणे जित्वा दैत्यान्० | १३० | सर्वविजयकर | १३१ |
| ६६ | विपञ्च्या गायन्ती० | १३२ | संगीत नैपुण्य | १३३ |
| ६७ | कराग्रेण स्पृष्टं० | १३४ | सकलस्त्रीवशीकरण | १३५ |
| ६८ | भुजाश्लेषान्नित्यं० | १३६ | लक्ष्मीप्राप्ति | १३७ |
| ६९ | गले रेखास्तिस्रो० | १३८ | संगीत सिद्धि | १३९ |
| ७० | मृणाली मृद्वीनां० | १४० | अपराध शान्ति | १४१ |
| ७१ | नखानामुद्योतै० | १४२ | यक्षिणीवशीकरण | १४३ |
| ७२ | समं देवि स्कन्द० | १४४ | रात्रिभय निवारण | १४५ |
| ७३ | अमू ते वक्षोजा० | १४६ | सन्तुष्टिदायक | १४७ |
| ७४ | वहत्यम्ब स्तम्बेः० | १४८ | कीर्तिदायक | १४९ |
| ७५ | तव स्तन्यं मन्ये० | १५० | कवित्वसिद्धि | १५१ |
| ७६ | हरक्रोधज्वाला० | १५२ | वैराग्यकर | १५३ |
| ७७ | यदेतत्कालिन्दी० | १५४ | राजवश्यकर | १५५ |
| ७८ | स्थिरो गङ्गावर्तः० | १५६ | स्त्रीमोहन | १५७ |
| ७९ | निसर्गक्षीणस्य० | १५८ | सम्मोहन | १५९ |
| ८० | कुचौ सद्यस्विद्यत्० | १६० | स्तम्भन | १६१ |
| ८१ | गुरुत्वं विस्तारं० | १६२ | अग्निस्तम्भन | १६३ |
| ८२ | करीन्द्राणां शुण्डान्० | १६४ | जलगमनसामर्थ्यकर | १६५ |
| ८३ | पराजेतुं रुद्रं० | १६६ | सैन्य स्तम्भन | १६७ |
| ८४ | श्रुतीनां मूर्धानो० | १६८ | परकाय प्रवेश | १६९ |
| ८५ | नमो वाकं ब्रूमो० | १७० | सौभाग्यवर्धन | १७१ |
| ८६ | मृषा कृत्वा गोत्र० | १७२ | विजयप्राप्ति | १७३ |
| ८७ | हिमानी हन्तव्यं० | १७४ | सर्ववशीकरण | १७५ |
| ८८ | पदं ते कीर्तीनां० | १७६ | सर्वमृगवशीकरण | १७७ |

| क्र. | श्लोक | पृष्ठ | प्रयोग | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| ८९ | नखैर्नाकस्त्रीणां० | १७८ | सर्वरोगनिवारण | १७९ |
| ९० | ददाने दीनेभ्यः० | १८० | दारिद्र्य निवारण | १८१ |
| ९१ | पदन्यासक्रीड़ा० | १८२ | धनभूमिलाभकर | १८३ |
| ९२ | गतास्ते मञ्चत्वं० | १८४ | शासनक्षमतावर्धक | १८५ |
| ९३ | अराला केशेषु० | १८६ | सकलमनोरथ साधक | १८७ |
| ९४ | कलङ्क कस्तूरी० | १८८ | इष्टसाधक | १८९ |
| ९५ | पुरारातेरन्तः | १९० | व्रणापकरण | १९१ |
| ९६ | कलत्रं वैधात्रं० | १९२ | विद्याप्राप्ति | १९३ |
| ९७ | गिरामाहुर्देवीं० | १९४ | शारीरिकदृढ़ताकारक | १९५ |
| ९८ | कदाकाले० | १९६ | सरस्वतीसिद्धिदायक | १९७ |
| ९९ | सरस्वत्या लक्ष्म्या० | १९८ | शौर्यवर्द्धक | १९९ |
| १०० | प्रदीप्तज्वालाभिः | २०० | सकलकार्यसाधक | २०१ |
| परिशिष्ट | सौन्दर्य लहरी का मूलपाठ | २०३ | से | २२६ तक |

# श्रीयन्त्रम्

चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः।
नवचक्रैश्च संसिद्धं श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः।।
सम्यक् शतं क्रतून् कृत्वा यत्फलं समवाप्नुयात्।
तत्फलं समवाप्नोति कृत्वा श्रीचक्रदर्शनम्।।

चार शिवचक्रों एवं पाँच शक्तिचक्रों ऐसे कुल नौ चक्रों से संसिद्ध श्रीचक्र शिव तथा शक्ति का साक्षात् स्वरूप है । जो फल विधिपूर्वक सौ यज्ञ करने से मिलता है, वह श्रीयन्त्र के दर्शन मात्र से प्राप्त हो जाता है ।

# अथ श्री
# सौन्दर्य-लहरी

भगवान् भाष्यकार श्रीमदादि शङ्कराचार्य-प्रणीत सौन्दर्यलहरी स्तोत्र-साहित्य में अत्यन्त उत्कृष्ट कृति मानी जाती है । वस्तुतः यह रचना स्तोत्र मात्र न होकर समस्त तन्त्रग्रन्थों का सार अथवा तन्त्रराज्य के भाण्डागार का अनावृत द्वार है । जहाँ इसके प्रत्येक श्लोकों में तान्त्रिक उपासना वर्णित है वहीं इनके द्वारा सामान्य साधकों के लिए विविध दुर्लभ प्रयोग भी सुलभ कराए गए हैं । निश्चय ही साधकगण इनका प्रयोग कर ऐहिकामुष्मिक कल्याण प्राप्त करेंगे ।

साधारणतया इस रचना के शतश्लोकों का प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक किया गया आवर्तन साधक को श्रीचक्राधिष्ठायिनी माता का कृपा पात्र बना देता है । साथ ही साधक के हृदय में महान् सुख, तेज का संचार होता है और वह तत्त्वज्ञान को उपलब्ध हो जाता है । 'शरीरं चिन्तयेदादौ निजं श्रीचक्ररूपकम्' के अनुसार अपने शरीर को ही श्रीचक्र मानकर मन्त्रयोग से कुण्डलिनी को जाग्रत किया जा सकता है ।

## Presenting Shri
# Saundarya-Lahari

Saundarya-Lahari written by Bhagwān Bhāśyakār Śrīmadādi Śaṅkarāchārya is an incomparable piece of writing in Stotra-Sahitya. Actually this piece of writing not only being a stotra is essence of tantra books or an open door to the treasure house of tantra rajya. In each Shloka the method of dedication to Tantrika Upāsanā has been very well ilustrated and well facilitated for the various rare usage of the Tantrika Upāsanā by the common followers. Definitely by using this Sādhanā the Sādhaka can reach his spiritual height.

Chanting of hundred shlokas of this description the Sādhaka gets the grace of "the Divine Mother." with that an enormus happiness and Divine power will prevail in the heart of the Sādhaka and thus he attains perfection. According to the description of this passage "Śarīrām chintayedādau nijam Śrīchakra rūpakam" one can presume his own human body as "Śrīchakra" and enlighten his "Kuṇḍalinī" by the Tantra Yoga.

For more knowledge about chakra-sadhana contact the illustrator or His Holiness Sankaracharya ji.

Editor.

**शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं**
**न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि ।**
**अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्चादिभिरपि**
**प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ॥1॥**

**पदयोजना**- हे भगवति ! शिवो देवः शक्त्या युक्तो भवति यदि, तदा प्रभवितुं शक्तः। एवं न चेत्, स्पन्दितुमपि कुशलो न खलु । हरिहरविरिञ्चादिभिरपि आराध्यां त्वाम् अकृतपुण्यः प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथं प्रभवति?

---

भगवान् शिव शक्ति से युक्त होकर ही सृष्टि का संचालन करने में स्वयं को समर्थ पाते हैं । पराशक्ति भगवती त्रिपुरसुन्दरी राजराजेश्वरी से संयुक्त न हों, तो उनमें स्पन्दन संभव नहीं है । तब वे सृष्टि, स्थिति, संहार या संतुलन रखने में भी अपने आप को सामर्थ्यवान् नहीं पाते हैं। प्रकृति के बिना पुरुष मात्र कल्पना है । माँ ! जिनके अनेक जन्मजन्मान्तरों के पुण्य उदय हों वही ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर द्वारा पूजनीया आप श्री की स्तुति, पूजन, वन्दन करने का अधिकारी बन आपकी चरणधूलि प्राप्त कर सकता है ।।1।।

જો શિવજી શક્તિ સાથે યુક્ત થાય તો તે પ્રભુની સત્તાઓ અમલમાં મૂકી શકે. જો તેમ ન થાય (શિવ-શક્તિ એક ન થાય) તો મહાદેવ હાલવા ચાલવા પણ કુશળ નથી રહેતા. આથી હરિ, હર, બ્રહ્મા અને બીજા દેવોથી તમો દેવી ! આરાધન યોગ્ય છો. જેણે પુણ્યો પ્રાપ્ત નથી કર્યાં, તેઓ તમને પ્રણામ કરવા કે તમારી સ્તુતિ કરવા સમર્થ કેવી રીતે થઈ શકે ? (૧)

Paramesvara becomes capable of creating the Universe, only when united with Sakti (Thee), but otherwise (when not so joined with Thee), He is incapable of even a stir. How then could one, who has not acquired merit ( Punya-in this and previous births) worship Thee, or at least praise Thee, who is adored even by Vishnu, Siva, Brahma and others ? [1]

---

**विशेष**-इच्छा, ज्ञान और क्रिया इस तरह तीन तरह की शक्ति होती है । इस शक्ति से रहित शिव कुछ भी नहीं कर सकता । शिव हं वाच्य है और शक्ति सः वाच्य । इस तरह प्रस्तुत श्लोक से हंसः मन्त्र सिद्ध होता है जिसे उल्था करने पर सोऽहं रूप बनता है । ह और स हादिविद्या के प्रथम दो अक्षर हैं । इसलिए सौन्दर्यलहरी में प्रतिपाद्य आनन्दलहरी पद से श्रीविद्या का संकेत करते हैं । मंगलाचरण के रूप में निबद्ध प्रस्तुत श्लोक ह्सौः बीज मन्त्र का भी निरूपण करता है । **हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत्पुनः । हंसहंसेत्यमुं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा।** यही अजपा जप अथवा अजपा गायत्री है।स्वतः होने वाले इस जप का हेतु सहित ध्यान रखने से फल होता है ।

## सर्वार्थसिद्धिप्रयोग

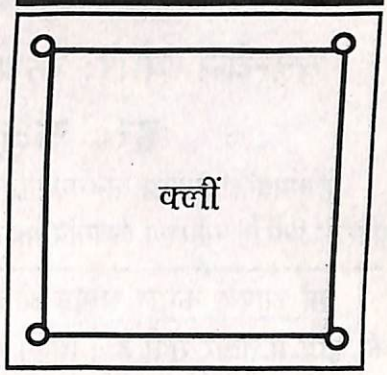


प्रस्तुत यन्त्र को **स्थण्डिल** में **गेहूँ के आटे** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१२ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**शिं**' (श्+इ) है । जप का दशांश हवन '**शिं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**शिं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**शिं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **त्रिमधु** (गुड़+केला+नारियल) का नैवेद्य विहित है ।

मतान्तर में स्वर्णपत्र में भी यन्त्रलेखन विधि है । अनुष्ठान के बाद यन्त्र को गले में धारण करें ॥१॥

### विनियोग

अस्यश्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'शिवः शक्त्यायुक्तो यदि' इति प्रथममन्त्रस्य ईशानभैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। शिं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः ..... हृदयाय नमः
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा ..... शिरसे स्वाहा
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ..... शिखायै वषट्
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ... नेत्रत्रयाय वौषट्
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
शिं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चितां। शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मिताम् । रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां। देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः । शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते ! रक्तवर्णप्रभाकारं स्वयं परमकुण्डली । चतुर्वर्गप्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं । पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं प्रिये ! । रत्नपञ्चतमोद्युक्तं त्रिकूटसहितं सदा । त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतम् । इकारं परमानन्दं, सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरि-ब्रह्म-मयं वर्णं, सदाशिव-मयं प्रिये!। महा-शक्ति-मयं देवि! गुरु-ब्रह्म-मयं तथा। विश्व-त्रय-मयं वर्णं, पर-ब्रह्म-समन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दन भूषिताम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवी तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाश तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायु तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नि तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जल तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्व तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्केरुहभवं**
**विरिञ्चिः संचिन्वन्विरचयति लोकानविकलम्।**
**वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्त्रेण शिरसां**
**हरः संक्षुद्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम् ॥2॥**

हे भगवति! विरिञ्चिः तवचरणपङ्केरुहभवं तनीयांसं पांसुं संचिन्वन् लोकान् अविकलं विरचयति। हे भगवति! शौरिरेनं शिरसां सहस्त्रेण कथमपि वहति। हे भगवति! एनं संक्षुद्य (संक्षुभ्य)हरः भसितोद्धूलनविधिं भजति ।

---

माँ आपके कमल समान श्रीचरणों में लग्न सूक्ष्मातिसूक्ष्म रज की कृपा से ब्रह्मा निरन्तर विश्व की सृष्टि में तत्पर रहते हैं । विष्णु भगवान् स्वयं शेषावतार धारण कर अपने सहस्त्रों सिरों से आपकी चरण धूलि से उत्पन्न समस्त लोकों को सप्रयत्न धारण करते हैं । भगवान् भूतभावन शिव स्वयं तुम्हारी पदधूलि को सम्यक् रूप से भस्मीकृत कर अपने अङ्गों में लगा लेते हैं । इस तरह ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों मूर्ति पराशक्ति की आराधना कर कृतकृत्य हो जाते हैं ।।2।।

**નાની ચપટી જેટલી રજ તમારા ચરણકમલ પર હોય તો તે એકત્ર કરી બ્રહ્મા તેમાંથી સંપૂર્ણ જગત રચે છે. વિષ્ણુ ભગવાનનો શેષનાગ હજાર ફેણોથી મહાકષ્ટે તેને વહન કરી શકે છે. હર તે રજને સંક્ષુબ્ધ કરી તેને ભસ્મવિધિ પ્રમાણે પોતાના શરીરે લગાવે છે. (૨)**

Collecting microscopic particles of the dust falling from Thy lotus-feet, Brahma creates the worlds in regular order (intact), Vishnu (in the form of Adisesha) bears them somehow with great effort (might) though with thousand heads and Siva reducing the particles into ashes besmears his body with them (Vibhuti). [2]

---

**विशेष-** गति को क्रियात्मक रूप देने में चरण प्रमुख अवयव है । परमशक्ति की अद्भुत गति 'स्पन्दगति' विद्याऽविद्या रूप धारण करती है । उसकी गति एवं विक्षेप में अण्वणुओं की सृष्टि होकर उनसे सूर्य आदि बन जाया करते हैं । तदनन्तर भू आदि गोलकग्रहों की सृष्टि होती है तथा उनमें वर्तमान दृश्य तथ्यों का निर्माण होकर विश्वजीवनसृष्टि प्रारम्भ होती है ।

इस विश्वजीवनसृष्टि के निर्माण हेतु अण्वणु सदा बनते एवं बिगडते रहते हैं । विरिञ्चि अर्थात् ब्रह्मा को उसके सर्जन अथवा संहार में कोई परिश्रम नहीं करना पडता । यह सभी लोक सौर महाशक्ति के गुरुत्वाकर्षण में अधर में लटकते हुए भ्रमण करते हुए सूर्य की प्रदक्षिणा करते हैं । इस प्रकार श्रीसौर शक्ति भूसहित सम्पूर्ण ग्रहमण्डल को सहस्त्रों हाथों से धारण करती हुई स्वयं गति युक्ता है तथा इस बृहत् सृष्टि में लय होते हुए अणुओं की अण्वणुभस्म को धारण करते हुए उन अण्वणुओं में पुनः जीवगति प्रदान करते हैं । यही महाशिव का मृत्युंजय योग है ।

## कालभयनिवारण प्रयोग

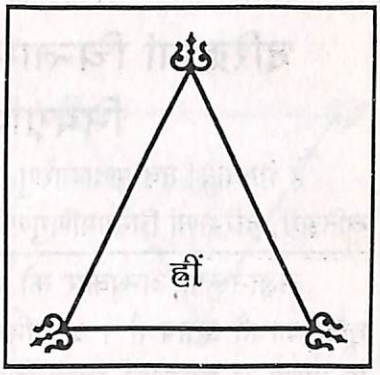


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **उत्तराभिमुख** हो **५५ दिन** तक प्रतिदिन**१ ० ० ०** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**तं**' है । जप का दशांश हवन '**तं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**तं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**तं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात् १०० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **क्षीर** तथा **पायस** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **सर्वलोक वश्यता** एवं **प्रकृति विजय** की प्राप्ति होती है ॥२॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'तनीयांसं पांशुं तव' इति द्वितीयमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः ..... हृदयाय नमः
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा ..... शिरसे स्वाहा
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ..... शिखायै वषट्
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ... नेत्रत्रयाय वौषट्
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
तं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।।**
**त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवी तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाश तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायु तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नि तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जल तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्व तत्वात्मिकायै ललिता देव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**अविद्यानामन्तस्तिमिरमिहिरद्वीपनगरी**
**जडानां चैतन्यस्तबकमकरन्दस्रुतिझरी ।**
**दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ**
**निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवति ॥3॥**

हे भगवति! तव पादाब्जरेणुः एषः अविद्यानां अन्तस्तिमिरमिहिरद्वीपनगरी, जडानां चैतन्यस्तबकमकरन्द-स्रुतिझरी, दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका, जन्मजलधौ निमग्नानां मुररिपुवराहस्य दंष्ट्रा भवति ।

---

अज्ञानरूपी,अन्धकार को नष्ट करने वाली मणिद्वीप नगरी का प्रताप वस्तुतः आपके चरणों की धूलि का ही प्रताप है । अज्ञानियों के लिए आत्मज्ञानरूपी वाञ्छितफल प्रदान करने वाला कल्पवृक्ष के पुण्यों से निकलने वाला पराग, अर्थहीन दरिद्रियों के लिए सकल सम्पत्तियों का स्वामी बनाने वाली चिन्तामणि, आपका ही कृपा प्रसाद है । जैसे भवसागर में डूबे हुये जीवों के लिए भगवान् विष्णु के अवतार वाराह मूर्ति के दो दंत ।।3।।

**અજ્ઞાનિઓ માટે તમે અંતરનો અંધકાર દૂર કરનાર સૂર્યની દ્વીપ નગરી છો. જેઓ મનથી જડ છે તેમને માટે બુદ્ધિના ગુચ્છોમાંથી વહેતી અમૃતની ઝરણી જેવી તમે છો. ગરીબો માટે ચિંતામણીની માળા છો. જે જન્મના મહાસાગરમાં ડૂબ્યા છે તેમને માટે ભગવાન વિષ્ણુના, વરાહ અવતારની દંષ્ટ્રા જેવી તમો તેમાંથી ઉગારનાર માતા છો. (૩)**

The particles of dust of Thy Lotus feet serve to remove the inner darkness of the ignorant (those who have not attained Tatva-jnana or divine knowledge). In other words, the dust is the sun that dispels the inner darkness of the ignorant or the worldly-minded. The speck of the dust is a flood of fragrance emanating from the bunch of flowers of the Kalpaka tree of chaitanya or clear consciousness, awakening the unknowing or dull-witted. To those in the grip of chill penury, (the dust particles) are a string of gems of the Cintamani variety. And to those drowned in the ocean of earthly existence (Samsara- the ocean of births and deaths) that dust becomes the tusk of the wild boar of Muraripu i.e. Vishnu who incarnated as Varaha. [3]

---

**विशेष**-विद्या के दो भेद हैं- अविद्या और विद्या । इन्हीं को परा और अपरा कहा जाता हैं। चारों वेद, छहों वेदाङ्ग, यह अपरा विद्या है और जिस विद्या से ब्रह्म की प्राप्ति होती है उसे परा विद्या कहा जाता है । इसीलिए मात्र वेद-शास्त्रों का ज्ञान रखने वाले को विद्वान् नहीं कहा जाता। प्रत्युत इसका परित्याग कर ही ब्रह्मजिज्ञासु मुमुक्षु परा विद्या का अधिकारी बनता है ।

मुररिपुवराहस्य अर्थात् मुर नामक दैत्य के रिपु विष्णु और उनका नाम से प्रसिद्ध वराह अवतार, उसके द्वारा यथा पृथ्वी उबारी गई तथैव संसारसागर से उबारने वाली आप है।

## दारिद्र्यनिवारणप्रयोग

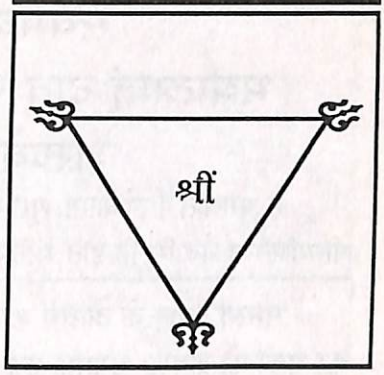


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **ईशानाभिमुख** हो **१५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**अं**' है । जप का दशांश हवन '**अं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**अं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**अं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **उड़द के पुए** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **सर्वैश्वर्य** एवं **सर्वविद्या** की प्राप्ति होती है तथा दारिद्र्य दूर होता है ॥३॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'अविद्यानामन्तस्तिमिर' इति तृतीयमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। अं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**केतकीपुष्पगर्भाभां द्विभुजां हंसलोचनाम् ।**
**शुक्लपट्टाम्बरधरां पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यमानन्दमयीं पराम् ।**
**वराभयकरां देवीं नागपाशसमन्विताम् ।**
**शृणुतत्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।**
**शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तिद्वय समन्वितम् ।**
**निर्गुणं सगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।**
**बिन्दुद्वयमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
अं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण-**
**स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया ।**
**भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं**
**शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥4॥**

हे भगवति ! लोकानां शरण्ये, त्वदन्यो दैवतगणः पाणिभ्यामभयवरदः । एका त्वं पाणिभ्यां प्रकटितवराभीत्यभिनया नैवासि हि इति संचिन्त्य तव चरणावेव भयात्त्रातुं वाञ्छासमधिकं फलमपि च दातुं निपुणौ ।

---

समस्त जगत् के आश्रय शरणालय आपके चरण हैं । माँ अन्य सभी देवगण अभय या वरमुद्रा प्रदर्शित कर भक्तों को क्रमशः भयमुक्त एवं सर्वसम्पदाओं की पूर्ति का संकेत देते हैं । केवल एक आप ही हैं जो अभयमुद्रा या आवश्यकतापूर्ति की वरमुद्रा का प्रदर्शन (अभिनय) नहीं करती हो। क्योंकि आपके चरण ही वह सामर्थ्य रखते है जिससे आपके आश्रित भक्तजनों की जन्म-मरण रूपी भवसागर के भय से मुक्ति तथा वांछित अनुकूल सम्पदाओं की पूर्ति हो जाती है ।।4।।

**તમારા સિવાય અન્ય દેવગણ ભયમુક્તિ તથા વરદાન તેમના હાથ વડે આપે છે. તમે એક જ એવાં છો કે તમે વરદાન અને રક્ષણ આપવાનો અભિનય કરતાં નથી. ભયમાંથી મુક્તિ અને ઇચ્છીએ તેથી અધિક હોય તેવું ફલ આપવા માત્ર તમારા બે ચરણ પૂરતા છે, અને તે લોકો માટે અનન્ય શરણું છે. (૪)**

Thou, the refuge of all the worlds ! All Devas (gods) except Thee, vouchsafe protection to devotees and grant their desires by gestures of their hands. Thou alone doth not show forth the varada and abhaya (granting and protecting) gestures. It is so because Thy feet are by themselves powerful to protect those in the grip of fear and grant more than what is desired for by devotees. [4]

---

**विशेष-** प्रस्तुत श्लोक में भुक्ति-मुक्तिप्रद ऐं क्लीं सौः इस बालामन्त्र का सङ्केत है । अग्नि भगवती का साक्षात् स्थूल स्वरूप है ।भगवती के प्रणव का एक रूप ऐं भी है । ऐं अग्नितत्व का अक्षर है और सुषुम्ना नाडी से सम्बन्धित है । इसे वाग्बीज भी कहा जाता है,तभी वाक्शक्ति को अग्निमयी कहा जाता है । 'तेजोमयी वाक् ' ऐसी श्रुति है । ऐं का त्रिकोणाकृति भाग शक्ति का द्योतक है । भगवती का तीसरा नेत्र जो भृकुटि के ऊपर स्थित है,वह भी आग्नेय है जिसके एक कटाक्ष से संसाररूपी भवसागर से मुक्ति मिलती है ।

कामनाओं की सिद्धि के लिए कामबीज का प्रयोग किया जाता है । जिसके गर्भ में आद्योपान्त सारा विश्व है । सर्वशक्तिसामर्थ्ययुक्त भगवती के दोनों चरण सौः बीज हैं । स अक्षर शक्तिवाचक माना जाता है । इन तीनों बीजों से सब भयों से मुक्ति एवं सर्वकामनासाधक बालामन्त्र सिद्ध होता है । ऐसे ही नवार्णमन्त्र भी जानना चाहिए ।

## सङ्कटनिवारणप्रयोग

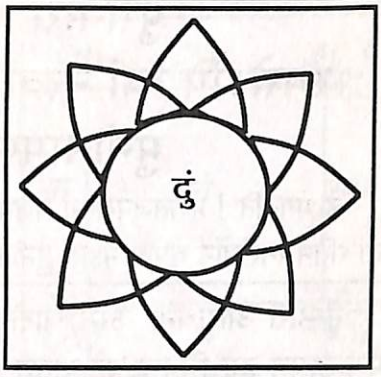


प्रस्तुत यन्त्र को **चाँदी के पत्तर** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१६** अथवा **३६दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**त्वं**' है । जप का दशांश हवन '**त्वं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**त्वं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**त्वं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **हल्दी से युक्त अन्न** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **दारुण से दारुण दरिद्रता की निवृत्ति** होती है तथा संकट कटते हैं ॥४॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'त्वनीयांसं पांशुं तव' इति चतुर्थमन्त्रस्य ईशानभैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। त्वं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्या हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
त्वं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं। सदाषोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम्। नानालङ्कारभूषां वा सर्वसिद्धिप्रदायिना। एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत्। तकारं चञ्चलापाङ्ग्गि स्वयं परमकुण्डली। पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा। त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम्। त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम्। कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम्। शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेवितां।एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम्।पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं**
**पुरानारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् ।**
**स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा**
**मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम् ॥5॥**

हे भगवति ! प्रणतजनसौभाग्यजननीं त्वां हरिराराध्य पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् । स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा महतां मुनीनामप्यन्तर्मोहाय प्रभवति हि।

---

तुम्हारी आराधना करने वाले भक्तों को सर्वसौभाग्य प्रदान करने वाली माँ! समुद्र मन्थन के समय उत्पन्न हुए विवाद को शान्त करने के लिए भगवान् विष्णु ने तुम्हारी ही आराधना करके नारी का मोहिनी रूप धारण कर त्रिपुरासुर संहारी भगवान् शिवजी के भी मन में क्षोभ उत्पन्न कर दिया था। कामदेव ने भी तुम्हारी वन्दना करके ही सांसारिक सुखों का त्याग करके अपनी पत्नी रति के नयनों के द्वारा चुम्बित सुन्दर शरीर से तपस्या में लीन बड़े-बंड़े मुनियों के अन्तःकरण में संसार कें प्रति मोह उत्पन्न करने की शक्ति प्राप्त कर ली है ।।5।।

**ભક્તિભાવે જે પ્રણામ કરી રહ્યા છે તેમના સૌભાગ્યની જનની ! હરિ (વિષ્ણુ)એ આપને આરાધીને મોહિનીનું નારી સ્વરૂપ લીધું અને શિવને પણ ક્ષોભ પમાડયો. સ્મર (કામદેવ) કે જેનું શરીર રતિના નેત્રોથી ચૂમાવા યોગ્ય છે તેણે આપને નમસ્કાર કરીને મહાશક્તિવાન મુનિઓના અંતરમાં મોહ પમાડવાની શક્તિ પ્રાપ્ત કરેલ છે. (૫)**

Once Vishnu having worshipped Thee - the bestower of all prosperity on those who worship Thee (through mind, speech and body) -concentrated on Thy Divine Form- and assuming the form of a woman, impassioned even Siva, (the Controller of all senses, the destroyer of the three cities and the enemy of Kama). Has not Smara (Kama, the God of Love) because of having bowed before Thee, obtained a personality, pleasingly attractive to the eyes of Rati (his beloved) and become capable of generating passion even in the minds of great sages. [5]

---

**विशेष-** प्रजनन के देवता काम ने कादिविद्या मूलमन्त्र की उपासना की थी । जिसके बल से काम का सामर्थ्य इतना बढा है कि मुनियों के चित्त को भी क्षुब्ध कर देता है । ब्लें रति का मन्त्र है। ब् और ल् उसके नेत्र हैं और ए शक्तिरूप है । उपरोक्त वपुषा पद से व्, लेह्येत पद से ले और महतां मुनीनां पद के अनुस्वार से लेकर उक्त बीज का उद्धरण किया जाता है । माया बीज और कामबीज के योग से ह्रीं क्लीं ब्लें इस साध्यसिद्धमन्त्र का उद्धार है ।

इस मन्त्र से हृदयचक्र और महानाद के ऊपर शक्ति का न्यास किया जाता है । इसका फल सौभाग्य की प्राप्ति है । जैसा कि प्रणतजनसौभाग्य पद से स्पष्ट है ।

## सम्मोहनप्रयोग

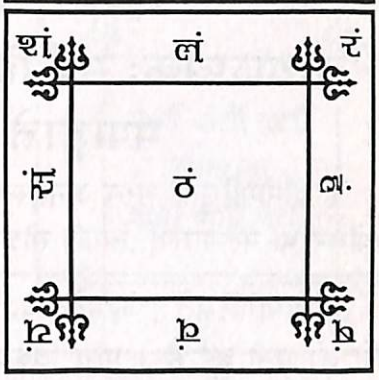


प्रस्तुत यन्त्र को **ताम्रपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **वायव्याभिमुख** हो **८ दिन** तक **प्रतिदिन २००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**हं**' है । जप का दशांश हवन '**हं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**हं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**हं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **गुड़ की खीर** का नैवेद्य विहित है । अनुष्ठान के बाद यन्त्र को शिर में पगडी अथवा टोपी के माध्यम से धारण करे ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **सकलजन सम्मोहन** एवं **स्त्री-पुरुष के वशीकरण की शक्ति** प्राप्त होती है ॥५॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'हरिस्त्वामाराध्य' इति पञ्चममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। हं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम साध्य-मोहनार्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
हं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**चतुर्भुजां रक्तवर्णां शुक्लाम्बरविभूषितां। रक्तालङ्कारसंयुक्तांवरदां पद्मलोचनाम्। ईषद्धास्यमुखीं लोलां रक्तचन्दनचर्चितां। स्याद् दात्रीं च चतुर्वर्गप्रदां सौम्यां मनोहराम्। गन्धर्व-सिद्ध-देवाद्यैर्ध्यातां आद्यां सुरेश्वरीं। एवं ध्यात्वा हकारं तु, तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। हकारं शृणु चार्वङ्गि! चतुर्वर्ग-प्रदायकं। कुण्डली-द्वय-संयुक्तं, रक्त-विद्युल्लतोपमम्। रजस्सत्व-तमो-युक्तं, पञ्च-देव-मयं सदा। पञ्च-प्राणात्मकं वर्णं, त्रि-शक्ति-सहितं सदा। त्रि-बिन्दु-सहितं वर्णं, हृदि भावय पार्वति! ऊर्ध्वादाकुञ्चिता मध्ये, कुण्डलीत्व-गता त्वधः। ऊर्ध्वं गता पुनस्सैव, तासु ब्रह्मादयः क्रमात्।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पञ्च विशिखाः**
**वसन्तः सामन्तो मलयमरुदायोधनरथः।**
**तथाऽप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपा-**
**मपाङ्गात्ते लब्ध्वा जगदिदमनङ्गो विजयते ॥6॥**

हे हिमगिरिसुते! यस्य अनङ्गस्य धनुः पौष्पम् ,मौर्वी मधुकरमयी, विशिखाः पञ्च, सामन्तो वसन्तः, आयोधनरथः मलयमरुत् ,तथापि सोऽनङ्गः एकः ते अपाङ्गात् कामपि कृपां लब्ध्वा सर्वमिदं जगत् विजयते ।

---

हे हिमगिरिसुते ! कामदेव का धनुष पुष्पों का बना हुआ है और उस धनुष की प्रत्यञ्चा (रस्सी) भौंरो की बनी हुई है । पाँच विषय- रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श उसके पाँच तीर हैं वे भी फूलों के ही हैं । बसन्त ऋतु उसका मन्त्री है एवं उसका रथ मलयागिरि का शीतल, मन्दगति से चलने वाला, सुगन्धित वायु है और वह स्वयं अनङ्ग (शरीर रहित) । फिर भी इन सब शस्त्रों को लेकर समस्त जगत् को अकेला जीत लेता है यह उस पर तुम्हारी अनिर्वचनीयं किञ्चित् कृपा का ही फल है । ।।6।।

**કામદેવનું ધનુષ્ય પુષ્પોનું બનેલું છે. પણ છ ભ્રમરોની છે. અને તીર-બાણ તો પાંચ જ છે. વસંત (ઋતુ) સેનાની છે અને મલય પર્વતનો પવન યુદ્ધરથ છે. પણ હે હિમગિરિની પુત્રી! તમારા કટાક્ષથી કંઇક કૃપા પ્રાપ્ત કરીને અંગરહિત અનંગ (મદન) પોતે સમગ્ર જગતને જીતે છે. (૬)**

Oh Daughter of the snow-clad Himalaya mountain ! Cupid, the God of Love has only a bow made of flowers, with its string comprised of a cluster of honey-bees, and has arrows barely five. The spring season is his vassal (assistant) and the Southern breeze, his war-chariot. Yet (with such frail equipment, bodiless and alone though he be, Cupid (Manmatha) subjugates the entire universe, having obtained some favour through Thy benign side-glance. [6]

---

**विशेष**-काम से **क**कार, मलय से **ल**कार,मौर्वी से **ई**,और पौष्पं से **अनुस्वार** लेकर कामबीज **क्लीं** का उद्धरण किया जाता है । काम,साधना और समाधि के लिए बहुत बडा विघ्न है । जो शङ्कर की समाधि खोल सकता है उसकी दुर्जेयता प्रत्यक्ष ही है । कामवासना का क्षय ज्ञान के उदय होने पर ही होता है इससे पूर्व नहीं । श्लोक में काम को सारे जगत का विजेता कहने से साधकों का लक्ष्य कामवासना के प्रभाव की ओर आकर्षित करना है जिसे भगीरथ प्रयत्नों से रोक पाना कठिन है । काम की दुर्जेयता एवं सामर्थ्य भगवती के अति स्वल्प कृपाकटाक्ष का ही फल है । इसलिए मुमुक्षु साधकों को इस दुर्जेय शत्रु से बचने के लिए भगवती की ही शरण में ही जाना चाहिए । मात्र भगवती के ध्यान से काम की रक्षा हो सकती है ।

## सन्तान प्राप्ति प्रयोग

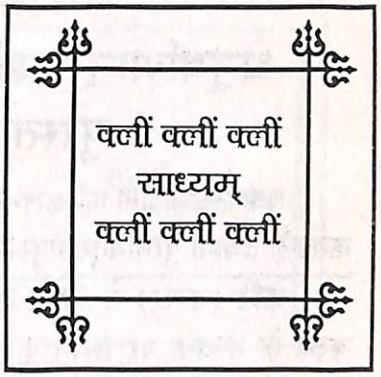


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **२१ दिन** तक **प्रतिदिन ५०० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**धं**' है । जप का दशांश हवन '**धं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**धं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**धं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **गन्ने के टुकड़े** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **नपुंसकता की निवृत्ति** होती है तथा सन्तान सुख मिलता है ॥६॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'धनुः पौष्पं मौर्वी' इति षष्ठमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। धं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**षड्भुजां मेघवर्णां च रक्ताम्बरधरां पराम् ।**

**वरदां शुभदां रम्यां चतुर्वर्ग-प्रदायिनीम् ।**

**एवं ध्यात्वा धकारं तु मन्त्रं च दशधा जपेत् ।**

**त्रिकोणरूपरेखायां त्रयो देवा वसन्ति च ।**

**विश्वेश्वरी विश्व-माता विश्वस्य-धारिणीति च ।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
धं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता**
**परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना ।**
**धनुर्बाणान् पाशं सृणिमपि दधाना करतलैः**
**पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका ॥7॥**

क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता मध्ये परिक्षीणा परिणतशरच्चन्द्रवदना धनुः बाणान् पाशं सृणिमपि करतलैः दधाना पुरमथितुराहोपुरुषिका नः पुरस्तादास्ताम् ।

---

कटि (कमर) में 'कल-कल' ध्वनि करने वाले घुंघुरुओं से युक्त मेखला पहनी हुई, हाथी के बच्चे के मस्तक पर स्थित कुम्भ (घड़ा) के जैसे स्तनों के भार से थोड़ा झुककर खड़ी हुई, अत्यन्त पतली कटिप्रदेश वाली, शरद् ऋतु के पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मुखवाली, हाथों में ईख से बना हुआ धनुष, विषयरूपी पंच पुष्पबाण, रागरूपी पाश एवं क्रोधरूपी अङ्कुश इत्यादि धारण करने वाली तथा जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्तिरूपी त्रिपुर का संहार करने वाले परमशिव की अहंकार स्वरूपिणी वह पराशक्ति हमारे सामने (ध्यान में) विराजमान रहें ।।7।।

**ઝણકાર કરતા કંદોરાવાળી નાનકડા હાથીના કુંભસ્થળો જેવા સ્તનોના ભારવાળી, કમરથી પાતળી, શરદના પૂર્ણચંદ્ર સમા વદનવાળી, હાથમાં ધનુષ્ય, બાણ, પાશ અને અંકુશ ધારણ કરેલી, એવી માતા, પુરમથન (શિવજી)ના દર્પ સમી સદા અમારી નજર સામે રહો. (૭)**

May Thou with Thy breasts like the temples (mastakas) of a young elephant, with Thy slender waist which is adorned by a jingling girdle-string ( belt-like gold waist- ornament called Odyana having small tinkling gold bells attached ), with Thy face blooming like the autumnal full moon ( of the Saradritu, with Thy four hands holding bow, arrows, noose and goad (ankusa), Thou the pride of Siva ( the Ahamkararupini of Siva ), manifest Thyself before us. [7]

---

**विशेष-** बाण से ब् ,करतल से ल् ,मथितुः से उ और आस्तां से अनुस्वार लेकर ब्लूं बीज का ग्रहण किया जाता है ।

आहो पुरुषिका= पुरमथयितुः शिवस्य अहंकाररूपा । त्रिपुरारि अर्थात् जाग्रत् ,स्वप्न,सुषुप्ति इन तीनों से अतीत ब्रह्मस्वरूप में अहम् विमर्श का व्युत्थान होना यहां अभिप्रेत है ।

आहो पुरुषिका पद भगवती के लिए प्रयुक्त किया गया है । आहो आश्चर्यसूचक पद है और पुरुषिका पुरुष का स्त्रीलिङ्ग भाववाचक पद है,तात्पर्य भगवती का रूप आश्चर्यमय है । आत्मा प्रकृति से असंग है । असङ्गोयमात्मा-यह सांख्य वेदान्त का मूल सिद्धान्त है । परन्तु उपाधिभेद से उसी में संसारी जीवात्मशक्ति का भी भाव है ।

इसी से उसे परा प्रकृति कहा जाता है ।

## शत्रु-विजय प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**क्वं**' (क्+व) है । जप का दशांश हवन '**क्वं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**क्वं मार्जयामि नमः**' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**क्वं तर्पयामि नमः**' से करें ।तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का पाठ करे । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **पुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है। **क्षीर** तथा **पायस** का नैवेद्य विहित है ।

मतान्तर में भस्म अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए ।इस प्रयोग से **शत्रु पर विजय** प्राप्त की जा सकती है ।।७।

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'क्वणत्काञ्चीदामा' इति सप्तममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। क्वं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
क्वं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**जपापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां । चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्नकङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारंध्यात्वा तु ह्रन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डलीचांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः।कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा। आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः। त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रतीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा। कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणम्। शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम्। साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेविताम्। एवं ध्यात्वा 'व'कारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। 'व'कारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्। चतुर्वर्गप्रदं शान्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते**
**मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे ।**
**शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां**
**भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम् ॥8॥**

हे भगवति ! सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां त्वां चिदानन्दलहरीं कतिचन धन्याः भजन्ति ।

---

अमृत-समुद्र के बीच में, मनोरथ पूर्ण करने वाले कल्पवृक्षों की वाटिकाओं से घिरे हुए, मणियों के द्वीप (पर्वत) में, नीप (कदम्ब) वृक्षों के उपवन के मध्य चिन्तामणियों के बने घर में परम मङ्गलरूपी रत्नजटित त्रिकोणाकृति मंच पर, परमशिव की गोद में विराजमान चिदानन्द लहरी स्वरूप तुम्हारा ध्यान कोई विरले ही पुण्यवान् मनुष्य कर पाते हैं । वे धन्य हैं । भगवती के भजन से चिदानन्द के आवेशों का जो अनुभव प्राप्त होता है उसका अनुभव करने वाले साधक थोड़े ही होते हैं । जिन पर भगवती की ऐसी कृपा होती है वे वास्तव में धन्य हैं ।।8।।

**અમૃતના મહાસાગર મધ્યે, દેવોને ઈચ્છિત આપનાર વૃક્ષોથી ઘેરાયેલો રત્નોનો ટાપુ છે. ચિંતામણિથી રચાયેલા મહેલમાં જ્યાં નીપવૃક્ષોની વાડીઓ છે, ત્યાં ચાર શ્રીકંઠોથી રચાયેલા પલંગ પર, પરમ શિવની શય્યા પર બેઠેલી, એવી તને, ચિત્ અને આનંદની લહરીને, થોડા ભાગ્યશાળીઓ ભજે છે. (૮)**

Fortunate are those few, who worship Thee who is in the form of the swell of consciousness and Infinite Bliss, Thee who is reclining (seated) on the mattress of Paramasiva spread on the cot in the form of Sadasiva, inside the mansion constructed of precious Cintamani gems, which mansion is surrounded by the pleasure garden of Nipa (Kadamba) trees, and which is in the island of gems of all kinds, encircled by rows of celestial (Kalpa) trees, the island being situated in the midst of the Amritasamudra or ocean of nectar. [8]

---

**विशेष**-दिव्य मणिद्वीप दशावरण वाले श्रीचक्र के आकार का है । यथा-

१.अमृतसागर= भूपुर(आधारचक्र), २.लोहदुर्ग=वृत्तत्रय(स्वाधिष्ठान चक्र) ३. कांस्य दुर्ग=षोडशदल पद्म (मणिपूर चक्र) ४. ताम्रदुर्ग=अष्टदल(अनाहत चक्र) ५. सीसक(प्लेटिनम) दुर्ग=चतुर्दशार (विशुद्धिचक्र) ६.रौप्यदुर्ग= बहिर्दशार(आज्ञाचक्र के अधोभाग में) ७. स्वर्णदुर्ग=अन्तर्दशार (आज्ञाचक्र के अधोभाग में ८.सुरविटपवाटी (कल्पवृक्षवन)=अष्टार (आज्ञाचक्र के ऊर्ध्वभाग में) ९. चिन्तामणिगृहे=त्रिकोण(मूलयोनि) सहस्रार के बहिर्भाग में । १०.श्रीमहामायामहाशक्तिस्थान=बिन्दु (सहस्रार के अन्तर्भाग में) ।

'परमशिवपर्यङ्कनिलयां' शिवशक्ति की एकात्मता का भाव है । इसमें क्लीं बीज का आविर्भाव है ।

## कारागार निवृत्ति प्रयोग

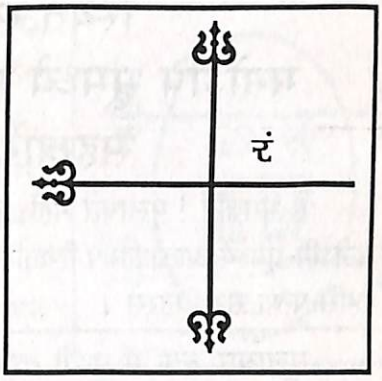


प्रस्तुत यन्त्र को **लाल चन्दन के टुकड़े** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१२ दिन** तक **प्रतिदिन १२०० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**सुं**'(स्+उ) है । जप का दशांश हवन '**सुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**सुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**सुं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तंथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **काली मिर्च** का नैवेद्य विहित है ।

लालचन्दन के टुकडे में यन्त्र लिखकर अनुष्ठान के बाद गले में धारण करने का भी विधान है । इस यन्त्र के प्रयोग से **सकलकार्य जय** तथा **कारागार से निवृत्ति** होती है ॥८॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'सुधासिन्धोर्मध्ये' इति अष्टममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**करान्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
सुं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्। अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्। नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। सकारं शृणु चार्वाङ्गि!शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्। पञ्चदेव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा। रजसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दुसहितं सदा। पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि!अधः कुण्डलिनी स्वयम्। पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं**
**स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि ।**
**मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्त्वा कुलपथं**
**सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे ॥9॥**

हे भगवति ! मूलाधारे महीं, कं मणिपूरे हुतवहमपि, स्वाधिष्ठाने हुतवहमेव, हृदि मरुतं, आकाशमुपरि, मनोऽपि भ्रूमध्ये आकाशमपि स्थितमिति विभक्तिव्यत्ययेन सर्वत्रानुषज्यते। सकलं कुलपथमपि भित्त्वा सहस्रारे पद्मे रहसि पत्या सह विहरसे ।

---

मूलाधार चक्र में पृथ्वी तत्त्व को एवं जल को भी मूलाधार चक्र में ही, मणिपूर चक्र में अग्नि तत्त्व को जिसकी स्थिति स्वाधिष्ठानचक्र में है, हृदय स्थित अनाहत चक्र में वायु तत्त्व को, और उसके ऊपर विशुद्धिचक्र में आकाश तत्त्व को, और भौंहों के मध्य आज्ञाचक्र में मन तत्त्व को इस प्रकार सकल कुलपथ (शक्ति के मार्ग) सुषुम्ना मार्ग के द्वारा सभी चक्रों का भेदन करके सहस्रदल वाले कमल में अपने पति शिव से संयुक्त होकर विहार करती है । भेदन के समय शक्ति की गति मूलाधार से सहस्रार की ओर होती है । सहस्रार से नीचे उतरते समय वह नाड़ियों को अमृत से सींचती हुई मूलाधार की ओर लौटती है ।।9।।

**મૂલાધાર ચક્રમાં પૃથ્વી છે, મણિપૂર ચક્રમાં જળ છે, સ્વાધિષ્ઠાન ચક્રમાં અગ્નિ વસે છે. હૃદયમાં વાયુ રહે છે અને ઉપર આકાશ છે. મન ભ્રૂકુટીની મધ્યમાં છે. ટૂંકાણમાં સમગ્ર કુલપથ ભેદીને તમે માતાજી સહસ્રદલના કમલમાં રહસ્યમાં પતિ સાથે વિહાર કરો છો. (૯)**

Breaking through the Mooladhara, the Manipura, the Svadhisthana, the Anahata, the Visuddhi, and Ajna chakras ( plexuses) and having crossed Prithvi (earth), Aapas (water) Tejas (fire), Vayu (air), Akasha (ether) and Manas (mind) tatvas of the respective chakras, Thou reacheth the thousand-petalled lotus and sporteth there with Thy spouse Sadasiva. [9]

---

**विशेष**-यहां सहस्रारदल से अभिप्राय श्रीचक्र का है । मूलाधारस्थ चतुर्दले भूपुरमये शक्तिरूपायाः कुण्डलिन्याः स्थानवत् । तत्वबीज इस प्रकार हैं- हं आकाशबीज,यं वायुबीज,रं अग्निबीज,वं वरुणबीज, लं भूबीज,मं मनोबीज, षं बुद्धिबीज, सं शक्तिबीज, हं चिद्बीज,शिवबीज,प्राणबीज, शं स्वरांश्च जीवबीज आदि ।

कुलपथभेद से पृथ्वी,अप्,अग्नि,वायु,आकाश,गन्ध,रस,रूप,स्पर्श,शब्द, नासिका,जिह्वा, चक्षु,त्वक्, श्रोत्र,वाक्,पाणि,पाद,पायु,उपस्थ,और मन का भेदन हो जाता है । मन से परे बुद्धि,अहङ्कार,प्रकृति, पुरुष,कला,अविद्या,विद्या,राग,नियति,माया,शिव,शक्ति रह जाते हैं ।

## पञ्चभूत विजय प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१० दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**मं**' है । जप का दशांश हवन '**मं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**मं मार्जयामि नमः**' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**मं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **क्षीर** तथा **पायस** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **बाहर गये व्यक्ति का प्रत्यागमन** एवं **पञ्चभूत जय** की प्राप्ति होती है ॥९।

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'महीं मूलाधारे' इति नवममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता । 'मं' बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**कृष्णां दशभुजां भीमां पीतलोहितलोचनाम् ।**
**कृष्णाम्बरधरां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम् ।**
**एवं ध्यात्वां मकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**मकारं शृणु चार्वङ्गि ! स्वयं परमकुण्डली ।**
**तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम् ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं तथा ।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि ।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
मं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**सुधाधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितैः**
**प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरपि रसाम्नायमहसः ।**
**अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयं**
**स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि ।।१०।।**

हे भगवति ! चरणयुगलान्तर्विगलितैः सुधाधारासारैः प्रपञ्चं सिञ्चन्ती रसाम्नायमहसः सकाशात् स्वां भूमिं पुनरप्यवाप्य भुजगनिभमध्युष्टवलयं स्वमात्मानं कृत्वा कुहरिणि कुलकुण्डे स्वपिषि।

---

हे पराशक्ति ! सहस्त्रारचक्र में रखे हुए तुम्हारे श्रीचरणों के बीच से झरने वाली अमृत धाराओं की वर्षा से पञ्चमहाभूतों से रचित शरीर के समस्त नाड़ियों (प्रपञ्च) को सींचती हुई अपने स्वस्थान मूलाधार को लौटकर अपना रूप सर्प के समान मण्डलाकार में परिवर्तित कर (साढ़े तीन कुण्डल) डालकर छोटे छिद्र वाले कुहर में सोती है । सहस्त्रार से नीचे मूलाधार को उतरने को अन्वय भूमिका कहते हैं ।।१०।।

**આપના ચરણયુગલોની મધ્યમાંથી અમૃતની ધારાઓ વહે છે અને વિશ્વને સીંચે છે. રસબ્રહ્મ (વેદો)ની આરાધનાની શક્તિથી છ ચક્રોને ફરી ઉત્પન્ન કરો છો. (તે છ ચક્રો જ્યારે દેવી સહસ્રારમાં કુલપથથી પધાર્યા ત્યારે અલોપ થયાં હતાં.) વળી તમો તમારા સ્થાનમાં પહોંચી જાવ છો અને સર્પાકારમાં સાડા ત્રણ ગૂંચળાં વાળી કુલકુંડ ગુફામાં સૂઈ જાવ છો. (૧૦)**

Thou drencheth the nadis (nerves) in the body with the flood of nectar gushing from Thy feet. Reaching again Thy own ground (Muladhara) and converting Thyself into a serpent with three coils and a half Thou sleepeth in the crevice in the centre of the Muladhara lotus. [10]

---

**विशेष**-पिछले श्लोक में कुण्डलिनी की जाग्रत होकर मूलाधार से सहस्त्रार यात्रा की उन्नेयभूमिका के वर्णन के बाद प्रस्तुत श्लोक में कुण्डलिनी की प्रत्यावृत्ति-भूमिका का वर्णन है । सुषुम्ना में व्यापक होकर फिर कुलकुण्ड(मूलाधार चक्र के ऊपर कुण्डलिनी का स्थान) में वापस आकर साढे तीन वलयाकार में कुण्डलिनी का सो जाना प्रत्यावृत्ति भूमिका है ।

योगाभ्यास के द्वारा कुण्डलिनी के जाग्रत होने पर अथवा सुषुम्णा मार्ग से आज्ञाचक्र का उल्लङ्घन होने पर उत्थित कुण्डलिनी का पुनः संवरण करना अति कठिन होता है । श्री कुण्डलिनी के जाग्रत होकर सहस्त्रारगामिनी होने से जीव व्यक्ति का बाह्य स्थूल सम्बन्ध छूट जाता है और वह एकाग्र होकर क्रमशः शान्त-प्रशान्त वृत्तियों में मग्न होने लगता है ।

कु अर्थात् पृथ्वी तत्व जहाँ लीन होता है उसे कुल कहते हैं,वही आधारचक्र है । लक्षणा करने से सुषुम्ना मार्ग ही कुल है यह सिद्ध होता है । यही कौलमत का रहस्य भी है । सुषुम्ना के मूल में कमलकन्दाकारछिद्र में विहरने वाली ही कुण्डलिनी शक्ति है और वही श्रीविद्या हैं ।

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **६ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**सुं**' है । जप का दशांश हवन '**सुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**सुं मार्जयामि नमः**' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**सुं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **केले** का नैवेद्य विहित है ।

मतान्तर में लालधागे में यन्त्र को बाँध धारण करे । इस यन्त्र के प्रयोग से **वीर्य वृद्धि** एवं **रजोदर्शन** होता है ॥१०॥

**शरीरशुद्धि/वीर्यवृद्धि प्रयोग**

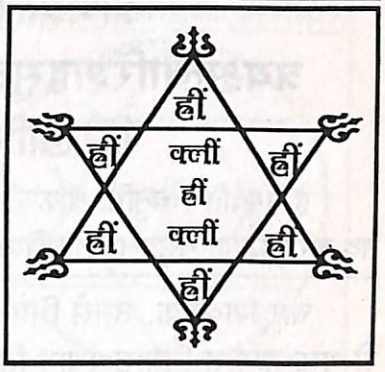


**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'सुधा-धारा-सारैश्चरण' इति दशममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं .....कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः .. करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
सुं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्। अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्। नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्। पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि! अधःकुण्डलिनी स्वयम्। पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि**
**प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।**
**त्रयश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय-**
**त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः ।।११।।**

हे भगवति ! चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शंभोः सकाशात्प्रभिन्नाभिः पञ्चभिः शिवयुवतिभिः नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः तव शरणकोणाः वसुदलकलाश्रत्रिवलयत्रिरेखाभिः सार्धं परिणताः सन्तः चतुश्चत्वारिंशदिति ।

---

चार शिवचक्र, उनसे भिन्न पाँच शिवयुवतियाँ (शक्तिचक्र) तथा प्रपञ्च के मूल कारण नौ तत्त्वों से युक्त तुम्हारा निवास स्थान तिरालीस कोणों का बना हुआ है । जो शम्भु के बिन्दु स्थान से भिन्न है । वह अष्टदल, सोलहदल, तीन रेखाओं एवं तीन वृत्तों से युक्त है ।।११।।

**ચાર (ત્રિકોણો) શ્રીકંઠોને લીધે તથા પાંચ (ત્રિકોણો) શિવ યુવતિઓ, જે બધાં બિન્દુ વડે છેદાય છે અને નવ (શ્રીચક્રના મૂળભૂત ત્રિકોણો) મૂળ પ્રકૃતિઓ કહેવાય છે. તેંતાળિસ- (ત્રિકોણોની બહાર) રચાએલ આઠ અને સોળ દળો વાળાં કમળો (અને કમળોની બહાર) ત્રણ વર્તુળો અને (વર્તુળોની બહાર) ત્રણ રેખાઓથી આપને વસવાના મંદિરના ખૂણાઓ રચાય છે. (૧૧)**

The angles of Thy abode (the Srichakra) which is made up of the nine mulaprakritis or basic triangles (the nine primary causative forces of the universe) consisting of the four distinct Siva triangles (with apex upwards), and the five distinct Sakti-triangles (with apex downwards) kept apart from the former by the Bindu, with the eight-petalled lotus, the lotus of sixteen pletals with the three circles around and the three lines, are counted as forty-three (forty-four) [11]

---

**विशेष**-श्रीचक्र ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों का प्रतीक होता है । इसकी रचना ४ शिवत्रिकोण और ५ शक्तित्रिकोणों के योग से होती है । शिव और शक्तित्रिकोणों का मुख एक दूसरे के विपरीत रहता है ।

प्रथम केन्द्रीय त्रिकोण को छोडकर शेष की संख्या ४२ है अतः त्रयश्चत्वारिंशत् पाठ ठीक है । ३६ तत्व (अव्यक्त प्रकृति,महत्,अहङ्कार,मन,पञ्चज्ञानेन्द्रियां,पञ्चकर्मेन्द्रियां,पञ्चतन्मात्राएं, पञ्चमहाभूत,माया के सात शुद्धाशुद्ध तत्व माया,काल,कला,नियति,अविद्या,राग और पुरुष पञ्चविद्याकलाएं शान्त्यातीता,शान्ति,विद्या,प्रतिष्ठा और निवृत्ति )के साथ सात धातु (रक्त,मांस,मेदा,अस्थि,स्नायु,मज्जा और अस्थि) मिला देने से ४३ हो जाते हैं ।

श्रीयन्त्र का लेखन दो तरह से होता है -१. सृष्टिक्रम २. संहारक्रम । कौलाचार में संहारक्रम होता है और समयाचार में सृष्टिक्रम ।

## बन्ध्यात्व निवृत्ति प्रयोग

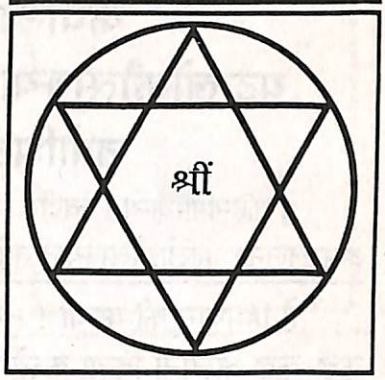


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **८१ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**चं**' है । जप का दशांश हवन '**चं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**चं मार्जयामि नमः**' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**चं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **गुड़ की खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **बाँझपन से निवृत्ति** प्राप्त होती है और दीर्घजीवी बुद्धिमान् संतान प्राप्त होती है ॥११॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिव' इति एकादशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। चं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः .. करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्..... अस्त्राय फट्

**ध्यानम्**

**तुषार-कुन्द-पुष्पाभां नानालङ्कार-भूषिताम् ।**
**सदा षोडश-वर्षीयां वराभय-करां पराम् ।**
**शुक्ल-वस्त्रावृतकटीं शुक्लवस्त्रोत्तरीयिणीं ।**
**वरदां शोभनां रम्यामष्ट-बाहु-समन्विताम् ।**
**च-वर्णं श्रृणु सु-श्रोणि चतुवर्ग-फलं प्रदं ।**
**कुण्डली-सहित धूम्रं महा-चण्डार्चितं पुरा ।**
**सततः कुण्डली-युक्तं पञ्च-देव-मयं सदा ।**
**सर्व-सृष्टि-प्रदं वर्णं पञ्च-प्राणात्मकं प्रिये! ।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
मं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं**
**कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चिप्रभृतयः ।**
**यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा**
**तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम् ।।१२।।**

हे तुहिनगिरिकन्ये ! त्वदीयं सौन्दर्यं तुलयितुं विरिञ्चिप्रभृतयः कवीन्द्राः कथमपि कल्पन्ते । यद्यस्मात्कारणात् अमरललनाः आलोकौत्सुक्यात् तपोभिः दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीं मनसा यान्ति ।

---

हे हिमवान् की कन्या ! तुम्हारे सौन्दर्य की उपमा देने के प्रयत्न में ब्रह्माप्रभृति कविश्रेष्ठ इत्यादि कुछ-कुछ कल्पना किया करते हैं, परन्तु वे भी सफल नहीं है । उस सौन्दर्य की इच्छा (उत्सुकता) से स्वर्ग की अप्सरायें ध्यानस्थ हो जाती हैं और परमशिव के नयनों के माध्यम से उनका दर्शन करने के लिए तपस्या से भी कठिनता से प्राप्त होने वाले दुर्लभ शिव सायुज्य पदवी को मानसिक रूप से प्राप्त करती हैं । परमशिव के नेत्रों के अलावा अन्य नेत्रों के लिए पराशक्ति के सौन्दर्य का आनन्द लेना असम्भव होने के कारण देवस्त्रियाँ शिव से आत्मसात् हो जाने की अर्थात् सायुज्य पदवी की इच्छा करती हैं ।।१२।।

**હે હિમગિરિકન્યા! તમારા સૌંદર્યની તુલના માટે કવિશ્રેષ્ઠો વિરંચિ અને અન્યો મથવા છતાં ભાગ્યે સફળ થાય; સ્વર્ગની લલનાઓ તે (સૌંદર્ય)ને જુએ છે. ત્યારે (તે પામવા માટે) ઉત્સુક મનથી, કલ્પનામાં ગિરીશ (શિવજી), જેમને તપથી મેળવવા દુષ્કર છે, તેમની સાથે એકરૂપ થાય છે. (૧૨)**

Oh, Daughter of the snow-clad Mountain (Himalaya) ! The best of thinkers-Brahma and others-are at great pains to find a suitable comparison to Thy beauty. Even the celestial damsels, out of great eagerness to get a glimpse of Thy splendor, mentally attain a condition of absorption into Siva, which is unobtainable even by penance. [12]

---

**विशेष-** ब्रह्मा सृष्टि के कर्ता हैं इसलिए सर्वप्रथम कवि हैं । चारों मुखों से वेदों का गान करते हैं । इसलिए सब कवियों में श्रेष्ठ हैं । परन्तु वे भी भगवती के सौन्दर्य की उपमा नहीं ढूंढ़ सके। इसलिए अन्य कवि तो कल्पना ही कर सकते हैं । यदि अप्सराओं की उपमा दी जाए तो वे भी भगवती के भुवनमोहन रूप को देखकर समाधिस्थ हो जाती हैं ।

यहां बहिर्याग और अन्तर्याग के द्वारा भगवती को प्रसन्न कर सायुज्यमुक्ति प्राप्त करने का विधान है । क्योंकि सहस्त्रार में शिवशक्ति का ऐक्य होने से परमपद की उपलब्धि कही है ।

सौ की संख्या संख्यातीत का उपलक्षण है । तात्पर्य यह कि भूर्भुवः स्वः आदि समस्त लोकों में स्थित सभी से तात्पर्य है ।

## कवित्वशक्ति प्राप्तिप्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **जल** में **मध्यमा उँगली** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**त्वं**' है । जप का दशांश हवन '**त्वं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**त्वं मार्जयामि नमः**' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**त्वं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है। इस अनुष्ठान का फल अतिविशिष्ट है तथा सद्यःफल प्रदायक है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **वशीकरण** एवं **कवित्व शक्ति** प्राप्त होती है, मूक भी वाक्पटु हो जाते हैं ॥१२॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'त्वदीयं सौन्दर्यं' इति द्वादशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। त्वं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थें जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
त्वं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थें जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं सदाषोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् । नानालङ्कारभूषां वा सर्वसिद्धिप्रदायिनीं। एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् । तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली। पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा । त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् । त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम्। कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् । शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेवितां। एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययं। पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा। त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम् । पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं**
**तवापाङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः ।**
**गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्रस्तसिचया**
**हठात्त्रुट्यत्काञ्च्यो विगलितदुकूला युवतयः ।।१३।।**

हे भगवति ! वषींयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं तवापाङ्गालोके पतितं नरं शतशः युवतयः गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्रस्तसिचयाः हठात् त्रुट्यत्काञ्च्यः विगलितदुकूलाः सत्यः, तादृशं नरं मदनमिति मत्वेति शेषः, अनुधावन्ति ।

---

वृद्धावस्था को प्राप्त, देखने में कुरूप, प्रेमक्रीड़ाओं से अज्ञान मनुष्य भी तुम्हारी कृपादृष्टि पड़ने मात्र से ऐसा रमणीय (सुन्दर) हो जाता है कि सैकड़ों की संख्या में युवतियां "जिनके केश बिखर गये हैं; कुच-कलशों (स्तनों) पर से वस्त्र फिसल गये हैं, जिनकी मेखला जबरन टूट गयी है और जिनकी साड़ी शरीर पर से उतरी जा रही है" उसके पीछे गिरते-पड़ते भागने लगती हैं। जो देवी का कृपापात्र बनता है वह कामेश्वर का अंश बन जाता है । अत: स्त्री रूप में जिन शक्तियों का वर्णन किया जाता है वे उससे आकर्षित होती हैं ।।१३।।

**ઉંમર લાયક, આંખે દીઠો ન ગમે અને પ્રેમમાં જડસુ તેવો વૃદ્ધ જો તમારી કટાક્ષ દૃષ્ટિમાં પડી જાય, તો સેંકડો યુવતીઓ તેની પાછળ દોડવા માંડે છે, તેમના વાળના વેણીબંધો છૂટી જાય છે, કલશ જેવા સ્તનો ઉપરના વસ્ત્રો સરી જાય છે, કમરબંધ હઠે તૂટી જાય છે અને તેઓ વસ્ત્રોવિહીન થઇ જાય છે. (૧૩)**

Youthful maidens, with their braids of hair loosened and dropping, the garments over their breasts falling down, their girdles breaking off suddenly and their silken robes slipping down, run in hundreds after a man, who is far advanced in years, uncouth to look at, and incapable of amorous sport, but has fallen within the ambit of Thy side-glances. [13]

---

**विशेष**-शक्तिजागरणसे कायविभूति भी प्राप्त हो सकती हैं जो षट्चक्रवेध द्वारा पञ्चमहाभूत जय होने पर होती है ।

योगदर्शन के अनुसार रूपलावण्य,बल और शरीर का वज्रवत् सुगठित होना कायसम्पत् कहा जाता है । भूतजय से अणिमादि सिद्धियों की भी प्राप्ति होती है । प्रत्येक नाडी में अमृत का सञ्चार होने का फल ही यह कायसम्पत् है । ऊर्ध्वरिता मनुष्य के शरीर की रसोत्पादकता बढ जाने से निर्माणशक्ति का ह्रास बन्द हो जाता है और स्नायुओं में जीवन शक्ति का संचार होकर सातों धातुओं का विधिवत पुनर्निर्माण होने लगता है ।

## वशीकरण प्रयोग

क्लीं क्लीं क्लीं
साध्यम्
क्लीं क्लीं क्लीं

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **६ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर '**नं**' है । जप का दशांश हवन '**नं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**नं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**नं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **त्रिमधु** का नैवेद्य विहित है।

अनुष्ठान के अनन्तर अभिमन्त्रित यन्त्र को विधानपूर्वक गले में धारण करें ।इस यन्त्र के प्रयोग से **स्त्री-पुरुष का परस्पर** वशीकरण होता है ॥१३॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'नरं वर्षीयांसं' इति त्रयोदशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। नं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**दलिताञ्जनवर्णाभां ललज्जिह्वां सुलोचनाम्।**
**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारु-चन्दन-चर्चिताम्।**
**कृष्णाम्बर-परीधानां ईशद्धास्यमुखीं सदा।**
**एवं ध्यात्वां नकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**नकारं शृणु चार्वङ्गि! रक्तविद्युल्लताकृतिः।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली।**
**त्रिगुणाशक्तिसंयुक्तं हृदि भावय पार्वति!।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
नं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
.....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
.....नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**क्षितौ षट्पञ्चाशद्द्विसमधिकपञ्चाशदुदके**
**हुताशे द्वाषष्टिश्चतुरधिकपञ्चाशदनिले ।**
**दिवि द्विःषट्त्रिंशन्मनसि च चतुःषष्टिरिति ये**
**मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम् ।।१४।।**

हे भगवति ! ये मयूखाः क्षितौ षट्पञ्चाशत् , उदके द्विसमधिकपञ्चाशत् , हुताशे द्वाषष्टिः, अनिले चतुरधिकपञ्चाशत् , दिवि द्विःषट्त्रिंशत् , मनसि चतुःषष्टिः इति तेषामुपरि तव पादाम्बुजयुगं वर्तत इति शेषः ।

---

पृथ्वी तत्त्वरूपी मूलाधार में ५६, जल तत्वरूपी मणिपूर चक्र में ५२, अग्नि तत्त्वरूपी स्वाधिष्ठान में ६२, वायुतत्त्वरूपी अनाहद में ५४, आकाशतत्त्व से युक्त विशुद्धि में ७२, तथा मन तत्त्वरूपी आज्ञाचक्र में जो ६४ मयूख (किरणें) हैं उन सबके ऊपर आपके चरण-कमल हैं। उपरोक्त किरणें छः चक्रों से सम्बन्ध रखने वाले तत्त्वों की हैं और इन छहों चक्रों से ऊपर (आज्ञाचक्र) के ऊपर भगवती के श्रीचरण युगल शोभित होते हैं । सब किरणों को सुषुम्ना मार्ग में लीन करते हुए (छहों चक्रों) का अतिक्रमण करते हुए आज्ञाचक्र के ऊपर अर्थात् भगवती के चरणों तक पहुँचा जा सकता है ।।१४।।

**(મૂલાધાર ચક્ર) પૃથ્વીમાં ૫૬° (મણિપૂર ચક્ર) જળમાં ૫૨° (સ્વાધિષ્ઠાન ચક્ર) અગ્નિમાં ૬૨° (અનાહત ચક્ર) હવામાં ૫૪° (વિશુદ્ધિ ચક્ર) આકાશમાં ૭૨° અને (આજ્ઞા ચક્ર) મનમાં ૬૪° આમ ૩૬૦° કિરણો છે. તેમની ઉપર (સહસ્રાર ચક્રમાં ) આપનાં ચરણકમળોનું યુગ્મ વિરાજે છે. (૧૪)**

Fifty-six rays shine in the Muladhara comprised of the element of Earth (Prithvi tattva), fifty-two rays shine in the Manipura of the essence of Water (Apatattva), sixty-two in the Svadhisthana (the Agni or Tejas-tattva) being of the nature of Fire, fitty-two in the Anahata of the character of Air (Vayu-tattva); seventy-two rays in the Visuddhi of the form of Ether (Akasa-tattva) and sixty-four in the Ajna (manas-tattva). Far above all these shine the pair of Thy lotus feet. [14]

---

**विशेष**-मातृका न्यासमें छहों चक्रोंका न्यास हंसः उक्त किरणोंके अक्षरोंसे किया जाता है। ये छः किरणें छः चक्रोंसे सम्बन्ध रखने वाले तत्वों की किरणें हैं । अभिप्राय भगवती के चरणकमल आज्ञाचक्र में विराजने से है । उक्त किरणों में आधी शिवात्मिका और आधी शक्त्यात्मिका हैं अर्थात् दो दो के जोडे से पृथिवी में २८,जलमें २६,अग्निमें ३१,वायुमें २७,आकाशमें ३६,और मन में ३२ किरणोंके जोडे हैं । सबका योग ३६० है जो चान्द्रवर्ष के अनुसार एक वर्ष की ३६०तिथियों से उपमित की जाती है । प्रत्येक पक्षकी १५ तिथियोंको १५ नित्या कहते हैं ।

श्रीचक्रस्थ षोडशदलकी गुप्ततर योगिनियाँ नित्या कहलाती हैं ।

## दुर्भिक्ष/रोगनिवृत्तिप्रयोग

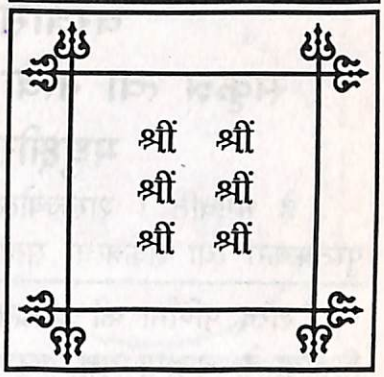


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**क्षं**' है । जप का दशांश हवन '**क्षं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**क्षं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**क्षं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **क्षीर** तथा **पायस** का नैवेद्य विहित है ।

एकान्त स्थान में विधिवत् अनुष्ठित यह अनुष्ठान शीघ्र फल प्रदान करने वाला है । इस यन्त्र के प्रयोग से **दुर्भिक्ष निवारण** तथा **वसन्तादिरोग** की निवृत्ति होती है ॥१४॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'क्षितौषट्-पञ्चाशद्' इति चतुर्दशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। क्षं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**चतुर्भुजां त्रि-नयनां बाहु-वल्ली-विराजिताम्।**
**रत्न-कङ्कण-केयूर-हार-नूपुर-भूषिताम्।**
**शुक्लाम्बरांशुक्ल-वर्णां द्विभुजां रक्त-लोचनाम्।**
**श्वेत-चन्दन-लिप्ताङ्गीं मुक्ताहारोप-शोभिताम्।।**
**एवं ध्यात्वां क्ष-कारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**क्षकारं शृणु चार्वङ्गि! कुण्डलीत्रयसंयुतम् ।**
**चतुर्वर्ग-मयं वर्णं पञ्च-देव-मयं तु तत्।**
**आघण्ट-सिंह-बीजं च पञ्च-प्राणात्मकं प्रिये!।**
**शरच्चन्द्र-प्रतीकाशं हृदि भावय सुन्दरि!।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
क्षं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमुकुटां**
**वरत्रासत्राणस्फटिकघटिकापुस्तककराम् ।**
**सकृन्न त्वा नत्वा कथमिव सतां सन्निदधते**
**मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणाः फणितयः ।।१५।।**

हे भगवति ! शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमुकुटां वरत्रासत्राणस्फटिकघटिका(घुटिका) पुस्तककरां त्वा सकृन्नत्वा सतां मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणाः फणितयः, कथमिव न सन्निदधते ।

---

शरद् पूर्णिमा की चन्द्रिका (चाँदनी) के समान स्वच्छ, निर्मल, धवल वर्णों वाली, तथा द्वितीया के चन्द्रमा युक्त जटाजूट रूपी मुकुटों से सुशोभित, अपने दोनों हाथों में वरमुद्रा एवं भयमुक्ति की अभयमुद्रा को प्रदर्शित किये हुए तथा दोनों कर-कमलों में, एक में शुद्ध स्फटिक मणियों की माला एवं दूसरे में पुस्तक धारण किये हुए ऐसें तुम्हारे सौम्य स्वरूप का एक बार भी वन्दना न करने वाले मनुष्य को मधु, दूध एवं द्राक्षा के मिश्रण के समान मधुर सत्कवियों के समान मधुर कविता करने की शक्ति कैंसे प्राप्त होगी?।।१५।।

**શરદ ઋતુના ચંદ્રતેજ જેવાં શુભ્ર, ગૂથેલા વાળ અને લટોથી બનેલી ચંદ્રથી યુક્ત કલગી ધારેલાં, વરદાન આપતો, ભયમાંથી મુક્તિ આપતો, સ્ફટિક માળા ધારણ કરતો અને પુસ્તક યુક્ત, એમ ચાર હાથ વાળાં માતાજીને જે સત્પુરુષો કેવળ એક વાર પણ નમન કરતા નથી, તેઓ મધ, ક્ષીર અને દ્રાક્ષના માધુર્યથી ભરેલી વાણી પ્રાપ્ત કરવામાં શી રીતે સફળ થાય? (૧૫)**

How will not words (speech) sweet as honey, milk and grapes, emanate from the tongue of such as have bowed even once before Thee, whose form is as clear and bright as the moon-light of the Sarad ritu (autumnal moon ) whose head is adorned with a crown, whose matted hair-locks have a crescent-moon on them and whose four hands hold the poses of bestowing boons and affording protection form fear, a string of crystal beads (sphatika) and a book. [15]

---

**विशेष**-कुण्डलिनी शक्ति जागकर क्रियावती,कलावती,वर्णमयी और वेधमयी इन चार रूपों में प्रकट होती है । शारीरिक कम्पादि,हंठयोग के आसन, प्राणायाम मुद्रा,नृत्यादि क्रियाओं में क्रियावती रूप है । ३६ तत्वों के व्यतिरेक और शुद्धि की क्रियाओं में कलावती रूप है । वर्णात्मिका सरस्वती मन्त्रमयी है और वेधमयी षट्चक्र का भेदन करती है ।

ऋग्वेद(१.२२.१६४.४५)के अनुसार वर्णमयी सरस्वती चार पाद वाली होती है जिसे विद्वान् ब्राह्मण जानते हैं । उनमें से तीन परा,पश्यन्ती,और मध्यमा गुहा में निहित हैं और चौथी वैखरी को मनुष्य लोग बोलते हैं । इस मन्त्र के साथ ऐं बीज की उपासना की जाती है ।

**विद्या-कवित्व-प्राप्ति प्रयोग**

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** अथवा **जल** में **चन्दन** अथवा **उँगली** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४१ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**शं**' है । जप का दशांश हवन '**शं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**शं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**शं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव** तथा **घृत** हवनीय द्रव्य है । **मधु, केला** तथा **चीनी** का नैवेद्य विहित है।

जल में यन्त्र लिखे तो अनुष्ठान के बाद उसे पी जाय और स्वर्ण में गले में धारण करे । इस यन्त्र के प्रयोग से **ज्ञान** एवं **कवित्व शक्ति** की प्राप्ति होती है ॥१५॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'शरज्ज्योत्सना-शुद्धां' इति पञ्चदशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। शं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**करान्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
शं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारु-चन्दन-चर्चितां।**
**शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मिताम्।**
**रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां।**
**देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः।**
**शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते!**
**रक्त-वर्ण प्रभाकारं स्वयं परम-कुण्डली।**
**चतुर्वर्ग-प्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं।**
**पञ्चदेव मयं वर्णं पञ्च-प्राणात्मकं प्रिये!।**
**रत्न-पञ्च-तमोद्युक्तं त्रिवृट-सहितं सदा।**
**त्रिशक्ति - सहितं वर्णं आत्मादि-तत्त्व-संयुतम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**कवीन्द्राणां चेतः कमलवनबालातपरुचिं**
**भजन्ते ये सन्तःकतिचिदरुणामेव भवतीम् ।**
**विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतरशृङ्गारलहरी-**
**गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी ।।१६।।**

हे भगवति ! कवीन्द्राणां चेतः कमलवनबालातपरुचिं अरुणामेव भवतीं कतिचित् ये सन्तः भजन्ते, अमी सन्तः बिरिञ्चिप्रेयस्याः तरुणतरशृङ्गारलहरीगभीराभिः वाग्भिः सतां रञ्जनं विदधति ।

---

कवि चक्रवर्तियों के चित्तरूपी कमल वन को विकसित करने के लिए उदित होते हुए सूर्य के समान 'अरुणा' नाम से सम्बोधित आपका जो कोई थोड़े महान पुरुष भजन करते हैं वे ब्रह्माजी की प्रिया (सरस्वती) की समृद्ध तरुणतर शृङ्गाररस की धारा जैसी गम्भीर कविताओं द्वारा ओजस्वी वाक् शक्ति के द्वारा सज्जन पुरुषों का मनोरञ्जन किया करते हैं । इस रूप में देवी की आराधना करने वाले मनुष्य को शृङ्गाररस से युक्त कविता रचना करने की सामर्थ्य शक्ति प्राप्त होती है । कवियों के चित्तरूपी कमल-वन को विकसित करने के लिए अरुणादेवी बालाभगवती सूर्य के समान हैं ।।१६।।

**કવીન્દ્રોના ચેતો-કમળની પાંખડીઓ પ્રાતઃકાળના નવોદિત સૂર્યની જેમ તમો ઉધાડો છો, એવાં દેવી અરૂણા (પ્રભાતનો રાતો પ્રકાશ) છો.- જે વિરલ સત્પુરુષો તમને આ રૂપે, વિરંચિની પ્રિયા (સરસ્વતી) ની અતિતરુણ શૃંગારની લહરી શી ગંભીર વાણીથી ભજે છે તેઓ બુધજનોને આનંદ આપે છે. (૧૬)**

The few virtuous men who worship Thee, as red in colour, as of the rising Sun, causing the lotus buds (heart lotuses) of the greatest poets to bloom, enables them to delight the assemblage of wise critics with their speech, resembling that of Brahma's beloved Sarasvati, exuberant with the flow of highly delectable sentiment of love. [16]

---

**विशेष**-यहाँ कामकूट की देवी इच्छाशक्ति का ध्यान बताया गया है ।

'बालातपरुचि' में बाला पद स्पष्टरूप से बाला मन्त्र की ओर ध्यान दिलाता है जिसकी उपासना रूपी तप से चित्तरूपी कमलवन का विकसित होना भी प्रतिध्वनित होता है । क्योंकि 'बाला-तप' का अर्थ 'बाला एवं आतपः' अर्थात् सूर्य सदृश बाला भगवती इत्यादि भी किया जा सकता है । यह अर्थ लेने से श्लोक का भाव यह होगा कि कवीन्द्रों के चित्त रूपी कमलवन को विकसित करने के लिए अरुणा देवी बाला भगवती सूर्य के सदृश हैं ।

जहाँ पिछले श्लोक में भगवती के सात्विकरूप का चित्रण है वहीं प्रस्तुत श्लोक में रजोगुणी स्वरूप का निदर्शन किया गया है ।

## कवित्व सिद्धि प्रयोग

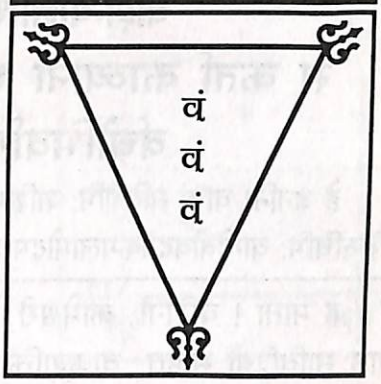


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४१ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**कं**' है । जप का दशांश हवन '**कं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**कं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**कं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीर पुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है।

इस यन्त्र के सम्यगनुष्ठान से मूर्खता की निवृत्ति और साधुवृत्ति का उदय होता है । यन्त्र का धारण करने से **वेदशास्त्रादिज्ञान** की प्राप्ति होती है ॥१६॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'कवीन्द्राणां चेतः' इति षोडशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। कं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
कं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहु-वल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्न-कङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु हन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा।आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः।त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभि-**
**र्वशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि सञ्चिन्तयति यः ।**
**स कर्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गिरुचिभि-**
**र्वचोभिर्वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः ।।१७।।**

हे जननि! वाचां सवित्रीभिः शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभिः वशिन्याद्याभिः सह त्वां यः संचिन्तयति स महतां भङ्गिरुचिभिः वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः वचोभिः काव्यानां कर्ता भवति ।

---

हे माता ! वशिनी, कामेश्वरी, मोदिनी, विमला, अरुणा, जयिनी, सर्वेश्वरी और कौलिनी इन आठ सावित्रियों सहित, वाक्शक्ति की सञ्चालिका चन्द्रकान्त मणि को तोड़ने से प्राप्त हुई कान्ति वाली, तुम्हारे दिव्य स्वरूप का जो मनुष्य चिन्तन करता है वह महान् महाकाव्यों के समान प्रकाशवान्, उच्चकोटि के काव्यों की रचना करने का सामर्थ्य रखता है । उसकी सुन्दर कवितायें सरस्वती देवी के मुख-कमल की सुगन्धित मधुरता से परिपूर्ण होती हैं ।।१७।।

**વાચાની પ્રેરણાદાત્રી અને ચંદ્રકાન્ત મણિના ટુકડા જેવી ઉજ્જ્વળ વશિની અને અન્ય દેવીઓ-જે કોઈ તેમની સાથે તારું ધ્યાન ધરે છે, તે હે જનની ! ચતુર શબ્દોથી ગૂંથાયેલાં ઉત્તમ કાવ્યનો રચનાર બને છે, જે વાગ્દેવી સરસ્વતીના મુખકમળમાંના સુગંધ યુક્ત માધુર્યવાળાં હોય છે. (૧૭)**

He who meditates on Thee together with the progenitors of speech, Vasini and others who have the brilliant lustre of the freshcut moonstone, becomes the author of great epic poems, sweetened by styic and celicious like the fragrance of the lotus-like mouth of the Goddess of Speech (Sarasvati). [17]

---

**विशेष**-यहाँ शक्तिकूट की देवी ज्ञानशक्ति का ध्यान बताया गया है । वशिन्यादि अष्ट वाग्देवियों की शोभा को चन्द्रकान्त मणि की शोभा के अनुसार बताते हुए उनके ध्यान का उपदेश करते हैं ।

जैसे चन्द्रमा की ज्योज्स्ना से चन्द्रकान्त मणि द्रवीभूत होती है वैसे ही पन्द्रहवें श्लोक में कही गयी शरद्ज्योत्स्नाशुद्धा भगवती के ध्यान से आठों वाग्देवियां द्रवीभूत होने लगती हैं और उनके मन्त्रस्वरूप अ क च ट त प य श वर्गवाली सम्पूर्ण मातृका शक्तियां चन्द्रकान्त मणियों की नाईं,जो समस्त वैखरी वाणी का वर्णात्मक आधार है,द्रवीभूत होकर उस कवि में वर्णपदमन्त्र-विग्रहा नवरसयुता वैखरी शक्ति का विकास करने लगती है ।

प्रस्तुत श्लोक से सात्विक और राजसिक दोनों भावों को एकरूपता मिलती है । साथ ही 'महतां महाकाव्यानाम्' पद से अभिप्राय ऋषिप्रणीत शास्त्रों का है । अकारादि स्वर धूम्र,ककारादि ठान्त सिन्दूर,डादिफान्त गौर,बादिलान्त अरुण,वादिसान्त कनकवर्णी,ह और क्ष विद्युद्वर्णी होते हैं ।

## सकलकला नैपुण्यावाप्ति-प्रयोग

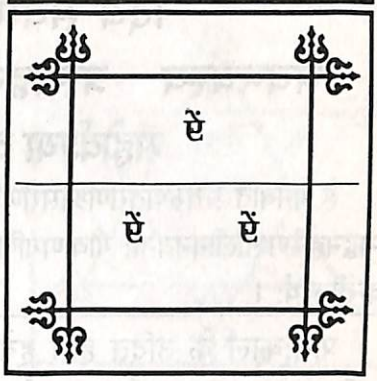


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **९१ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**सं**' है । जप का दशांश हवन '**सं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**सं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**सं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीर पुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **मधु, केला, दूध, चीनी** एवं **खाँड़** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के अनुष्ठान से **सकलकला** की प्राप्ति तथा सभा पाण्डित्य द्वारा वर्चस्व प्राप्त होता है ॥१७॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'सवित्रीभिर्वाचा' इति सप्तदशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**करीष-भूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्।**
**अस्थि-माल्यामष्ट-भुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्।**
**नागेन्द्र-हार-भूषाढ्यां जटा-मुकुट-मण्डिताम्।**
**सर्वसिद्धि-प्रदां नित्यां धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।**
**एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्ति-बीजं परात्परम्।**
**कोटि-विद्युल्लताकारं कुण्डली-मय-संयुतम्।**
**पञ्च-देव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा।**
**रजस्सत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
सं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तनुच्छायाभिस्ते तरुणतरणिश्रीसरणिभि-**
**र्दिवं सर्वामुर्वीमरुणिमनिमग्नां स्मरति यः ।**
**भवन्त्यस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयनाः**
**सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाणगणिकाः ।।१८।।**

हे भगवति ! तरुणतरणिश्रीसरणिभिः ते तनुच्छायाभिः सर्वां दिवं उर्वीं च अरुणिमनिमग्नां यः स्मरति अस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयनाः गीर्वाणगणिकाः ऊर्वश्या सह कति कति न वश्या भवन्ति ? सर्वा अप्सरसो वश्या भवन्तीत्यर्थः ।

---

प्रातःकाल के उदित होते हुये सूर्य के समान सुन्दर कान्ति से युक्त तुम्हारे शरीर की छाया (कान्ति) से आकाश और सम्पूर्ण पृथ्वी को अपनी हल्की लालिमा में निमग्न करती हुई तुम्हारे ऐसे स्वरूप का जो साधक स्मरण करता है उसके वश में 'घबरायी हुई वन की हिरणियों के जैसे चञ्चल, सुन्दर, दीर्घ नयनों वाली उर्वशी सहित कितनी ही स्वर्ग की अप्सरायें' हो जाती हैं ॥१८॥

**નવોદિત સૂર્યમાંથી પ્રગટતાં તેજ કિરણોના ભાર્ગો સમું તમારા તનનું સૌન્દર્ય છે. જે કોઈ નભને અને તેના રાતા આભાસમાં ડૂબેલી વિશાળ પૃથ્વીને મનમાં સ્મરે છે તેના વશમાં ન આવી હોય એવી, વનનાં હરણાંના ભયગ્રસ્ત નેત્રો જેવાં નેત્રો વાળી, ઉર્વશી સહ સ્વર્ગની અપ્સરાઓમાં, ભાગ્યે જ કોઈ હશે. (૧૮)**

How many celestial courtesans including Urvasi, with eyes bashful like those of frightened deer of the forest, do not become fascinated by one who meditates on the entire Heaven and Earth as submerged in the redness of the lustre of Thy body resembling the splendour of the rising (moning) Sun's rays ? [18]

---

**विशेष**-यहाँ ज्ञानी की दिव्य दृष्टि का,जो सब जगत् को ब्रह्ममय देखने लगती है,वर्णन है । इसमें साधक की साधना को बिगाडने वाली देवाङ्गनाओं का वर्णन है ।

अप्सराओं से दिव्य शक्तियों का भी अभिप्राय है । योगदर्शन के विभूतिपाद के ५१वें सूत्र में योगियों को होने वाली दिव्यशक्तियों के साक्षात्कार का वर्णन है । जो कि योगियों की ऋतम्भरा प्रज्ञा के उदय से मधुमती भूमिका में होता है । यह शुद्ध और सत्त्वगुण प्रधान भूमिका है । इसमें योगी को सर्वत्र भगवती की अरुणछाया दिखती है । योगिजनों को इन स्थानदेवताओं से बचना चाहिए । और मन में यह सोचना चाहिए कि मैंने बडे यत्न से इस क्लेशतिमिर को दूर करने वाले योगप्रदीप का प्रकाश प्राप्त किया है । तृष्णा की कारणभूत विषयभोगों की आँधी कहीं इस योग रूपी दीपक को बुझा न दे । कहा है-

**यावकाब्धौ निमग्नां यो दिवं भूमिं विचिन्तयेत् । तस्य सर्वा वशं याताः त्रैलोक्यवनिता द्रुतम् ।**

## सर्व-वशीकरण-प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें । बीजाक्षर '**तं**' है । जप का दशांश हवन '**तं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**तं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**तं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **क्षीर, पायस** एवं **ताम्बूल** का नैवेद्य विहित है ।

चन्दन,कुमकुम अथवा पुष्प अभिमन्त्रित कर उसे और यन्त्र को गले में धारण करने से सर्वजनवशीकरण और **सकलप्राणि वश्यता** होती है ॥१८॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तनुच्छायाभिस्ते तरुण' इति अष्टादशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
तं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम्।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत्।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम्।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
.....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो**
**हरार्धं ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम् ।**
**स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु**
**त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम् ।।१९।।**

हे हरमहिषि ! मुख बिन्दुं कृत्त्वा तस्याधः कुचयुगं कृत्वा तदधः हरार्धं कृत्वा तत्र ते मन्मथकलां यः ध्यायेत् स सद्यः वनिताः संक्षोभं नयतीति यत् तत् अतिलघु; किं तु रवीन्दुस्तनयुगां त्रिलोकीमपि आशु भ्रमयति ।

---

हे सदाशिव की महाराज्ञि ! श्रीचक्र के मध्य में स्थित बिन्दु को तुम्हारा मुख बना कर, दोनों स्तनों को उनके नीचे दो और बिन्दु बनाना चाहिए । उन अङ्गों में तुम्हारे 'कामकला' बीज 'क्लीं' का जो ध्यान करता है वह शीघ्रातिशीघ्र स्त्रियों के चित्त में क्षोभ उत्पन्न कर देता है यह तो अत्यधिक छोटी बात है, उस साधक में तो इतना सामर्थ्य होता है कि वह त्रिलोकी रूप स्त्री को जिसके कि सूर्य एवं चन्द्रमा दो स्तन रूप है अति शीघ्र मोहित कर लेगा ।।१९।।

**(ह्रीं અક્ષરના ) બિંદુને તમારું વદન, તેની નીચેના ભાગને તમારું સ્તનયુગલ અને તેની નીચે હરનો (નારી) અર્ધ, જે કોઈ. હે હરની મહારાણી ! આ રીતે આપની મન્મથ (કામ ) કલાનું ધ્યાન ધરે છે. તે ક્ષણમાં સ્ત્રીઓમાં ક્ષોભ પૈદા કરે છે. આ તો તુચ્છ વાત છે પણ તે સૂર્ય-ચન્દ્ર જેમના સ્તન છે , તે ત્રિલોકીને એકાએક ભમાવે છે.(૧૯)**

Oh Queen of Hara ! That one who meditates on Thy Kamakala, treating Thy face as the Bindu, the pair of breasts under it and the half of the letter 'H' below it, at once impassions women, is but a trifle: he swiftly entices the Triloki (three worlds) that has the sun and the moon for her breasts. [19]

---

**विशेष**-अब यहाँ कामकला का ध्यान कहते हैं । क्लीं बीज के अनुसार जो क ल में ककार के बिन्दुरूपी मुख के नीचे लकार के दो बिन्दुओं को दोनों स्तनों से उपमित करके ईकाररूपी हरार्धाङ्गमहिषी के योग से बनती है । इस मन्त्र के प्रयोग का फल इह लोक की स्त्रियों को तो क्या तीनों लोकों को वश में करना कहा है ।

यह त्रिलोकी भी विराट् स्त्रीवत् ही है जिसके सूर्य और चन्द्रमा दोनों स्तन सदृश हैं । इस उपमा से स्त्रीमात्र में मातृभाव जागृत करने का प्रयास किया गया है । क्योंकि-'विद्यासमस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियाः समस्ताः सकला जगत्सु।'अर्थात् संसार में जितनी भी स्त्रियाँ हैं माता वे सब की सब तुम्हारे ही भेद हैं । वस्तुतः तुम्हारे सिवा इस संसार में अन्य कोई भी नहीं है ।

बालक जब भी मां का चिन्तन करता है तो उसे माता की छवि में स्तन अवश्य दिखाई देते हैं क्योंकि पैदा होते ही सर्वप्रथम स्तनों से ही उसका सामना होता है ।

## सर्वलोकवशीकरण-प्रयोग

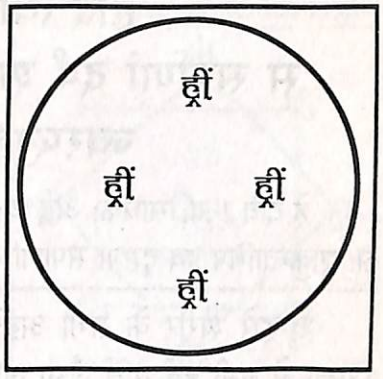


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **२५ दिन** तक **प्रतिदिन १२०० मन्त्र** का जाप करें एवं अभिमन्त्रण कर धारण करें । बीजाक्षर '**मुं**' है । जप का दशांश हवन '**मुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**मुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**मुं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **दूध, मधु** एवं **केले** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र को अभिमन्त्रणकर धारण करने से **सर्वजन (राजराक्षसमृगस्त्री)वश्यता** की सिद्धि होती है । राजराक्षसमृगस्त्री कहने का भाव समस्त प्राणिमात्र से है ॥१९॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'मुखं बिन्दुं' इति एकोनविंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। मुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**पञ्चदेव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा।**
**रजसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा।**
**कृष्णां दश-भुजां भीमां पीत-लोहित-लोचनाम्।**
**कृष्णाम्बर-धरां नित्यां धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।**
**एवं ध्यात्वां म-कारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**म-कारं शृणु चार्वङ्गि! स्वयं परम-कुण्डली।**
**तरुणादित्य-सङ्काशं चतुर्वर्ग-प्रदायकम्।**
**पञ्च-देव-मयं वर्णं पञ्च-प्राण-मयं तथा।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
मुं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरुम्बामृतरसं**
**हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः ।**
**स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव**
**ज्वरप्लुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधाधारसिरया ।।२०।।**

हे देवि ! यः साधकः अङ्गेभ्यः किरणनिकरुम्बामृतरसं किरन्तीं हिमकरशिलामूर्तिमिव हृदि त्वाम् आधत्ते, सः शकुन्ताधिप इव दृष्ट्या सर्पाणां दर्पं शमयति, सुधाधारसिरया दृष्ट्या ज्वरप्लुष्टान् सुखयति ।

---

तुम्हारे शरीर के सभी अङ्गों से किरणों के समूह रूपी अमृतरस झरने वाली और चन्द्रकान्त शिला से बनी हुई मूर्ति जैसा जो मनुष्य तुम्हारा हृदय में ध्यान करता है वह सर्पों के दर्प को उसी प्रकार दूर करता है जिस प्रकार कि पक्षिराज गरुड़ । और अपनी अमृत की वर्षा करने वाली नाड़ी के द्वारा दृष्टिमात्र से ही ज्वर से पीड़ित मनुष्यों की पीड़ा दूर कर सुख पहुँचाता है । जिस प्रकार हिम बनाने वाले चन्द्रमा की चाँदनी से द्रवीभूत होने वाली चन्द्रकान्त मणि-चन्द्रमा की किरणों से पिघलती है ठीक उसी प्रकार चन्द्रमण्डल के आज्ञाचक्रस्थ अधोमुख चन्द्रबिम्ब से हृदयस्थित भगवती की प्रतिमा भी अङ्ग-प्रत्यङ्ग से अमृतरस रूपी किरणें निकालने लगती है जिस प्रकार गरुड़ को देखकर सर्प डरकर चुप (शान्त) हो जाता है उसी प्रकार साधक सर्पों के दर्प को भी शान्त कर सकता है । यहाँ ज्वर से सामान्य ज्वर भाव न समझकर संसार के दुःखरूपी ज्वर का भाव ग्रहण करना चाहिए ।।२०।।

**તમારા અંગોમાંથી અસંખ્ય કિરણોમાં તમો અમૃત રસ ફેલાવો છો. જે કોઈ પોતાના હૃદયમાં ચંદ્રમણિની શિલાની મૂર્તિના રૂપમાં તમારું ધ્યાન ધરે છે, તે ગરુડ સમો સર્પોના દર્પ ને શમાવનાર થાય છે અને અમૃત વરસાવતી નજરે તે જ્વરથી પીડાતાને સુખ અપાવે છે.(૨૦)**

One, who, in his heart, meditates on Thee as having an image of the moonshine (chandrakanta) stone with a multitude of rays of nectar pouring out of the limbs, by mere look, subdues the pride of serpents, like the lord of birds, and cures persons afflicted by bodily diseases through his nectar-nadi (Nectar-ridden nerve) [20]

---

**विशेष**-यह मृतसंजीवनी विद्या है ।

इसके बीज 'हौं जूं सः' शिवशक्तिमय हैं । हौं शिवबीज,जूं जीवनबीज,सः शक्तिबीज है । शिवबीज हौं से जीवनशक्ति जूं का आप्यायन होता है तथा शक्तिबीज सः से जीवनशक्ति (जीवनक्रम) की वृद्धि होती है । जूं (जीवनशक्ति) के शिवशक्त्याश्रय होने से जीवनवृद्धि का नाम मृत्युंजयसिद्धि है ।

## रोग-निवारण-प्रयोग

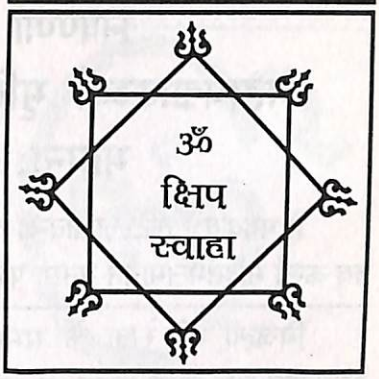


प्रस्तुत यन्त्र को **भस्म** में **दाहिने हाथ की मध्यमा** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर '**किं**' है। जप का दशांश हवन '**किं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**किं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**किं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **करवीरपुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है। **मधु** एवं **शर्करा** का नैवेद्य विहित है।

इस यन्त्र के प्रयोग से **विष-विषभीति निवृत्ति** होती है। मयूर ताम्र अथवा पुन्नागताम्र से विश्रित स्वर्ण की अंगूठी में यन्त्र बनाकर दो सहस्रावर्त्तन से सिद्ध कर अंगूठी पहन पानी का छींटा मारने से विष की निवृत्ति होती है ॥२०॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'किरन्तीमङ्गेभ्यः' इति विंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। किं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
किं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्नकङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु हन्मन्त्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा। आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः। त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रतीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा। इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!। महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि।

**तटिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं**
**निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम् ।**
**महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा**
**महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लादलहरीम् ।।२१।।**

हे भगवति ! तटिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं निषण्णां षण्णां कमलानामप्युपरि महापद्माटव्यां निषण्णां तव कलां मृदितमलमायेन मनसा पश्यन्तो महान्तः परमाह्लादलहरीं दधति ।

---

बिजली की रेखा के समान सूक्ष्म सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि की त्रिमयी कला 'जो क्रमशः अन्धकार नष्ट करने वाली, दुःख मिटाने वाली तथा पुण्यकृत्यों को शीघ्रता से परिपाक करने वाली है' छः कमलों के भी ऊपर कमल-वन के समान सहस्रार चक्र में कामादि मल तथा अविद्यारूपी माया से रहित विशुद्ध मन से महान् लोग दर्शन सुख प्राप्त करके असीम आनन्द की लहर को धारण करते हैं । आनन्दानुभव प्राप्त कर रहे है । षट्चक्र का भेदन करके कुण्डलिनी शक्ति जब सहस्रार की ओर जाती है तब वह बिजली के समान चमकती हुयी रेखा के जैसे दिखती है । वह कला सूर्य, चन्द्र, अग्नि के तेज से युक्त होती है । इन तीनों मात्राओं को सोमसूर्याग्निमयी जानना चाहिए ।।२१।।

**વીજળીના ઝબકાર જેવી પાતળી, સૂર્ય, ચંદ્ર તથા અગ્નિથી બનેલી, છ કમળો (ચક્રો) થી ઉપર બેઠેલી, મહાપદ્મોના વનમાં તારી કલાને મલ અને માયા વિનાના મનવાળા, જે કોઈ દૃષ્ટિસાધ્ય કરે છે, તેવા મહાત્માઓ પરમ આનંદની લહરી અનુભવે છે. (૨૧)**

Great Men, meditating with their minds, cleansed of impurity and illusion, on Thy Kala comprising of the Sun, Moon and Fire, resting far above the six lotuses and the granthis, and appearing like a streak of lightning, experience exuberant transcendental bliss. [21] .

---

**विशेष**-यहाँ भगवती आनन्दमयी का आभ्यन्तरध्यान दिया गया है ।

इस श्लोक में सहस्रार के दिव्यदर्शन का भाव है । अग्निसूर्यसोम-प्रशान्तएकात्मता की स्थिति-शान्ति-पराकला इन तीन बिन्दुओं के आधार स्थान को योनि कहते हैं । इन तीनों बिन्दुओं की बाह्यक्रियाएँ पृथक्-पृथक् हैं परन्तु योन्याधार स्थान को पाकर त्रिबिन्दु की तीनों क्रियाओं का सम्मिश्रण तथा लयीकरण प्रारम्भ हो जाता है और उन्मनीभाव की जागृति हो उसमें से सम्पराद्धं कला स्फुरती है । इस स्थान पर साधक को शिव शक्ति की एकता का भान होता है और साधक एकात्ममहाऽऽनन्द में अपने अहं को भूल जाता है । यही आनन्दमयी एकात्मभावा समाधि है । जिसका दर्शन क्षणमात्र के लिए आज्ञाचक्र में होता है ।

प्रस्तुत यन्त्र को **सोना/चाँदी/ताम्र** में **चन्दन, कुंकुम, केसर** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें एवं यन्त्र को धारण करें । बीजाक्षर '**तं**' है । जप का दशांश हवन '**तं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**तं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**तं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **गुड़, मधु** एवं **केले** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के धारण से **सकलजन विरोध का नाश** होता है अर्थात् किसी से भी वैरभाव नहीं हो सकता और सभी लोग साधक के वशीभूत हो जाते हैं ॥२१॥

**आत्म-साक्षात्कार प्रयोग**

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तटिल्लेखा-तन्वीं' इति एकविंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
त बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा-**
**मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः ।**
**तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं**
**मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदाम् ।।२२।।**

हे भवानि ! त्वं दासे मयि सकरुणां दृष्टिं वितरेति स्तोतुं वाच्छन् भवानि त्वमिति यः कथयति, तस्मै तदैव त्वं मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदां निजसायुज्यपदवीं दिशसि ।

---

हे भवानि! 'तू मुझ सेवक (दास) को अपनी करुणामयी दृष्टि से निहार दे' जब कोई मुमुक्षु भक्त तुम्हारी स्तुति करते समय 'भवानि त्वं' अर्थात् ''भवानि तुम''.... केवल इतना ही उच्चारण कर पाता है कि तुम उसे अपना वह दुर्लभ सायुज्य पद प्रदान कर देती हो जिस पद की ब्रह्मा, विष्णु एवं इन्द्र भी अपने रत्नजटित मुकुटों की आभा से आरती उतारा करते हैं अर्थात् उस पद को प्रणाम करते रहते हैं। जाने अथवा अनजाने में ही भक्त जब भगवती की स्तुति करते समय इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के 'भवानि त्वं' इतने ही पद का उच्चारण कर पाता है, तो भगवती उसे सायुज्य मोक्ष दे देती हैं क्योंकि 'भवानि त्वं' पद का यह अर्थ होता है कि ''मैं तू बन जाऊँ'' इसलिए अपने भक्त के मन में सायुज्य पद प्राप्ति की भावना जानकर आगे के पद का 'दासे मयि' उच्चारण करने के पूर्व ही उसे सायुज्य मुक्ति प्रदान कर देती हैं ।।२२।।

**હે મા ભવાની ! તમો આ તમારા દાસ પર કરૂણાસભર દષ્ટિ નાંખો. એમ આપની સ્તુતિ કરવા ઉત્સુક જન કેવળ "હે મા ભવાની! તમો...." એટલા જ શબ્દો બોલે, તે જ પળે તમે તમારી સાયુજ્ય પદવી તેને પ્રદાન કરો છો. (દેવની આરતી ઉતારતા હોય તેમ) મુકુન્દ (વિષ્ણુ) બ્રહ્મા અને ઈન્દ્ર તેમના મુગટો ચૂકી તમારા પગોને પ્રકાશિત કરતા હોય છે. (૨૨)**

When one, desirous of praying to Thee thus, ' Oh, Bhava's consort ! May Thou cast Thy gracious glance on me. Thy servant,' utters the words ' Bhava's consort !', Thou, at that very moment, granteth him the state of absorption in Thy Self that is rendered lustrous by the dazzling crowns of Vishnu, Brahma and Indra. [22]

---

**विशेष**-विगत श्लोकों में बहिर्याग, अन्तर्यागादि का वर्णन करने के पश्चात् प्रस्तुत श्लोक में भक्ति भाव का वर्णन किया गया है । भक्तियोग के अनुसार भक्ति की चार अवस्थाएँ हैं-सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य और सायुज्य । भक्त इन्हीं को पाने की लालसा में भक्ति मार्ग पर चलते है। इनके अलावा मुक्ति के और भी रूप बताए गए हैं ।

## सकलैश्वर्य प्राप्ति प्रयोग

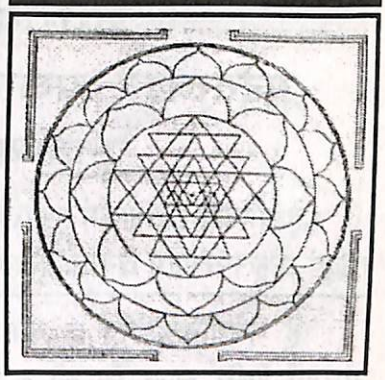

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पुण्यतीर्थ/देवीसन्निधि** में **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर 'भं है । जप का दशांश हवन **'भं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'भं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'भं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **मधु, त्रिमधु, दही, दूध** एवं **चित्रान्न** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **सर्वाभीष्टसिद्धि, सकलैश्वर्य प्राप्ति** एवं **राज्यप्राप्ति** होती है । यह यन्त्र ही श्रीयन्त्र के नाम से अनेकशः पूजा जाता है और भोग-मोक्षप्रदायक होता है ॥२२॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'भवानि त्वं दासे' इति द्वाविंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। भं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्....शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
भं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**तडित्-प्रभां महा-देवीं नाग-कङ्कण-शोभितां।**
**चतुर्वर्ग-प्रदां देवीं साधकाभीष्ट-सिद्धिदां।**
**एवं ध्यात्वां भ-कारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**भ-कारं शृणु चार्वङ्गि! स्वयं परम-कुण्डलि।**
**महा-मोक्ष-प्रदं वर्णं तरुणादित्य-सम्प्रभं।**
**पञ्च प्राण-मयं वर्णं पञ्च-देव-मयं प्रिये!।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा**
**शरीरार्धं शम्भोरपरमपि शङ्के हृतमभूत् ।**
**यदेतत्त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं**
**कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमुकुटम् ।।२३।।**

हे भगवति ! शंभोर्वामं वपुः त्वया हृत्वा अपरितृप्तेन मनसा अपरमपि शरीरार्धं हृतमभूदिति शङ्के ; यत् एतत् त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमुकुटम् ।

---

हे भगवति! शिव के वाम भाग का हरण करने पर भी तुम्हारा मन अतृप्त है। क्योंकि वह सम्पूर्ण शरीर लाल रंग की कांति से युक्त दीख पड़ता है, उसमें तीन नेत्र हैं, वह दो स्तनों के भार से कुछ झुका हुआ है, और द्वितीया का चन्द्रमा केशों के ऊपर मुकुट पर शोभायमान है, यह देखकर आशंका होती है कि तुमने शंभु के दूसरे आधे शरीर का भी अपहरण कर लिया है।अर्द्धनारीश्वर रूप में आधा शरीर शिव का एवं आधा भगवती का है। शंकर का शरीर स्फटिक के जैसे स्वच्छ है जो भगवती का शरीर लाल वर्ण का होने के कारण वह भी अरुण दीखने लगा है। और भगवती के स्तन के भार से शिव का दक्षिण भाग भी किंचित झुक गया है। दोनों के तीन नेत्र एवं चन्द्रयुक्त होने से यह पहचानना कठिन है कि दक्षिण भाग शंकर का है अथवा सारा शरीर भगवती का ही है ।।२३।।

**શિવના (અર્ધનારીશ્વર) સ્વરૂપમાંથી તમે ડાબુ તન હરી લીધું, છતાં તમારું મન સંતોષ પામ્યું નહિ. તેથી હું ધારું છું કે બીજું અડધું તન પણ (તમે) હરી લીધું એટલે તમો શિવજી સાથે તદ્રૂપ બન્યાં. તેથી તમારા તનનો રંગ રાતો છે અને તમારે ત્રિનેત્રો છે. તમો સ્તનયુગલોથી થોડાં વાંકાં વળેલાં છો અને શિર પર પણ બીજનો ચંદ્ર કલગી રૂપે ધારો છો. (૨૩)**

Not content (in mind) with the usurpation of the left half of the body of Sambhu, the other half also, I conjecture, has been taken away by Thee, for, this Thy present form is wholly red in lustre, has three eyes, is bent with a pair of breasts, and has a crown adorned by the cresent moon. [23]

---

**विशेष**-क्या सुन्दर वर्णन है । अर्धनारीश्वर के ध्यान में शक्तितत्त्व की इतनी प्रधानता है कि शिवतत्त्व को जानना कठिन हो गया है । वस्तुतः शिवतत्त्व और शक्तितत्त्व में कोई भेद है ही नहीं। सदाख्य तत्त्व प्रभवोन्मुख होने के कारण पूर्ण शक्तियुक्त होता है,इसलिए अहम् विमर्श के आध्यात्मभाव को शक्ति ने मानो दबा रखा है । वस्तुतः शिवतत्व और शक्तितत्त्व दोनों मिलकर अर्धनारीश्वर बनते हैं लेकिन भक्त के हृदय में भगवती के प्रति पक्षपात आ गया । मां का दुलारा मां के पक्ष में बोल रहा है ।

## ऋण-विमोचन प्रयोग

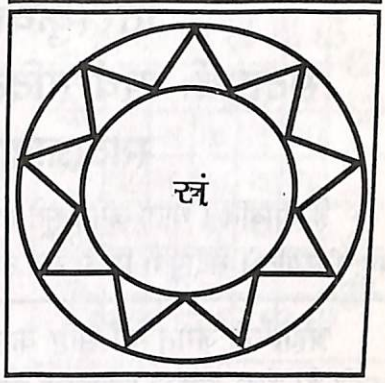


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो घर में **३० दिन** तक **प्रतिदिन ३०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर '**त्वं**' है । जप का दशांश हवन '**त्वं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**त्वं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**त्वं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **क्षीर** एवं **पायस** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग स सभी प्रकार के ऋण से मुक्ति मिलती है । भूतप्रेतपिशाच आदि की बाधाएं निवृत्त होती हैं और दैहिक-दैविक-भौतिक तीनो आपदाओं से मोक्ष होता है ॥२३॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'त्वया हृत्वा' इति त्रयोविंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। त्वं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
त्वं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं । सदाषोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।नानालङ्कारभूषां वा सर्वसिद्धिप्रदायिनीं।एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत्।तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली । पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा । त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्व संयुतम् । त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् । कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् । शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् । साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेविताम्। एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम् । पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा । त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम् । पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते**
**तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति ।**
**सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्णाति च शिव-**
**स्तवाज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः ।।२४।।**

हे भगवति ! धाता जगत् सूते । हरिः जगत् अवति । रुद्रः जगत् क्षपयते । ईशः एतत् तिरस्कुर्वन् स्वमपि वपुः तिरयति । सदापूर्वः शिवः सर्वं तदिदं तव क्षणचलितयोः भ्रूलतिकयोः आज्ञामालम्ब्य अनुगृह्णाति ।

---

ब्रह्मा जी जगत् की सृष्टि करते हैं। भगवान् विष्णु उसकी रक्षा करते हैं। रुद्र जगत् का संहार करते हैं। ईश्वर सबका तिरस्कार करके अपने को स्थिर रखते हैं; और शिव जिनके नाम के पूर्व सदा लगा हुआ है, जो 'सदा' के विशेषण से युक्त हैं अर्थात् सदाशिव तुम्हारी भृकुटि (भौंहो) के क्षण भर के संकेत से सूचित आज्ञानुसार सब पर अनुग्रह करते रहते हैं। विश्व का प्रलय हो जाने पर भी प्रभव की बीजशक्ति सदाशिव में बनी रहती है इसके कारण प्रलय काल के उपरान्त सदाशिव पुनः सृष्टि का प्रभव करते हैं। मानो वे भगवती की आज्ञा के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और महेश्वर सब पर अनुग्रह करके नया जीवन प्रदत्त करते हैं ।।२४।।

**ધાતા (બ્રહ્મા) જગત સર્જે છે. હરિ તેનું પાલન-પોષણ કરે છે. રુદ્ર તેનો વિનાશ કરે છે. આ ત્રણે દેવોને નિષ્ક્રિય બનાવી, ઈશ (જેનામાં ત્રણે દેવો સમાયા છે તે) તેમનું પોતાનું સ્વરૂપ સંતાડી દે છે. (સદાશિવ બને છે ) અને શિવ સદાશિવ સ્વરૂપે આ સમગ્ર પ્રક્રિયાઓને સમર્થન આપે છે. કારણ આપની લતા જેવી ભ્રમરોના ક્ષણિક ચલન દ્વારા શિવને આપની આજ્ઞા મળી ગઈ છે. (૨૪)**

Brahma creates the Universe, Hari sustains it and Rudra dissolves it. Annihilating them, Isvara conceals Himself as well. Sadashiva approves of them, pursuant to Thy command conveyed through Thy creeper-like (curved) eye-brows moved but for a moment. [24]

---

**विशेष**-अनुगृह्णाति का अर्थ 'अपने में लीन कर लेता है' भी किया जा सकता है । तब श्लोक का अर्थ इस प्रकार होगा -'तेरी आज्ञा को पाकर भ्रूलताओं के सङ्केत मात्र से ब्रह्मा सृष्टि करता है,हरि पालन करता है,रुद्र संहार करता है,ईश्वर तीनों के तिरस्कार पूर्वक तटस्थ रहता है और संदाशिव सबको अपने में (प्रलय के काल में ) लीन कर लेता है ।

इससे भगवती का सर्वाधिष्ठात्रीत्व सिद्ध हुआ क्योंकि प्रभव और प्रलय दोनों शक्ति के कार्य हैं । अन्य देव तो कर्मचारी मात्र हैं। समस्त देवों में तत्तत्कार्यों को करने की शक्ति तो भगवती से ही मिल रही है । अतः माता भगवती ही सर्वातिशायिनी हैं ।

## प्रेतबाधा निवारण प्रयोग

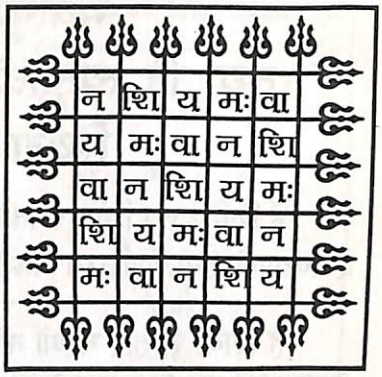


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो घर में **३० दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें। बीजाक्षर '**जं**' है । जप का दशांश हवन '**जं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**जं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**जं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **मधु, उड़द के बड़े** एवं **तिल के व्यञ्जन** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **भूतप्रेतपिशाच अपस्मारादि** का निवारण होता है और सुख-शान्ति का जीवन में उदय होता है। यन्त्र को गले में धारण करना चाहिए ॥२४॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'जगत्सूते धाता' इति चतुर्विंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। जं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनाभिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**नानालङ्कार-संयुक्तैर्भुजैर्द्वादशभिर्युतं ।**
**रक्त-चन्दन-दिव्याङ्गीं चित्राम्बर-विधारिणीम् ।**
**त्रिलोचनां जगद्धात्रीं वरदां भक्त-वत्सलां ।**
**एवं ध्यात्वां'ज'-कारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**ज-कारं परमेशानि या स्वयं मध्य-कुण्डली ।**
**शरच्चन्द्र-प्रतीकाशं दिव्य-त्रिमुण्ड-संयुतम्।**
**पञ्च-देव-मयं वर्णं पञ्च-प्राण-मयं प्रिये!**
**त्रिशक्ति-सहितं वर्णं द्वि-विन्दु-सहितं यजेत्।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
जं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
.....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव शिवे**
**भवेत्पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता ।**
**तथा हि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे**
**स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः ।।२५।।**

हे शिवे ! तव त्रिगुणजनितानां त्रयाणामपि देवानां तव चरणयोः या पूजा विरचिता भवेत् सैव पूजा । तथा हि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे हि यस्मात् मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः शश्वदेते स्थिताः ।

---

हे शिवे! तुम्हारे चरणों की जो पूजा की जाती है, उससे तेरे तीनों गुणों से उत्पन्न हुए इन तीनों देवताओं का भी पूजन हो जाता है। यह उचित भी है क्योंकि ये तीनों देवता अपने मुकुटों की शोभा बढ़ाने के लिए तुम्हारे श्रीचरणों को धारण करने वाले मणियों के बने सिंहासन के समीप करबद्ध खड़े रहते हैं ।।२५।।

**હે શિવા ! ત્રણે દેવો આપના ત્રણે ગુણોમાંથી ઉત્પન્ન થયા છે. તેથી આપનું પાદપૂજન આ ત્રણે દેવોનું પૂજન બને છે. તમારા પગને આધાર આપતા રત્નજડિત બાજઠની સામે દેવો હાથોના, કળિઓ જેમ, મુગટ કરી નિરંતર ઊભા રહે છે. (૨૫)**

Oh Siva's consort ! Worship offered at Thy feet is worship offered to the three gods born out of Thy three qualities. It is just so, because they stand perpetually near Thy jewelled seat bearing Thy feet, with their folded hands as their crest-jewels. [25]

---

**विशेष**-भगवती के पूजन से सभी देवों का पूजन हो जाता है । ब्रह्मा रजोगुण,विष्णु सत्वगुण और रुद्र तमोगुण के अधिदेव हैं और तीनों ही गुण प्रकृति के अङ्ग हैं । अर्थात् माया की अपेक्षा से तीनों का अस्तित्व है ।

शरीर के छः चक्र मणिपीठ हैं जो तीन खण्डों में विभाजित हैं । अग्निखण्ड में स्थित ब्रह्मग्रन्थि ब्रह्म का निवास है । सोमखण्ड में स्थित रुद्रग्रन्थि रुद्र का निवास है । अन्तरयोग रीति से जब छः चक्रों में देवी की पूजा होती है तब त्रिमूर्तियों की भी पूजा हो जाती है । शायद इसीलिए देवीपुराण में कहा गया है- विष्णुपूजासहस्राणि शिवपूजाशतानि च । अम्बिकाचरणार्चायाः कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।। जिस प्रकार राजपूजा से भृत्यपूजा सम्पन्न मानी जाती है उसी प्रकार अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधीश्वरी भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की उपासना अथवा पूजा से ब्रह्मादित्रिदेवों की पूजा हुई मानी जाती है । उपनिषदों में भी कहा गया है-यस्मिन् ज्ञाते सर्वमिदं ज्ञातं भवति । अधिष्ठानभिन्न अधिष्ठेय के अभाव से ।

## उच्चपदवी प्राप्ति प्रयोग

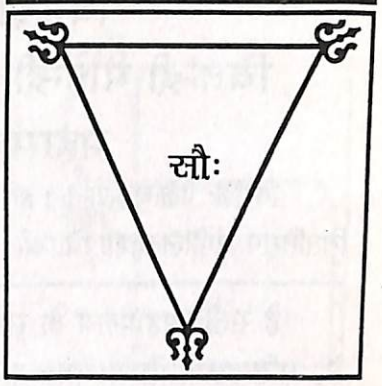


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें । बीजाक्षर '**त्रं**' है । जप का दशांश हवन '**त्रं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**त्रं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**त्रं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व, पायस** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र को अनुष्ठान पूरा हो जाने के बाद गले में धारण करना चाहिए । इसके प्रभाव से **राजकीय अधिकार** एवं **पदलाभ** की प्राप्ति होती है ॥२५॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'त्रयाणां देवानां' इति द्वितीयमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। त्रं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
त्रं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं । सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम्। नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं । एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् । तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली । पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा । त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् । त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् । ललज्जिह्वां महा-रौद्रीं, रक्तास्यां रक्त-लोचनां। रक्त-माल्याम्बर-धरां, रक्तालङ्कार-भूषिताम्।। रक्त-वर्णामष्ट-भुजां, रक्त-पुष्पोप-शोभिताम्। महा-मोक्ष-प्रदां नित्यां, अष्ट-सिद्धि-प्रदायिकां । एवं ध्यात्वा ब्रह्म-रूपां, तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। रेफं च चञ्चलापाङ्गि, कुण्डली-द्वय-संयुतं। रक्त-विद्युल्लताकारं, पञ्च-देवात्मकं सदा। त्रि-शक्ति-सहितं देवि! आत्मादि-तत्त्व-संयुतं । सर्व-तेजो-मयं वर्णं, सततं मनसि चिन्तयेत्।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**विरिञ्चिः पञ्चत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं**
**विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम् ।**
**वितन्द्री माहेन्द्री वितततिरपि संमीलितदृशा**
**महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ ॥26॥**

विरञ्चिः पञ्चत्वं ब्रजति । हरिः विरतिम् आप्नोति । कीनाशः विनाशं भजति । धनदः निधनं याति । माहेन्द्री विततिरपि संमीलितदृशा वितन्द्री । अस्मिन् महासंहारे सति, असौ त्वत्पतिः हरः विहरति ।

---

हे सती! महाप्रलय के समय सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा पाँचवी अवस्था को प्राप्त होते हैं अर्थात् नष्ट होते हैं, सृष्टिपालक विष्णु भगवान् भी विरति (पूर्णता) को प्राप्त हो जाते हैं। यमराज का नाश हो जाता है। कुबेर की मृत्यु हो जाती है और जिसको कभी तन्द्रा नहीं आती वे इन्द्रादियों की भीड़ भी अपनी फैली हुई दृष्टि वाले नेत्र बन्द कर निन्द्रामग्न हो जाते हैं। परन्तु तुम्हारे पति सदाशिव उस समय भी बिहार (क्रीड़ा) ही करते रहते हैं । सतियों के सतीत्त्व की इतनी महानता है कि उनका सौभाग्य सदा अखण्ड रहता है। यह भगवती सती के सतीत्व का ही प्रभाव है कि सदाशिव तब भी बने रहते हैं जब कि ब्रह्मा,विष्णु, रुद्र, महेश, इन्द्र, कुबेर यहाँ तक कि मृत्यु की भी मृत्यु हो जाती है। सदाशिव तत्त्व में विश्व का बीज रहता है और बीज कभी भी नष्ट नहीं होता है ।।26।।

વિરંચિ (બ્રહ્મા) પાંચ ભૂતોમાં ભળી જાય છે. હરિના જીવનનો અંત આવે છે . યમ વિનાશને વશ થાય છે. ધનદ (કુબેર) નું નિધન થાય છે. સદા ખુલ્લી રહેતી મહેન્દ્રની (સહસ્ર) આંખો થાકે છે અને બંધ થઈ જાય છે આવા મહા પ્રલયકાળના સંહારમાં, હે સતી! આપનો પતિ વિહાર કરે છે. (૨૬)

Oh Greatly Chaste Devi ! Brahma meets with death, Hari retires into passivity, Yama suffers destruction, Kubera too dies, and the line of Indras goes into slumber with eyes closed and steeped in sluggishness. Even during such a time as the great dissolution, Thy consort is sporting. [26]

---

**विशेष**-महाप्रलय के समय सभी देवों का लय हो जाता है । केवल परब्रह्म ही रहता है और शक्ति भी उसमें अव्यक्त दशा में बनी रहती है । भगवती के सतीत्व के प्रभाव से सदाशिव तब भी बने रहते हैं क्योंकि सदाख्य तत्त्व में विश्व का बीज रहता है और बीज कभी नष्ट नहीं होता । क्योंकि प्रकृति सबको गर्भ में लेकर महासुप्ति का रूप धारण कर ब्रह्म में लीन हो जाती है ।

इसीलिए वेद कहते हैं-यथा धाता पूर्वमकल्पयत् । सत्य भी है कि जब माता ही नहीं रहेगी तो दुबारा सृष्टि संभव न हो सकेगी । अतः प्रलय में सभी देवों और सभी तत्त्वों के विनष्ट हो जाने पर शक्ति का सत् रहना आश्चर्यकर नहीं ।

## शत्रु विजय प्रयोग

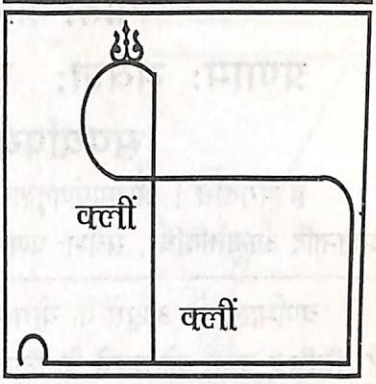


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **अमावास्या को अथवा ६ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**विं**' है । जप का दशांश हवन '**विं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**विं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**विं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व,** तथा **पायस** हवनीय द्रव्य है। **गुड़ की खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **शत्रु पर विजय** एवं **सर्वसिद्धि** की प्रप्ति होती है । इस अनुष्ठान के बाद निश्चित रूप से यन्त्र को धारण किए रहना चाहिए । ॥२६॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'विरिञ्चिः पञ्चत्वं' इति षड्विंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। विं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
विं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम्। शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् । साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेविताम्। एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डली मोक्षमव्ययम्। पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा। त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्। इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!। महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्म समन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदांसौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना**
**गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।**
**प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा**
**सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ।।२७।।**

हे भगवति ! आत्मार्पणदृशा जपः जल्पः, सकलमपिशिल्पं मुद्राविरचना, गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणं, अशनादि आहुतिविधिः, संवेशः प्रणामः, अखिलं सुखं मे यद्विलसितं च तव सपर्यापर्यायः भवतु ।

---

वर्णमाला के अक्षरों के योग से बने पद, वे सब मन्त्र तुल्य हैं और सभी (जल्प) जप के समान है। विभिन्न कर्मों को करने के लिए हाथ जो क्रियाएं करते हैं वे सब मुद्राओं के समान हैं, भगवती की व्यापकता सर्वत्र होने से चलना-फिरना प्रदक्षिणा के समान हैं। अग्नि का कार्य हव्य को देवता तक पहुँचाना है और जठराग्नि भी शक्ति का ही रूप है इस दृष्टि से खाना-पीना सब आहुति के समान है, साष्टांग प्रणाम में दोनों हाथ, सिर से भूमि को स्पर्श किया जाता है इसलिए सोते, लेटते भूशायी होना साष्टांग प्रणाम के समान है, जिसमें सुख है, वे आत्मानन्द की लहरें है उनमें चित्त लगाना उसे आनन्द ब्रह्म को समर्पण करने के समान है। इस प्रकार दैनन्दिन जीवन में बिना प्रयत्न के सुगमता से जो अनेक प्रकार की विविध चेष्टाएं एवं कृत्य हों वे सब तुम्हारी पूजा-पद्धति की विधि बन जाये ।।२७।।

**મારો બડબડાટ જપ બની જાવ. મારા દેહનું હલન ચલન આપની પૂજામાં વિધિસરની મુદ્રા બનો. મારી ગતિ તે માતાની પ્રદક્ષિણા થાવ. મારું ભોજન વગેરે તમારા માટે આહુતિવિધિ બનો. મારૂ સૂવાનું તમને પ્રણામ બનો. મારા સર્વ વિલાસો તમારે અર્થે સ્વાત્માર્પણ દૃષ્ટિએ હજો. મારી જે કોઇ ક્રિયા હોય, તે તમારી કોઇ સ્વરૂપની ભક્તિમાં પરિણમજો. (૨૭)**

Let my prattle be the repetition of Thy mantra, my manual work be the gestures (mudras) offered in Thy worship, my movements be Thy circumambulation, my food and drink be the oblations offered in fire (agni), my resting be prostrations to Thee, and all my actions that give comfort to me be dedication to Thee. Let all my activity be Thy worship. [27]

---

**विशेष**-स्फोटात्मक शब्दों का सार्थक,निरर्थक क्रम जल्प ही जप है । पूजन में हाथों द्वारा मुद्राएँ दिखाई जाती हैं तो हाथों की सभी क्रियाएँ मुद्रा हैं । सर्वव्यापिका की चलते-फिरते प्रदक्षिणा है । शक्ति का एक रूप जठराग्नि है,उसमें होमा गया हवन है । भूशायी होना सर्वव्यापिका को साष्टाङ्ग प्रणाम है । जिसमें सुख है वही आत्मानन्दलहरी है । अतः समस्त चेष्टाएँ भगवती का पूजन है । बाह्य पूजन तो सामान्य साधकों द्वारा होती है जबकि सामयिक योगीश्वर तो आत्मैकप्रवण होते हैं ।

## आत्मज्ञान प्रयोग

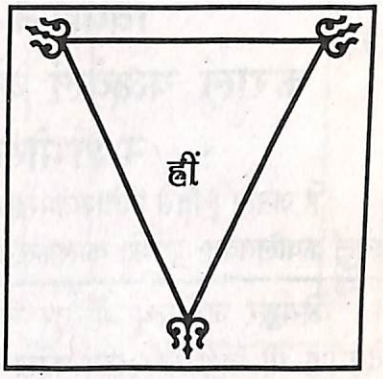


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्ण या ताम्रपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**जं**' है । जप का दशांश हवन '**जं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**जं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**जं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व,** तथा **पायस** हवनीय द्रव्य है । **गुड़ की खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के प्रयोग से **विविध तान्त्रिक मंत्रों की सिद्धि के साथ-साथ साक्षात् भगवती पराम्बा के दर्शन** एवं **आत्मज्ञान** की प्रप्ति होती है ॥२७॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'जपो जल्पः शिल्पं' इति सप्तविंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। जं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**नानालङ्कार-संयुक्तैर्भुजैर्द्वादशभिर्युतं।**
**रक्त-चन्दन-दिव्याङ्गीं चित्राम्बर-विधारिणीम्।**
**त्रिलोचनां जगद्धात्रीं वरदां भक्त-वत्सलां।**
**एवं ध्यात्वां'ज'-कारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**ज-कारं परमेशानि या स्वयं मध्य-कुण्डली।**
**शरच्चन्द्र-प्रतीकाशं दिव्य-त्रिमुण्ड-संयुतम्।**
**पञ्च-देव-मयं वर्णं पञ्च-प्राण-मयं प्रिये!**
**त्रिशक्ति-सहितं वर्णं द्वि-विन्दु-सहितं यजेत्।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
जं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलततत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं**
**विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः ।**
**करालं यत्क्ष्वेलं कवलितवतः कालकलना**
**न शंभोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा ।। २८ ।।**

हे जननि ! विश्वे विधिशतमखाद्या: दिविषद: प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं सुधां आस्वाद्यापि विपद्यन्ते । करालं क्ष्वेलं कवलितवत: शम्भो: कालकलना नास्तीति यत् तन्मूलं तव ताटङ्कमहिमा ।

---

भयङ्कर जरामृत्यु को दूर करने वाले अमृत को पीकर भी ब्रह्मा और शतमुख इन्द्र आदि देवगण भी विश्व के प्रलय काल में नष्ट हो जाते हैं। परन्तु भयङ्कर हलाहल विषपान करने वाले शिवजी का अन्त नहीं होता, वह केवल हे जननि! तुम्हारे (ताटङ्क) कर्णफूलों की ही महिमा है। कानों में पहिने जाने वाले आभूषणों का अभिप्राय भगवती के अखण्ड सौभाग्य से है। विधवा स्त्रियाँ उनको नहीं पहनतीं। भगवती के अनादि, अनन्त, अखण्ड सुहाग के प्रभाव से ही शंकर पर हलाहल विष का प्रभाव नहीं हुआ। यह भगवती के सतीत्त्व का माहात्म्य है। वह नित्य है, उसका सुहाग नित्य है। कर्णफूल सुहाग के चिह्न माने जाते हैं ।।२८।।

**ભય, વૃદ્ધાવસ્થા, મૃત્યુ-ને હરી લેતું અમૃત જો કે દેવોએ પીધું છે છતાં સ્વર્ગલોકમાં વસતા દેવો, વિધિ (બ્રહ્મા), શતમુખ (ઇન્દ્ર) અને બીજા પણ નાશ પામે છે. પણ કરાળ ઝેર પીનારા શંભુનો કાળ વિનાશ કરી શકતો નથી. તેનું મૂળ કારણ, હે જનની! તારાં કર્ણફૂલોનો મહિમા છે. કેમકે કર્ણફૂલ સૌભાગ્યવતીજ પહેરે છે.(૨૮)**

Oh Mother ! Brahma, Indra and other celestials perish even though they have drunk nectar which confers immunity from frightful grey hairs (old age) and death. If the longevity of Siva despite his having swallowed the terrific poison is not limited by time, it is because of the greatness of Thy ear-ornaments. [28]

---

**विशेष**-ताटङ्क अर्थात् कर्णफूल जो कि भारतीय संस्कृति में अखण्डसौभाग्य का प्रतीक चिह्न है । कर्नाटक आदि देश में कर्णफूल (ताटङ्क), द्रविडदेश में मंगलसूत्र, बंगाल आदि में शङ्ख के कंगन, उत्तरभारत में सिन्दूर की रेखा, पश्चिम के देशों में सोने के कंगन आदि सधवा स्त्रियों के चिह्न हैं । विधवा स्त्रियाँ उनको उतार देती हैं । उसकी महिमा से भगवती की महिमा बताते हैं ।

समुद्र मन्थन काल में निकले हलाहल का पान कर भी अगर शङ्कर अमर रहे तो यह निश्चय ही भगवती के अनादि, अनन्त, अखण्ड सौभाग्य का फल है । कभी-कभी पत्नी के भाग्य का फल पति को मिलता संसार में देखा जाता है । लगता है शङ्कर जी की अमरता में भगवती के सौभाग्य का विस्तार है ।

## अपमृत्यु निवारण प्रयोग

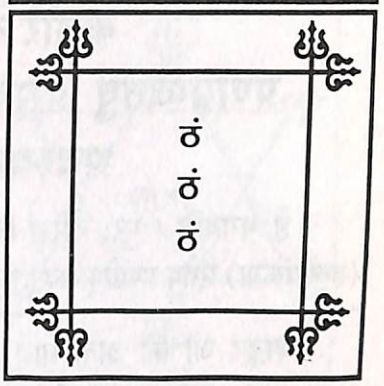


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्ण या पञ्चधातु** में **चन्दन** से लिखकर **दक्षिणपूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**सुं**' है । जप का दशांश हवन '**सुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**सुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**सुं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व** तथा **पायस** हवनीयं द्रव्य है । नैवेद्य हेतु **क्षीर, पायस, त्रिमधु** एवं **ताम्बूल** का प्रयोग विहित है ।

इस प्रयोग से **स्त्रियों के सकल कार्यों की सिद्धि** तथा **पुरुषों का अपमृत्यु निवारण** होता है । यन्त्र को अनुष्ठान के बाद गले में पहनना चाहिए । ॥२८॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'सुधामप्यास्वाद्य' इति अष्टविंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
सुं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्। अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्। नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। सकारं शृणु चार्वाङ्गि!शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्। पञ्चदेव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा। रजसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दुसहितं सदा। पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि!अधः कुण्डलिनी स्वयम्। पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभभिदः**
**कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारिमकुटम् ।**
**प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभमुपयातस्य भवनं**
**भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते ।।२९।।**

हे भगवति ! पुरः वैरिञ्चं किरीटं परिहर, कैटभभिदः कठोरे कोटीरे स्खलसि, जम्भारिमकुटं जहि, (इत्येवंरूपा) एतेषु प्रणम्रेषु सत्सु भवनमुपयातस्य भवस्य प्रसभं तवाभ्युत्थाने परिजनोक्तिर्विजयते ।

---

शङ्कर जी को अकस्मात् अपने निवास पर आया देखकर उनके स्वागत के लिए तुम जब व्यग्रता से उठकर जाती हो तब तुम्हारी दासियों के ये स्वर " कि साष्टाङ्ग प्रणाम कर रहे ब्रह्मा जी के मुकुट से बगल होकर आइये, कैटभ नामक असुर का वध करने वाले विष्णु भगवान् के कठोर मुकुट से बचें । इन्द्र के मुकुट से कहीं टकरा न जायें" गूँज उठते हैं । मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस विष्णु भगवान् के मैल से उत्पन्न होकर ब्रह्मा जी को खाने के लिए उद्यत हुए। तब ब्रह्माजी ने भगवान् विष्णु को शेषशय्या पर निद्रामग्न देखकर भगवती महामाया की प्रार्थना की । प्रार्थना से प्रसन्न होकर नारायण के नेत्रों में निवास करने वाली भगवती महामाया ने विष्णु की निद्रा भङ्ग कर दी । तब भगवान् विष्णु ने दोनों राक्षसों का वध करके कमलस्थित ब्रह्मा का भय दूर किया। इसीलिए विष्णु भगवान् को मधुसूदन और कैटभारि भी कहते हैं ।।२९।।

**વિરંચિ (બ્રહ્મા) નો મુગટ તમારી સામેથી દૂર રાખો ! કૈટભભિદ (વિષ્ણુ) નો મુગટ કાઠો છે તેને પગ અથડાશે ! જંભારિ (ઇન્દ્ર) ના મુગટનો ખ્યાલ રાખો " આમ દેવો સાષ્ટાંગ નમસ્કાર કરી રહ્યા હતા ત્યારે તમારા મહેલે ભવ (શિવ) પધાર્યા અને તમો અધીરાઇથી ઉઠ્યાં, તે સમયે ચેતવણી આપતા પરિજનો પોકારતા હતા, તે વિજયી છે. (૨૯)**

Glorious are the words of Thy attendants, - " Avoid the crown of Brahma in front, Thou may stumble on the hard crest of the slayer of Kaitabha; keep off the crown of Jambha's foe, when they lie prostrate (before Thee) and as Thou starteth in haste to receive Bhava (Thy consort) coming to Thy abode. [29]

---

**विशेष-** शङ्कर से मिलने की आतुरता में शक्ति के सहस्त्रार में चढते समय नीचे के चक्रों में प्रणाम करते हुए ब्रह्मा,विष्णु और इन्द्र के मुकुटों से ठोकर लगने की आशंका सूचक परिचारिकाओं की उक्तियाँ स्वाभाविक ही हैं । मूलाधार और स्वाधिष्ठान दोनों अन्धकारमय चक्र हैं।अन्धेरे में ठोकर लगने की सम्भावना है अर्थात् साधक की शक्ति उन्नेयपथ पर मण्डल में रुक कर ठिठकनी नहीं चाहिए। कुण्डलिनी के जागृत होने पर शिवभाव का प्रादुर्भाव होना साधकों के अनुभव की बात है और परिचारिकाओं से विभिन्न चक्रों की योगिनियों का अभिप्राय लिया जा सकता है ।

## सर्ववश्यकर प्रयोग

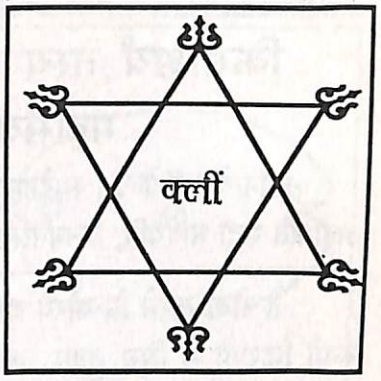


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर **'किं'** है । जप का दशांश हवन **'किं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'किं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'किं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व,** तथा **पायस** हवनीय द्रव्य है । नैवेद्य हेतु **मधु** तथा **उड़द के बड़े** का प्रयोग विहित है ।

इससे **दुष्टों तथा मूर्खों को सात्विक बनाकर वश में करने की शक्ति** प्राप्त होती है । दुष्टों का हृदय परिवर्तित हो जाता है और मूर्खों में सद्बुद्धि का उदय होता है ॥२९॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'किरीटं वैरिञ्चं' इति एकोनत्रिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। किं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
किं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्नकङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु हन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा। आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः। त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा। इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!। महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृञ्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाद्याभिरभितः**
**निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः ।**
**किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतः**
**महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम् ।।३०।।**

हे नित्ये ! निषेव्ये ! स्वदेहोद्भूताभिः घृणिभिः अणिमाद्याभिः अभितोऽवस्थिताभिः परिवृतां त्वां यः साधकः अहमिति सदा भावयति, त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतः तस्य महासंवर्ताग्निः नीराजनविधिं विरचयतीत्यत्र किमाश्चर्यम् ?

---

हे सेवा करने के योग्य वरेण्ये, नित्ये! तुम्हारे शरीर से प्रस्फुटित अणिमा आदि अष्ट सिद्धियों रूपी किरणों से घिरा हुआ, जो अपनी आत्मा को सदा तुम्हारा ही स्वरूप मानकर वन्दना करता है और वह जो शिवस्वरूप मानकर वन्दना करता है और वह जो शिव-सायुज्य पदवी को भी तुच्छ समझता है ऐसे साधक हों तो इसमें आश्चर्य क्या है?।।३०।।

**હે સેવાયોગ્ય! નિત્યા અને વરેણ્યા નામ થી પૂજિત થનારી માતા! તારા શરીર થી પ્રકટ અષ્ટ સિદ્ધિરૂપી કિરણો વડે ઘેરાયેલ,જે પોતાની આત્મા ને તારુંજ સ્વરૂપ માની ને વંદન કરે છે તે શિવ-સાયુજ્ય પદવી ને પામે તેમા આશ્ચર્ય ની શી વાત છે ? (૩૦)**

Oh eternal worshipful One ! What wonder is there in the mighty pralaya-fire offering camphor arati to one who constantly meditates on Thee , surrounded by the rays emanating from Thy feet (body) as Anima and others, as himself, despising the affluence of the three-eyed One ? [30]

---

**विशेष-** तद्वैराग्यादपि दोषबीजक्षये कैवल्यम् (योगदर्शन ३.५०) अर्थात् सर्वज्ञता और शक्तिमत्ता से भी वैराग्य होने पर वासना का क्षय होता है और तब कैवल्य पद की प्राप्ति होती है। जिसने सारूप्यमुक्तिरूप कैवल्य पा लिया उस योगी को 'अहं ब्रह्मास्मि' भाव उदित होता है । और उसकी चरम सीमा में ज्ञान नेत्र का उद्घाटन होने से प्राप्त समृद्धि को भी वह तुच्छ समझने लगता है ।

नित्ये पद से सम्बोधन का अभिप्राय सर्वाशापरिपूरकषोडशारचक्रस्थकामाकर्षिणी आदि १६ कलाओं को जीतकर नित्य मोक्ष पद की इच्छा रखने वाले पुरुष से है क्योंकि भगवती की आराधना का फल महावाक्योक्त ब्रह्मात्मैक्य की अपरोक्षानुभूति का उदय होना ही है । गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है- सर्वकर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते । अर्थात् ज्ञानभास्कर के उदित होते ही समस्त कर्म अन्धकारवत् परिसमाप्त हो जाते है। भगवती की आराधना और उपासना से भगवदाकाराकारित चित्तवृत्ति का उदय होता है और ब्रह्मसाक्षात्कार सहज हो पाता है । चूंकि समस्त आराधनाओं और उपासनाओं का एकमात्र ध्येय परमात्मसाक्षात्कार है ।

## अष्टसिद्धिकर प्रयोग

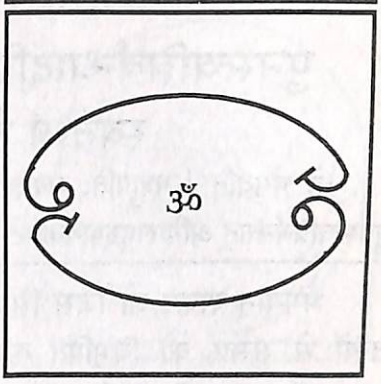


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **९६ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर **'स्वं'** है । जप का दशांश हवन **'स्वं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'स्वं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'स्वं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १०० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **करवीरपुष्प, बिल्व,** तथा **पायस** हवनीय द्रव्य है । नैवेद्य हेतु **मधु त्रिमधु** तथा **ताम्बूल** का प्रयोग विहित है ।

इसके प्रयोग से **अणिमादि अष्टसिद्धि की प्राप्ति** तथा **परकायप्रवेश एवं अग्निस्तभन** की शाक्ति प्राप्त होती है ।अनुष्ठान के बाद यन्त्र को गले मं धारण करें ॥३०॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाद्याभिरभितो' इति त्रिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। स्वं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
स्वं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्।अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्।नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्।एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्।पञ्चदेवमयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा । रजसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा।कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम्। शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् ।साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेवितां। एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम् ।पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा।त्रिबिन्दुसहितंमन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम्।पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**चतुष्षष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं**
**स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः ।**
**पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना-**
**स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम् ॥3 1॥**

हे भगवति ! पशुपतिः सकलं भुवनं तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः चतुष्षष्ट्या तन्त्रैः अतिसन्धाय स्थितः । पुनस्त्वन्निर्बन्धात् अखिलपुरुषार्थैकघटनास्वतन्त्रं ते तन्त्रमिदं क्षितितलमवातीतरत् ।

---

भगवान् शंकर,जो जिस सिद्धि की कामना करता है मात्र उसी सिद्धियों को देने वाले चौंसठ तन्त्रों से संसार को विभूषित कर निष्क्रिय रहे। तत्पश्चात् तुम्हारे अनुरोध के कारण फिर सब इच्छाओं तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्षादि पुरुषार्थों को प्रदान करने में समर्थ तुम्हारे स्वतन्त्र तन्त्र श्रीविद्या की इस भूतल पर रचना की । भगवती के तन्त्र से कुण्डलिनी शक्ति को जगाकर सहस्रार में ले जाया जाता है। भगवती ने देखा कि 64 तन्त्रों से श्रेय की प्राप्ति नहीं हो सकती तब शंकर से श्रेय की प्राप्ति का साधन बताने का अनुरोध किया तब शंकर ने 64 तन्त्रों से अलग स्वतंत्र तंत्र (समयाचार) का साधन कहा । इस तंत्र में श्रीविद्या का रहस्य बतलाया गया है, जो स्वयं महात्रिपुर का रूप है ।।31।।

**ચોસઠ તંત્રોથી સર્વ વિશ્વનું નિયંત્રણ શિવ કરી રહ્યા હતા. આ તંત્રો પરતંત્ર રહ્યાં, કારણ કે દરેક તંત્ર પોતાની ભિન્ન સિદ્ધિ લાવવું હતું. પશુપતિએ આપના અણસારે માનવના બધા પુરુષાર્થો ને અનુકૂળ આવે તેવું તમારું સ્વતંત્ર આ તંત્ર પૃથ્વીને પાટલે ઉતાર્યું. (૩૧)**

Having deluded the entire world with the sixty-four tantras, which are devoted to producing various siddhis relating to each, the Lord of the Jivas again brought into this world, due to Thy compulsion, this Thy tantra, which is the sole means of achieving, by itself, all the objects of human desires. [31]

---

**विशेष-** श्रीविद्या को चन्द्रकला विद्या भी कहते हैं क्योंकि चन्द्रमा की १६ कलाओं के अनुरूप षोडशी में भी १६ अक्षर हैं और नित्याएँ भी १६ हैं । इसके ८ तन्त्र हैं-चन्द्रकला,ज्योतिष्मती,कलानिधि, कुलार्णव,कुलेश्वरी,भुवनेश्वरी,बार्हस्पत्य,तथा दुर्वास मत । इन सबमें समयाचार मतानुसार सव्य-पथ बताया गया है । दूसरे तन्त्रों में कुलाचार अर्थात् अपसव्य पथ का वर्णन है । श्रीविद्योपासना उभयथा उपदिष्ट होने से मिश्रपथ भी कहलाती है । समयाचार के अन्य ग्रन्थ इनके कर्ता पञ्चऋषियों वशिष्ठ,सनक,सनन्दन,सनातन,और सनत्कुमार के कारण'शुभागमपञ्चक'कहलाते हैं।

चौंसठ तन्त्रों की कई एक सूचियां प्राप्त हुई हैं । सौन्दर्यलहरी में शङ्करभगवत्पाद ने किन चौसठ तन्त्रों को लिया है,कहना मुश्किल है । कृपया ६४ तन्त्रों की सूची परिशिष्ट में देखें ।

## सर्वकामनापूरण प्रयोग

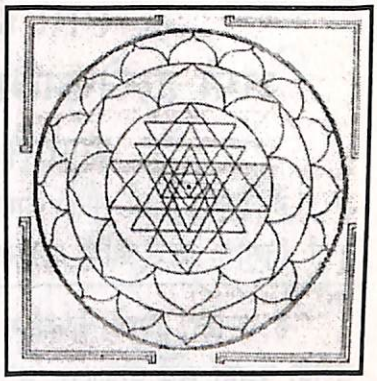

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर हाथ में रखकर **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**चं**' है । जप का दशांश हवन '**चं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**चं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**चं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मंन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा तथा शक्कर** हवनीय द्रव्य है । **मधु** तथा **खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इसके प्रयोग से **सकलजनवश्यता, राजवश्यता** की प्राप्ति होती है ॥३१॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'चतुःषष्ट्या तन्त्रैः' इति एकत्रिंशन्मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। चं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
च बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**तुषार-कुन्द-पुष्पाभां नानालङ्कार-भूषिताम् ।**
**सदा षोडश-वर्षीयां वराभय-करां पराम् ।**
**शुक्ल-वस्त्रावृतकटीं शुक्लवस्त्रोत्तरीयिणीं ।**
**वरदां शोभनां रम्यामष्ट-बाहु-समन्विताम् ।**
**च-वर्णं शृणु सु-श्रोणि चतुवर्ग-फलं प्रदं ।**
**कुण्डली-सहितं धूम्रं महा-चण्डार्चितं पुरा ।**
**सततः कुण्डली-युक्तं पञ्च-देव-मयं सदा ।**
**सर्व-सृष्टि-प्रदं वर्णं पञ्च-प्राणात्मकं प्रिये! ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः**
**स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः ।**
**अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिताः**
**भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम् ॥32॥**

हे जननि! शिवः शक्तिः कामः क्षितिः अथ रविः शीतकिरणः स्मरः हंसः शक्रः तदनु च परामारहरयः इत्येते वर्णाः तिसृभिः हृल्लेखाभिः अवसानेषु घटिताः ते वर्णाः तव नामावयवतां भजन्ते ।

---

हे जननि! शिव बीजाक्षर 'क' शक्ति बीजक्षर 'ए' मन्मथ बीजाक्षरं 'ई' पृथ्वी बीजाक्षर 'ल', उसके पश्चात् सूर्य बीजाक्षर 'ह' शीतल किरण वाले चन्द्रमा का बीजाक्षर 'स' मन्मथ बीज 'क' हंस मन्त्रस्थित आकाशबीज 'ह' इन्द्र बीजाक्षर 'ल' उसके बाद परा (शक्ति) बीज 'स' भार (काम) बीज 'क' हरिबीजाक्षर 'ल' इन तीनों के अन्त में तीन बीज ह्रींङ्कारों को मिलाकर तुम्हारे नाम के अवयव स्वरूप वर्णो का (जो मन्त्र बन जाते हैं) साधक लोग भजन करते हैं। यह हादि विद्या लोपामुद्रा का मन्त्र है ।।32।।

**શિવ, શક્તિ, કામ, ક્ષિતિ, પછી રવિ, શીતકિરણ, સ્મર, હંસ, શક્ર અને તેના પછી પરા, ભાર, હરિ-એ શબ્દોથી સૂચિત થતા પ્રત્યેક જૂથના ક્રમિક અક્ષરોને અને હ્રીં મૂકવામાં આવે, ત્યારે આ અક્ષરો હે જનની ! આપના નામના ઘટકો દર્શાવે છે. (૩૨)**

Oh, Mother ! The letters indicative of Siva, Sakti, Kama and Kshiti and then of Ravi, Seetakirana, Smara, Hamsa, and Shakra and thereafter of Para, Mara and Hari, conjoined with the syllable 'Hreem' at the end of each of the three groups constitute parts of Thy mantra. [32]

---

**विशेष-** प्रस्तुत श्लोक में हादि विद्या लोपामुद्रा का मन्त्र उपदिष्ट है । मन्त्र गुरुमुख से जानना चाहिए । मन्त्र के चार पाद होते हैं । प्रथम तीन पाद तीन कूट वाग्भव,कामकला,और शक्तिकूट और चौथा श्रीकूट है । प्रथम तीन पादों को अग्नि,सूर्य और चन्द्र तथा रुद्र,विष्णु और ब्रह्मा की क्रमशः ज्ञान,क्रिया और इच्छा शक्तियाँ-जाग्रत,स्वप्न और सुषुप्ति के अनुरूप विश्व,तैजस और प्राज्ञ-सत्व,रजस् और तमस् समझना चाहिए । चौथा पाद तुरीय पद है । बाह्य की उपासना में ऋषि,छन्द,देवता,विनियोग इत्यादि की आवश्यकता रहती है परन्तु अन्तर्याग में केवल आत्मतत्व पर ही लक्ष्य रहता है ।

शङ्कराचार्य जी एक दारेषणा,वित्तेषणा और लोकेषणा से विमुक्त सन्यासी थे । इसीलिए वे इस भावना प्रधान विद्या के उपासक थे । शायद इसीलिए उनका सारा जोर अन्तर्याग पर रहता था । अन्तःकरण की शुद्धि और अन्तर्याग का परस्पर सम्बन्ध है ।

## रसायनसिद्धि प्रयोग

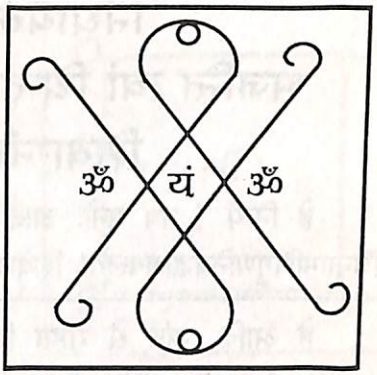


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें । बीजाक्षर '**शिं**' है। जप का दशांश हवन '**शिं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**शिं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**शिं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शक्कर** हवनीय द्रव्य है । **दही, अन्न** और **उडद के पुए** का नैवेद्य विहित है ।

इससे **रसायनसिद्धि** तथा सकलविद्याओं की सिद्धि होती है। केरल भाषा की पुस्तक में यं बीज नहीं मिलता ॥३२॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'शिवः शक्तिः कामः' इति द्वात्रिंशन्मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। शिं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
शिं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चितां। शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मिताम्। रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां। देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः। शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते ! रक्तवर्णप्रभाकारं स्वयं परमकुण्डली। चतुर्वर्गप्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं। पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं प्रिये !। रत्नपञ्चतमोद्युक्तं त्रिकूटसहितं सदा। त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतम्। इकारं परमानन्दं, सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरि-ब्रह्म-मयं वर्णं, सदाशिव-मयं प्रिये!। महा-शक्ति-मयं देवि! गुरु-ब्रह्म-मयं तथा। विश्व-त्रय-मयं वर्णं, पर-ब्रह्म-समन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृञ्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दन भूषिताम्।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनो-**
**र्निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः ।**
**भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः**
**शिवाग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराहुतिशतैः ॥33॥**

हे नित्ये ! तव मनोः आदौ स्मरं योनिं लक्ष्मीं इदं त्रितयं निधाय निरवधिमहाभोगरसिकाः एके चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः शिवाग्नौ त्वां सुरभिघृतधाराहुतिशतैः जुह्वन्तः भजन्ति ।

---

हे आदि, अंत से रहित नित्ये! तुम्हारे पञ्चदशाक्षरी मंत्र के प्रारम्भ में स्मर (काम) बीज 'क्लीं' भुवनेश्वरी (योनि) बीज 'ह्रीं'और लक्ष्मी बीज 'श्रीं' इन तीनों को मिलाकर तुम्हारे कुछ भक्त (मनीषी) अनवरत चिन्तामणियों से गुथी हुई अक्षमाला पर तुम्हारा भजन कर आनन्दित होते है। एवं शक्ति (त्रिकोण) में स्थित अग्नि में कामधेनु से प्राप्त घी की आत्मानन्द से सैकड़ों आहुतियाँ देते हैं । भगवती की उपासना भोग एवं मोक्ष दोनों प्रदान करती है । भोगों में रत गृहस्थियों के लिए कादि विद्या की पूजापद्धति आणवी दीक्षा द्वारा दी जाती है ।।33।।

**કેટલાક પાર વગરનાં સુખ ભોગના રસિકો, સ્મર, યોનિ, લક્ષ્મી, એ ત્રિપદીને આપના મંત્રની શરૂઆતમાં મૂકી, હે નિત્યા ! ચિંતામણિની મણકાની માળા વડે મંત્ર જાપ કરે છે, અને (સ્વર્ગની કામધેનુ) સુરભિ ગાયના ઘીની ધારાઓના સેંકડો બલિ શિવાગ્નિમાં અર્પણ કરે છે. (૩૩)**

On Eternal One ! Some who are desirous of unlimited exuberant enjoyment (bliss), by placing the three beejaksharas (letters) of Smara, Yoni and Lakshmi before Thy mantra, worship Thee with rosaries made of chintamani beads and by offering hundreds of oblations of flowing Surabhi's ghee in the fire of Siva. [33]

---

**विशेष**-मोक्षदायिनी हादिविद्या के बाद अब सर्वकामप्रदा कादि विद्या बताते हैं । भगवती की उपासना भोग और मोक्ष उभयसाधिका है । सामान्यतः श्रीविद्या का मन्त्र १५ अक्षरों का होने के कारण पञ्चदशी मन्त्र कहलाता है परन्तु 'जायते,वर्धते,विजृम्भते,परिणमते,नश्यति' इन पाँच दशाओं से युक्त प्रपञ्च की साक्षिणी होने और स्वयं 'अक्षरी'अविनश्वरी होने के कारण पञ्चदशाक्षरी कही जाती है । इसी भाव को मानसोल्लास नामक ग्रन्थ में कहा है-

**दशापञ्चकभेदेन प्रपञ्चस्य विलासिनः । साक्षिणी चाक्षरी यस्मात् तस्मात्पञ्चदशाक्षरी ।** इसी को अथर्ववेद के सौभाग्यकाण्ड में-

**'कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहाहसामातरिश्वाभ्रमिन्द्रः । पुनर्गुहासकलामायया च पुरुच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्** 'से कहा गया है ।

## भूरिधनद प्रयोग

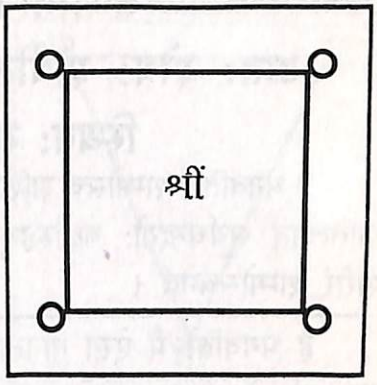


प्रस्तुत यन्त्र को **सोने** में **चन्दन** से लिखकर **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**स्मं**' है । जप का दशांश हवन '**स्मं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**स्मं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**स्मं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मूंग के बने व्यञ्जन** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इससे **भूरिधन** की प्राप्ति होती है ।अनुष्ठान के बाद यन्त्र को गले में धारण करें ॥३३॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'स्मरं योनि लक्ष्मीं' इति त्रयस्त्रिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। स्मं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं .....कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
स्मं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्। अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्। नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धि प्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्।एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।सकारं शृणु चार्वङ्गि! शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्।पञ्चदेवमयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा । रजसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा ।कृष्णां दशभुजां भीमां पीतलोहितलोचनाम्। कृष्णाम्बरधरां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां मकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। मकारं शृणु चार्वङ्गि! स्वयं परमकुण्डली। तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं तथा।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**शरीरं त्वं शंभोः शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं**
**तवात्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनघम् ।**
**अतः शेषः शेषीत्ययमुभयसाधारणतया**
**स्थितः सम्बन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः ।।३४।।**

हे भगवति ! शम्भोस्त्वं शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं शरीरं भवसीति शेषः। आनन्दभैरवस्य कालव्यूहान्तः पातित्वात् सूर्यचन्द्रयोः वक्षोरुहयुगत्वारोपणं युक्तम् । अथवा हे भगवति! शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं शरीरं शम्भोस्त्वमेव ।

---

हे भगवति! मैं ऐसा मानता हूँ कि तुम्हारा जो शरीर है वह शंभु का है जिसके वक्षःस्थल पर सूर्य और चन्द्रमा रूपी दो स्तन उभरे हुए हैं। तुम्हारी आत्मा विशुद्ध नौ व्यूह- काल, कुल, नाम, ज्ञान, चित्त, नाद, बिन्दु, कला और जीव रूपी शंकर का शरीर है। इसलिए भोग-भोगी का यह संबंध शेष और शेषीवत् तुम दोनों में परस्पर समान रूप से स्थित है। दोनों मार्गों का इतना एक रसपना है कि जैसे विशेषण और विशेष्य का, अर्थात् दोनों मार्ग परस्पर सापेक्षित है और एक दूसरे के बिना अपूर्ण है । दोनों को एकता का समरसपना दोनों की अभिन्नता प्रकट करता है जैसे शक्कर और उसकी मधुरता । यह अधिदैव रूप है अर्थात् चित्त और आनन्द का जोड़ा ही ब्रह्म और शक्ति का जोड़ा है। सूर्य से विश्व को प्राण शक्ति प्राप्त होती है एवं चन्द्रमा से सोम रस की प्राप्ति । इसीलिए जगज्जननी प्रकृति के दोनों स्तनों से उपमित किया गया है ।।३४।।

**તમો शंभुनुं शरीर छो अने सूर्य अने चंद्र तमारुं स्तनयुग्म छे. हुं मानुं छुं के तमो भव (शिव)नां सर्वांग स्वरूप छो, भगवती ! आथी तमो अन्यो-अन्य शेष अने शेषीनो संबंध धरावो छो. तमारा आ संबंध वडे समरसे तमो परमानंद माणो छो. (३४)**

Oh glorious Devi ! Thou art the body of Sambhu having the Sun and Moon as Thy breasts. I consider Thy pure frame to be Sambhu. Hence the relationship of the principal and the accessory exists in common among you both who as transcendent bliss and consciousness are equiposed. [34.]

---

**विशेष**-शिवशक्ति की एकता को दिखाने के लिए उन्हें आधाराधेय के रूप में कहते हैं । नवव्यूहात्मक (काल,कुल,नाम,ज्ञान,चित्त,नाद,बिन्दु,कला और जीव)शिव और नवव्यूहात्मिका (वामा,ज्येष्ठा,रौद्री,अम्बिका,इच्छा,ज्ञान,क्रिया,शान्ति और परा) विश्वेश्वरी के नव त्रिकोणों (४ श्रीकण्ठ और ५ शिवयुवतियों) श्रीचक्र बनता है ।

समस्त रेखाओं, कोणों, वृत्तों तथा चतुरस्रों से बने श्रीचक्र का यह अधिदैव रूप है अर्थात् चित् और आनन्दका जोडा ही ब्रह्म और शक्तिका जोडा है।आधिभौतिक स्तरपर भी ऐसा ही समझना चाहिए ।

## विद्याबुद्धिद प्रयोग

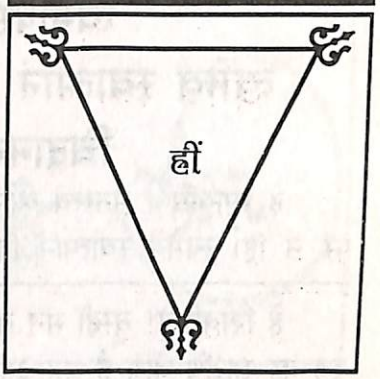


प्रस्तुत यन्त्र का **सोने** में **चन्दन** से लिखकर **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**शं** ' है । जप का दशांश हवन '**शं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**शं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**शं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के विधिपूर्वक उपचार कर गले में धारण करने से व्यक्ति **महाबुद्धिमान्** होता है । प्रज्ञा, मति, प्रतिभा, तथा बुद्धि पर्याय होते हुए भी अलग अर्थ रखते हैं । ॥३४॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'शरीरं त्वं शम्भोः' इति चतुस्त्रिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। शं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारु-चन्दन-चर्चितां।**
**शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मिताम्।**
**रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां।**
**देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः।**
**शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते!**
**रक्त-वर्ण प्रभाकारं स्वयं परम-कुण्डली।**
**चतुर्वर्ग-प्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं।**
**पञ्चदेव मयं वर्णं पञ्च-प्राणात्मकं प्रिये!।**
**रत्न-पञ्च-तमोद्युक्तं त्रिकूट-सहितं सदा।**
**त्रिशक्ति - सहितं वर्णं आत्मादि-तत्त्व-संयुतम् ।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
शं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्ध परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि**
**त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम् ।**
**त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा**
**चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन बिभृषे ।।३५।।**

हे भगवति ! मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि । त्वमापस्त्वं भूमिः । त्वयि परिणतायां परं न हि। त्वमेव स्वात्मानं विश्ववपुषा परिणमयितुं शिवयुवति भावेन चिदानन्दाकारं बिभृषे ।

---

हे शिवप्रिये! तुम्हीं मन तत्त्व हो, तुम्हीं आकाश तत्त्व हो, तुम्हीं वायु तत्त्व हो, और जिसके रथ का सारथि वायु है वह अग्नि तत्त्व भी तुम्हीं हो, तुम्हीं जल तत्त्व एवं भूमि तत्त्व के रूप में विद्यमान हो । यह सारा विश्व तेरे परिणाम का ही रूप है अर्थात् तुमसे भिन्न कोई तत्व है ही नहीं। तुम्हीं अपने स्वरूप को प्रपञ्च के रूप में परिणत करने के लिए परमशिवजी की पत्नी के रूप में चिदानन्दाकार को विराट् देह के भाव द्वारा व्यक्त करती हो ।।३५।।

મન તમે છો, વ્યોમ તમે છો, વાયુ તમે છો, પવન જેનો સારથિ છે તે (અગ્નિ) તમે છો, તમે બ્રહ્માણ્ડ છો, તમે પૃથ્વી છો; જ્યારે તમે (આ સ્વરૂપમાં ) રૂપાંતર પામો છો ત્યારે તમારાથી કશું જ વધારે રહેતું નથી. તમે જ પોતાની વિશ્વસ્વરૂપમાં ઉત્ક્રાંતિ કરવા માટે હે શિવયુવતી ! તમારી પ્રકૃતિથી ચિત્ અને આનંદ સ્વરૂપમાં પ્રગટ થાવ છો. (૩૫)

Oh Siva's consort ! Thou art Mind. Thou art Akasha (ether) Thou art Air, Thou art Fire, Thou art Water, and Thou art Earth. When Thou hath evoluted (thus), nothing else exists.Thyself intending to evolve Thine own form into that of the Universe assumeth the form of Consciousness and Bliss. [35]

---

**विशेष-** सूर्य,चन्द्र,मन और पाँच तत्वों को मिलाकर भगवती की अष्टमूर्ति बनती है । यह भगवती का चिदानन्द व्यापक भाव उन मूर्तियों में भरा रहता है । वह माँ मन-बुद्धिरूप से आज्ञाचक्र में,आकाश और मूलवायु रूप से विशुद्धि चक्र में,वायु और अग्निरूप से अनाहत चक्र में, अग्निरूप से मणिपूर चक्र में,जलरूप से स्वाधिष्ठान में, तथा भूरूप से मूलाधार में व्याप्त है ।

मन की स्थूल ध्येयाकारिता रूपापत्ति है,इसे वितर्क संप्रज्ञात समापत्ति कहते हैं । मन का शब्दात्म होना विचार संप्रज्ञात समापत्ति है । आनन्दाकार होना सानन्द समापत्ति है तो चिदात्म होना सास्मिता समापत्ति है । समता की प्राप्ति को समापत्ति कहते हैं और प्रज्ञा से संयुक्त को संप्रज्ञात कहते हैं।

तात्पर्य कि इन अवस्थाओं में मन प्रज्ञा से संयुक्त होकर स्थूलाकार,सूक्ष्माकार,आनन्दाकार और चिदाकार रहता है ।

## क्षयरोगनिवृत्ति प्रयोग

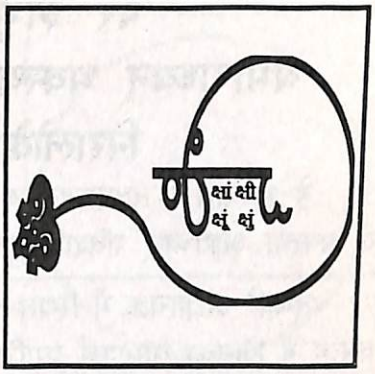


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्ण** में **चन्दन** से लिखकर **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें। बीजाक्षर '**मं**' है । जप का दशांश हवन '**मं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**मं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**मं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** तथा **दूध की खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इसको धारण करने से **क्षयरोग की निवृत्ति** होती है । साथ ही साथ हरीतकी का भी अभिमन्त्रण कर सेवन करें ॥३५॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'मनस्त्वं व्योम त्वं' इति पञ्चत्रिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। मं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
मं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**कृष्णां दशभुजां भीमां पीतलोहितलोचनाम् ।**
**कृष्णाम्बरधरां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम् ।**
**एवं ध्यात्वां मकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**मकारं शृणु चार्वङ्गि ! स्वयं परमकुण्डली ।**
**तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम् ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं तथा ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तवाज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरं**
**परं शंभुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता ।**
**यमाराध्यन् भक्त्या रविशशिशुचीनामविषये**
**निरालोकेऽलोके निवसति हि भालोकभुवने ।।३६।।**

हे भगवति ! तवाज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरं परं शम्भुं परचिता परिमिलितपार्श्वं वन्दे । यं भक्त्या आराध्यन् रविशशिशुचीनाम् अविषये निरालोके अलोके भालोकभुवने निवसति हि ।

---

तुम्हारे आज्ञाचक्र में स्थित करोड़ों सूर्य और चन्द्र के प्रकाश से युक्त परशिव की मैं वन्दना करता हूँ जिनका वामपार्श्व पराचिति से एकीभूत है। भक्ति पूर्वक जो मनुष्य इस रूप में तुम्हारी उपासना करते हैं वे उस प्रकाशमान लोक में निवास करते हैं जो सूर्य, चन्द्र, और अग्नि का विषय नहीं हैं अथवा इन तीनों का विषय न होने के कारण उनके प्रकाश से प्रकाशित नहीं है। भगवती की काल्पनिक मूर्ति को ध्यान में लाकर उसके भ्रूमध्यस्थ स्थान में पराचिति को वामाङ्क में लिए हुए पर शिव की आराधना का विधान है । आज्ञा चक्र की भावना पूर्वक अर्चना करने से भालोक भुवन की प्राप्ति होती है । मूलाधार-स्वाधिष्ठान दोनों अग्निमण्डलान्तर्गत हैं, मणिपूर-अनाहत सूर्यमण्डलान्तर्गत एवं विशुद्धि-आज्ञा चन्द्रमण्डलान्तर्गत है। आज्ञा से ऊपर सहस्रार जो सदा पूर्णज्योति का परम स्थान है, वह इन तीनों से ऊपर है। वहाँ जाकर साधक जन्म-मरण के आतंक से छूट जाता है ।।३६।।

**તમારા આજ્ઞાચક્રમાં સ્થિત, કરોડો સૂર્ય-ચંદ્ર સમાન પ્રકાશ ધરાવતા પરમ શંભુને હું વંદુ છું, તેમના ડાબા પડખે આલિંગન કરેલ પરચિત્ (દેવી ચિત શક્તિ સ્વરૂપે) ને પણ વંદન કરું છું. શંભુનું ભક્તિપૂર્વક આરાધન કરતાં, સૂર્ય, ચંદ્ર અને અગ્નિના પ્રદેશોથી પણ પર એવો લોક પ્રાપ્ત થાય છે જ્યાં પ્રકાશ પહોંચતો નથી છતાં તે પ્રભાથી ભરપૂર છે. .(૩૬)**

" I bow to Parashambhunatha resting in Thy Ajna-Chakra enveloped by Parachit on the sides and having the splendour of crores of suns and moons. Having worshipped whom with devotion, one lives in the Sahasrara, the land of eternal moonshine, which is out of reach of the Sun, Moon and Fire and far beyond the ken of all and devoid of light. ]36]

---

**विशेष**-यहाँ से छः श्लोकों तक छः चक्रों के ध्यानचक्र का वर्णन है । आज्ञाचक्र सर्वरोगहरचक्रस्वामिनी का चतुःषष्टिदेवता से युक्त भृकुटि के मध्य द्विदलचक्र है जहाँ कोटि-कोटि सूर्य और चन्द्र का प्रकाश फैला है । अग्नि सूर्य और चन्द्र की ३६० मयूखाएँ आधार चक्रादि आज्ञाचक्रान्त विचरती रहती हैं । चन्द्र आज्ञाचक्र से ऊपर सहस्रकमल में स्थित है ।

## भीति निवारण प्रयोग

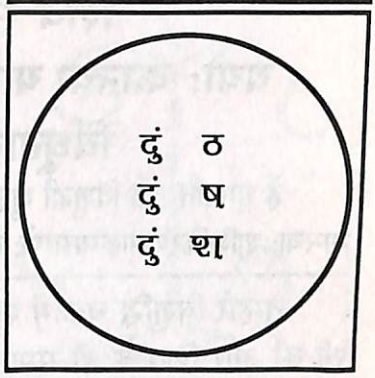


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्ण** में **चन्दन** से लिखकर **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें। बीजाक्षर **'तं'** है । जप का दशांश हवन **'तं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'तं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'तं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** तथा **उड़द के बड़े** का नैवेद्य विहित है ।

यन्त्र को धारण करें और अभिमन्त्रित जल का पान करावें। **नाना और कठिन रोगों की निवृत्ति** होती है ॥३६॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तवाज्ञा चक्रस्थं' इति षड्त्रिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
तं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं**
**शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम् ।**
**ययोः कान्त्या यान्त्याः शशिकिरणसारूप्यसरणे-**
**र्विधूतान्तर्ध्वान्ता विलसति चकोरीव जगती ।।३७।।**

हे भगवति ! ते विशुद्धौ शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं शिवं शिवसमानव्यवसितां देवीमपि सेवे; ययोः यान्त्याः शशिकिरणसारूप्यसरणेः कान्त्यास्सकाशात् जगती विधूतान्तर्ध्वान्ता चकोरीव विलसति ।

---

तुम्हारे विशुद्धि चक्र में शुद्ध स्फटिक के समान स्वच्छ तथा आकाश तत्त्व के उत्पादक शिव जी की और शिव के ही समान सुव्यवस्थित और अनुकूल संकल्प करने वाली देवी की मैं सेवा करता हूँ। तुम दोनों के शरीर से चन्द्रमा की किरणों के समान निकलने वाले प्रकाश से जगत् भर के अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो जाते हैं । अज्ञान से मुक्त जगत् चन्द्रमा में प्रमुदित चकोरी की तरह आनन्दित होता है । विशुद्धि चक्र आकाश तत्त्व का स्थान है जिसके अधिष्ठाता सदाशिव हैं । आकाश तत्त्व के उपादान होने के कारण उनको व्योमेश्वर एवं भगवती को व्योमेश्वरी कहते हैं ।।३७।।

**તમારા 'વિશુદ્ધિ' ચક્રમાં (રહેલા) આકાશના પિતા, શુદ્ધ સ્ફટિક સમા શિવજીનું હું આરાધન કરું છું અને શિવ સમાન વ્યસ્ત અને વ્યવસ્થિત દેવી ને વંદુ છું. આ બન્નેની રૂપાળી દ્યુતિ ચંદ્રના કિરણ સમાન માર્ગે ગતિ કરે છે. તે દ્યુતિમાં આ જગતનું આંતરિક અંધારું દૂર થાય છે અને જગત ચકોરી જેમ આનંદ કરે છે. (૩૭)**

"I worship in Thy Visuddhi Chakra, which is clear as pure crystal, Siva - the creator of Akasha- and the Devi of similar function, by whose lustre flowing in streams resembling the moon's rays, the world gets rid of its internal darkness, like the chakora bird" [37]

---

**विशेष**-७२ नाभस मयूखाओं से युक्त आकाशतत्व के उपादान व्योमेश्वर और व्योमेश्वर्यम्बा जिसके दैवत हैं ऐसा विशुद्धिचक्र आकाश तत्व का स्थान है । बहुधा आकाश का अर्थ अवकाश अथवा अभावात्मक शून्य किया जाता है,परन्तु अभाव से भावात्मक वायु की उत्पत्ति नहीं मानी जा सकती,अतः आकाश को एक भावात्मक तत्त्व मानना पड़ेगा ।

पाश्चात्य भौतिक विज्ञानवादी भी आकाश के स्थान पर एक तत्त्व की सत्ता मानते हैं जिसके माध्यम से प्रकाश,उष्णता, विद्युत् और चुम्बक की किरणें प्रकाशित होती हैं । पुरातन काल के साधक जो बात बिना प्रयोगशालाओं के कह गये हैं वह बात आधुनिक रेडियो-विज्ञान के आविष्कार से सर्वसाधारण के सामने प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध है । संभवतः यही अध्यात्म की विज्ञान पर विजय है ।

प्रस्तुत यन्त्र को **जातरूप** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन ५००० मन्त्र** का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें । बीजाक्षर **'विं'** है । जप का दशांश हवन **'विं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'विं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'विं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **गुड़ की खीर, नारियल** तथा **केले** का नैवेद्य विहित है ।

इसके धारण अथवा अभिमन्त्रित जल पीनेसे **समस्त बाधाओं विशेषकर ब्रह्मराक्षस की बाधा से निवृत्ति** होती है ॥३७॥

**ब्रह्मराक्षस बाधानिवारण प्रयोग**

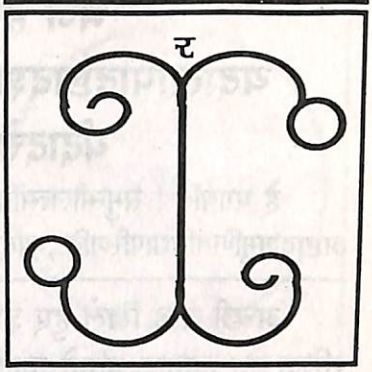


**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'विशुद्धौ ते शुद्ध' इति सप्तत्रिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। विं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
विं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् । शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् । साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेविताम्। एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डला मोक्षमव्ययम्।पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा । त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम् । पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्। चतुर्वर्गप्रदं शान्तं सर्वसिद्धि प्रदायकम् । इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिव-मयं प्रिये !। महाशक्तिमयं देवि ! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं पर-ब्रह्मसमन्वितं । ऊर्ध्वाधः कृञ्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत् । लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत् । धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरि-चन्दनभूषिताम्।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**समुन्मीलत्संवित्कमलमकरन्दैकरसिकं**
**भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम् ।**
**यदालापादष्टादशगुणितविद्यापरिणति-**
**र्यदादत्ते दोषाद्गुणमखिलमद्भ्यः पय इव ।।३८।।**

हे भगवति ! समुन्मीलत्संवित्कमलमकरन्दैकरसिकं महतां मानसचरं किमपि हंसद्वन्द्वं भजे; यदालापात् अष्टादशगुणितविद्यापरिणतिः, यत् दोषात् अखिलं गुणं अद्भ्यः पय इव आदत्ते ।

---

अच्छी तरह खिले हुए ज्ञानरूपी कमलके मात्र आनन्दरूपी मकरन्द को चाहने वाले एकमात्र रसिक उन आनन्द भोगने वाले महापुरुषों के मानससरोवर मैं तैरते हुए अवर्णनीय हंसों के जोड़े का मैं भजन करता हूँ । उनकी मधुर बोली का परिणाम १८ विद्याओं की व्याख्या है। जिस प्रकार हंस दूध में से पानी को अलग कर देता है उसी प्रकार ये १८ विद्याएँ गुणों में से दोषों को अलग करने में समर्थ हैं। 'हं' शिव तथा 'स' शक्ति है । हंसेश्वर तथा हंसेश्वरी नाम से ध्यान किया जाता है । इन हंस युगलों के सम्भाषण से ही १८ विद्याओं (४ वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द, मीमांसा, न्याय, पुराण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, गान्धर्व विद्या और नीति) की रचना हुई ॥३८॥

**માત્ર પરમ જ્ઞાનમાંથી મળતા મધ પર નભતાં જાણે કે તે ખીલતા કમળ (અનાહત) સમાન છે તે હંસદ્વંદ્વ (શિવ અને દેવી) ને હું ભજું છું. તે માનસ સરોવર પર સરકતું હોય તેમ મહાપુરુષોના મન ઉપર સરકી રહ્યું છે. તેના આલાપથી (કલરવથી) અઢાર વિદ્યાઓ ઉત્પન્ન થાય છે. તે દોષોમાંથી ગુણોને અલગ કરી શકે છે, જાણે કે નીર-ક્ષીર વિવેક. (૩૮)**

I bow to the indescribable pair of swans which are solely relishing the honey in the blossoming lotus or wisdom (consciousness) and are moving in the Manasa lake (Viz. the minds of great men) and from whose talk developed the eighteen-fold Vidyas, and which distinguishes all good from evil as milk from water. [38]

---

**विशेष**-संवित् का अर्थ ज्ञान है । १२ अक्षरों का अनाहतचक्र जो सुषुम्ना में स्थित है,उससे यह अष्टदल पद्म पृथक् है । इसका स्थान वक्षस् में है । इसमें हंस-द्वन्द्वं-हंसः सोहं से सम्पुटित त्रिकूट जपने का विधान है ।

१८ विद्याएँ इस प्रकार हैं-ऋक्, यजु, साम, अथर्व आदि चार वेद,तथा शिक्षा,कल्प, व्याकरण,निरुक्त,छन्द,ज्योतिषआदि छः वेदांग और पूर्व तथा उत्तर मीमांसा, न्याय, सांख्य, धर्मशास्त्र,आयुर्वेद,शिल्प,धनुर्वेद,तथा गान्धर्ववेद आदि अन्य विद्याएं ।

## बालारिष्ट निवृत्ति प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्ण या ताम्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें । बीजाक्षर **'सं'** है । जप का दशांश हवन **'सं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'सं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'सं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **११ उड़द के बड़े, ताम्बूल, नारियल** तथा **केले** का नैवेद्य विहित है।

इसके विधिपुरस्सर अनुष्ठान कर धारण करने तथा अभिमन्त्रितजल के प्रोक्षण से बालारिष्टनिवृत्ति होती है ॥३८॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'समुन्मीलत् सम्वित्' इति अष्टत्रिंशतिंमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
सं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**करीष-भूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्।**
**अस्थि-माल्यामष्ट-भुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्।**
**नागेन्द्र-हार-भूषाढ्यां जटा-मुकुट-मण्डिताम्।**
**सर्वसिद्धि-प्रदां नित्यां धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।**
**एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्ति-बीजं परात्परम्।**
**कोटि-विद्युल्लताकारं कुण्डली-मय-संयुतम्।**
**पञ्च-देव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा।**
**रजस्सत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं**
**तमीडे संवर्तं जननि महतीं तां च समयाम् ।**
**यदालोके लोकान्दहति महति क्रोधकलिते**
**दयार्द्रा या दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति ।।३९।।**

हे भगवति ! तव स्वाधिष्ठाने हुतवहं संवर्तमधिष्ठाय निरतं तं ईडे, समयां तां महतीं च ईडे । महति क्रोधकलिते यदालोके लोकान् दहति सति या दयार्द्रा दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति सा त्वदीया दृष्टिरिति शेषः ।

---

हे जननि ! तुम्हारे स्वाधिष्ठान चक्र में जो अग्नितत्त्व है उसके अपने प्रभाव में रखने के लिए जो कालाग्निरूप संवर्ताग्नि की एवं उस महिमामयी समया अथवा चन्द्रकलाशक्ति देवी की मैं स्तुति करता हूँ। जब रुद्र की क्रोध भरी दृष्टिरूपी संवर्ताग्नि लोकों को भस्म कर देती है तब उस समय तुम्हारी करुणासे आर्द्रदृष्टि शीतल उपचार करती है । प्रलयके समय संवर्ताग्नि पृथ्वीको जल में, जल को तेज में, तेज को वायु और वायु को आकाश में लीन करता हुआ सब तत्त्वों को प्रकृति में लीन कर देता है । तब देवी दयार्द्राभिभूत दृष्टि से संवर्ताग्नि को शान्त कर लोकानुग्रह करती है, विविध रचना करने लगती है ॥३९॥

**તમારા 'સ્વાધિષ્ઠાન' ચક્રમાં સદા અગ્નિ વસે છે. તે 'સંવર્ત ' (અગ્નિ) ને હું પૂજું છું. હે મા! અને તેની બળવાન શક્તિ 'સમયા' ને પણ પૂજું છું. જયારે તેની ક્રોધથી ભરપૂર નજર દુનિયાને બાળે છે ત્યારે તારી દયાભીની દૃષ્ટિ ઠંડક કરવાના ઉપચાર પણ કરે છે. (૩૯)**

Oh Mother ! I bow to the Samvarta resting in the Agnitattva in Thy Svadhishthana Chakra and also to that magnanimous Samaya, whose glance drenched with pity, renders a cooling treatment when His exceedingly furious stare burns the worlds. [39]

---

**विशेष**-कुण्डलिनीशक्ति के जागरण का नाम समाधि है । इस कुण्डलिनी महायोग का एक अङ्ग लययोग भी है और षट्चक्रवेध के द्वारा तत्त्वों के वेधपूर्वक प्रतिप्रसवक्रम भी । प्रतिप्रसवक्रम का तात्पर्य उलटे क्रम से है अर्थात् योगी प्रतिप्रसवक्रम का ही आश्रय लेकर षट्चक्र का भेदन करता है और पञ्चमहाभूतों पर विजय प्राप्त करता है ।

भूतजय होने पर रुद्रग्रन्थि,इन्द्रियजय होने पर ब्रह्मग्रन्थि, और मनोजय होने पर विष्णुग्रन्थि का वेध जानना चाहिए । भूतजय होने पर मधुमती भूमिका का उदय होता है और इन्द्रिय एवं मनोजय होने पर मधुप्रतीका भूमिका का । इनसे पूर्व कुण्डलिनी जागरणोपरान्त रजतमिश्रित सत्त्वगुण की भूमिका का नाम प्रारम्भकलिका है और ऋतम्भरा-प्रज्ञा के उदय होने पर शुद्ध सत्वगुण प्रधान मधुमती भूमिका है जिसे पूर्व में कहा गया है ।

## बाधा निवारण प्रयोग

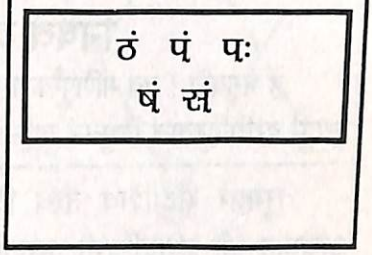


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१२ दिन** तक **प्रतिदिन १०८** मन्त्र का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें । बीजाक्षर **'तं'** है । जप का दशांश हवन **'तं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'तं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'तं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **क्षीर, क्षीरपायस** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इसके धारण से **दुःस्वप्न** का नाश होता है तथा सभी प्रकार की बाधाओं से मुक्ति मिलती है । ॥३९॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तव स्वाधिष्ठाने हुत' इति नवत्रिंशतिंमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....:..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
तं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलततत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तटित्त्वन्तं शक्त्या तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया**
**स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्धेन्द्रधनुषम् ।**
**तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणं**
**निषेवे वर्षन्तं हरमिहिरतप्तं त्रिभुवनम् ।।४०।।**

हे भगवति ! तव मणिपूरैकशरणं तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया शक्त्या तटित्त्वन्तं स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्धेन्द्रधनुषं श्यामं हरमिहिरतप्तं त्रिभुवनं वर्षन्तं कमपि मेघं निषेवे ।

---

तुम्हारे सदाशिव तत्त्व जिसने मणिपूर चक्र को अपना निवास स्थान बनाया है, जिसमें अंधकार की प्रतिद्वन्द्विनी पराशक्ति रूपी बिजली की चमक से युक्त, नाना प्रकार के रत्न आभूषणों की चमक से अलंकृत, इन्द्रधनुष का रूप धारण किए हुए, श्याम मेघों को धारण करने वाले और जो अग्नि एवं सूर्य के ताप से सन्तप्त त्रिलोकी को अपनी वृष्टि से शीतलता प्रदान कर रहें हैं ऐसे जल को मैं प्रणाम करता हूँ । मणिपूर चक्र में मेघेश्वर और सौदामिनी के रूप में शिव-शक्ति का ध्यान किया जाता है । सूर्य का स्थान ऊपर और अग्नि का स्थान नीचे होने के कारण दोनों के ताप से सम्पूर्ण देहरूपी त्रिभुवन तप्त होने पर जल रूप से मेघों का रूप मणिपूर चक्र में धारण कर लेता है और मेघों में अग्नि, विद्युत् सदृश चमकने लगती है इन दोनों के योग से वर्षारूपी जल का सिञ्चन सारे शरीर में होने लगता है ।।४०।।

**પશુપતિ તેમની શક્તિના વીજઝબકાર વડે તિમિરને દૂર કરે છે. ઘણા પ્રકારનાં રત્નોથી બનેલાં ઝબકારા મારતાં આભૂષણો રૂપી મેઘધનુષ ધારે છે. તેથી પશુપતિ શ્યામ વાદળ જેવા લાગે છે અને તે કેવળ તમારા 'મણિપુર' ચક્રમાં વસે છે. વળી હરરૂપી સૂર્યથી દાઝેલા ત્રિભુવન ઉપર વરસાદ આપે છે. તેમને હું ભજું છું. (૪૦)**

" I resort to Thy indescribable dark blue cloud, abiding for ever in Thy Manipuraka Chakra, with lightning in the form of Shakti, that shines dispelling darkness, with rainbow formed by the dazzling variegated gem-decked ornaments (of Devi) and which is showering over the worlds burnt by Hara and the Sun. [40]

---

**विशेष**-मणिपूर चक्र में मेघेश्वर और सौदामिनी के रूप में शिव-शक्ति का ध्यान बताया गया है । ऊपर सूर्यमण्डल में सूर्य का स्थान और नीचे स्वाधिष्ठान अग्निमण्डल में अग्नि का स्थान है। दोनों के ताप से देहरूपी त्रिभुवन तप्त हो जल-वाष्प रूप से मणिपूर में मेघ बन जाता है और मेघों में विद्युताकार अग्नि ही सौदामिनी है ।

इन दोनों के योग से सारे शरीर में वर्षावत् सिंचन होने लगता है ।

## अभीष्टलक्ष्मीदर्शन प्रयोग

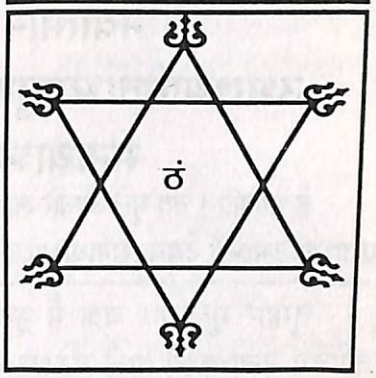


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें तथा यन्त्र को तकिये के नीचे रखकर सोयें । बीजाक्षर '**तं**' है । जप का दशांश हवन '**तं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**तं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**तं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु, क्षीर पायस** तथा **ताम्बूल** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र को तकिये के नीचे रख सोने से **इष्टदेवता और गडे हुए धन का स्वप्न में दर्शन** होता है ॥४०॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तटित्त्वन्तं शक्त्या' इति चत्वारिंशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
तं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तवाधारे मूले सह समयया लास्यपरया**
**नवात्मानं मन्ये नवरसमहाताण्डवनटम् ।**
**उभाभ्यामेताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया**
**सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमज्जगदिदम् ।।४१।।**

हे भगवति ! तव मूले आधारे लास्यपरया समयया सह नवरसमहाताण्डवनटं नवात्मानं मन्ये । उदयविधिमुद्दिश्य एताभ्यां उभाभ्यां दयया सनाथाभ्यां इदं जगत् जनकजननीमत् जज्ञे ।

---

तुम्हारे मूलाधार चक्र में नृत्य करती हुई (समया देवी) तुम्हारे साथ, नवरसों से युक्त श्रेष्ठ ताण्डव नृत्य करने वाले नटेश्वर नवात्मा शिवजी का मैं चिन्तन करता हूँ । प्रलय में नष्ट हुई सृष्टि के प्रति दया से प्रेरित तुम दोनों दम्पति बने जिससे इस जगत् को जनक-जननी प्राप्त हुए । लास्य भगवती के और ताण्डव शङ्कर के नृत्य का नाम है । यह समस्त जड़चेतनमय विश्व शङ्कर भगवान् के अविराम ताण्डव नृत्य का अभिनय है और उनके ताण्डव के अङ्गहार ही मानों सत् शक्ति के परिणामक्रम के विभिन्न स्तरों पर उसकी स्वाँगभरी नृत्य कलाएँ हैं, जिनके शृङ्गार के नव रस परिपूर्ण हाव-भावों में शङ्कर के चिदानन्दस्वरूप का प्रत्याभास हो रहा है ।।४१।।

**તમારા મૂલાધાર ચક્રમાં સમયા દેવી, જે લાસ્ય નૃત્યમાં પારંગત છે, તેમની સાથે નવાત્મા (નવ રસોના આત્મા) ને હું વંદૂ છું. તેવો તાંડવ નૃત્યમા નવ રસ ભરતા નટ છે. આ બન્નેમાંથી જ્યારે તેઓ ઉભયની ગતિવિધિમાં પરોવાયલાં હતા અને દયાથી ભરપૂર હતાં ત્યારે આ જગત ઉત્પન્ન થયું અને જગને તેઓ માતા પિતા રૂપે મળ્યા. (૪૧)**

"I bow, in the Muladhara, to the Navatman in ecstatic male-dance (tandava) involving the nine sentiments, along with Samaya intent on female-dance (lasya). By these two coming together, out of grace and by reason of the act (purpose) of creation this world has come to have its father and mother. [41]

---

**विशेष**-समयादेवी का तात्पर्य समयाचार की उपास्या से है । लास्य भगवती के नृत्य का नाम है और ताण्डव भगवान शङ्कर के। नवरस (शृङ्गार,बीभत्स,रौद्र,अद्भुत,भयानक,वीर,हास्य,करुणा और शान्त) युक्त होकर किए गए ताण्डव को महाताण्डव कहते हैं । शिव को नवात्मा भी कहा जाता है ।

पृथिवी तत्त्व की ६४ किरणें आधी-आधी ताण्डवनटेश्वर और लास्यपरा समयादेवी से उद्भूत समझनी चाहिए । शिव के डमरू में दो विपरीत दिशाओं से शिवशक्त्यात्मक दोनों ही प्रकार के शब्द ताल दिया करते हैं । जिनसे सरस्वती देवी अ क च ट त प य श के वर्ण-वर्गों की मालारूपी वैखरी वाणी का सर्जन करती हैं ।

## उदरपीड़ा निवारण प्रयोग

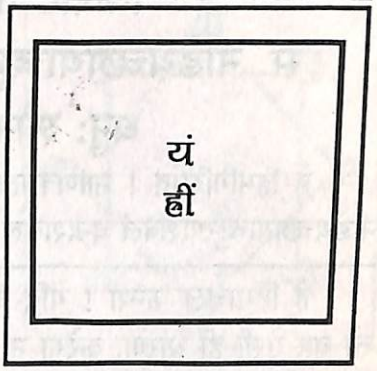


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **३० दिन** तक **प्रतिदिन ४०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर **'तं'** है। जप का दशांश हवन **'तं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'तं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'तं तर्पयामि नमः'** से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है। **मधु** का नैवेद्य विहित है।

इस प्रयोग से **सकल उदररोग** की निवृत्ति होती है तथा स्वास्थ्य विषयक अन्य समस्याएं भी अपगत होती हैं ॥।४१॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तवाधारे मूले सह' इति एकचत्वारिंशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
त बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितं**
**किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः ।**
**स नीडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं**
**धनुः शौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम् ।। ४२।।**

हे हिमगिरिसुते ! माणिक्यत्वं गतैः गगनमणिभिः सान्द्रघटितं हैमं ते किरीटं यः कीर्तयति सः नीडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं शौनासीरं धनुरिति धिषणां किं न निबध्नाति ?

---

हे हिमाचल कन्या ! यदि जो मनुष्य तुम्हारे स्वर्ण के बने हुए मुकुट का वर्णन करना चाहे तो वह ऐसी ही धारणा करेगा न ! कि मानों इन्द्रधनुष निकला हुआ है । क्योंकि जिस प्रकार वह मुकुट तारागणरूपी मणियों से क्रमबद्ध जड़ा हुआ है और चन्द्रमा के टुकड़े के बने पक्षी के घोंसले के जैसे दीख पड़ता है और जो उषःकाल के प्रकाश में रङ्ग-विरङ्गा चमक रहा है । ऐसे ही इन्द्रधनुष दिखता है । उषःकालीन आकाश प्रकृति देवी का मुकुट है ।।४२।।

**જાણે ભાણેક ન હોય એવા આકાશના તારક રત્નોથી જડાયેલો તમારો સુવર્ણ મુગટ છે. તેનું જે કોઈ કીર્તન કરે છે તે, હે હિમગિરિસુતા! મુગટ વીજરેખા ચંદ્ર સમો હોવાથી અને તેમાં જડિત પક્ષીસૌંદર્યને લીધે તેને મેઘધનુષ્ય નહિ ધારી લે ? (૪૨)**

On Daughter of the Snowy Mountain ! Why will not he, who extols Thy golden diadem closely stud with the (twelve) Suns transformed into gems form the idea that the digit of the (crescent) Moon, variegated by the enveloping lustre of the inlaid gems, is but the bow of Indra (rainbow) ? [42.]

---

**विशेष**-सौन्दर्यलहरी को दो भागों में विभक्त किया जाता है,प्रथम ४१श्लोकों में कुण्डलिनी जागरण के द्वारा अद्वैत सिद्धान्त के जीवब्रह्मैक्यज्ञान की अनुभूति कराने हेतु आनन्दलहरी के रूप में और बाद के श्लोकों में विश्व को भगवती का विराट् स्वरूप मानकर प्रकृति देवी के दिव्यदेह का चित्र खींचकर सौन्दर्य लहरी के रूप में प्रस्तुत किया है ।

भगवान श्री शंकराचार्य ने भक्त साधकों के दृष्टि कोण से भगवती के सौन्दर्य का नख से शिख तक का वर्णन किया है । सर्वप्रथम भगवती के किरीट का वर्णन करते हुए वे कहते हैं-

भगवती के मुकुट मानों उषःकालीन आकाश है । यहाँ कृष्णा चतुर्दशी और अमावास्या की सन्धि में पडने वाले उषःकाल का चित्र खींचा गया है । यह तिथि भगवती की उपासना के उपयुक्त है। विशेषतया कार्तिक की कृष्ण चतुर्दशी ली जाय तो और भी अच्छा है जिसको रूपचतुर्दशी भी कहते हैं । इसके तुरन्त बाद महालक्ष्मी पूजन का, दीपावली का पर्व होता है । जिसमें स्वाभाविक रूप से भगवती की अर्चा होती है ।

## महोदरव्याधिनिवारण प्रयोग

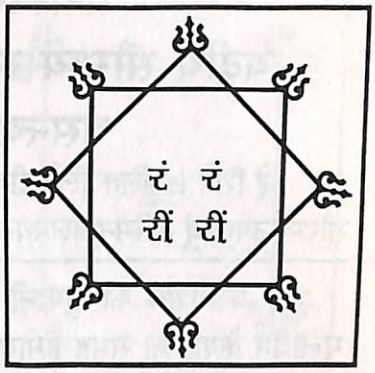


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**गं**' है । जप का दशांश हवन '**गं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**गं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**गं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **शर्करा** का नैवेद्य विहित है ।

इस मन्त्र का विधिपुरस्सर अनुष्ठान कर यन्त्र का धारण करने से **महोदर व्याधि का निवारण** होता है ॥४२॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'गतैर्माणिक्यत्वं गगन-मणिभिः' इति द्विचत्वारिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। गं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
गं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**दाडिमी-पुष्प-सङ्काशां चतुर्बाहु-समन्विताम् ।**
**रक्ताम्बर-धरां नित्यां रक्तालङ्कार-भूषिताम् ।**
**एवं ध्यात्वा गकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**पञ्च-प्राण-मयं वर्णं सर्वशक्त्यात्मकं प्रिये।**
**तरुणादित्य-सङ्काशां कुण्डलीं प्रणमाम्यहं।**
**अग्राकुञ्चित-रेखा या गणेशी सा प्रकीर्त्तिता।**
**ततो दक्षगता या तु कमला तत्र संस्थिता।**
**अधोगता गया या तु तस्यामीश सदा वसेत्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**धुनोतु ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्दीवरवनं**
**घनस्निग्धश्लक्ष्णं चिकुरनिकुरुम्बं तव शिवे ।**
**यदीयं सौरभ्यं सहजमुपलब्धुं सुमनसो**
**वसन्त्यस्मिन्मन्ये बलमथनवाटीविटपिनाम् ।।४३।।**

हे शिवे ! तुलितदलितेन्दीवरवनं घनस्निग्धश्लक्ष्णं तव चिकुरनिकुरुम्बं नः ध्वान्तं धुनोतु । यदीयं सहजं सौरभ्यं उपलब्धुं अस्मिन् बलमथनवाटीविटपिनां सुमनसः वसन्तीति मन्ये ।

---

हे परमशिव की सुपत्नी ! खिले हुए नीलकमल के वन के समान तेरे घने, चिकने तथा मुलायम केशों का समूह हमारा मानसिक कलुष नष्ट कर दे । जैसे प्रातःकालीन विकसित इन्दीवर (नीलकमल) के वनों की शोभा और उषःकाल का प्रकाश दोनों मिलकर रात्रि के अन्धकार को भगाते हुए दृष्टिगोचर होते हैं उसी तरह भगवती के केशों का ध्यान अज्ञान को दूर करने वाला है । भगवती के केश स्वयं सुगन्धित हैं, इन्द्र की वाटिका के पुष्पों को मानों वें केश ही सुगन्धित कर रहे हैं । अर्थात् पुष्पों में जो सुगन्ध होती है वह प्रकृति देवी की ही देन है । केशों में पुष्पों को गूथँना भी एक आभूषण है । अभिप्राय यह है कि साधारण स्त्रियों के केश पुष्पों के गुँथने से सुगन्धित होते हैं, परन्तु देवी के केश पुष्प स्वयं सुगन्धित होते हैं ।।४३।।

**પૂર્ણ ખીલેલા નીલકમલના ગોટા જેઓ તમારો, હે શિવ ! સ્નિગ્ધ, સુવાળો, ગાઢો કેશપાશ અમારું અંતરનું અંધારું હઠાવી દો. તેની સુવાસ સરળતાથી મેળવવા માટે બલમથન (ઇન્દ્ર)ની વાડીનાં વૃક્ષોના ફૂલો એમાં વસે છે, એમ માનું છું. (૪૩)**

May Thy dense, greasy and soft braid of hair resembling a group of blue lotuses in bloom dispel our ignorance ! Methinks, the flowers of the trees in the garden of the foe of Vala abide therein to attain their innate fragrance. [43]

---

**विशेष**-जैसे विकसित इन्दीवर वनों और उषःकाल का प्रकाश दोनों मिलकर रात्रि के अन्धकार को भगा रहे हैं,वैसे ही भगवती के केशों का ध्यान अज्ञानान्धकार को दूर करने वाला है । भगवती के केश सुगन्धित हैं । प्रायः केशभूषार्थ स्त्रियाँ केशों में पुष्पवेणी गूँथती हैं ।

यह रिवाज दक्षिणभारतीय प्रदेशों में अधिक है जहाँ आज भी नब्बे प्रतिशत महिलाओं की वेणी में पुष्प गुँथे मिलते हैं । भाव है -अन्य स्त्रियों को तो केशसौगन्धि हेतु पुष्पवेणी का सहारा लेना पडता है,भगवती के केश स्वयं सुवासित हैं । केशपाश की वासना के लिए लिए गए कल्पवृक्षपुष्पों के अन्यथात्व की उत्प्रेक्षा से यहाँ उत्प्रेक्षालंकार है ।

## सर्वजनवशीकरण प्रयोग

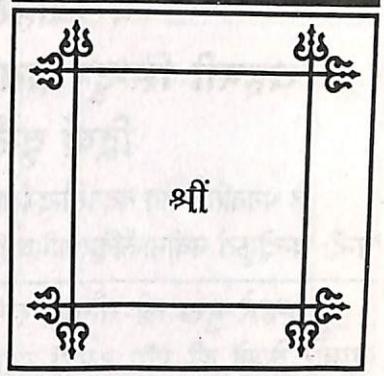


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४०** **दिन** तक **प्रतिदिन ३०००** मन्त्र का जाप करें तथा यन्त्र को अंगूठी में धारण करें । बीजाक्षर '**धुं**' है । जप का दशांश हवन '**धुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**धुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**धुं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र को अंगूठी में धारण करने से **सर्वजनवशीकरण की शक्ति** प्राप्त होती है । अँगूठी किसी भी उँगली में पहनी जा सकती है । ॥४३॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'धुनोतु ध्वान्तं' इति त्रिचत्वारिंशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। धुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**षड्भुजां मेघवर्णां च रक्ताम्बरधरां पराम्।**
**वरदां शुभदां रम्यां चतुर्वर्गप्रदायिनीम्।**
**एवं ध्यात्वा धकारं तु मन्त्रं च दशधा जपेत्।**
**त्रिकोणरूपरेखायां त्रयो देवा वसन्ति च।**
**विश्वेश्वरी विश्वमाता सैवोक्ता विश्वधारिणी ।**
**पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्।**
**द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्।**
**एवं ध्यात्वां सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**उकारं परमेशानि! अधःकुण्डलिनी स्वयम्।**
**पीतचम्पक-सङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा।**
**पञ्चप्राणमयं देवि ! चतुर्वर्गप्रदायकम्।।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
धुं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी-**
**परीवाहस्रोतः सरणिरिव सीमन्तसरणिः ।**
**वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर-**
**द्विषां वृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम् ।।४४।।**

हे भगवति ! तव वदनसौन्दर्यलहरीपरीवाहस्रोतस्सणिंरिव स्थिता तव सीमन्तसरणि: प्रबलकबरीभारतिमिरद्विषां बृन्दै: बन्दीकृतं नवीनार्ककिरणमिव सिन्दूरं वहन्ती न: क्षेमं तनोतु ।

---

तुम्हारे मुख की सौन्दर्य रूपी बाढ़ से बहती हुयी नहर समान दिखने वाली, सिन्दूर से भरी तुम्हारे केशों की माँग हमारी रक्षा करें जो कि घने केशों की भारमय अन्धकाररूपी शत्रु समूहों से कैद की हुई उगते सूर्य की अरुण किरण के समान चमकती है । जैसे स्त्रियाँ माँग में सिन्दूर भरती हैं, उसी प्रकार मानों देवी के मुख-कमल की लालिमा केशों की माँग में सिन्दूर-सी चमकती हुई सिर पर बह रही है मानों उदय कालीन सूर्य की लाल किरणें रात्रि के अन्धकार को चीरना चाह रही हैं, परन्तु अन्धकार रूपी दुश्मनों ने उसको कैद कर लिया हैं । यद्यपि स्त्रोत का प्रवाहन ऊपर से नीचे की ओर हुआ करता है, परन्तु भगवती की शोभा की कान्ति ऊर्ध्वगामिनी है ।।४४।।

**આપનું કુંકુમબિંદુ, તમારા ગાઢા વાળના અભેદ્ય અંધારાના સૌદર્યવૃન્દોને કારણે નવોદિત સૂર્યનાં બન્દી કરેલા કિરણ જેવું ભાસે છે. તમારા વદનની સૌદર્ય લહરીને વહેવા માટે, જાણે પરનાળ (નીક) હોએ તેવી તમારી પાંથી તમારા વાળને વિભાજિત કરે છે, તે અમારું ક્ષેમ કુશળ વધારો. (૪૪)**

May the line parting the hair on Thy head looking like the path of the stream of the overflowing flood of Thy facial beauty, and bearing the red mark (of vermillion) resembling the ray of the newly rising Sun imprisoned as it were by the hosts of ( powerful) enemies, namely, the darkness of the thick locks of hair, confer well-being on us. [44]

---

**विशेष**-स्त्रोत का स्वाभाविक प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर हुआ करता है ,परन्तु भगवती की शोभा बढाने वाली कान्ति ऊर्ध्वगामिनी है । उसे योगियों में ज्ञान के सूर्य के उदय से पूर्व प्रकट होने वाले प्रातिभज्ञान के सदृश समझना चाहिए ।

देवी के मुखकमल की अरुणिमा ठीक उसी प्रकार माँग में सिन्दूर की भाँति चमकती हुई मूर्द्धास्थल पर बह रही है जैसे स्त्रियाँ माँग में सिन्दूर भरती हैं । यह दृश्य ऐसा लग रहा है मानो उदयकालीन सूर्य की लाल किरणें रात्रि के अन्धकार को चीरना चाहती हैं,परन्तु अन्धकार रूपी दुश्मनों के कारण वैसा कर नहीं पा रहीं ।

यहाँ भी उत्प्रेक्षालंकार है ।

## कल्याणप्राप्ति प्रयोग

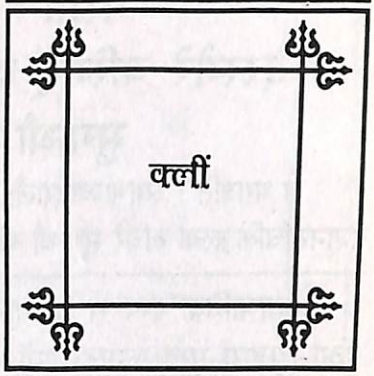


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१२ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**तं**' है । जप का दशांश हवन **तं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन **'तं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **तं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **गुड़,** तथा **पायस** का नैवेद्य विहित है ।

यन्त्र धारण करें अथवा हल्दी-कुमकुम अभिमन्त्रितकर उसका तिलक लगावें । **सर्वबाधा निवृत्ति** होती है ॥४४॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तनोतु क्षेमं नस्तव' इति चतुःचत्वारिंशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
त बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसंहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्रीभिरलकैः**
**परीतं ते वक्त्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम् ।**
**दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचिकिञ्जल्करुचिरे**
**सुगन्धौ माद्यन्ति स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः ।।४५।।**

हे भगवति ! स्वाभाव्यादरालैः अलिकलभसश्रीभिः अलकैः परीतं ते वक्त्रं पङ्केरुहरुचिं परिहसति । दरस्मेरे दशनरुचिकिञ्जल्क रुचिरे सुगन्धौ यस्मिन् स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहो माद्यन्ति ।

---

स्वाभाविक रूप से घुँघराली केशराशि, जवान भ्रमरों सदृश कान्तियुक्त केशराशि से घिरा हुआ तुम्हारा मुख कमल मानों कमल पुष्पों का उपहास कर रहा है । जिसमें स्फटिक के समान स्वच्छ कान्ति से मन्द मुस्कान से अर्धविकसित दन्तों से निकलने वाली सुगन्ध पर काम के दहन करने वाले शिवजी के नेत्र रूपी भ्रमर मस्त हो जाते हैं । मानों शिवजी भी, जिन पर काम का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं है, प्रकृति के सौन्दर्य से मुग्ध हो रहे हैं । अर्थात् वह निर्गुण ब्रह्म प्रकृति के गुणों का भोक्ता भी है ।।४५।।

**ભ્રમરનાં બચ્ચાં જેવા સુંદર તમારા સ્વાભાવિક વાંકડિયા વાળ આપના વદનની આસપાસ ફરી વળતાં, તે મુખ કમળની સુંદરતાને શરમાવે છે. જ્યારે વદનમાં સહજ સ્મિત વેરાય છે ત્યારે તમારા શુભ્ર દાંત કમળના બિસ જેવી દ્યુતિ ધરાવે છે, તેમાંથી મધુરી સુગંધ પ્રગટે છે. કામદેવને બાળનાર શિવજીની આંખો રૂપી ભ્રમરો ત્યારે મદિલા બને છે. (૪૫)**

Thy face surrounded by the naturally curved curls of hair (on the forehead) with the lustre of the young honey-bee, scoffs at the beauty of the (mire-born) lotus. In this - Thy fragrant face with a gently smile and pretty with the filament - like lustre of Thy teeth - revel the bees, namely the eyes of the destroyer of Cupid. [45]

---

**विशेष-** प्रस्तुत श्लोक के माध्यम से भगवती वज्रेश्वरी के मूलमन्त्र का विधान उपदिष्ट है। स्वाभाव्यात् पद से लज्जा अर्थात् ह्रीं बीज अरालैः पद से क्लिन्न अर्थात् क्लीं बीज, अलिकुलभसश्रीभिरलकैः पद से नित्यमदद्रवे ह्रीं ऐं, पङ्केरुहरुचिं पद से क्रों बीज, और स्मरमथनचक्षुः से पुनः लज्जा अर्थात् ह्रीं बीज का ग्रहण करके "ह्रीं" क्लिन्ने क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं स्वाहा" मन्त्र बनता है।

गीता में- "**असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ।**" के अनुसार निर्गुण ब्रह्म प्रकृत के गुणों का भोक्ता भी है ।

अतः शिव की सौन्दर्यमुग्धता स्वाभाविक है ।

## वाक्सिद्धि प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** ४० **दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें । बीजाक्षर **'अं'** है । जप का दशांश हवन **'अं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'अं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'अं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **कल्हारपुष्प, मधु, पञ्चमेवा** तथा **शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **त्रिमधु,** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र को विधिपुरस्सर गले में धारण करने से **सद्यः वाक्सिद्धि** प्राप्त होती है ॥४५॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'अरालैः स्वाभाव्यादलि' इति पञ्चचत्वारिंशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। अं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
अं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**केतकीपुष्पगर्भाभां द्विभुजां हंसलोचनाम् ।**
**शुक्लपट्टाम्बरधरां पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यमानन्दमयीं पराम् ।**
**वराभयकरां देवीं नागपाशसमन्विताम् ।**
**शृणुतत्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।**
**शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तिद्वय समन्वितम् ।**
**निर्गुणं सगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।**
**बिन्दुद्वयमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यत्**
**द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम् ।**
**विपर्यासन्यासादुभयमपि संभूय च मिथः**
**सुधालेपस्यूतिः परिणमति राकाहिमकरः ।।४६।।**

हे भगवति ! तव यत् ललाटं लावण्यद्युतिविमलं आभाति तत् मकुटघटितं द्वितीयं चन्द्रशकलं मन्ये । यत् (यस्मात्कारणात् ) उभयमपि विपर्यासन्यासात् मिथः सम्भूय च सुधालेपस्यूतिः राकाहिमकरः परिणमति ।

---

चन्द्रकिरण के समान कान्तियुक्त तुम्हारा ललाट देखकर मैं सोचता हूँ कि तुम्हारा ललाट, तुम्हारे मुकुट पर अंकित अर्द्धचन्द्रमा का दूसरा भाग है अर्थात् अर्धचन्द्रवत् तुम्हारा ललाट है । ललाट रूपी अर्द्धचन्द्र को एवं किरीट स्थित अर्द्धचन्द्र को उचित प्रकार से अमृत के लेप से जोड़कर रख दें तो पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशित होंगे । चन्द्रमा से अमृत का स्राव होता है, उससे मानों दोनों कलाएँ जुड़कर पूर्ण चन्द्रमा बन गया है। दोनों कलाओं की दोनों नोंक एक दूसरे से मिलकर जुड़ गई हैं और बीच का अवकाश अमृत से लिपकर पूर्णिमा के चन्द्रवत् चमकने लगा है ।।४६।।

**તમારા સૌન્દર્ય થી ઝળહળતા લલાટ ને જોઇ ને તમારા મુકુટ ના અર્ધચન્દ્ર જેવા બીજા અર્ધચન્દ્ર નો અનુમાન થાય છે.જો તે બને ને જોડી દેવાય અને અમૃત ના લેપ થી રેણ દેવાય તો તે પૂર્ણિમા નો ગોળ ચન્દ્ર બને. (૪૬)**

Thy forehead shines clear with the splendour of its beauty. Hence I think that the crescent moon set on Thy crown is a second one. The two, placed invertedly and joined together, (with the diameter of the one set on that of the other) would form the autumnal fullmoon, joined with the use of nectar. [46]

---

**विशेष-** लावण्य का लक्षण है- मुक्ताफलेषु छायायाः तरलत्वमिवान्तरा। प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते । कान्ति विशेष का नाम लावण्य है ।

ललाट पर से लज्जा अर्थात् ह्रीं बीज, द्युति पद से दूती (चतुर्थी-दूत्यै) विमल पद से शिव, मन्ये पद से नमः निकलकर- "ह्रीं शिवदूत्यै नमः" । यह रहस्यार्थ निकलता है ।

ऊर्ध्वमुख मुकुट का चन्द्रार्ध और मस्तकरूपी अधोमुख चन्द्रार्ध दोनों चन्द्रार्धों को सुधा लेप के द्वारा मिला देने पर शरद्कालीन पूर्णिमा के चन्द्र की सृष्टि होती है । अतः आपके ललाट के लावण्य को देख चन्द्रमण्डल के खण्डित होने का आभास स्वाभाविक है । वस्तुतः चन्द्रमण्डल की उपमा सामान्य मुखों के लिए ही दी जाती है । भगवती का मुख असामान्य है जिसे देखकर चन्द्रमण्डल में विखण्डन स्वाभाविक है ।

## गर्भधारण प्रयोग

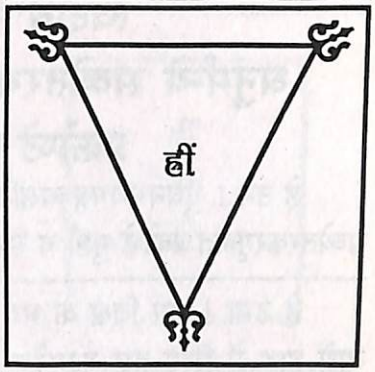


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** ४५ **दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**लं**' है । जप का दशांश हवन '**लं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**लं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**लं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी, कुसुम-सिद्धचरु,** आदि हवनीय द्रव्य है । **क्षीर, पायस** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

विधिवदनुष्ठित इस प्रयोग से **पति से समागम** तथा **गर्भधारण** होता है ॥४६॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'ललाटं लावण्य' इति षट्चत्वारिंशतिमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवता। लं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां पीतवस्त्रां रक्तपङ्कजलोचनां।**
**सर्वदा वरदां भीमां सर्वालङ्कारभूषिताम्।**
**योगीन्द्रसेवितां नित्यां योगिनीं योगरूपिणीं।**
**चतुर्वर्गप्रदां देवीं नागहारोपशोभिताम्।**
**एवं ध्यात्वां लकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**लकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीत्रयसंयुतं।**
**पीतविद्युल्लताकारं सर्वरत्नप्रदायकम्।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा।**
**त्रिशक्तिसहितं देवि! त्रिबिन्दुसतिं परं।**
**आत्मादितत्त्वसहितं हृदि भावय पार्वति।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
लं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**भ्रुवौ भुग्ने किञ्चिद्भुवनभयभङ्गव्यसनिनि**
**त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररुचिभ्यां धृतगुणम् ।**
**धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः**
**प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तरमुमे ।।४७।।**

हे उमे ! भुवनभयभङ्गव्यसनिनि ! त्वदीये किञ्चिद्भुग्ने भ्रुवौ मधुकररुचिभ्यां नेत्राभ्यां धृतगुणं रतिपतेः सव्येतरकरगृहीतं प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति सति निगूढान्तरं धनुर्मन्ये ।

---

हे उमा ! तुम विश्व के भय दूर करने वाली हो । तुम्हारी भ्रुवों की त्यौरी चढ़ने पर मैं उसको बायें हाथ में लिए हुए कामदेव के धनुष के समान मानता हूँ । जिसकी प्रत्यञ्चा भौरों की कान्ति वाले तेरे दोनों नेत्रों से बनी हैं जिसका हाथों से पकड़े जाने के कारण मुट्ठी और कलाई के बीच मध्य भाग छिप गया है । भाव यह है कि भगवती विश्व के भय का नाश करने के लिए उद्यत रहती हैं जिस प्रकार कामदेव का धनुष उसी प्रकार वह धनुष उसकी त्यौरी चढ़ी हुईं भौएँ ही है । काम धनुष की प्रत्यञ्चा भौंरो की है अत: भौंरो की उपमा से दोनों नेत्रों को प्रत्यञ्चा का भाव है अर्थात् भगवती की त्यौरी चढ़ते ही संसार के भय नष्ट हो जाते हैं और मध्यभाग धनुष को चढ़ाते समय मुट्ठी में दबा हुआ सा है । संसार का सबसे बड़ा शत्रु काम है इसलिए उसके धनुष को मानो भगवती ने स्वयं छीन लिया है ।।४७।।

**હે ત્રિભુવનના ભયને ભગાડનાર, માતાજી ! જ્યારે તમારી ભ્રૂકુટીઓ જરા વાંકી વળે છે અને ભ્રમર જેવાં સુન્દર બે નયનો દ્વારા દોરી બંધાય છે .હે ઉમા ત્યારે મને લાગે છે કે તે કામદેવના ડાબા હાથમાં પકડેલું ધનુષ છે અને તેમના હાથ અને મૂઠીથી તેનો વચલો ભાગ દેખાતો નથી. (૪૭)**

" Oh Uma ! Ever bent on dispelling the fears of the world ! I take Thy two slightly knit eye - brows to be the bow of the consort of Rati, provided with Thy bee - like pair of eyes as the bow-string and held by the right hand with the middle concealed by the fore-arm and clenched fist covering them." [47]

---

**विशेष** - यहाँ भ्रू (भौंह) का धनुष रूप में निरूपण किया गया है । जनसामान्य के भयभङ्ग का भगवती का प्रण है जो दुर्गा सप्तशती में वर्णित है- **इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति । तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम् ।** उस प्रण को पूरा करने के लिए माता भ्रूधनु पर सायक संधान करती है ।

भाव यह है कि कामसंहारिणी भगवती के ध्यान, उपासना से साधक के अन्त:करण की कामवृत्ति शान्त हो जाती है और सभी भय भाग जाते हैं ।

## सर्वजनवशीकरण प्रयोग

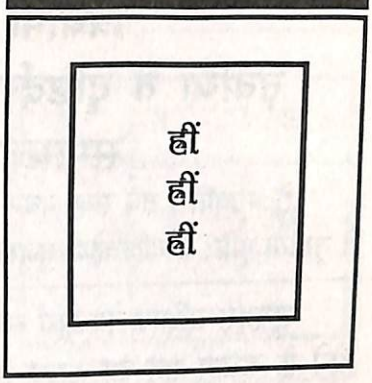


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख २५ दिन** तक **प्रतिदिन ७००० मन्त्र** का जाप करें तथा यन्त्र को सोने में अथवा भस्म के रूप में धारण करें । बीजाक्षर '**भ्रुं**' है । जप का दशांश हवन '**भ्रुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**भ्रुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**भ्रुं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय ,दाड़िमी कुसुमसिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **नारियल, केला** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

अभिमन्त्रित यन्त्र अथवा भस्म के धारण से **देवता वश** में हो जाएंगे अथवा **सकलजनवश्यता** संभव होगी ।।४७।।

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'भ्रुवौ भुग्ने' इति सप्तचत्वारिंशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। भ्रुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
भ्रुं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**तडित्प्रभां महादेवीं नागकङ्कणशोभितां। चतुर्वर्गप्रदां देवीं साधकाभीष्ट-सिद्धिदां।**
**एवं ध्यात्वाभकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। भकारं शृणु चार्वङ्गि! स्वयं परमकुण्डलि।**
**महामोक्षप्रदं वर्णं तरुणादित्यसम्प्रभं। पञ्च प्राणमयं वर्णं पञ्चदेवमयं प्रिये!।**
**ललज्जिह्वां महारौद्रीं रक्तास्यां रक्तलोचनाम्। रक्तमाल्याम्बरधरां रक्तालङ्कारभूषिताम्।**
**रक्तवर्णामिष्टभुजां रक्तपुष्पोपशोभिताम्। महामोक्षप्रदां नित्यां अष्टसिद्धिप्रदायिकां।**
**एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। रेफं च चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीद्वयसंयुतं।**
**रक्तविद्युल्लताकारं पञ्चदेवात्मकं सदा। रक्तविद्युल्लताकारं पञ्चदेवात्मकं सदा।**
**त्रिशक्तिसहितं देवि! आत्मादितत्त्वसंयुतं। सर्वतेजोमयं वर्णं सततं मनसि चिन्तयेत्।**
**पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्।**
**एवं ध्यात्वासुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि अधः कुण्डलिनी स्वयम्।**
**पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**अहस्सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया**
**त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया ।**
**तृतीया ते दृष्टिर्दरदलितहेमाम्बुजरुचिः**
**समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम् ।।४८।।**

हे भगवति ! तव सव्यं नयनं अर्कात्मकतया अहस्सूते । ते वामं नयनं रजनीनायकतया त्रियामां सृजति । ते तृतीया दृष्टिः दरदलितहेमाम्बुजरुचिः दिवसनिशयोः अन्तरचरीं सन्ध्यां समाधत्ते ।

---

तुम्हारा दक्षिण नेत्र सूर्य स्वरूप है जिससे दिन की सृष्टि होती और वाम नेत्र चन्द्रमा स्वरूप होने के कारण रात का कारक है । तुम्हारा तृतीय नेत्र जो अर्द्धविकसित सुवर्ण के बने हुए कमल के समान सुशोभित है वह दिन और रात दोनों के मध्य में रहने वाली संध्या की सृष्टि करता है। सामने से दर्शन करने पर भगवती का दक्षिण नेत्र प्रथम और वाम नेत्र बाद में दिखेगा जैसा कि लिपिक्रम भी वाम भाग से दक्षिण भाग की ओर होता है । अर्थात् पहले दिन और पश्चात् रात्रि की क्रम गति और मध्य में संध्या है ॥४८॥

**તમારી જમણી આંખનું મૂળતત્વ સૂર્ય હોવાથી તે દિવસ જન્માવે છે. તમારી ડાબી આંખનું તત્વ ચંદ્ર હોવાથી તે રાત્રિ આપે છે. વળી તમારી ત્રીજી આંખ જરાક ઊઘડેલા સુવર્ણ કમળ જેવી જણાય છે, તે દિવસ અને રાત્રિની વચમાં રહેલી સંધ્યા પ્રગટાવે છે. (૪૮)**

Thy right eye, being of the nature of the Sun gives birth to the day ; Thy left of the nature of the Moon causes night, and Thy third eye, having the lustre of a slightly blossomed golden lotus, causes the twilights between them. [48]

---

**विशेष** - सन्ध्या स्वप्नावस्था को कहते हैं। प्रबोध संप्रसाद के दोनों लोकस्थानों की सन्धि भी सन्ध्या कहलाती है । जगत् में प्रबोध अर्थात् ज्ञानदृष्टि और सम्प्रसाद अर्थात् स्वरूप समाधि, ये दोनों का मध्यबिन्दु सन्ध्या के नाम से जाना जाता है ।

यहाँ अभिप्राय सुषुप्ति से है । परन्तु ज्ञानी जगत् को ब्रह्म में स्थित देखता है, और अज्ञानी इसके विपरीत जगत् को सत्यवत् देखता है । गीता में भगवान् ने - **"यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।"** कहकर इस तथ्य को प्रकट किया है । पाण्डवों ने अनेकधा प्रविभक्त संसार को ही विराटरूप में देवाधिदेव श्रीकृष्ण के शरीर में देखा ।

अग्नि का रङ्ग लाल होता है । भगवती का तीसरा नेत्र आग्नेय होने के कारण लाल दिखायी पड़ता है ।

इसके लाल होने का कारण अगले ५०वें श्लोक में बताया है ।

## नवग्रह शान्तिद प्रयोग

| | | |
|---|---|---|
| बु | शु | च |
| गु | र | कु |
| रा | श | के |

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१९ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**अं**' है । जप का दशांश हवन **'अं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'अं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'अं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **चित्रान्न, केला** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस प्रकार अनुष्ठानपूर्वक यन्त्र के धारण से **नवग्रहदोष की शान्ति** होती है ॥४८॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां ' अहः सूते सव्यं तव' इति अष्टचत्वारिंशत्मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। अं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

हां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
अं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**केतकीपुष्पगर्भाभां द्विभुजां हंसलोचनाम् ।**
**शुक्लपट्टाम्बरधरां पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यमानन्दमयीं पराम् ।**
**वराभयकरां देवीं नागपाशसमन्विताम् ।**
**शृणुतत्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।**
**शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तिद्वय समन्वितम् ।**
**निर्गुणं सगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।**
**बिन्दुद्वयमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**विशाला कल्याणी स्फुटरुचिरयोध्या कुवलयैः**
**कृपाधाराऽऽधारा किमपि मधुराऽऽभोगवतिका ।**
**अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया**
**ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते ।।४९।।**

हे भगवति ! ते दृष्टिः विशाला कल्याणी स्फुटरुचिः कुवलयैः अयोध्या कृपाधाराऽऽधारा किमपि मधुरा आभोगवतिका अवन्ती बहुनगरविस्तारविजया तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या ध्रुवं विजयते।

---

तुम्हारी दृष्टि विशाल,मङ्गलमयी,विकसित कमलों की शोभा की उपमा से ऊँची, करुणास्रोत का आधार, माधुर्यमय रक्षा करने वाली तथा अनेक नगरों के विजय की शोभा से शोभायमान है। इस विजय के कारण उन नगरों के नाम से प्रख्यात तथा निश्चित रूप से सब पर विजय लाभ प्राप्त करती हुई प्रतीत होती है । अन्तर्विकसित दृष्टि विशाला कहलाती है, आश्चर्ययुक्त दृष्टि कल्याणी है । जिसमें पुतलियाँ फैल जावें, वह अयोध्या, आलस्ययुक्त दृष्टिधारा, नेत्रों के किञ्चित् चक्कर खाने पर मधुरा, स्नेह युक्त मैत्री के भावयुक्त भोगवती, मोहित, निष्पाप दृष्टि जिस में भोलापन टपकता हो वह अवन्ति और (अर्द्धमुदित) तिरछी निगाह विजया कहलाती है ।।४९।।

**તમે વિશાલા, કલ્યાણી, જેનું સૌદર્ય નીલકમલ સાથે યુદ્ધ નિમિત્ત નથી તેવી અયોધ્યા, કૃપાધારા કરનાર ધારા, મધુમથી તેથી મધુરા, જાણે કે તે ભોગવતી હોય તેવી ભોગવતિકા,મદદગાર અવન્તી, ઘણાં નગરો ઉપર જયશાલિની વિજયા, સદા તે તે નગરી ના નામ ના લક્ષણવાળી અને તે તે નામ સાર્થક કરનારી, હે મા ! તું હમેશા વિજયી રહો. (૪૯)**

The glance of Thine eyes is all - victorious being all - pervasive (Visala), showering prosperity (Kalyani), clearly brilliant (Sphutaruchi), invincible by blue lotuses (ayodhya) the fountain head of the stream of mercy (Dhara), indescribably sweet (Madhura), enjoying bliss in Siva's company (Bhogavati), protector of devotees (Avanti) and excelling in expanse many a city. Hence certainly Thy glance is fit to be referred to by the respective appelations. [49]

---

**विशेष** - उदारता के विस्तार का नाम विशाला (बद्रीनाथ) है, सर्वजन कल्याण से तात्पर्य कल्याणी (बम्बई नासिक के बीच का स्टेशन) है, संसार की कोई भी शोभा तुम्हारे सौन्दर्य से जीत न पाई इसलिए अयोध्या, कृपा की धार बरसाने से धारा (धार), मधुरतम होने से मथुरा (मथुरा अथवा मदुरा) भोगों को देने के कारण भोगवतिका (उज्जैन) पराक्रमवती होने से विजया है ।

भगवती की अष्टभावयुता दृष्टि क्रमशः उच्चाटन, आकर्षण, द्रवीकरण, सम्मोहन, वशीकरण, ताड़न, विद्रावण और मारण है ।

## निधिदर्शक प्रयोग

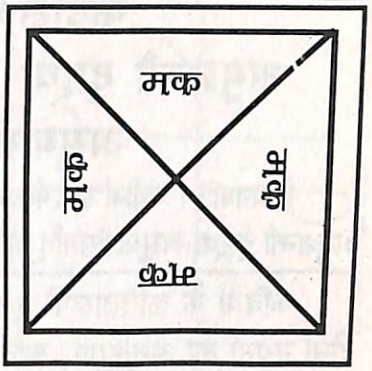


प्रस्तुत यन्त्र को **हल्दी** में लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **२५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्रका** जाप करें फिर हरिद्रारन्ध्र को अग्नि मेंजलाकर तेल से पीसकर १५ वर्षीय मार्जाल जैसे बालक के हाथ से आँखों में लेपन करने से निधि दर्शन होता है बीजाक्षर **'विं'** है । जपका दशांश हवन **'विं स्वाहा'** से, हवनका दशांश मार्जन **'विं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'विं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है ।**मूँग के व्यञ्जन** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इसके यथोक्त प्रयोग से **निधि दर्शन** होता है ॥४९॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'विशाला कल्याणी स्फुट' इति नवचत्वारिंशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। विं बीज। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**करान्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
वि बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ **सर्वाङ्गे।**

**ध्यानम्**

**कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणां। शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् । साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेवितां।एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् । वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम् ।पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा । त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम् । पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्। चतुर्वर्गप्रदं शान्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!।महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं।ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकं**
**कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम् ।**
**अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरलौ**
**असूयासंसर्गादलिकनयनं किञ्चिदरुणम् ।।५०।।**

हे भगवति ! कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकं तव कर्णयुगलं कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ नवरसास्वादतरलौ अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा असूयासंसर्गात् अलिकनयनं किञ्चिदरुणम् ।

---

कवियों के कवितारूपी पुष्पगुच्छों में स्थित पराग का रस लेने में विशेष रूपसे तत्पर तुम्हारे दोनों नयनों का अनुकरण, कविताओं और नवरसों का आस्वादन लेने को बेचैन भ्रमरों के समान देखकर सम्भवत: ललाट स्थित तुम्हारा तीसरा नेत्र ईर्ष्यावश् किञ्चित् लाल रङ्ग से युक्त है । भाव यह कि दोनों कान कविताओं के रसिक और दोनों नेत्र भी नवरसों का आस्वादन लेने को तत्पर है, इसलिए कानों का स्पर्श करने के लिए वहाँ तक फैले हुए तीसरे नेत्र का ललाट में स्थिर रहने के कारण कान तक नहीं पहुँच पाने के कारण उनसे ईर्ष्या करता है, इसलिए वह असूया से लाल हो गया है । सौन्दर्य के लक्षणों में नेत्रों का दीर्घ होना भी महत्त्वपूर्ण है । कवि उनकों कान तक फैला हुआ वर्णन करते हैं ।।५०।।

**કવિઓના પુષ્પસમાં કાવ્યોનું અમૃત પીવા તરસ્યું તમારું કર્ણ યુગ છે, આપની બે આંખોના ભ્રમર જેવા કટાક્ષો તેમના ઉપર મંડાયાં છે તે તેને છોડતા નથી ! તે નેત્રો નવ રસોનો આસ્વાદ આતુરતાથી કરવા તરસ્યાં થયાં છે. આ બે આંખોની અદેખાઇથી ત્રીજી આંખ જરાક લાલ રહે છે. (૫૦)**

The eye on Thy fore-head turns a little red, actuated by jealousy on seeing the bee-like side - glances that are eager to enjoy the nine sentiments and not leaving Thy pair of ears, that are solely delighting in the honey of the bunch of Compositions of great poets. [50]

---

**विशेष - यद् गतागतिविश्रान्ति वैचित्र्येण विवर्तनम् । तारकाया: कलाभिज्ञास्तां कटाक्षं प्रचक्षते** । यह कटाक्ष का लक्षण है ।

आश्रय कामोल्लास विशेष है । वही स्तवक के रूप में मायामकरन्दपूरित है । इसके योग के बिना भगमाला के जापक को फल नहीं मिलता । ऐसे साधक को देखकर स्त्रियाँ द्रवित होती हैं । कर्णयुगल मानों दो वेद हैं जिसमें सम्भोग मानों नवरस का सहज आस्वादन है । भगमालिनी षोडश नित्याओं में एक हैं ।

## साध्यविद्वेषण प्रयोग

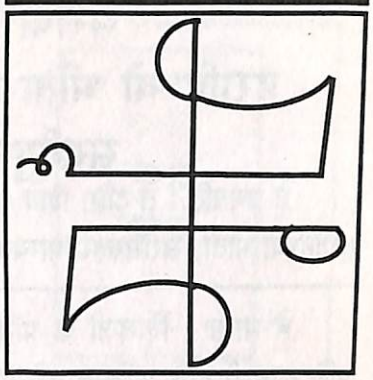

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्ण/जल** में **चन्दन या हाथ** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर '**कं**' है । जप का दशांश हवन '**कं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**कं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**कं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुमसिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **शर्करा, खाँड, गुड़, मधु, नारियल** तथा **केले** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के विधिपुरस्सर प्रयोग से **साध्यविद्वेषण** होता है तथा जल अभिमन्त्रित कर पिलाने से चेचक (बडी शीतला माता) का प्रकोप शान्त होता है । ॥५०॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'कवीनां सन्दर्भ' इति पञ्चाशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। कं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
कं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहु-वल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्न-कङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु ह्रन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा। आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः। त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**शिवे शृङ्गारार्द्रा तदितरजने कुत्सनपरा**
**सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते विस्मयवती ।**
**हराहिभ्यो भीता सरसिरुहसौभाग्यजननी**
**सखीषु स्मेरा ते मयि जननि दृष्टिस्सकरुणा ।। ५१।।**

हे भगवति ! ते दृष्टिः शिवे शृङ्गारार्द्रा, तदितरजने कुत्सनपरा, गङ्गायां सरोषा, गिरिशचरिते विस्मयवती, हराहिभ्यो भीता, सरसिरुहसौभाग्यजननी सखीषु स्मेरा, मयि सकरुणा ।

---

हे माता ! शिवजी के प्रति तुम्हारी दृष्टि शृङ्गारार्द्र (कामयुक्त) है । उनके अतिरिक्त दूसरों के प्रति तुम्हारी दृष्टि कुत्सित उपेक्षायुक्त है, गङ्गा देवी के प्रति क्रोध है । शिवजी के चरित्रों पर विस्मय प्रकट करने वाली है, शिवजी द्वारा धारण किये गये सर्पों के प्रति भय है, कमलों की शोभा को पराजित करने वाली सखियों के प्रति मुस्कान लिए हुए है और मेरे ऊपर तेरी करुणामयी दया-दृष्टि है । यहाँ भगवती की दृष्टि से नवरसों की अभिव्यक्ति होती है । ये रस क्रमशः - शृङ्गार रस, वीभत्स (घृणा), रौद्र, अद्भुत् (विस्मय), भयानक, वीर, हास्य, करुणा और शान्त । भगवती की स्वाभाविक दृष्टि शान्तसरसपूर्ण है जो शान्ति कला का स्वभाव है । जब मन विकार रहित होता है तभी शान्त रस का निर्माण होता है इसलिए नौवें रस को नहीं कहा गया । भगवती की दृष्टि नवधा रसपूर्ण है ।।५१।।

**તમારી નજર શિવજી પ્રત્યે શૃંગારભીની છે, અન્ય પ્રત્યે ઘૃણાયુક્ત છે, ગંગા પ્રત્યે અદેખી છે; ગિરિશના પરાક્રમો જાણી વિસ્મય પામે છે, હરના સર્પોથી ભયભીત છે, કમળના સૌંદર્યને જીતી લે છે; અને સખીજનો પ્રત્યે મૃદુ હાસ્યવાળી છે. હે જનની ! મારા પ્રતિ તારી નજર કરુણાસભર છે. (૫૧)**

Oh Mother ! Thy glance is tender with love towards Siva, contemptuous towards other folk, wrathful towards Ganga, astonished at Girisa's (mountain-dwelling Siva's) exploits, frightened by the snakes on Hara, producing the charm of the lotus, smiling at Thy companions and full of grace towards me. [51]

---

**विशेष** - यहाँ परस्पर विरुद्ध अनेक रसों का एक ही नयन में समावेश विरोधालङ्कार सर्जित करता है । शान्तरस शृङ्गार विरोधी है ।

दशरूपकम् में कहा गया है - न यत्र दुःखं न सुखं न चिन्ता न द्वेषरागौ न च काचिदिच्छा । रसः स शान्तः कथितो मुनीन्द्रैः सर्वेषु भावेषु शमप्रधानः । अर्थात् शमप्रधान शान्तरस में दुःख, सुख, चिन्ता, द्वेष, राग तथा इच्छा इन सभी का अभाव होता है ।

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्ण/चन्दन** में लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो ४५ **दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**शिं**' है । जप का दशांश हवन '**शिं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**शिं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**शिं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **उड़द का बड़ा** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस यंत्र को स्वर्णपत्र में धारण करने अथवा चन्दन में घिसकर अभिमन्त्रित कर तिलक धारण करने से **सर्वजनवश्यता तथा इष्टसिद्धि** प्राप्त होती है ॥५१॥

## इष्टसिद्धिद प्रयोग

क्लीं
क्लीं
क्लीं

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'शिवे! शृङ्गारार्द्रा' इति एकपञ्चाशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। शिं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
शिं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चितां। शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मिताम् । रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां। देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः । शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते ! रक्तवर्णप्रभाकारं स्वयं परमकुण्डली । चतुर्वर्गप्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं । पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं प्रिये ! । रत्नपञ्चतमोद्युक्तं त्रिकूटसहितं सदा । त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतम् । इकारं परमानन्दं, सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरि-ब्रह्म-मयं वर्णं, सदाशिव-मयं प्रिये!। महा-शक्ति-मयं देवि! गुरु-ब्रह्म-मयं तथा। विश्व-त्रय-मयं वर्णं, पर-ब्रह्म-समन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दन भूषिताम्।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव पक्ष्माणि दधती**
**पुरां भेत्तुश्चित्तप्रशमरसविद्रावणफले ।**
**इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके**
**तवाकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः ।।५२।।**

हे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके ! तव इमे नेत्रे कर्णाभ्यर्णं गते पक्ष्माणि गरुत इव दधती पुरां भेत्तुः चित्तप्रशमरसविद्रावणफले आकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः ।

---

हे पर्वतराज हिमाचल के कुल की पल्लवी ! ये तुम्हारे बाणों के समान दोनों नेत्र कानों तक पहुँचे हुए हैं, और बाण में लगाये गये पंखों के स्थान पर पलक धारण किये हैं । ये दोनों नेत्र ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानों कामदेव के धनुष को कानों तक खींचकर उस धनुष के सामर्थ्य का प्रदर्शन करता हो ताकि त्रिपुर संहारी शिवजी के मन में जो शान्त रस है, वह विकृत हो जाये। बाणों में गति लाने के लिए पंख लगाये जाते हैं और अग्रभाग पर चीरने के लिए लोहे का फल होता है। यहाँ पलकें पंख सदृश और कटाक्ष शङ्कर के शान्तचित्त को भंग करने वाला फल है। कामदेव के बाणों का प्रहार मनुष्यों के चित्त में क्षोभ उत्पन्न करता है, इसी प्रकार देवी का कटाक्ष शङ्कर के चित्त में क्षोभ उत्पन्न करता है अर्थात् परब्रह्म में स्पन्दन करता है । इस प्रकार भगवती के दोनों नेत्रों की पूर्ण उपमा कामदेव के बाणों से दी गई है ।।५२।।

**તમારા કર્ણો સુધી લંબાયેલાં નેત્રો પક્ષ્મો (પાંપણ, પોપચું, પીછાં) ધરાવે છે. તેમના અગ્રભાગ (ફલાં) પુરોના નાશ કરનાર શિવજીના હૃદયના શાંત રસને વિદારવાનું પરિણામ (ફળ) આપે છેઃ આ તમારા બે નેત્રો, હે ગિરિરાજના કુળની શેખર કલી ! કાન સુધી પૂર્ણ ખેચેલાં કામદેવના બાણનું કામ કરે છે. (૫૨)**

Oh bud in the crest-chaplet of the family of the Lord of mountains ! These, Thine eyes, reaching the proximity of Thy ears, with eye-lashes for feathery wings, and having as purpose the driving away of the tranquility in the mind of the Destroyer of cities, put on the charm of the arrows of Cupid, drawn upto the ear. [52]

---

**विशेष** - विद्रावण का तात्पर्य पात्रभेदन कर बहाने से है । बाण का फलक लौहनिर्मित तथा नुकीला होता है । जिस तरह रस से भरे पात्र में बाण का अग्रभाग लगने से पात्र में छेद हो जाता है और रस गिरने लगता है उसी तरह मदन के बाण रूपी तुम्हारे नेत्र से महादेव के मनःपात्र का भेदन कर शान्तरस का बहना वर्णित है । इसी प्रकार देवी का कटाक्ष शिव के मन में क्षोभ उत्पन्न करता है अर्थात् परब्रह्म में स्पन्दन उत्पन्न करता है ।

## कर्ण/नेत्ररोगहर प्रयोग

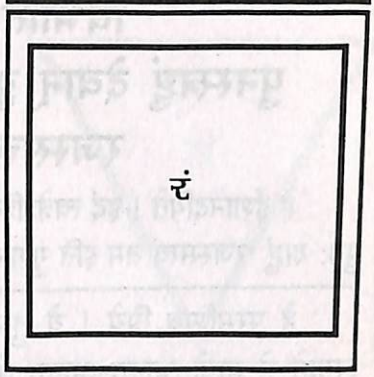


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** ४५ **दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें। बीजाक्षर **'गं'** है। जप का दशांश हवन **'गं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'गं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'गं तर्पयामि नमः'** से करें ।तर्पणके पश्चात १० बार मन्त्रका जाप करें। फिर एकबार मन्त्रसे पूर्णाहुति दें। **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है। **तिलान्न** तथा **क्षीरपायस** का नैवेद्य विहित है ।

इस मन्त्र का विधिपुरस्सर अनुष्ठान कर गले में अथवा दाहिनी भुजा में धारण करने से **कान** तथा **नेत्रके रोगोंसे छुटकारा** मिलता है ॥५२॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव' इति द्विपञ्चाशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। गं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**करान्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
गं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**दाडिमी-पुष्प-सङ्काशां चतुर्बाहु-समन्विताम् ।**
**रक्ताम्बर-धरां नित्यां रक्तालङ्कार-भूषिताम् ।**
**एवं ध्यात्वा गकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**पञ्च-प्राण-मयं वर्णं सर्वशक्त्यात्मकं प्रिये।**
**तरुणादित्य-सङ्काशां कुण्डलीं प्रणमाम्यहं।**
**अग्राकुञ्चित-रेखा या गणेशी सा प्रकीर्त्तिता।**
**ततो दक्षगता या तु कमला तत्र संस्थिता।**
**अधोगता गया या तु तस्यामीश सदा वसेत्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**विभक्तत्रैवर्ण्यं व्यतिकरितलीलाञ्जनतया**
**विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते ।**
**पुनस्स्रष्टुं देवान् द्रुहिणहरिरुद्रानुपरतान्**
**रजस्सत्त्वं बिभ्रत्तम इति गुणानां त्रयमिव ।।५३।।**

हे ईशानदयिते ! इदं त्वन्नेत्रत्रितयं व्यतिकरितलीलाञ्जनतया विभक्तत्रैवर्ण्यं उपरतान् द्रुहिणहरिरुद्रान् देवान् पुनः स्रष्टुं रजस्सत्त्वं तम इति गुणानां त्रयमिव बिभ्रत् विभाति ।

---

हे परमशिव प्रिये ! ये तुम्हारे सौंदर्य प्रसाधन के रूप में तीनों नेत्रों में तीन रंग का अंजन लगाने से मानो अलग-अलग तीन रंग चमक रहे हैं । तुम्हारे तीनों नेत्र ऐसे लगते हैं मानों तुमने सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों को धारण किया हो जिससे महाप्रलयकाल में तुममें लय हो जाने वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र की पुनः सृष्टि कर सको । तीन रंग तीन गुणों के द्योतक हैं रजोगुण रक्तवर्ण है, सत्त्वगुण शुक्लवर्ण और तमोगुण कृष्णवर्ण है । देवी के दो नेत्र-चन्द्र और सूर्य श्वेत और कृष्णवर्ण तथा तीसरा नेत्र आग्नेय रक्तवर्ण है । प्रलयकाल में भी शक्ति ब्रह्म के साथ अव्यक्तरूप में बनी रहती है और प्रलयान्त में व्यक्त होकर लय हुए त्रिदेवों को फिर अपने नेत्रों के उन्मीलन से उत्पन्न करती है । यद्यपि दृष्टि की शक्ति एक ही है तो भी तीन प्रकार के गुणरूपी अंजनों के कारण वह त्रिधा प्रतीत होती है, क्योंकि तीनों में सृष्टि-स्थिति-संहार करने की तीनों शक्तियाँ एक ही शक्ति के तीन रूप हैं ।।५३।।

**તમારી આંખોનું ત્રિતય ત્રણ ભિન્ન રંગો ધરાવે છે અને (સાગર દર્શાવતા) નીલાંજનને લીધે, હે શંકરપ્રિયા, જાણે (મહાપ્રલયમાં) નાશ પામેલા દ્રુહિણ (બ્રહ્મા), હરિ અને રુદ્રનું પુનઃસર્જન કરવા, પ્રકાશે છે. વળી રજસ (લાલ) સત્વ (સફેદ) અને તમસ (કાળો) એ ત્રિગુણ ધરાવે છે. (૫૩)**

Oh Beloved of Ishana! This triad of Thy eyes decked with beauty-collyrium and displaying three colours, distinctly shine forth as if bearing the three gunas ( constituents of nature ) - rajas, satva and tamas, so as to create again, Brahma, Vishnu, and Rudra, after they have ceased to exist. [53]

---

**विशेष-** ईशान नाम का भगवती का चौथा पुत्र ब्रह्मा, विष्णु और महेश का कारणभूत है । इसकी दयिता अर्थात् उसके प्रति प्रेमास्पदा ईशानदयिता है ।दृष्टि की शक्ति एक होते हुए भी त्रिगुणरूपी अंजन के कारणत्रिधा प्रतीत होती है । क्योंकि सृष्टि-स्थिति और संहार एक ही शक्ति के तीन रूप हैं ।

## ज्ञानप्राप्ति प्रयोग

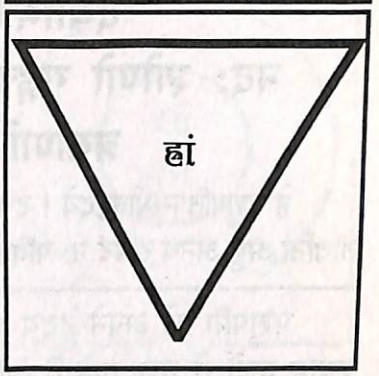


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **९ दिन** तक **प्रतिदिन ३०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर **'विं'** है। जप का दशांश हवन **'विं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'विं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'विं तर्पयामि नमः'** से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है। **गुड़ का पुआ, उड़द का बड़ा** तथा **क्षीरपायस** का नैवेद्य विहित है।

पूजन के समय दीप जला लें। यदि दीप ठीक से जले तो अनुकूलता होगी अन्यथा प्रतिकूलता होगी । यथोपचार करने से **सम्यक् ज्ञानप्राप्ति** होती है । ॥५३॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'विभक्तत्रैवर्ण्यं' इति त्रिपञ्चाशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। विं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
विं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् । शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् । साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेविताम्। एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डला मोक्षमव्ययम्। पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा । त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम् । पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्। चतुर्वर्गप्रदं शान्तं सर्वसिद्धि प्रदायकम् । इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिव-मयं प्रिये !। महाशक्तिमयं देवि ! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं पर-ब्रह्मसमन्वितं । ऊर्ध्वाधः कृञ्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत् । लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत् । धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरि-चन्दनभूषिताम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये**
**दयामित्रैर्नेत्रैररुणधवलश्यामरुचिभिः ।**
**नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं**
**त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि सम्भेदमनघम् ।।५४।।**

हे पशुपतिपराधीनहृदये ! दयामित्रैः अरुणधवलश्यामरुचिभिः नेत्रैः शोणो नदो गङ्गा तपनतनयेति त्रयाणां तीर्थानां अमुं अनघं संभेदं नः पवित्रीकर्तुं उपनयसि ध्रुवम् । भक्तवत्सलत्वाद्देव्या इति भावः ।

---

पशुपति को अपने हृदय को समर्पित किए हुए हे देवी ! दया की भागिनी, लाल, श्वेत और श्याम वर्णों से युक्त तुम्हारी आँखों से पश्चिम की ओर बहने वाली लाल रंग की शोणभद्रा नदी, श्वेत वर्ण की गङ्गा तथा सूर्यपुत्री श्याम रङ्ग यमुना तीनों का संगम पापनाशक है । तुम्हारे दर्शन करने वालों को पवित्र करने के लिए ही तुमने इस सङ्गम की योजना की है । दोनों नेत्रों के बीच गङ्गा और यमुना तथा तीसरा नेत्र शोण नदी है । ज्ञाननेत्र में तीनों का एकीकरण होता है । देवी का मुखमण्डल श्याम यमुना, श्वेत गङ्गा तथा लाल शोणभद्रा का सङ्गम स्थल-सा है । उन स्थानों पर ऐसी धारणा करके वहाँ चित्त को ध्यानमग्न कर देना ही उक्त तीर्थों के स्नान का फल है ।।५४।।

**પશુપતિને આધીન હૃદયવાળાં માતાજી ! તમારા લાલ, સફેદ અને કાળી દ્યુતિવાળાં કરુણામય નેત્રો વડે અમને પવિત્ર કરવાના હેતુથી તમે શોણ (સોનેરી), ગંગા (સફેદ) અને સૂર્યપુત્રી યમુના (કાળી) નો ધ્રુવ સંગમ રચ્યો છે. હે નિષ્પાપ દેવી ! તે યાત્રાનાં ત્રણ ધ્યેયો (તીર્થો) ના સંગમરૂપ છે. (૫૪)**

Oh Thou, whose heart is lost in the Lord of pasus ( Jivas ) with Thine eyes filled with compassion, bring forth through their red, white and blue lustre, ( shades ) a purificatory confluence of the rivers Sona Ganga and Yamuna, for sanctifying us. [54]

---

**विशेष** - गङ्गा और यमुना का सङ्गम प्रयाग में प्रसिद्ध है । जहाँ त्रिवेणी सङ्गम होता है लेकिन भगवती के श्रीमुख के अवलोकन मात्र से सम्पन्न होने वाली शाम्भव वेधदीक्षा के द्वारा तत्क्षण भस्मीकृत सकल पापपुञ्ज साधक को किसी अन्य तीर्थ की आवश्यकता नहीं है । वह तो स्वयं नित्यशुद्ध बन जाता है । कहा है -

**तीर्थानि तोयपूर्णानि देवान्याषाणमृण्मयान् ।**
**योगिनो न प्रपद्यन्ते ह्यात्मध्यानपरायणाः ।।**

और यह भी कि -"**न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा** ।" इनका आशय स्पष्ट ही है ।

## पापमोचन प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **उत्तराभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**पं**' है । जप का दशांश हवन '**पं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**पं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**पं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **गुड़,की खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के सम्यक्प्रयोग से **योनिरोग से निवृत्ति** होती तथा समस्त पापों से मुक्ति होती है साधक अपने कल्मष इस प्रयोग के द्वारा नष्ट निर्मल अन्तःकरणवान् बन सकते हैं ॥५४॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'पवित्रीकर्तुं नः' इति चतुष्पञ्चाशतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। पं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं..... तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
पं बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**विचित्रवसनां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् ।**
**रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**मणिरत्नादि केयूररत्नहारैकविग्रहाम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यां नित्यानन्दमयीं पराम् ।**
**एवं ध्यात्वा पकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**अतः परं प्रवक्ष्यामि पकाराक्षरमव्ययम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदं वर्णं त्रिशक्तिसहितं प्रिये !**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शरच्चन्द्रमयप्रभम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती**
**तवेत्याहुस्सन्तो धरणिधरराजन्यतनये ।**
**त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः**
**परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दृशः ।।५५।।**

हे धरणिधरराजन्यतनये ! तव निमेषोन्मेषाभ्यां जगती प्रलयमुदयं यातीति सन्तः आहुः । अतः त्वदुन्मेषात् जातं अशेषं इदं जगत् प्रलयतः परित्रातुं तव दृशः परिहृतनिमेषाः इति शङ्के ।

---

हे धरणिधर राजा हिमाचल की पुत्री ! सन्तों का ऐसा कथन है कि तुम्हारे (निमेष) नयनों के बन्द करने से जगत् में प्रलय और (उन्मेष) नयनों के खोलने से सृष्टि होती है । तुम्हारे नेत्र खोलने से उत्पन्न इस सारे जगत् को पुनः प्रलय में नष्ट होने से बचाने के लिए ही मुझे ऐसी शङ्का होती है कि तुम्हारी आँखों ने झपकना बंद कर दिया है अथवा आँखों को बन्द किये बिना ही रहती हो। देवताओं के नेत्रों में झपकियाँ नहीं पड़ती, इसलिए भगवती के नेत्र भी सदा निमेषोन्मेष रहते हैं कि कहीं झपकने के साथ ही तुरन्त प्रलय न हो जाये ।।५५।।

**તમારી આંખોના મિચાવા-ઉઘડવાથી પૃથ્વી પ્રલય પામે છે અને રચાય છે, એવું સંતો કહે છે. હે ધરણિધર રાજાની પુત્રી ! આ જગત તારી આંખના ઉઘડવાથી સંપૂર્ણ તવાયું છે. તેને પ્રલયથી બચાવવા માટે તમારી આંખો મિચાતી નથી-એવું મને લાગે છે. (૫૫)**

Oh Daughter of the King of mountains ! The sages have said that the world gets dissolved and created with the closing and opening of Thy eyes (respectively). I conjecture that Thy eyes have dispensed with winking in order to save from dissolution this entire world which has had its origin through the opening of Thine eyes. [55]

---

**विशेष** - कामसिद्धिस्तोत्र में श्रीवत्सराज कहते हैं -

**लोकाश्चतुर्दश महेन्द्रमुखाश्च देवाः मूर्तित्रयं मुनिगणाश्च वसिष्ठमुख्याः ।**
**सद्यो भवन्ति न भवन्ति समस्तमूर्तेरुन्मीलनेन तव देवि निमीलनेन ।।**

अर्थात् उपर्युक्त समस्त के रक्षार्थ आप अनिमीलितलोचना हैं। सभी देवियों के लोचन अनिमिष होते हैं अतः भगवती के भी लोचन वैसे होने स्वाभाविक है । यह उनके लोचन का ही प्रभाव है कि कारण और कार्य की पूर्वापर व्यवस्था के व्यतिरेक से उपादान कारण पूर्व नियत विद्यमानता के व्यतिरेक से बुद्धिमानों के द्वारा की गई चेष्टा विरहित मन्त्र, तन्त्र साधना ऐन्द्रजालिक द्वारा रचित कपटसमुद्र गन्धर्वनगरादि की रक्षा, पालन और विनाश भगवती के नेत्रों द्वारा ही सम्पन्न होते है यह आगमशास्त्र प्रसिद्ध है ।

## अण्डरोगनिवृत्ति प्रयोग

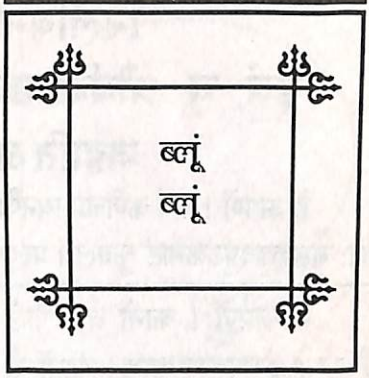


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **मात्र १ दिन १००० मन्त्र** का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करें अथवा कलिद्रुम फल अभिमन्त्रित कर धारण करें। बीजाक्षर **'निं'** है। जप का दशांश हवन **'निं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'निं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'निं तर्पयामि नमः'** से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है। **क्षीरपायस, मधु** तथा **केले** का नैवेद्य विहित है।

इस मंत्र के प्रयोग से **अण्डव्याधि निवारण** होता है पौरुष मे वृद्धि होती है पुत्र की सम्भावनाएँ बढ जाती है । ॥५५॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं' इति पञ्चपञ्चाशततममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। निं बीज। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां..... अंगुष्ठाभ्यां नमः.....हृदयाय नमः।
ह्रीं.....तर्जनीभ्यां स्वाहा.....शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट्.... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं..... कवचाय हुम्।
ह्रौं..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्.. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्.....अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .....हृदि।
नि बीजाय नमः .....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

दलिताञ्जनवर्णाभां ललज्जिह्वां सुलोचनाम्। चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चिताम्। कृष्णाम्बरपरीधानां ईशद्धास्यमुखीं सदा। एवं ध्यात्वां नकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। नकारं शृणु चार्वङ्गि! रक्तविद्युल्लताकृतिः। पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली। त्रिगुणाशक्तिसंयुक्तं हृदि भावय पार्वति!।चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चितां।शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मितां । रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां। देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः। शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते ! रक्तवर्ण प्रभाकारं स्वयं परमकुण्डली । चतुर्वर्गप्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं । पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं प्रिये ! । रत्नपञ्चतमोद्युक्तं त्रिकूटसहितं सदा। त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतं ।। इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!। महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत् । लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत् । धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
.....पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
.....धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तवापर्णे कर्णे जपनयनपैशुन्यचकिताः**
**निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाश्शफरिकाः ।**
**इयं च श्रीर्बद्धच्छदपुटकवाटं कुवलयं**
**जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति ।।५६।।**

हे अपर्णे ! तव कर्णेजपनयनपैशुन्यचकिता: शफरिका: अनिमेषास्तोये निलीयन्ते नियतम् । किञ्च -इयं च श्री: बद्धच्छदपुटकवाटं कुवलयं प्रत्यूषे जहाति, निशि च तत् विघटय्य प्रविशति ।

---

हे अपर्णे ! कानों तक फैले दीर्घ एवं मछलियों के समान तुम्हारे जो नयन हैं वे ऐसे लगते हैं मानों ईष्यावश जाकर कानों से कुछ-न-कुछ बता रहे हैं । ये देखकर मछलियाँ अपने विरोध में कुछ आरोप समझकर भय के मारे आँखें बंद किये बिना ही टकटकी लगाए हुए पानी में स्थिर छिपी पड़ी हैं । तुम्हारी आँखों की सौन्दर्य लक्ष्मी प्रात:काल बंद होने वाले कुवलय पुष्प को छोड़कर बाहर आ जाती है और संध्या होते ही उसके खुलने पर पुन: उसी में प्रविष्ट हो जाती हैं । भाव यह है कि भगवती के निमेषोन्मेषवर्जित नेत्रों की प्रतिद्वन्द्वी एक तो मछलियाँ हैं, और दूसरी कुमुदिनी है । मछली तो पानी में छिपी रहती है और कुमुदिनी रात्रि को ही खिलती है अर्थात् दिन में बंद होकर श्रीहीन हो जाती है ।।५६।।

**હે અપર્ણા ! તમારી આંખો, તમારા કર્ણો સુધી લાંબી ખેંચાયેલી છે, તે તમારી કાન ભંભેરણી કરી દે એવા ભયથી શફરિકા જળમાં સદા મટકું માર્યા વગર રહે છે અને શ્રી (લક્ષ્મી) અહીં રાતનું કુવલય (નીલકમલ) પ્રભાતે દલપટલને બારણાની માફક બંધ કરે છે ત્યારે તેને ત્યજી દે છે અને રાત્રે જ્યારે ઊઘડે છે ત્યારે પ્રવેશે છે.(૫૬)**

Oh! Aparna The glittering fish (female) afraid of the slander of the tale-bearing eyes constantly conceal themselves in water without a wink. The goddess of beauty (Lakshmi) abandons at dawn the blue lily whose door like Petals are closed (during daytime) and breaking through them enters it at night. [56]

---

**विशेष** - स्पर्धा में सदा शत्रुभाव आ जाता है, मछलियों और कुमुदिनी ने भगवती के नेत्रों से स्पर्धा कर रखी है । इसीलिए मछलियों ने जलदुर्ग में और कमलिनी ने दिन में बन्द रहकर अपने को बचाने का प्रयास किया है ।

वस्तुत: वे आपके नेत्रों से अपनी तुलना करना चाहती थीं और वैसा करते-२ स्पर्धाभाव जागा, लेकिन आपके नयन सौन्दर्य के आगे भयभीत होकर छिपना उचित समझा । सामर्थ्य के अभाव में शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वी को देखकर भागना या छिप जाना लोकप्रसिद्ध है ।

भगवती के मीनाक्षी और कमलाक्षी नाम प्रसिद्ध हैं ।

## वृष्टिद प्रयोग

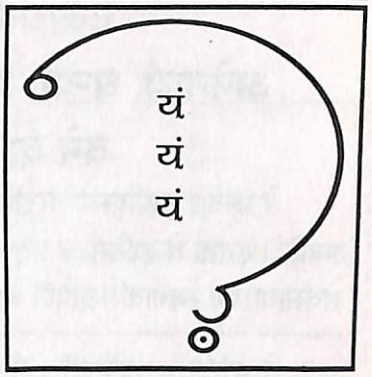


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्ण/मकरमत्स्य के दांत में चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५दिन** तक **प्रतिदिन२०००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**तं**' है । जपका दशांश हवन **'तं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'तं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'तं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है।

इस अतिविशिष्ट मंत्र के प्रयोग से द्वारपालक दौड़गा अर्थात् राज्यप्राप्ति होगी, बन्द दरवाजे स्वयं खुल जायेंगे तथा इच्छानुसार वृष्टि संभव हो सकेगी । ॥५६॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तवापर्णे कर्णे' इति षष्ठपञ्चाशततममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
तं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा**
**दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।**
**अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता**
**वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ।।५७।।**

हे शिवे ! द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा दृशा दवीयांसं दीनं कृपया मामपि स्नपय अयं अनेन धन्यो भवति । इयता ते हानिर्न च । तथा हि - हिमकरः वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हि । स्वच्छान्तःकरणानां सर्वसाधारण्यं स्वभावसिद्धमिति भावः ।

---

हे मङ्गल स्वरूपिणी ! किञ्चित् विकसित नीलोत्पल पुष्प के समान शोभा से युक्त अपनी दीर्घ दृष्टि से तुम अधिक दूर स्थित मुझ दरिद्र को भी स्नान करा दो । जिससे यह सम्पन्न (धन्य) हो जायेगा और ऐसा करने से तुम्हारी कोई क्षति (हानि) नहीं होगी क्योंकि चन्द्रमा की किरणें चाहे वह जङ्गल हो या शहर में स्थित महल दोनों पर समान रूप से पड़ती है । माताजी की कृपा दूर तक पहुँच सकती है । माँ की कृपा संतान पर पड़ेगी । ब्रह्माण्ड की प्रत्येक जीव राशि की माता है । वह जगन्माता है, अतः उसकी कृपा दृष्टि की कोई सीमा नहीं है ।।५७।।

**અધખીલ્યાં નીલકમળ સમી તમારી દૂર સુધી વિસ્તરની દષ્ટિ વડે હે શિવા ! મને, દૂર આવેલા દુઃખીને, કરુણા કરી નવડાવ તેથી હું સમૃદ્ધિ પામીશ અને એટલી વાતથી તમને કોઈ નુકસાન નથી. શીતળ ચંદ્ર વનમાં કે મહેલમાં એકસરખી કિરણો વરસાવે છે. (૫૭)**

Oh! Auspicious One ! Mayest Thou bathe me too, me who is helpless and far removed, out of Thy compassion, with Thy far-reaching look, beautiful like a slightly blossomed blue lily. Blessed will be this being by it and (at the same time) Thou wilt suffer no loss. The moon does shed its rays equally on a palace and on the wilderness.[57]

---

**विशेष** - गुणीजन तो अपने गुणगणों से आपको वश में कर ही लेंगे, अर्थात् उनके गुणों से आकृष्ट होकर आप उनकी रक्षा करेंगी ही । परन्तु न तो मैं गुणी हूँ , न भक्त, न पुजारी । केवल माँ तेरा बालक हूँ,मन्त्र नहीं जानता, स्तुति नहीं जानता, उपासना के भेद नहीं जानता, जानता हूँ तो केवल अम्ब-अम्ब की करुण पुकार करना । अतः माँ अपने मातृत्वानुगुण स्वभाव की रक्षा के लिए मुझ पर कृपा कर ।

भगवती की दृष्टि स्वभावतः अमृतमयी है उस दृष्टि से समस्त चराचर को आप्यायित करो यह प्रार्थना आदिशङ्कर के सर्वजनकारुणिक हृदय का दिग्दर्शन कराती है । इसीलिए कहीं अन्यत्र भगवान शंकर 'क्वचिदपि कुमाता न भवति ' कहते हैं ।

## सकलसौभाग्यकर प्रयोग

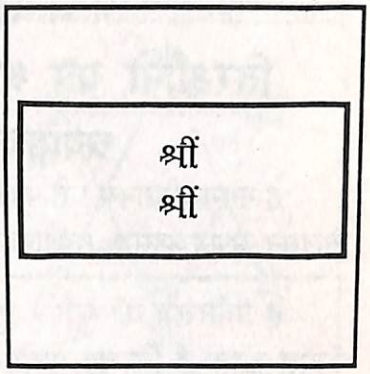


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **६ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर **'दृं'** है । जप का दशांश हवन **'दृं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'दृं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'दृं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १०० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **क्षीरपायस** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र का विधिपुरस्सर अनुष्ठान सम्पादित कर धारण करने से **बहुभाग्यवर्धन** होता है ॥५७॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'दृशा द्राघीयस्या' इति सप्तपञ्चाशततममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। दृं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
दृं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**चतुर्भुजां पीतवस्त्रां नवयौवनसंस्थिताम्। अनेकरत्नघटितहारनूपुरशोभिताम्। एवं ध्यात्वा दकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।त्रिशक्तिसहितं देवि!त्रिबिन्दुसहितं प्रिये! आत्मादितत्त्वसंयुक्तं दकारं प्रणमाम्यहम्। दकारं शृणु चार्वङ्गि चतुर्वर्गप्रदायकम्। पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा।षड्भुजां नीलवर्णां च नीलाम्बरधरां पराम्। नानालङ्कारभूषाढ्यां सर्वालंकृतमस्तकाम्। भक्तिप्रदां भगवतीं भोगमोक्षप्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वा सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। पञ्चप्राणमयं वर्णं चतुर्ज्ञानमयं तथा। रक्तविद्युल्लताकारं ऋकारं प्रणमाम्यहं। ऋकारः परमेशानि!कुण्डलीमूर्तिमान् स्वयं। अत्र ब्रह्मा च विष्णुश्च, रुद्रश्चैव वरानने।सदाशिवयुतं वर्णं सदा ईश्वरसंयुतं। ऊर्ध्वा दक्षगता वक्रा त्रिकोणावामतस्ततः।पुनस्त्वधो दक्षगता मात्रा शक्तिः परा स्मृता। मात्रा तु ब्रह्मविष्ण्वीशाः तिष्ठन्ति क्रमतो परा।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**अरालं ते पालीयुगलनगराजन्यतनये**
**न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम् ।**
**तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लङ्घ्य विलस-**
**न्नपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसन्धानधिषणाम् ।।५८।।**

हे नगराजन्यतनये ! ते पालीयुगलमरालं कुसुमशरकोदण्डकुतुकं केषां नाधत्ते ।यद्यस्मात् यत्र तिरश्चीनः विलसन् अपाङ्गव्यासङ्गः श्रवणपथमुल्लङ्घ्य शरसन्धानधिषणां दिशति ।

---

हे पर्वतराज की पुत्री ! तुम्हारे कानों और आँखों के बीच का वह भाग (कनपटी) यह भ्रम उत्पन्न करता है कि वह पुष्पों से बनाये गये कामदेव का धनुष है । जहाँ श्रवणपथ का उल्लघंन करके तेरा तिरछा कटाक्ष कनपटी को लाँघकर कान तक पहुँचे हुए बाण के समान दिखता है जो दोनों भौहों के धनुष पर चढ़ा हुआ है । कनपटियाँ धनुष के कोण हैं । भगवती की त्यौरी रूपी धनुष पर चढ़े हुए कटाक्ष रूपी बाण से सब बाधाएँ नष्ट होती हैं ।।५८।।

**હે પર્વતરાજ પુત્રી ! તમારી ભ્રમરોની વક્ર રેખાઓમાં કુસુમશરના ધનુષની કૌતુહલભરી કલ્પના કોને ન આવે ? કર્ણને માર્ગે ત્રાંસો કૂદીને જતો જણાતો તમારો દીર્ઘ કટાક્ષ શરસંધાનનો ખ્યાલ આપે છે. (૫૮)**

Oh! Daughter of the king of mountains ! To whom will not Thy curved palis (Interspace between the eyes and ears) create the curiosity of (whether it is not) the bow of the one with flower arrows? For the long side-glances cast across though them, reaching and shining in the region of the ears, create the impression of an arrow fixed (in it).[58]

---

**विशेष** - पूरे ११ श्लोकों में नेत्र का वर्णन सम्पन्न कर अब भौंहों का वर्णन करते हैं । विश्वकोष के अनुसार पाली का अर्थ श्रवणाभरण विशेष होता है- "पाली प्रवाली कर्णाङ्गी कर्णकोटी विभूषणे" और भी - "पालीः कर्णतलाद्रेऽसौ पङ्क्तावङ्क प्रदेशयोः । पाली प्रस्थेच यूकायां जातश्मश्रुस्त्रियामपि ।"

यदि अरालचक्राकारपालीयुगल अङ्ग धनुष है तो उसका कोई बाण भी होना स्वाभाविक है । वह बाण क्या है ? बाण है भगवती का विक्षेपचातुरी संयुक्त कटाक्ष विशेष । यह कटाक्ष कुछ और नहीं साक्षात् कामदेव का ही बाण है । कुछ लोगों के मत में पाली का अर्थ भौह होता है । इसी भ्रूधनु पर कटाक्ष का बाण चलता है ।

यहाँ चतुरस्र चतुराम्नाय मन्त्र उपदिष्ट है । पालियुगलपद से लज्जायुगल उल्लंघन कर ऊपर जाकर पूर्वाम्नाय देवता उन्मनी ह्स्त्रीं स्ह्रीं पूर्वाम्नाय उन्मनी । ( ह्स्त्रैं ह्स्क्लीं ह्स्त्रौः)

## साध्य-आकर्षण प्रयोग

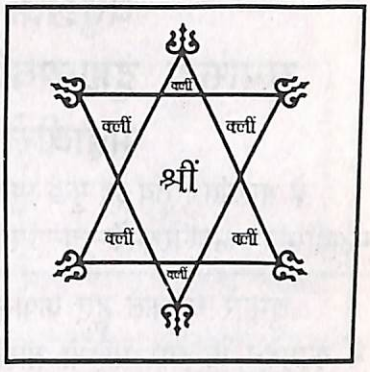


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **कुङ्कुमचूर्ण** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर'**अं**'है। जप का दशांश हवन'**अं स्वाहा**'से, हवन का दशांश मार्जन'**अं मार्जयामि नमः**'से तथा मार्जन का दशांश तर्पण'**अं तर्पयामि नमः**'से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **सर्वव्याधि निवारण** तथा **सकलराज वश्यता** की शक्ति प्राप्त होती है तथा अन्य मतानुसार साध्य आकर्षण होता है । ॥५८॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'अरालं ते पाली' इति अष्टपञ्चाशततममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। अं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**केतकीपुष्पगर्भाभां द्विभुजां हंसलोचनाम् ।**
**शुक्लपट्टाम्बरधरां पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यमानन्दमयीं पराम् ।**
**वराभयकरां देवीं नागपाशसमन्विताम् ।**
**शृणुतत्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।**
**शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तिद्वय समन्वितम् ।**
**निर्गुणं सगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।**
**बिन्दुद्वयमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
अं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**स्फुरद्गण्डाभोगप्रतिफलिततताटङ्कयुगलं**
**चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम् ।**
**यमारुह्य द्रुह्यत्यवनिरथमर्केन्दुचरणं**
**महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते ।। ५९।।**

हे भगवति ! तव इदं मुखं स्फुरद्गण्डाभोगप्रतिफलिततताटङ्कयुगलं चतुश्चक्रं मन्मथरथं मन्ये । यमारुह्य मारः महावीरस्सन् अवनिरथमर्केन्दुचरणं सज्जितवते प्रमथपतये द्रुह्यति ।

---

तुम्हारे चमकते हुए कपोलों पर प्रतिबिम्बित दोनों कर्णफूलों से सुशोभित तुम्हारे मुख को मैं कामदेव के चार पहियों वाला रथ मानता हूँ । उसमें चढ़कर अथवा उसका आश्रय लेकर महावीर कामदेव, सूर्य और चन्द्रमा रूपी पहिये से भूमिरूपी रथ में युद्ध के लिए जाते हुए प्रमथगणों के अधिपति परमशिव को ही छलता है । मुख रथ है, उसके चार पहिये कानों में लटकते हुए दो कर्णफूल और दो कपोलों पर उनके प्रतिबिम्ब हैं । शङ्कर का रथ पृथ्वी है जिसके सूर्य और चन्द्रमा दो पहिये हैं जिस पर चढ़कर शङ्कर ने त्रिपुरों को हराया था । परन्तु यहाँ देवी के मुखरूपी रथ का आश्रय होने के कारण मन्मथ शङ्कर के समक्ष युद्ध करने का साहस करता है ।।५९ ।।

**તમારું (ચકાકાર) તાટંક યુગલ તમારા ઝગમગતા વિસ્તીર્ણ ગંડસ્થળ ઉપરથી પ્રતિબિંબિત થતું તમારું વદન મન્મથના ચાર ચક્રવાળા રથ જેવું મને જણાય છે. જાણે એના ઉપર બેસીને મહા પરાક્રમી કામદેવ, સૂર્ય-ચંદ્રરૂપી ચક્રવાળા અને પૃથ્વી રૂપી રથ ઉપર બેઠેલા, જિતાત્મા પ્રલયનાથ શિવ નો દ્રોહ કરે છે. (૫૮)**

I believe that this, Thy face is cupid's four-wheeled chariot, having the pair of Thy ear-ornaments (Tatankas) reflected in the expanse of Thy cheeks. Cupid, the mighty warrior sitting on it (chariot) plots revengefully against the Lord of the Pramathaganas (Siva), resting on the chariot of the Earth having the Sun and Moon for its wheels.[59]

---

**विशेष** - महादेव ने समाधि में बैठे-बैठे बिना किसी रथ तथा सेना के विपुल बलशाली काम को भस्मसात् कर दिया था । ऐसे कामजयी शिव को जब आपका मुखमण्डल देखने मात्र से कामसञ्चार हो गया तो सिद्ध ही है कि आपकी शक्ति, आपका लावण्य काम से कई गुना अधिक है ।

यहाँ भगवती के मुख में रथ की उत्प्रेक्षा की गयी है । मुख रथ है,दो कर्णफूल और कपोलों पर पडते उसके दो प्रतिबिम्ब चार पहिए । इधर शंकर का रथ सूर्य और चन्द्र रूपी दो पहियों के कारण दुपहिया है । अतः काम क्यों न शिव से लडने का साहस करे ?

## सर्वजनवशीकरण प्रयोग

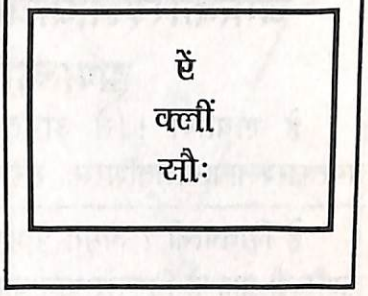


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर **'स्फ्रुं'** है। जप का दशांश हवन **'स्फ्रुं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'स्फ्रुं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'स्फ्रुं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **गुडोदन** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस यन्त्र के पूजन तथा विधिवत धारण करने से **सकलजन वश्यता** की शक्ति प्राप्त होती है । यह मात्र फलश्रुति नहीं अनुभूत प्रयोग है । ॥५९॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'स्फुरद्गण्डाभोग' इति नवपञ्चाशततममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। स्फ्रुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थें जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
स्फ्रुं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्। अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्।**
**नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्।**
**एवं ध्यात्वासकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्तिबीजं परात्परम्।**
**कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्। पञ्चदेव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा।**
**रजसत्वतमोयुक्तं त्रिबिन्दु सहितं सदा। प्रलयाम्बुदवर्णाभां ललज्जिह्वां चतुर्भुजाम्।**
**भक्ताभयप्रदां नित्यां नानालङ्कारभूषिताम्। एवं ध्यात्वा फकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**फकारं शृणु चार्वङ्गि रक्तविद्युल्लतासमम्। चतुर्वर्गप्रदं देवि! पञ्चदेवमयं तथा।**
**पञ्चप्राणमयं वर्णं सदा त्रिगुणसंयुतम्। आत्मादितत्त्वसंयुक्तं त्रिबिन्दुसहितं प्रिये!।**
**पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्।**
**एवंध्यात्वासुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधाजपेत्। उकारं परमेशानि! अधः कुण्डलिनी स्वयम्।**
**पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा । पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**सरस्वत्यास्सूक्तीरमृतलहरीकोशलहरीः**
**पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरलम् ।**
**चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः कुण्डलगणो**
**झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ते ।।६०।।**

हे शर्वाणि ! ते अमृतलहरीकोशलहरीः सूक्तीः श्रवणचुलुकाभ्यामविरलं पिबन्त्याः चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः सरस्वत्याः कुण्डलगणः तारैः झणत्कारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ।

---

हे शिवपत्नी ! अमृत प्रवाह के माधुर्य को स्वीकार किये हुए तुम्हारे शब्द माधुर्य को अपने कर्णरूपी पात्र से निरन्तर पान करने वाली सरस्वती देवी जब उस बोली की प्रशंसा में सिर हिलातीं हैं तब उनके कर्णाभरण से झणत् -झणत् की जो ध्वनि निकलती है वह हुंकार करते हुए मानों उत्तर दे रहे हैं । भगवती जब अनुज्ञासूचक सिर हिलाती है तो उनके कानों के कुण्डल मानों 'ॐ' का उच्चारण करके अनुज्ञा प्रकट करते हैं ।।६०।।

**દેવી સરસ્વતીનાં મધુર ગીતો, જે અમૃતના તરંગો દ્વારા કલ્યાણ લાવે છે, તેનું તમો તમારા કર્ણરૂપી ખોબા વડે સતત પાન કરો છો. અને હે શર્વાણી ! તમો તાલ અનુસાર સાનંદાશ્ચર્યમાં તમારું શિર હલાવો છો ત્યારે તમારા કર્ણના અલંકારો મોટા ઝણઝણ અવાજથી જાણે (અનુરૂપ) પ્રતિવચન આપે છે. (૬૦)**

Oh! Spouse of Siva ! While Thou hast been drinking uninterruptedly by Thy cup-like ears, Sarasvati's melodious compositions which excel the flood of nectar in sweetness and as Thou noddeth Thy head in appreciation of their delectation, the group of Thy earrings seen to echo in response, through their tinkling sounds.[60]

---

**विशेष** - जब कोई महापुरुष या राजा कुछ बोलता है तो उनके अनुजीवी भी उनका अनुमोदन करते हैं यह लोकप्रसिद्ध व्यवहार है । अथवा जब कोई कवि स्वरबद्ध कविता का पाठ करता है तो तन्मय श्रोता भावनिमग्न हो शिर हिलाने लगता है । कहा है -

**किं कवेस्तेन काव्येन किं बाणेन धनुष्मतः ।**
**परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ।।**

अर्थात् ऐसे कवि से क्या लाभ जिसकी कविता को सुनकर भावनिमग्न श्रोता सिर ना हिलाने लगे । अथवा ऐसे धनुर्धारी के बाण से क्या लाभ जिसके लगते ही लक्ष्य का सिर अपने स्थान से हिल ना जाय । भगवती के अनुज्ञासूचक शिरःकम्प से हिलते कर्णकुण्डल मानों ॐ की ध्वनि उच्चरित कर अनुमोदन कर रहे है । जिह्वा के मौन रहने और कानों के बोल न सकने पर इन्हें ऐसा करना पड़ रहा है ।

## सकलविद्या संप्राप्ति प्रयोग

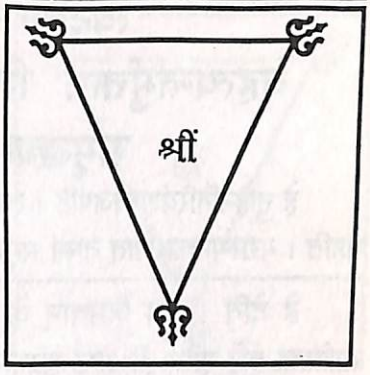


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**सं**' है । जप का दशांश हवन '**सं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**सं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**सं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **मधुरत्रय, दाड़िमी कुसुम-सिद्ध चरु** हवनीय द्रव्य है । **मधु** तथा **क्षीर पायस** का नैवेद्य विहित है ।

अनुष्ठान का विधिपुरस्सर पालन कर इस यन्त्र को धारण करने से **सकलविद्या की प्राप्ति** होती है ।आत्मविद्या के साधकों के लिए यह साधना परमोपयोगी है । ॥६०॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'सरस्वत्यासूक्तीरमृत' इति षष्ठिततममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
सं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**करीष-भूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्।**
**अस्थि-माल्यामष्ट-भुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्।**
**नागेन्द्र-हार-भूषाढ्यां जटा-मुकुट-मण्डिताम्।**
**सर्वसिद्धि-प्रदां नित्यां धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।**
**एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्ति-बीजं परात्परम्।**
**कोटि-विद्युल्लताकारं कुण्डली-मय-संयुतम्।**
**पञ्च-देव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा।**
**रजस्सत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशध्वजपटि**
**त्वदीयो नेदीयः फलतु फलमस्माकमुचितम् ।**
**वहत्यन्तर्मुक्ताः शिशिरकरनिश्वासगलितं**
**समृद्ध्या यत्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः ।।६१।।**

हे तुहिनगिरिवंशध्वजपटि ! त्वदीयोऽसौ नासावंशः अस्माकं उचितं नेदीयः फलं फलतु । सः अन्तः मुक्ताः वहति । यद्यस्मात्कारणात् तासां समृद्ध्या शिशिरकरनिश्वासगलितं बहिरपि च मुक्तामणिधरः ।

---

हे देवि ! तुम हिमवान् के कुलरूपी स्तम्भ में फहरती हुई पताका हो । तुम्हारी बाँस रूपी नासिका हमें शीघ्र ही श्रेष्ठ वरदान दे । क्योंकि तुम्हारी नासिकारूपी बाँस नें अपने अन्दर ढेर सारे मोतियों को भर रखा है । भरे होने के कारण चन्द्रनाड़ी की आभा से युक्त बायें नथुने से श्वास द्वारा बाहर लाये गये मोतियों को पहन लिया हो । मोती को मुक्ता कहते हैं और जीवन्मुक्त पुरुष भी मुक्त कहलाते हैं । बाँस में मोती हैं और कुल में मुक्त पुरुष उत्पन्न होते हैं अतः तुम्हारी नासिका रूपी बाँस में हमारे लिए फल लगें और वे समृद्ध भी हों । परन्तु जिस प्रकार बाँस में फल नहीं लगते और उसके भीतर पोल में मोतियों का उत्पन्न होना सुना जाता है उसी प्रकार भगवती के नासिकावत् श्रेष्ठ कुल में अर्थात् भगवती के उपासकों में मुक्त पुरुषों की उत्पत्ति होती है । जिसका उचित फल मुक्ति है ।।६१।।

**હે હિમગિરિના વંશની ધ્વજા ! તમારી નાસાનાલી અમે ઇચ્છીએ તેની નજીકનું ફળ અમને આપો. નાસાની અંદર તમારા ઠંડા શ્વાસથી ઉત્પન્ન થતાં મોતી છે અને તે પ્રચુર હોવાથી કેટલાક મુક્તામણિ રૂપે બહાર પણ લટકે છે. (૬૧)**

Oh! glorious banner of the race of the Snowy Mountain ! May Thy bamboo-like nose-bone (nose-ridge) befittingly and quickly fructify our desires that nose-bone which bears within it pearls formed by Thy cool breath and out of the abundance of which a pearl is borne outside as well.[61]

---

**विशेष** - वंश कुल को भी कहते हैं और बाँस नामक लकड़ी को भी । प्रायशः ध्वज बाँस के दण्डे में ही बंधता है। यहाँ श्लेष करने से अर्थ होगा- तुमने अपने वंश की कीर्ति पताका को वंश (बाँस) के माध्यम-प्रयोग से उन्नत किया है ।

मुक्ता शब्द भी द्विअर्थी है । मोती को भी मुक्ता कहा जाता है और जीवन्मुक्त भी मुक्त कहलाता है । कर्णफूलों के झंकाररूपी प्रणव उपासना से साधक की जीवन्मुक्ति ही अभिप्रेत है । सन्यासी आदिशङ्कराचार्य को मोतियों से भला क्या काम ?

कर्णफूलों में से निकलती प्रणव की झंकार मानों स्तवन की प्रतिध्वनि हो ।

## ऐश्वर्यप्राप्ति प्रयोग

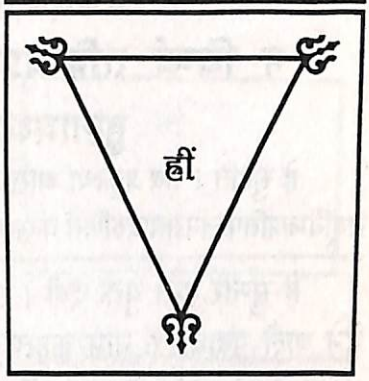


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो ८ **दिन** तक **प्रतिदिन १२,०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**अं**' है । जप का दशांश हवन '**अं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**अं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**अं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **नारियल केला** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **सकलपुरुषवश्यता** की प्राप्ति होती है। अनुष्ठान के बाद यन्त्र को स्त्रियों के गहनों में मिला देने से अक्षय लक्ष्मी प्राप्ति तथा कोष स्थिर होता है । ॥६१॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'असौ नासांवंशस्तुहिन' इति एकषष्ठितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। अं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
अं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**केतकीपुष्पगर्भाभां द्विभुजां हंसलोचनाम् ।**
**शुक्लपट्टाम्बरधरां पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यमानन्दमयीं पराम् ।**
**वराभयकरां देवीं नागपाशसमन्विताम् ।**
**शृणुतत्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।**
**शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तिद्वय समन्वितम् ।**
**निर्गुणं सगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।**
**बिन्दुद्वयमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**प्रकृत्या रक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः**
**प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता ।**
**न बिम्बं तद्बिम्बप्रतिफलनरागादरुणितं**
**तुलामध्यारोढुं कथमिव विलज्जेत कलया ।।६२।।**

हे सुदति ! तव प्रकृत्या आरक्तायाः दन्तच्छदरुचेः सादृश्यं प्रवक्ष्ये । विद्रुमलता फलं जनयतु । बिम्बं पुनः तद्बिम्बप्रतिफलनरागादरुणितं कलयापि तुलामध्यारोढुं कथमिव न विलज्जेत ।

---

हे सुन्दर दन्त युक्त देवी ! स्वाभाविक लाल रंग के तुम्हारे जो अधर हैं उनकी शोभा की उपमा देने वाले पदार्थों के नाम कहता हूँ । मूँगे की लता के फल तुम्हारे रक्त अधरों की उपमा देने के लायक पर्याप्त थे, किन्तु उनमें फल नहीं उत्पन्न होते । क्योंकि उनकी अरुणिमा तो तुम्हारे बिम्ब की छाया मात्र है । यदि उनसे किसी प्रकार तुम्हारे होठों की तुलना की भी जाय तो वे तुम्हारे अधरों की सुन्दरता की एक कला बराबर भी सुन्दर न होने से क्या लज्जित नहीं होंगे । भगवती का सौन्दर्य अनुपम है अत: उनके होठों की तुलना करना या उपमा देना अनुचित है । बिम्बफल की अरुणिमा तो सामान्य अरुणिमा है उसे प्रकृति देवि की ही आंशिक देन समझना चाहिए ।।६२।।

**હે સુંદર દંતકળીઓ વાળી માતા ! પ્રકૃતિથી લાલ એવા આપના હોઠની દ્યુતિ માટે હું સાદશ્ય જણાવીશઃ વિદ્રુમ લતાને ફળ આવવા દો ! લાલ બિંબફળ, (તમે બચકું ભરે ત્યારો) તે બિંબમાંથી પ્રતિબિંબિત થતાં (વધુ) લાલ થાય છે. તે તેની સાથેની તુલનામાં કાંઇક કળાથીય શરમાશે નહિ. (૬૨)**

Oh! The one with handsome teeth! I shall mention a likeness to the splendour of Thy lips that are by nature red. Let the coral creeper bear a fruit. The bimba fruit is not akin to Thy lip Rendered reddish because of the reflection of Thy form how will it (the bimba) not be ashamed to be placed on the scales even with a fraction of thy splendour ?[62]

---

**विशेष** - भगवती का सौन्दर्य अनुपम है, उनके सौन्दर्य की उपमा उनके सौन्दर्य से ही दी जा सकती है । जैसे-

**गगनं गगनाकारं सागरं सागरोपमः । रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव ।**

जिस तरह आकाश की उपमा आकाश से ही दी जा सकती है, सागर की उपमा सागर से ही दी जा सकती है । उसी तरह रामरावण का युद्ध भी अपने आप में अनुपम था । वही स्थिति भगवती के सौन्दर्य की है । वह अनुपमेय है ।

## सम्यक् निद्राप्राप्ति प्रयोग

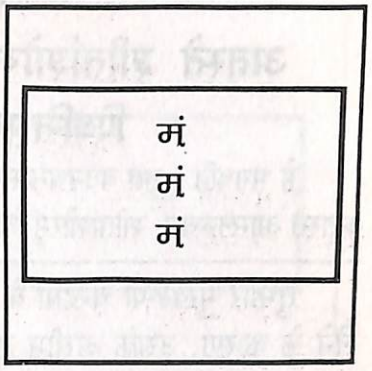


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो ८ **दिन** तक **प्रतिदिन ८००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**प्रं**' है । जप का दशांश हवन '**प्रं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**प्रं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**प्रं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **तिल, शर्करा, जपाकुसुम** हवनीय द्रव्य है । **उडद के ताजे बडे** तथा **शहद** का नैवेद्य विहित है ।

जिसको नींद न आती हो तो इस मंत्र का अनुष्ठान कर यन्त्र को तकिये के नीचं रखकर सोने से **अनिद्रा रोग का निवारण** होता है और अच्छी नींद आती है । ॥६२॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'प्रकृत्या रक्तायास्तव' इति द्विषष्ठितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। प्रं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

हां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
प्रं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**विचित्रवसनां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम्। रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं पद्ममालाविभूषिताम्। मणिरत्नादिकेयूरहारविग्रहाम्। चतुर्वर्गप्रदां नित्यां नित्यानन्दमयीं पराम्। एवं ध्यात्वा पकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। अतः परं प्रवक्ष्यामि पकाराक्षरमव्ययम्। चतुर्वर्गप्रदं वर्णं त्रिशक्तिसहितं प्रिये! पञ्चदेवमयं वर्णं शरच्चन्द्रमयप्रभम्। ललज्जिह्वां महारौद्रीं रक्तास्यां रक्तलोचनाम्। रक्तमाल्याम्बरधरां रक्तालङ्कारभूषिताम्। रक्तवर्णामिष्टभुजां रक्तपुष्पोपशोभिताम्। महामोक्षप्रदां नित्यां अष्टसिद्धिप्रदायिकाम्। एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। रेफं च चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीद्वयसंयुतं। रक्तविद्युल्लताकारं पञ्चदेवात्मकं सदा। त्रिशक्तिसहितं देवि! आत्मादितत्त्वसंयुतम्।। सर्वतेजोमयं वर्णं सततं मनसि चिन्तयेत्।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**स्मितज्योत्स्नाजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां**
**चकोराणामासीदतिरसतया चञ्चुजडिमा ।**
**अतस्ते शीतांशोरमृतलहरीमाम्लरुचयः**
**पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काञ्जिकधिया ।। ६३ ।।**

हे भगवति ! तव वदनचन्द्रस्य स्मितज्योत्स्नाजालं पिबतां चकोराणां अतिरसतया चञ्चुजडिमा आसीत् , अतस्ते आम्लरुचयः शीतांशोरमृतलहरीं काञ्जिकधिया स्वच्छन्दं निशिनिशि भृशं पिबन्ति ।

---

तुम्हारे मुखरूपी चन्द्रमा के मुस्कानरूपी अमृत तुल्य चन्द्रिका का अत्यधिक मात्रा में पान कर लेने के कारण, उसके असीम माधुर्य के फलस्वरूप चकोर पक्षियों की चञ्चु जड़ सी हो गयी है । अत: वे शीतल चन्द्रमा की चाँदनी के अमृत प्रवाह को खट्टा रस जानकर प्रति रात्रि खूब स्वच्छन्द पीते रहते हैं । अभिप्राय यह है कि चन्द्रमा की चाँदनी प्रकृति की मुस्कराहट की मधुरता की तुलना में खट्टी है । जब अधिक मीठा खाने से मंदता पड़ जाती है तब खट्टे धोवन का सेवन मंदता को दूर कर देता है । देवी की मुस्कान की तुलना अमृत से की गयी है । मीठी अमृत चन्द्रिका की उपमा खट्टे धोवन से दी गयी है ।।६३।।

**તમારા ચંદ્ર સમા વદનના હાસ્યમાંથી ચકોરોએ કિરણજાળ પીધી, ત્યારે તેમની આંખો અતિમધુરતાથી જડ થઇ તેથી અમ્લ (ખટાશ) ખાવાની રુચિ થવાથી ચંદ્રની અમૃતલહરી દર રાત્રિએ ચકોરો, જાણે કે કાંજી હોય તેમ, સંતોષથી પીએ છે. (૬૩)**

The beaks of the chakora birds get satiated by the excessive sweetness of the expanse of moon-shine, viz. the smile on Thy moon like face Hence, longing to taste something sour they (chakora birds) drink freely every night, the waves of nectar from the Moon imagining them to be sour gruel. [63]

---

**विशेष** - यह देखा गया है कि कोई मीठी वस्तु खा लेने पर पुन: वही वस्तु कम मीठी लगने लगती है इसमें आस्वादन शक्ति के ह्रास का कारण जिह्वा जाड्य है । इसे समाप्त करने के लिए तिक्त अम्ल आदि रसों का प्रयोग किया जाता है । वही स्थिति प्रस्तुत श्लोक में विनिर्मित है जहाँ चकोर चञ्चु रसास्वादन में जड हो गयी है । भावार्थ यह कि चन्द्रमा की चन्द्रिका भी प्रकृति की मुस्कुराहट के सामने फीकी पड गई है ।

श्लोक का रहस्यार्थ है - स्मितज्योत्स्ना जालं पद से उ, चन्द्र पद से स, चकोराणां पद से औं, शीतांशो: पद से स, चञ्चु से औं, स्वच्छन्द पद से उं, अमृतलहरी पद से इं, भृशं से ए । इस तरह परा/त्रिपुरा मन्त्र (औं सौ: उं श्रीं सौ:) उद्घाटित होता है ।

## सम्मोहन प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **३० दिन** तक **प्रतिदिन ३०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर '**स्मिं**' है। जप का दशांश हवन '**स्मिं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**स्मिं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**स्मिं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **तिल, शर्करा, जपाकुसुम** हवनीय द्रव्य है। **पका चावल (दही से युक्त), नारियल, फल** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है।

सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः। इस प्रयोग द्वारा भगवती के प्रसन्न होने पर साधक को अतुल **सम्मोहन शक्ति** प्राप्त होती है ॥६३॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'स्मितज्योत्स्नाजालं' इति त्रिषष्ठितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। स्मिं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्. नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
स्मिं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्। अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्। नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्। पञ्चदेव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा। रजसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा। कृष्णां दशभुजां भीमां पीतलोहितलोचनाम्। कृष्णाम्बरधरां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां मकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। मकारं शृणु चार्वङ्गि! स्वयं परमकुण्डली। तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं तथा। इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!। महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृञ्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि।

**अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाम्रेडनजपा**
**जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा ।**
**यदग्रासीनायाः स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी**
**सरस्वत्या मूर्तिः परिणमति माणिक्यवपुषा ।।६४।।**

हे भगवति ! तव सा जिह्वा अविश्रान्तं पत्युः गुणगणकथाम्रेडनजपा जपापुष्पच्छाया जयति, यदग्रासीनायाः सरस्वत्याः स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी मूर्तिः माणिक्यवपुषा परिणमति ।

---

हे जननि ! तुम्हारी पावन जिह्वा की 'जो निरन्तर अपने पति शिवजी के यशोगान करते रहने के फलस्वरूप जवाकुसुम के समान रक्त वर्ण से सुशोभित है' जय हो । सरस्वती देवी की स्फटिक समान स्वच्छ, शुद्ध कान्तिमयी मूर्ति का अग्रभाग में स्थित होने के कारण श्वेत रूप रक्त वर्ण में परिणित हो जाता है । स्फटिक का धर्म है उस पर निकटस्थ पदार्थ का रंग झलकने लगता है । अर्थात् वह स्वयं उसके रंग से अभिभूत हो जाता है । सरस्वती का निवास जिह्वा के अग्रभाग में होता है और स्फटिकवत् स्वच्छ वर्ण होता है, परन्तु जिह्वा के रक्तवर्ण के कारण वह भी रक्त दिखने लगता है ।।६४।।

**થાક્યા વિના, તમારા પતિના અનેક સત્કાર્યોના વારંવાર જાપ જપતી, જપાપુષ્પ જેવી સુંદર તમારી જિહ્વા, વિજયી છે. જ્યારે માતા સરસ્વતી તે જિહ્વાના અગ્રે વસે છે, ત્યારે તેમની સ્ફટિકશી સ્વચ્છ દ્યુતિ ધરાવતી મૂર્તિ માણેકના રૂપમાં પલટાઇ જાય છે.(૬૪)**

Oh Mother ! Glory to Thy tongue which possesses the lustre of the Japa-flower (Hibiscus) and which is incessantly muttering prayers by repeating Thy husband's virtues and glorious deeds ! Seated on its (tongue's) tip Sarasvati's body, of spotless white hue as of crystal stone, gets transformed into the colour of the ruby. [64]

---

**विशेष** - जिस तरह स्फटिक स्वाभाविक रूप से धवलकान्ति प्रचुर होता है उसी तरह भगवती सरस्वती भी "स्फटिकसदृशरूपा भारती धातृवक्त्रा ।" यह स्फटिक धावल्य माणिक्याकार रक्ताभा प्राप्त करता है जिसमें कारण जपापुष्प बनता है । प्रश्न उठता है कि क्या अब यह रक्ताभा स्थायी हो जायेगी ?

आगम शास्त्रों में तृतीयावरण के अष्टारमण्डल में स्थित वशिन्यादि अष्टवाग्देवता सिन्दूर सौन्दर्य तनु सौन्दर्या के निवास का वर्णन मिलता है । भगवती तुम्हारे जिह्वाग्र में जो सरस्वती रहती है वही जपापुष्पनिभाकृति वशिन्यादि के रूप में बहिरावरण देवता बनकर आपकी सेवा करती है ।

## वाक्सिद्धि प्रयोग

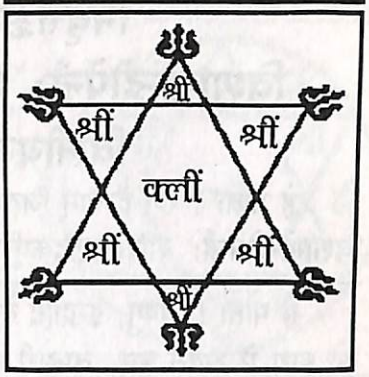


प्रस्तुत यन्त्र को **कुङ्कुम** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **८ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर **'अं'** है । जप का दशांश हवन **'अं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'अं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'अं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **तिल, शर्करा, जपाकुसुम** हवनीय द्रव्य है । **गुड़ पायस** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

विधिवदनुष्ठित इस यन्त्र तथा मंत्र के प्रयोग से साधक को **महाकवित्वरूपा तथा शापानुग्रहकारिणी उभयविध वाक्सिद्धि की प्राप्ति** होती है ॥६४॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'अविश्रान्तं पत्युर्गुण गण' इति चतुष्षष्ठितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। अं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
अं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**केतकीपुष्पगर्भाभां द्विभुजां हंसलोचनाम् ।**
**शुक्लपट्टाम्बरधरां पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यमानन्दमयीं पराम् ।**
**वराभयकरां देवीं नागपाशसमन्विताम् ।**
**शृणुतत्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।**
**शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तिद्वय समन्वितम् ।**
**निर्गुणं सगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।**
**बिन्दुद्वयमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरस्त्रैः कवचिभि-**
**र्निवृत्तैश्चण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः ।**
**विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकलाः**
**विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूलकबलाः ।।६५।।**

हे मातः ! रणे दैत्यान् जित्वा अपहृतशिरस्त्रैः कवचिभिः निवृत्तैः चण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकलाः तव वदनताम्बूलकबलाः विलीयन्ते ।

---

हे माता ! विष्णु, इन्द्रादि देवतागण दैत्यों को रण में जीतकर अपहृत किये शिरस्त्र और कवचों को हाथ में रखते हुए, तुम्हारी सेवा में वन्दना करते हुए खड़े हैं । शिवजी के निर्माल्य का हक चण्डिकेश का है । चन्द्रमा के समान श्वेत कर्पूर चूर्ण से युक्त पान के ग्रास को जो तुम्हारे द्वारा खाया गया है उसे बड़े आदर और स्वाद से ग्रहण करते हैं । जैसे माँ अपने छोटे-छोटे बालकों को मुहँ से निकाल कर बड़े प्रेम से चबे पान के टुकड़े खिलाया करती है वैसे ही भगवती स्कन्द, इन्द्र और उपेन्द्र को उनकी दैत्यों पर विजय से प्रसन्न होकर पुरस्कार स्वरूप मुख- उच्छिष्ट ताम्बूल के टुकड़े खिलाती हैं । चण्ड शंकर के एक गण का नाम है । उसका स्थान नन्दी के दक्षिण हाथ की ओर, नन्दी और जिलहरी के बीच में होता है । शंकर के निर्माल्य का भाग किसी दूसरे का न होकर चण्ड का ही होता है । इसलिए चण्ड के समीप खड़े होकर शिव पूजन नहीं किया जाता, वह निष्फल होती है । तीनों देवता, दैत्यों को हराकर शिवजी के पास गयें वहाँ पुरस्कार स्वरूप कुछ न मिलने पर क्योंकि उनके निर्माल्य का अधिकारी तो चण्ड ही होता है वे वात्सल्य प्रेम रूपी प्रेम पाने देवी के समीप गये ।।६५।।

દૈત્યોને યુદ્ધમાં જીતી, વિશાખ (સ્કન્દ), ઇન્દ્ર, અને ઉપેન્દ્ર (વિષ્ણુ), કવચ સાથે, પણ શિરસ્ત્રાણ કાઢી નાંખીને, ચંડ કિરણો વાળાં ત્રિપુરના નાશના (શ્લેષથી, દાહક ત્રિપુરહરના યજ્ઞના) નિર્માલ્યથી દૂર રહી, પાછા આવ્યા ત્યારે (ઠંડક આપતો ઉપચાર સમજીને) તેમણે ચંદ્ર જેવા શ્વેત કપૂરના ટુકડાવાળા પાનના કોળિયા, તમારા મુખમાંથી પડતા, મા ! ખેંચી લીધા. (૬૫)

Oh Mother ! Vishakha, Indra and Upendra, on their return after vanquishing the demons in battle, being indifferent to Chandesvara's share in the remains of the offering made to the destroyer of the three cities ; and clad in armour but with their head dress removed. eagerly set upon Thy mouthful chew of betel and slices of nut having refined pieces of camphor, white and pure as the Moon (Spat by Thee). [65]

---

**विशेष-** चण्ड शङ्कर के एक गण का नाम है उसका स्थान नन्दी के दक्षिण हाथ की ओर नन्दी और जलहरी के बीच होता है । वहाँ से पूजा नहीं की जाती है । शंकर का निर्माल्य चन्ड का ही भाग होता है,कोई और उसे ग्रहण नहीं कर सकता । इसी कारण देवताओं को दैत्यों पर विजय मिलने पर भी शिव से कोई पुरस्कार नहीं मिला ।

## सर्वविजयकर प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर गुग्गुल का धूप दिखाकर लाल पुष्पों से श्रीयन्त्रवत् अर्चन करके **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर **'रं'** है। जप का दशांश हवन **'रं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'रं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'रं तर्पयामि नमः'** से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है। **मधु** का नैवेद्य विहित है।

जप के बाद यन्त्र को गले में धारण करे। इससे **सर्वत्र विजय** होती है और सर्वजनवशीभूत होते हैं। ॥६५॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'रणेजित्वा दैत्यानपहृत' इति पञ्चषष्ठितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। रं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं .....कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**ललज्जिह्वां महारौद्रीं रक्तास्यां रक्तलोचनाम्।**
**रक्तमाल्याम्बरधरां रक्तालङ्कारभूषिताम्।**
**रक्तवर्णामष्टभुजां रक्तपुष्पोपशोभिताम्।**
**महामोक्षप्रदां नित्यां अष्टसिद्धिप्रदायिकाम्।**
**एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**रेफं च चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीद्वयसंयुतम्।**
**रक्तविद्युल्लताकारं पञ्चदेवात्मकं सदा।**
**त्रिशक्तिसहितं देवि! आत्मादितत्त्वसंयुतम्।**
**सर्वतेजोमयं वर्णं सततं मनसि चिन्तयेत्।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
रं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि।

**विपञ्च्या गायन्ती विविधमपदानं पशुपतेः**
**त्वयारब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने ।**
**तदीयैर्माधुर्यैरपलपिततन्त्रीकलरवां**
**निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम् ।।६६।।**

हे भगवति ! पशुपतेः विविधं अपदानं विपञ्च्या गायन्ती त्वया वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने आरब्धे सति तदीयैः माधुर्यैः अपलपिततन्त्रीकलरवां निजां वीणां वाणी चोलेन निभृतं निचुलयति ।

---

पशुपति के अनेकानेक लीलाविनोदों को सरस्वती देवी वीणा में गाती हैं । उन गानों को सुनकर भगवती के प्रशंसा पूर्वक 'अहा-अहा' इन उद्गारों के साथ ही सरस्वती देवी 'यह अनुभव करके कि तुम्हारी वाणी वीणा के माधुर्य से भी अनेक गुना माधुर्यमयी है' इससे लज्जित होकर वीणा को कपड़े में लपेट कर रख देती है । देवी का स्वर वीणा के स्वर से भी अत्यधिक मधुर है । अतः माधुर्यमय स्वरों को सुनने की इच्छा से अपनी वीणा को बंद करके रख देती हैं ।।६६।।

**માતા (સરસ્વતી) વીણા સાથે પશુપતિનાં વિધવિધ યુકાર્યો ગાતાં હતાં અને તમે તાલ અનુસાર તમારું શિર હલાવી પ્રશંસા કરતાં હતા. તમારા મીઠા સ્વસ્થી વીણાના તારના સ્પષ્ટ સૂર વિકલ થયા ત્યારે વાણી (સરસ્વતી) એ પોતાની વીણા હળવે રહીને ખોળમાં મૂકી દીધી. (૬૬)**

While Vani (Sarasvati) is singing with the Vina about the various glorious deeds of Mahadeva (Lord of Jivas) and Thou begineth to express words of appreciation, nodding Thy head, she (Sarasvati) quickly sheathes her Vina in its case. The sweetness on the strings of the Vina are rediculed by the soft melody of Thy eulogistic words. [66]

---

**विशेष** - एक बार सिंहासन पर विराजमान पार्वती परमेश्वर के स्तुतिगान के निमित्त वीणावादिनी सरस्वती पधारीं । उन्होंने वीणा को कन्धे से लगा महादेव के पुरुषार्थ का गान किया अपने प्रिय के गुणानुवाद को सुन भगवती आनन्दित हुयीं और सिर हिलाते हुए सरस्वती की प्रशंसा में कुछ शब्द कहे । उन वचनों की मधुरिमा सुनते ही सरस्वती अपनी वीणा को आँचल से छिपाने लगीं । भाव यह कि भगवती के शब्द इतने मधुर थे कि सरस्वती को अपनी वीणा की झङ्कृति कर्कश प्रतीत होने लगी और वे सकुचाकर वीणा को छिपाने का प्रयास करने लगीं ।

जिसके स्वाभाविक वचनों में इतनी माधुरी छिपी हो, जो परमब्रह्मानन्दमयी सुदुर्लभा वाणी की स्वामिनी हो उसके समक्ष सरस्वती का यह शील स्वाभाविक है ।

"विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी" यह अमरकोष है ।

## संगीतनैपुण्य प्रयोग

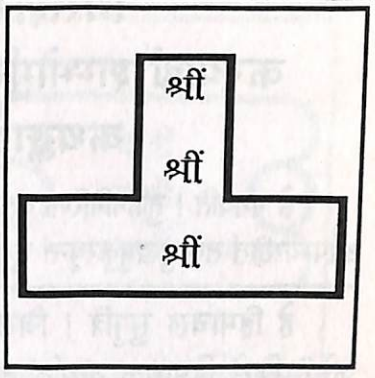


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**विं**' है । जप का दशांश हवन '**विं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**विं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**विं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **गुड़, पायस** तथा **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

यथाविधि इस मंत्र का अनुष्ठान कर यन्त्र धारण करने से **गायन, वादन तथा नर्तन कला में निपुणता** तथा ख्याति की प्राप्ति होती है ॥६६॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'विपञ्च्या गायन्ती' इति षट्षष्ठितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। विं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
विं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमःअञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणां। शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम् । साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेवितां।एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् । वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम् ।पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा । त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम् । पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्। चतुर्वर्गप्रदं शान्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!।महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं।ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**कराग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया**
**गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया ।**
**करग्राह्यं शम्भोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते**
**कथङ्कारं ब्रूमस्तव चुबुकमौपम्यरहितम् ।।६७।।**

हे भगवति ! तुहिनगिरिणा वत्सलतया कराग्रेण स्पृष्टं गिरीशेन अधरपानाकुलतया मुहुरुदस्तं शम्भोः करग्राह्यं औपम्यरहितं तव मुखमुकुरवृन्तं चुबुकं कथङ्कारं ब्रूम इति ।

---

हे हिमाचल सुपुत्रि ! जिसकी कोई उपमा नहीं है ऐसी चिबुक (ठोड़ी) का वर्णन हम कैसे करें? जिसे हिमाचल अर्थात् तुम्हारे पिता ने अत्यधिक वात्सल्य प्रेम से अगुँलियों के अग्रभाग से स्पर्श किया है । शिवजी ने अधर पान की इच्छा से बार-बार ऊपर उठाया है और जो उस समय ऐसी प्रतीत होती है मानों वह शंकर के हाथ में मुख देखने के लिए उठाए हुए दर्पण का दस्ता हों । भगवती के ठोड़ी का अनुपम सौन्दर्य वात्सल्य से हिमवान् तथा प्रेम से शिवजी द्वारा स्पर्शित है ।।६७।।

**હિમગિરિએ પિતૃવાત્સલ્યભરી આંગળી વડે સ્પર્શેલી, ગિરિશે વારંવાર ચૂમવા માટે ઊંચી કરેલી અને તમારા વદન-મુકુરની, શંભુ હાથથી ગ્રહી શકે એવી, હાંડી સમી, હે ગિરિસુતા! તમારી અનુપમ ચિબુકને અમે શી રીતે વર્ણવીએ? (૬૭)**

Oh ! Daughter of the Mountain ! How shall we describe Thy in comparable chin that is touched by the forepart of the hand of the Snowy Mountain out of affection and is raised frequently by the Lord of the mountain (girisa i.e. Siva) out of his eagerness to drink of the nectar of Thy lower lip, which is the handle, as it were of the mirror of Thy face, held by Shambhu in his hand. [67]

---

**विशेष** - चिबुक का स्पर्श प्रेम प्रदर्शन के लिए होता है । बाल्यकाल में माता-पिता ने वात्सल्य भाव से उसे अपने उँगलियों से छुआ, अब युवावस्था में अधरपान की आकुलता से युक्त शिव तुम्हारे चिबुक को अँगुलियों से यूँ स्पर्श कर रहे हैं मानों कोई स्वयं को किसी दर्पण में निहार रहा हो ।

वस्तुतः समस्त प्रकृति में शिव अर्थात् पुरुष ही प्रतिभासित होता है । किसी कवि ने कहा है - " मैं समझौं निरधार यह जग काचो काँच सो । एक ही रूप अपार प्रतिबिम्बित लखियत जगत ।" और भी श्रुति प्रतिपादित है कि " एकोऽहं बहुस्याम प्रजायै इति ।" अर्थात् उस परमात्मा ने एक होते हुए भी अनेक होने की इच्छा की ।

## सकलस्त्रीवशीकरण प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **सपत्नीक प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें। बीजाक्षर '**कं**' है । जप का दशांश हवन **'कं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'कं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'कं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल और शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु, क्षीरपायस** तथा **ताम्बूल** का नैवेद्य विहित है ।

पत्नी के साथ विधिवत् अनुष्ठित इस मंत्र के प्रयोग से **सकलस्त्री वश्यता** की शक्ति प्राप्त होती है ।सपत्नीक विधान से व्यभिचारार्थ स्त्रीवशीकरण का विरोध संकेतित है ॥६७॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'कराग्रेण स्पृष्टं तुहिन' इति सप्तषष्ठितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। कं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं क

**कराङ्गन्यासौ**

हां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
कं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहु-वल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्न-कङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु ह्रन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा।आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः।त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**भुजाश्लेषान्नित्यं पुरदमयितुः कण्टकवती**
**तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम् ।**
**स्वतः श्वेता कालागुरुबहुलजम्बालमलिना**
**मृणालीलालित्यं वहति यदधो हारलतिका ।।६८।।**

हे भगवति ! तवेयं ग्रीवा पुरदमयितुः भुजाश्लेषात् नित्यं कण्टकवती मुखकमलनालश्रियं धत्ते, यत् अधः स्वतः श्वेता कालागुरुबहुलजम्बालमलिना हारलतिका मृणालीलालित्यं वहति ।

---

तुम्हारी ग्रीवा, जो शिवजी की भुजा के नित्य स्पर्श करते रहने से खुरदरी हो रही है । वह ग्रीवा तुम्हारे मुख रूपी कमल को धारण करती हुई कमल के डंड (मृणाली) जैसी सुन्दरता को प्राप्त करती है । उसके नीचे पहनी गयी मोतियों की लड़ियाँ स्वाभाविक रूप से श्वेत होने पर भी श्यामरंग अगरु युक्त चन्दन की अधिकता के कारण कीचड़ में धंसी हुई कमल की मलिन लता का सा सौन्दर्य प्राप्त करती है । ।।६८।।

**પુરહરની ભુજાના આશ્લેષથી રોમાંચિત થતી તમારી ડોક તમારા વદનકમળની દાંડીનું સૌંદર્ય ધરાવે છે. પ્રકૃતિથી શ્વેત પણ કાળા-અગરના ગાઢા પંકને લીધે શ્યામ, એવી તમારી ગ્રીવાની નીચેની હારલતા મૃણાલીનું લાલિત્ય ધરાવે છે. (૬૮)**

This, Thy neck always thrilled by the embrace of the destroyer of the cities (shiva) displays the gracefulness of the stalk of the lotus Thy face, since the naturally white garland of pearls below, darkened by the application of the black, and muddy agaru paste (applied to the neck). presents the charm of the fibrous root of the lotus-stalk. [68]

---

**विशेष** - माता का मुख कमल है यह मानकर कवि उनकी भुजाओं की कल्पना कमलनाल के रूप में करता है । कमलनाल में जिस तरह काँटे होते हैं उसी तरह के काँटे आप की बाहों में भीं हैं । क्योंकि पुरदमन श्री महादेव के आलिङ्गन से आपको रोमाञ्च हो गया है और रोगँटे काँटों की तरह खड़े हो गये हैं जिससे यह दृश्य उत्पन्न हुआ है ।

अगर यह कहें कि कमलनाल के नीचे कीचड़ होता है तो यहाँ भी गौरग्रीवा पर अगरु आदि के लेपन से कीचड़ उत्पन्न हो गया है और कमलनाल की परिपूर्ण उपमा सर्जित कर रहा है । इसतरह आपकी ग्रीवालता सर्वाश्चर्य सौन्दर्य सम्पन्न शरीरयष्टि सिद्ध होती है । भगवती के मुख को कमल सिद्ध करने में कवि की यह कितनी प्रशस्त उक्ति है ।

यहाँ ग्रीवा के षोडशस्वर, भुजाश्लेष के व्यञ्जनसंयोग तथा नालश्रियम् के श्री विस्तार से त्र्यक्षर नाममन्त्र आविष्कृत किये जाते हैं ।

## लक्ष्मीप्राप्ति प्रयोग

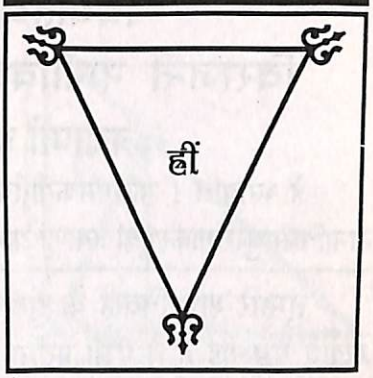


प्रस्तुत यन्त्र को **कुङ्कुम** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक यन्त्र का श्रीयन्त्र की तरह आवरणादि पूजनकर **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें और फिर दाहिनी भुजा अथवा गले में धारण करे । बीजाक्षर '**भुं**' है । जप का दशांश हवन '**भुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**भुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**भुं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** तथा **ताम्बूल** का नैवेद्य विहित है।

सविधि अनुष्ठित इस मंत्र के प्रयोग से **सकलराजवश्यता की प्राप्ति होगी** ॥६८॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'भुजाश्लेषान्नित्यं पुर दमयितुं' इति अष्टाषष्ठितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। भुं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
भुं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**तडित्प्रभां महादेवीं नागकङ्कणशोभिताम्। चतुर्वर्गप्रदां देवीं साधकाभीष्टसिद्धिदाम्।एवं ध्यात्वा भकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। भकारं शृणु चार्वङ्गि! स्वयं परमकुण्डलि।महामोक्षप्रदं वर्णं तरुणादित्यसम्प्रभम्। पञ्च प्राणमयं वर्णं पञ्चदेवमयं प्रिये!।पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धि प्रदायिनीम्।एवं ध्यात्वा सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।उकारं परमेशानि! अधःकुण्डलिनी स्वयम्।पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**गले रेखास्तिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे**
**विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसंख्याप्रतिभुवः ।**
**विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवां**
**त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते ।। ६९।।**

हे भगवति ! गतिगमकगीतैकनिपुणे ! ते गले तिस्रो रेखाः विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसङ्ख्याप्रतिभुवः नानाविधमधुररागाकरभुवां त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव विराजन्ते ।

---

तुम्हारे शुभ विवाह के सुअवसर पर बाँधी गई गले में सौभाग्य सूत्रों की लड़ियों से जो तीन रेखाएँ पड़ गई हैं वे ऐसी प्रतीत हो रही हैं मानों गति, गमक और गीत इत्यादि शास्त्र से संबंधित विषयों में अद्वितीया निपुणता रखने वाली हो । अनेक प्रकार के मधुर राग-रागिनियों के तीनों ग्रामों पर गाने से उनके स्थिति नियम की सीमा के चिह्न हों । गान विद्या में प्रत्येक राग में गति, गमक और गीत तीन अंग होते हैं । गति चाल को कहते हैं, गमक सुरों के आरोह-अवरोह को कहते हैं और गीत तीनों सप्तकों के सुरों के क्रम को कहते हैं । संगीत तीन ग्रामों वाला होता है जो षड्जग्राम, मध्यमग्राम और गान्धारग्राम के नाम से जाना जाता है। जिस ग्राम पर कोई राग गाया जाता है उसका आरम्भ उसी ग्राम से होकर अंत भी उसी ग्राम के सुर से होता है। भगवती तीनों ग्रामों पर गा सकती हैं । इसलिए उनके गले की तीन रेखाएं मानों प्रत्येक ग्राम पर उनके सुरों की पृथक्-पृथक् सीमाएँ बनी प्रतीत होती हैं ।।६९।।

**તમારા ગળા ઉપરની ત્રણ રેખાઓ, ગતિ, ગમક અને ગીત એ ત્રણમાં અત્યન્ત નિપુણ હે માતા ! વિવાહ સમયે બાંધેલી ત્રણ હારની (વર) માળાના આંકને અનુરૂપ શોભે છે, અને અનેક પ્રકારના મધુર રાગોની ખાણરૂપ ત્રણ પ્રકારના ભૂમગત ગ્રામોની સ્થિતિ, નિયમ અને સીમા સૂચવે છે. (૬૯)**

Oh Sole expert in the musical modes, modulations and songs ! The three lines on Thy neck indicating the number of strings in the auspicious cord fastened at the time of Thy wedding, shine like boudaries, delimiting the position of the three gamuts, the repositories, of the treasures of various kinds of melodius ragas (tunes). [69]

---

**विशेष** - रागाध्याय के अनुसार पाँच गति हैं उनसे तीस ग्रामराग, आठ उपराग, बीस राग, पन्द्रह जनकराग, छियानबे भाषाराग, बीस विभाषाराग और तीन आन्तरभाषाराग होते हैं ।

षड्ज,मध्यम और गान्धार यूँ तीन ग्राम होते हैं । भगवती इन तीनों ग्रामों पर ही गान करती हैं जिससे उनके गले में तीन रेखाएँ बन गई हैं ।ऐसा लगता है मानों प्रत्येक ग्राम पर उनके सुरों की पृथक् सीमा बन गई हो ।

## संगीतसिद्धि प्रयोग

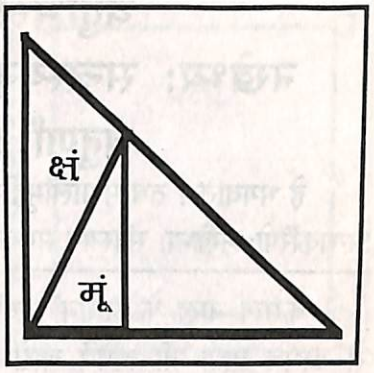


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर **'गं'** है । जप का दशांश हवन **'गं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'गं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'गं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

बताए गए विधान के अनुसार अनुष्ठान पूरा कर इसी मन्त्र से चम्पक का फूल अभिमन्त्रित कर अभिलषित स्त्री को दे । वह **वशीभूत** होगी । साथ ही **संगीत सिद्धि** होती है । ॥६९॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'गले रेखास्तिस्त्रो गति गमक' इति एकोनसप्ततितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। गं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
ग बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**दाडिमी-पुष्प-सङ्काशां चतुर्बाहु-समन्विताम् ।**
**रक्ताम्बर-धरां नित्यां रक्तालङ्कार-भूषिताम् ।**
**एवं ध्यात्वा गकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**पञ्च-प्राण-मयं वर्णं सर्वशक्त्यात्मकं प्रिये।**
**तरुणादित्य-सङ्काशां कुण्डलीं प्रणमाम्यहं।**
**अग्राकुञ्चित-रेखा या गणेशी सा प्रकीर्त्तिता।**
**ततो दक्षगता या तु कमला तत्र संस्थिता।**
**अधोगता गया या तु तस्यामीश सदा वसेत्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**मृणाली मृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणां**
**चतुर्भिस्सौन्दर्यं सरसिजभवस्स्तौति वदनैः ।**
**नखेभ्यः सन्त्रस्यन् प्रथममथनादन्धकरिपोः**
**चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया ।।७०।।**

हे भगवति ! तव मृणालीमृद्वीनां चतसृणां भुजलतानां सौन्दर्यं सरसिजभवः चतुर्भिर्वदनैः प्रथममथनात् अन्धकरिपोः नखेभ्यः संत्रस्यन् समं चतुर्णां शीर्षाणां अभयहस्तार्पणधिया स्तौति ।

---

कमल नाल के समान लचीले, तुम्हारी लता के समान चारों भुजाओं के सौन्दर्य की कमल से उत्पन्न ब्रह्मा जी अपने चारों मुखों से स्तुति करते हैं । प्राचीन काल में शिव द्वारा, नाखूनों से अपने सिर के कट जाने की स्मृति से भयभीत होकर अपने बचे हुए चारों मुखों की रक्षा पाने के विश्वास से तुम्हारें चारों करों की ब्रह्मा जी चारों मुखों से प्रार्थना करते हैं । एक बार शिवजी के सिर चरण के दर्शनार्थ ब्रह्मा और विष्णु क्रमशः ऊपर और पाताल में गये । विष्णु ने चरण दर्शन के प्रयत्न की अपनी असफलता स्वीकार कर ली परन्तु ब्रह्मा जी ने शिवजी के सिर के दर्शन में असफल होने के बाद भी असत्य बोल दिया कि उन्होंने शिव के सिरदर्शन करने में सफलता प्राप्त कर ली है । असत्य भाषण के अपराध से ब्रह्मा जी का पाँचवा सिर (जिससे असत्य बोला गया) शिवजी ने अपने नाखून से काट डाला था । अतः देवी से अपने शेष बचे चारों मुखों के अनुग्रह के लिए मानो ब्रह्मा जी स्तुति करते हैं । अभिप्राय यह कि ब्रह्मा को जब सृष्टि बनाने का अंहंकार हुआ तो शिव जी ने उसे तोड़ दिया वही पाँचवा सिर था ।।७०।।

**કમળમાં જન્મેલા બ્રહ્મા તેમના ચાર વદનથી કમળતંતુ સમ મૃદુ તમારી ચાર ભુજલતાઓના સૌંદર્યની સ્તુતિ કરે છે. અંધકરિપુ (સદાશિવ) ના નખો વડે તેમનું એક શિર છેદાઇ ગયું હોવાથી ભયલીત થયેલા બ્રહ્મા જેવું વિચારે છે કે તમારા ચાર હાથ વડે તેમના બાકીનાં ચાર શિર માટે એક સાથે અભયમુદ્રા મેળવી શકશે. (૭૦)**

Afraid of the nails of the Destroyer of Antaka. because of previous experience of destruction (of a head) and hoping for the protection for the (remaining) heads, the lotus born (Brahma) extols with his four faces (mouth) the loveness of Thy Creeper-like arms that are soft as the lotus-stalk. [70]

---

**विशेष** - ब्रह्मा को सृष्टि बनाने का अहंकार हो गया जिसे शंकर जी ने पंचम मस्तकोच्छेदन द्वारा तोड दिया । मिथ्याभाषण के कारण ब्रह्मा के एक सिर का कम होना और उनकी पूजा का विधान समाप्त होना सुप्रसिद्ध है ।

## अपराधशान्ति प्रयोग

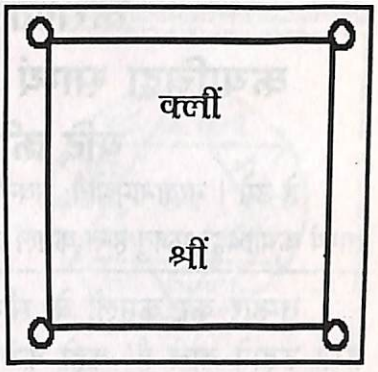


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**मृं**' है । जप का दशांश हवन '**मृं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**मृं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**मृं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **तिल, शर्करा, जपाकुसुम** हवनीय द्रव्य है । **मधु, फल** तथा **नारियल** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **सकल पुरुष वश्यता की प्राप्ति** होती है तथा साधक में शासक के गुणों का विकास होने लगता है और पूर्व **अपराधों का शमन** हो जाता है । ॥७०॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'मृणाली मृद्वीनां तव भुज' इति सप्ततितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। मृं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
मृं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**कृष्णां दशभुजां भीमां पीतलोहितलोचनाम्। कृष्णाम्बरधरां नित्यां धर्मकामार्थ मोक्षदाम्।एवं ध्यात्वा मकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। मकारं शृणु चार्वाङ्गि! स्वयं परमकुण्डली।तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राण मयं तथा। षड्भुजां नीलवर्णां च नीलाम्बरधरां परां। नानालङ्कार भूषाढ्यां सर्वालंकृतमस्तकां। भक्तिप्रदां भगवतीं भोगमोक्षप्रदायिनीं। एवं ध्यात्वा सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।पञ्चप्राणमयं वर्णं चतुर्ज्ञानमयं तथा। रक्तविद्युल्लताकारं ऋकारं प्रणमाम्यहं।ऋकारः परमेशानि! कुण्डलीमूर्तिमान् स्वयं। अत्र ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्रश्चैव वरानने।सदाशिवयुतं वर्णं सदा ईश्वरसंयुतं। ऊर्ध्वा दक्षगता वक्रा त्रिकोणा वामतस्ततः।पुनस्त्वधो दक्षगता मात्रा शक्तिः परा स्मृता। मात्रा तु ब्रह्मविष्णवीशाः तिष्ठन्ति क्रमतो परा।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**नखानामुद्योतैर्नवनलिनरागं विहसतां**
**कराणां ते कान्तिं कथय कथयामः कथमुमे ।**
**कयाचिद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं**
**यदि क्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारसचणम् ।।७१।।**

हे उमे ! नखानामुद्योतैः नवनलिनरागं विहसतां ते कराणां कान्तिं कथं कथयामः कथय, कमलं कलयापि साम्यं कयाचिद्वा भजतु हन्त कमलं क्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारसचणंयदि तदा हि साम्यं भजत्विति ।

---

तुम्हारे कर कमलों के सौन्दर्य का 'जो अपने नखों की कान्ति से नवविकसित कमल की हँसी उड़ाने वाले है' कहो कैसे वर्णन करूँ । यदि किसी अंश में किसी प्रकार कमल के दलों की अरुणिमा से समानता की भी जाय, तो अरे! वह तो क्रीड़ा करते समय लक्ष्मी के चरणों में लगी लाक्षा के समान है । अर्थात् कमलों की अरुणिमा उनकी स्वाभाविक नहीं है, लक्ष्मी के चरणों में लगी लाख के कारण है । परन्तु भगवती के नखों की अरुणिमा (लालिमा) स्वाभाविक है। ॥७१॥

**તમારા નખની દ્યુતિ વડે તાજા ખીલેલા કમલની કાંતિનો ઉપહાસ કરતા તમારા હાથનું સૌદર્ય, અમને કહો, ઉમા ! અમે શી રીતે વર્ણવીએ; અથવા તો તેમને (રકત) કમલની ઉપમા, કઈક અંશે કદાચ આપી શકાય, જો લક્ષ્મીની ક્રીડાવડે તેમના પાદતલની લાક્ષાથી એનાં દલ વધારાની રતાશ પ્રાપ્ત કરે. (૭૧)**

Oh Uma ! Pray tell us, how we shall describe the brilliance of Thy hands which deride the red hue of the newly blossomed lotus, by the lustre of their nails Well ! Perhaps the lotus by some means attains similarity, to some extent, if it gets mixed with the lac-dye in the soles of Lakshmi sporting in it (the lotus). [71]

---

**विशेष** - जिन हाथों की शोभा का वर्णन पाँच मुखों से महादेव, चार मुखों से ब्रह्मा, छः मुखों से शक्तिधर, सहस्त्रमुखों से अनन्त वासुदेव और अनेक मुखी अन्य देव करने चले और आप के चरणों के एक अंगुष्ठ की कान्ति को भी पूर्णतः न कह सके वैसी आपके हस्त सौन्दर्य का वर्णन हम जैसे सामान्य जनों को कैसे सुकर हो सकता है ? अर्थात् दुष्कर है ।

कमल पुष्प की लालिमा तो लक्ष्मी के चरणतल में लगी लाक्षा की लालिमा है, परन्तु आपके चरणनख की लालिमा स्वीय और स्वाभाविक है उसकी तुलना कमल से कैसे की जा सकती है । लक्ष्मी का आसन कमल है और वे लक्ष्मी भगवती पराम्बा का ही अपर रूप हैं । वही कमलासना कमल को रक्ताभा वितरित करती हैं । अतः यहाँ लक्ष्मी को कम करके दिखाना अभीष्ट नहीं है अपितु भगवती के महत्वविशेष का प्रतिपादन प्रमुख है ।

## यक्षणीवशीकरण प्रयोग

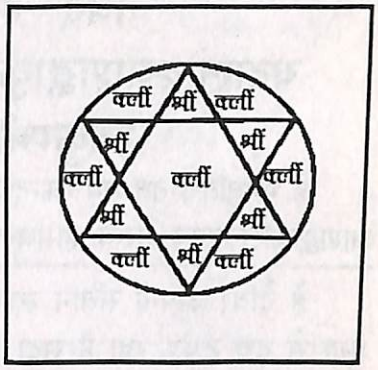


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक बरगद के पुराने वृक्ष के नीचे बैठकर **प्रतिदिन १२,००० मन्त्र** का जाप करें और यन्त्र की पूजा अर्चा करे । बीजाक्षर '**नं**' है । जप का दशांश हवन '**नं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**नं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**नं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुंति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस उक्त विधि से किए गए अनुष्ठान के बाद यन्त्र धारण से **यक्षिणी वश मे होती है** और यक्षिणी के वश में आने से अनक कार्य सहज संभव हो जाते हैं ॥७१॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'नखानामुद्योतैर्नव नलिन रागं' इति एकसप्ततितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं .....कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**दलिताञ्जनवर्णाभां ललज्जिह्वां सुलोचनाम्।**
**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारु-चन्दन-चर्चिताम्।**
**कृष्णामबर-परीधानां ईशद्धास्यमुखीं सदा।**
**एवं ध्यात्वां नकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**नकारं शृणु चार्वङ्गि! रक्तविद्युल्लताकृतिः।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली।**
**त्रिगुणाशक्तिसंयुक्तं हृदि भावय पार्वति!।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
नं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुगं**
**तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुतमुखम् ।**
**यदालोक्याशङ्काकुलितहृदयो हासजनकः**
**स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झटिति ।।७२।।**

हे भगवति ! तव समं स्कन्दद्विपवदनपीतं इदं स्तनयुगं प्रस्नुतमुखं नः खेदं सततं हरतु, यत् आलोक्य आशङ्काकुलितहृदयः हेरम्बः हासजनकः हस्तेन झडिति स्वकुम्भौ परिमृशति ।

---

हे देवि! अपनी संतान स्कन्ध और गणेश जी के पान किये हुए तुम्हारे दोनों स्तनों जिनके मुख से दूध टपक रहा है सदा हमारे कष्टों को दूर करें । जिनको देखकर पीते समय गणेश जी इस शंका से 'आकुल-हृदय होकर' कि माँ ने मेरे सिर के कुम्भों को तो नहीं ले लिया है' बार-बार अपने सिर पर हाथ फेरकर हास्य जनक चेष्टा करते हैं । अर्थात् गणेश जी को अपने सिर के कुंभ जैसे उभरे हुए मस्तक और माँ के स्तनों में भेद न दिखाने के कारण शंका हो जाने से वे झट अपने सिर को टटोलने लगते है। । बालक दूध पीते समय माता के स्तनों को हाथ से पकड़कर दूध पिया करता है, परन्तु गणेश जी गलती से अपने ही सिर को पकड़ने लगे जिसको देखकर माँ हँस पड़ीं ।।७२।।

હે દેવી ! સ્કંદ અને ગજાનન બન્ને જેનું એક સાથે પાન કરે છે અને જેનાં ચૂચુક સતત અવે છે એવું તમારું આ સ્તનયુગલ અમારું દુઃખ દૂર કરો. આ જોઈને શંકાશીલ હૃદયથી હાસ્ય ઉત્પન્ન કરતા, હેરંબ (ગણેશ) એકાએક પોતાનાં બે ગંડસ્થળોને સૂંઢથી સ્પર્શ છે. (૭૨)

Oh Devi ! May Thy pair of breasts, with ever-flowing nipples and sucked simultaneously by Skanda and Ganesha, on seeing which Heramba (Ganesha) with his mind confused by doubt, immediately touches his temples with his hand, causing amusement thereby ; expel our ills. [72]

---

**विशेष** - जिसके पुत्र सारे संसार के पूज्य गणेश और कार्तिकेय हों उस देवी का माहात्म्य कैसे कहा जाय । अपने पुत्र को देखकर उत्पन्न वात्सल्य के वशीभूत होकर किसी स्त्री के स्तनो से हो रहे दुग्धस्राव को प्रस्नव कहते है । आशंका से आकुल गणपति माता के समान आकार वाले उन्नत स्तनों को देखकर डर गये । क्या ये मेरे कुम्भ हैं जो मेरे मस्तक से यहाँ आ गये है यह सोच सद्यः अपने शिर पर हाथ फेरने लगे ।

यह हास्योत्पादक दृश्य कवि की कल्पना के शिखर और बालमनोविज्ञान के गहन संज्ञान का हमें दिग्दर्शन कराता है । भगवान आदि शंकर भगवत्पाद ने अपने ग्रन्थों में यत्र-तत्र-सर्वत्र अनेकशः अपनी सर्वज्ञता के ये सूत्र बिखेरे हैं ।

## रात्रिभयनिवारण-प्रयोग

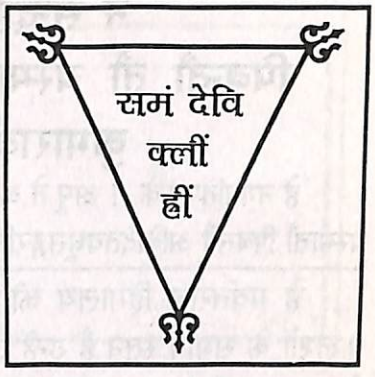


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर **'सं'** है । जप का दशांश हवन **'सं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'सं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'सं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से साधक रात्रि में कहीं भी आ अथवा जा सकता है किसी भी प्रकार के **रात्रि भय से निश्चय निवृत्ति होती है** ॥७२॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'समं देवि! स्कन्द' इति द्विसप्ततिततममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम् । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
सं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**करीष-भूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्।**
**अस्थि-माल्यामष्ट-भुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्।**
**नागेन्द्र-हार-भूषाढ्यां जटा-मुकुट-मण्डिताम्।**
**सर्वसिद्धि-प्रदां नित्यां धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।**
**एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्ति-बीजं परात्परम्।**
**कोटि-विद्युल्लताकारं कुण्डली-मय-संयुतम्।**
**पञ्च-देव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा।**
**रजस्सत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**अमू ते वक्षोजावमृतरसमाणिक्यकुतुपौ**
**न सन्देहस्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः ।**
**पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसङ्गरसिकौ**
**कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौञ्चदलनौ ।।७३।।**

हे नगपतिपताके ! अमू ते वक्षोजौ अमृतरसमाणिक्यकुतुपौ । अस्मिन्नर्थे नः मनसि सन्देहस्पन्दो नास्ति । यस्मात्तौ पिबन्तौ अविदितवधूसङ्गरसिकौ द्विरदवदनक्रौञ्चदलनौ अद्यापि कुमारौ भवतः ।

---

हे पर्वतराज हिमालय की पताका सदृश पुत्री! तुम्हारे अमृत रस से भरे माणिक्य के बने कलशों के समान स्तन हैं उन्हें देखकर हमारे मन में सन्देह का स्पन्द नहीं होता है। क्योंकि उनका ऐसा प्रभाव है कि उनका दुग्ध पान करने वाले गणेश जी तथा क्रौञ्चासुर का वध करने वाले स्कन्द दोनों आज भी कुमार ही हैं और वे स्त्रीसंग से अनभिज्ञ हैं । गणेश जी के साथ ऋद्धि-सिद्धि और देवताओं के सेनापति स्कन्द के साथ देवताओं की सेना रूपी (देवसेन) पत्नियों के समान है अर्थात् ऋद्धि-सिद्धि और देवसेना स्त्रीवाचक शब्द मात्र है न कि पत्नियाँ परन्तु वो भी उनकों ऋद्धिसिद्धियों से युक्त गणपति और देवताओं के सेनापति करने से उनमें पति-पत्नी का दाम्पत्य सम्बन्ध होने की भ्रान्ति मात्र होती है, वास्तव में दोनो नित्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं । ।।७३।।

તમારા સ્તન અમૃતના માણિક્ય ઘડુલા છે, તેની અમારા મનમાં જરાય શંકા નથી. હે પર્વતરાજપતાકા ! તમારા પુત્રો ગજાનન અને ક્રૌંચદલન (સ્કંદ) ક્યારેય વધૂસંગમનો રસ માણ્યા વિના એ સ્તનમાંથી પાન કરે છે, એટલે હજુ બાળકો જ છે. (૭૩)

Oh Banner of the Lord of Mountains ! These Thy breasts are varily ruby-jars containing nectar,-not the least doubt lurks in our mind because the elephant-faced one (Ganesa) and the breaker of the Krauncha mountain (Skanda), having drunk of them (the breasts) continue to be children even till today, not having lasted the pleasure of the company of women. [73]

---

**विशेष** - श्रीगणेश और कार्तिकेय यद्यपि अविज्ञातस्त्रीसम्भोगस्वारस्य हैं तथापि वे ब्रह्मानन्द रस का आस्वादन आपके कुच कलश से विनिर्गत रस के माध्यम से करते रहते हैं, भले ही उन्होंने वधूसङ्गम आदि लौकिक आनन्द नहीं भोगे हैं ।

शैशवावस्था के बाद यौवनावस्था आती है लेकिन अमृतपान के लोभ में ये दोनों बालक पत्नी होते हुए भी सदा शिशु बने रहना चाहते हैं । परमात्मा की अनेक मूर्तियाँ हैं, अनेक रूपों में वे लीलाएँ करते हैं । राम के रूप में जहाँ एक पत्नीव्रत होते हैं वहीं कृष्ण के रूप में अनेक स्त्रियों के स्वामी । अतः गणेश, कार्तिकेय का यह भी एक रूप है ।

## सन्तुष्टिदायक प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **७ दिन** तक यन्त्र का विधिवत पूजन करे और **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप कर यन्त्र को धारण करें। बीजाक्षर **'अं'** है । जप का दशांश हवन **'अं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'अं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'अं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** एवं **दूध** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से स्त्रियों के स्तन के आकार में वृद्धि होती है तथा दूध बढता है । गायों का रुका हुआ दूध निकलने लगता है और सबको सन्तुष्टि मिलती है । ॥७३॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'अमू ते वक्षोजावमृत रस' इति त्रिसप्ततितमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायः यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी देवता। अं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आ ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
अं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**केतकीपुष्पगर्भाभां द्विभुजां हंसलोचनाम् ।**
**शुक्लपट्टाम्बरधरां पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यमानन्दमयीं पराम् ।**
**वराभयकरां देवीं नागपाशसमन्विताम् ।**
**शृणुतत्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।**
**शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तिद्वय समन्वितम् ।**
**निर्गुणं सगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।**
**बिन्दुद्वयमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै .....नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः**
**समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम् ।**
**कुचाभोगो बिम्बाधररुचिभिरन्तश्शबलितां**
**प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते ।।७४।।**

हे अम्ब ! ते कुचाभोगः स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः मुक्तामणिभिः समारब्धां अमलां हारलतिकां बिम्बाधररुचिभिः अन्तश्शबलितां प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव वहति ।

---

हे माँ! तुम्हारे दोनों स्तनों के मध्य भाग गजासुर के कुंभों से प्राप्त किये गये मुक्तामणियों के हारों से सुशोभित हैं । तुम्हारे अधरों का रक्तवर्ण जो उन मालाओं में प्रतिबिम्बित है, उससे वे रक्त तथा श्वेत रंगों के मिलन से उज्ज्वलित हैं । वह भाग ऐसा प्रतीत होता है मानों त्रिपुरसुन्दरी के प्रति त्रिपुरसंहारी शिवजी के प्रतापमिश्रित सुकीर्ति ही माला बनकर गले पर सुशोभित है। गजासुर के मारे जाने पर जो मुक्तमणियाँ शिवजी को मिली थी, उनकी माला भगवती ने छाती पर पहनी हुई है और वे मणियाँ होठों की अरुण कान्ति की छाया से लाल दीखने लगी है। मणियाँ श्वेत वर्ण होने के कारण कीर्ति की प्रतीत है और उन पर चमकने वाला रक्त वर्ण प्रताप का प्रतीक है । इन दोनों का मिश्रण ऐसा प्रतीत होता है मानो देवी के वक्षःस्थल में शिवजी की सुकीर्ति तथा विजय दोनों आभूषण वन उपस्थित हो गये हों । ।।७४।।

હે અંબા ! સ્તંબેરમ નામનો ગજરાક્ષસ, (જેને શિવે મારી નાંખ્યો હતો ) તેના કુંભસ્થળમાંથી મળેલા મોતીઓનો તમારો અમલ (દોષ રહિત) હાર રચાયો. તે હાર તમારા સ્તનના વક્ષોથી તમારા બિંબાધરના પ્રતિબિંબને કારણે અંદર શબલિત (રંગબેરંગી) જણાય છે-જાણે પુરવિજયીની પ્રતાપમિશ્રિત કીર્તિ ન હોય ! (૭૪)

Oh Mother ! The expanse of Thy breasts bears a creeper-like garland strung with spotless pearls taken from the temples of Gajasura and variegated in hue internally by the reflected ruddiness of Thy bimba-like lips, (thus) resmbling the fame of the conqueror of the three cities, (Shiva) mingled with his valour. [74]

---

**विशेष** - प्रताप का रङ्ग लाल और कीर्ति का रङ्ग धवल सर्व स्वीकृत है । यहाँ मणियाँ स्वच्छ होने के कारण कीर्ति का और उनपर चमकने वाला लाल रङ्ग प्रताप का प्रतिनिधित्व करते हैं । गजासुर का वध शङ्कर का प्रताप है तो उसकी कीर्ति मणि है । भगवती स्वयं भगवान् शङ्कर की शक्ति के रूप में स्वीकृत हैं ।

## कीर्तिदायक प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो देवी की सन्निधि में **४५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें तथा यन्त्र को धारण करे । बीजाक्षर '**वं**' है । जप का दशांश हवन '**वं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**वं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**वं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **दूध खीर** तथा **शहद** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से साधक का व्यक्तित्व विकसित होता है और उत्तम कार्यों में रुचि बढती है जिससे निरन्तर **कीर्ति में वृद्धि होती है** ॥७४॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुज' इति चतुस्सप्तत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। वं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम्।**
**शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्ज्वलां पराम्।**
**साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेविताम्।**
**एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम्।**
**पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा।**
**त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम्।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्।**
**चतुर्वर्गप्रदं शान्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
वं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः**
**पयःपारावारः परिवहति सारस्वतमिव ।**
**दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्**
**कवीनां प्रौढानामजनि कमनीयः कवयिता ।।७५।।**

हे धरणिधरकन्ये ! तव स्तन्यं हृदयतः उत्थितः सुधाधारासारः पयःपारावारः सारस्वतमिव परिवहतीति मन्ये। यद्यस्मात् दयावत्या त्वया दत्तं तव स्तन्यं द्रविडशिशुरास्वाद्य प्रौढानां कवीनां मध्ये कमनीयः कवयिता अजनि ।

---

हे पर्वत राज पुत्री! तुम्हारे स्तनों से झरता हुआ शुद्ध श्वेत क्षीर तुम्हारे हृदय से बहते हुए अमृत प्रवाह के समान प्रतीत होता है । लगता है कि श्वेतवर्णयुक्त वाग्देवता सरस्वती ही वह रूप धारण कर आ गयी हो । करुणामयी (स्तन पान करके) दूध पीकर द्रविड़ शिशु मनमोहक श्रेष्ठ कवि बन गया है न? ।।७५।।

હે ધરણિધર કન્યા ! હું માનું છું કે તમારા સ્તનનું દૂધ તમારા હૃદયમાંથી કવિતાના ક્ષીરસાગર જેવું વહે છે. દયા લાવી તમે આપેલું એ તમારું દૂધ દ્રવિડ બાળકે ચાખ્યું, એટલે તે મહાકવિઓમાં મનહરણ કવિ બન્યો. (૭૫)

Oh Daughter of the Mountain ! Methinks the milk of Thy breasts flows as if it were an ocean of milk in the form of Sarasvati (milk of poesy) from Thy heart. The Dravida child, tasting it when bestowed by Thy gracious self, became a highly admired composer among great poets. [75]

---

**विशेष** - द्रविण शिशु का सङ्केत शङ्करभगवत्पाद ने स्वयं के लिए किया प्रतीत होता है । कथा है शङ्कर के पिता के बाहर जाने पर घर के देवताओं की पूजा उनकी पत्नी करती थीं । एक बार उनके अशुचि अवस्था के कारण बालक शङ्कर को भगवती के पूजन का सुअवसर मिला । नैवेद्य में प्रतिदिन दूध चढ़ाया जाता था, शङ्कर ने भी चढ़ाया । उनका बाल मन समझता था कि भगवती दूध पीती हैं सो उनको पीता न देख वे रोने लगे । भगवती साक्षात् प्रकट हुई और सारा दूध पी गईं । भोग के बाद का दूध शङ्कर को ही मिलता था सो वे पुनः रोने लगे तब भगवती ने कृपाकर बालक शङ्कर को अपना स्तनपान कराया । स्तनपान करते ही बालक शङ्कर उनकी स्तुति एक उच्चकोटि की कविता के माध्यम से करने लगे ।

पिता के घर लौटने पर यह बात पता चली तो उन्हें एक साथ हर्ष विषाद दोनों हुआ । रात्रि में भगवती ने स्वप्न देकर शङ्कर के अवतारी होने का सन्देश पिता को दिया ।

## कवित्वसिद्धि प्रयोग

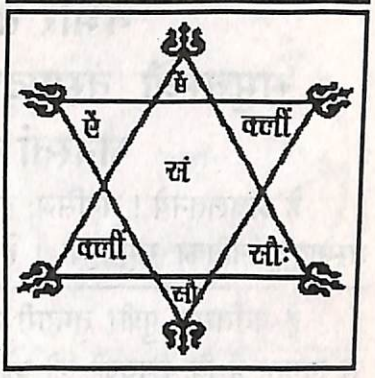


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **३ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप कर फिर गले में अथवा दाहिनी बाँह में धारण करें । बीजाक्षर **'तं'** है । जप का दशांश हवन **'तं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'तं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'तं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **जपाकुसुम, तिल, शर्करा** हवनीय द्रव्य है । **मधु** तथा **केले** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **कवित्व शक्ति प्राप्त** होती है । कवित्व भी वाक्शक्ति का एक प्रकार है । ऋषियों में यह शक्ति प्रखर रूप में हुआ करती थी इसी से वे शाप और अनुग्रह करते थे ॥७५॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'तव स्तन्यं मन्ये धरणि' इति पञ्चसप्ततमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायः यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी देवता। तं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आ ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
तं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं ।**
**सदा षोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम् ।**
**नानालङ्कारभूषां तां सर्वसिद्धिप्रदायिनीं ।**
**एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत् ।**
**तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली ।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा ।**
**त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम् ।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**हरक्रोधज्वालावलिभिरवलीढेन वपुषा**
**गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गो मनसिजः ।**
**समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका**
**जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति ।। ७६।।**

हे अचलतनये ! मनसिजः हरक्रोधज्वालावलिभिः अवलीढेन वपुषा गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गः । तस्माद्धूमलतिका समुत्तस्थौ । हे जननि ! तां जनः तव रोमावलिरिति जानीते ।

---

हे पर्वतराज पुत्री! तुम्हारी नाभि से धीरे से फैलने वाली ऊर्ध्वमुखी रोमावली है, उसे देखने से लगता है कि शिवजी की क्रोधाग्नि से उत्पन्न ज्वालाओं से घिरे हुए शरीर से कामदेव तुम्हारी गहरी नाभि रूपी कुंड में लगाव से समा गया हो। उसमें से लता के समान धुँआ निकला हो। अभिप्राय यह है कि कामोद्दीपन होने पर भ्रूमध्य में शंकर का ध्यान करने से जहाँ उनका ज्ञान-रूपी तीसरा नेत्र है, उदय होनें वाले काम का ताप नाभि चक्र में उतरकर शान्त हो जाता है और अग्नि के पानी में बुझने से धुँआ सा ऊपर उठता है, तद्वत नाभि से हृदय में उठने वाले रोमाञ्च को लता सी उठकर शान्ति प्रदान करती हैं ।।७६।।

હરના ક્રોધની જવાળાથી દાઝી ગયેલા શરીરે, મનસિજે તમારા ઊંડા નાભિસરમાં પ્રવેશ કર્યો. હે અચલ-તનયા! તેમાંથી એક લતા જેવી ધૂમ્રસેર ઊડી. તેને, હે મા ! લોકો, એ તમારી રોમાવલિ છે, એમ જાણે છે. (૭૬)

Oh Daughter of the Mountain ! The mind born (Cupid) immersed himself in the deep pond of Thy navel, with his body enveloped by rows of flames issuing forth from Hara;s anger. A streak of smoke emanated from it (the navel). O Mother! The world deems it to be a line of Thy fine hair. [76]

---

**विशेष** - यहाँ जननी शब्द के प्रयोग से ऐसा लगता है मानों दोष दिखाई देने पर पिता के द्वारा पीटे गये पुत्र के रोते हुए माता के आँचल में छिपने पर उसे शान्ति मिलती है । ठीक इसीतरह अपनी समाधि भङ्ग के कोप से तीसरे नेत्र द्वारा भस्मसात् किये जाने पर शृङ्गारामृतवेणीपरिपूर्णनाभिकुण्डा प्रस्नुतस्तनी भगवती को अपनी माता समझकर कामदेव माँ के पास आया । तबसे भगवती के मन में काम के प्रति पुत्रभाव उत्पन्न हुआ ।

जैसा कि अम्बास्तव में वर्णित है -"दग्धं यदा मदनमेकमनेकधा ते मुग्धः कटाक्षविधिरङ्कुरयाञ्चकार । धत्ते तदाप्रभृति देवि ललाटनेत्रं सत्यं ह्रियैव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः ।" तथा " कामोत्थितो यतो जातस्तस्याः कामेशयोषितः । कामाक्षीति ततः ख्यातिं सा गता काञ्चिकापुरे ।"

## वैराग्यकर प्रयोग

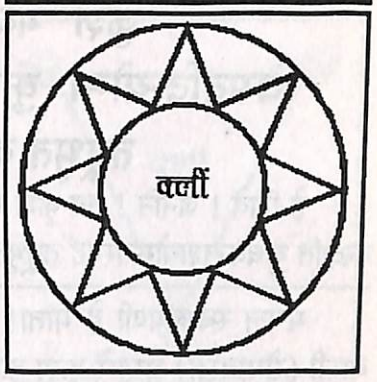


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **८ दिन** तक पूजन करते हुए **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें और फिर यन्त्र को गले में धारण करें । बीजाक्षर **'हं'** है । जप का दशांश हवन **'हं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'हं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'हं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, तिल, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **नारियल, दधि, अन्न, मधु** तथा **केले** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से इस संसार की असारता का ज्ञान होता है और साधक के अन्दर परम वैराग्य का भाव जागृत होता है **और अन्त में मोक्ष प्राप्त होता है** । ॥७६॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'हरक्रोधज्वालावलिभिरवलीढेन' इति षट्सप्ततमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। हं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**गन्धर्वसिद्ध देवाद्यैर्ध्यातां आद्यां सुरेश्वरीम्।**
**एवं ध्यात्वा हकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**हकारं शृणु चार्वङ्गि! चतुर्वर्ग-प्रदायकम्।**
**कुण्डलीद्वयसंयुक्तं रक्त-विद्युल्लतोपमम्।**
**रजस्सत्वतमोयुक्तं पञ्चदेवमयं सदा।**
**पञ्चप्राणात्मकं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं हृदि भावय पार्वति!**
**ऊर्ध्वादाकुञ्चिता मध्ये कुण्डलीत्वगता त्वधः।**
**ऊर्ध्वं गता पुनस्सैव तासु ब्रह्मादयः क्रमात्।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
हं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**यदेतत्कालिन्दी तनुतरतरङ्गाकृति शिवे**
**कृशे मध्ये किंचिज्जननि तव यद्भाति सुधियाम् ।**
**विमर्दादन्योन्यं कुचकलशयोरन्तरगतं**
**तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभिं कुहरिणीम् ।।७७।।**

हे शिवे ! जननि ! तव कृशे मध्ये यदेतत्कालिन्दीतनुतरतरङ्गाकृति किञ्चित् रोमावलिरूपं वस्तु सुधियां यद्भाति कुचकलशयोरन्तरगतं तनूभूतं व्योम अन्योन्यं विमर्दादेव कुहरिणीं नाभिं प्रविशदिव भाति ।

---

मंगल स्वरूपिणी हे माता! यह जो यमुना की चंचल परन्तु हल्की तरङ्गों के समान आकृति वाली (रोमावलीं) तुम्हारे कृश कटिभाग में किञ्चित दीख रही है, वह सद्बुद्धि वाले मनुष्यों को ऐसी जान पड़ती है मानों तुम्हारे कुचकलशों के बीच, एक दूसरे की रगड़ से पिस-पिस कर पतला होने पर, आकाश तेरी नाभि के बिल में अथवा नाभि में सर्पिणी की तरह प्रवेश कर रहा है । यमुना नदी और आकाश दोनों का श्याम रङ्ग होने से यमुना की पतली तरङ्ग से आकाश की उपमा दी है । कालिन्दी (यमुना) सूर्यपुत्री है । नाभि में उतरने वाली आकश रूपी रोमावलि हृदय के सूर्य मण्डल से नीचे उतर रही है । यमुना पिङ्गला नाड़ी को भी कहते हैं जिसका सम्बन्ध प्राण से है और प्राण की क्रिया से ही षट्चक्र वेध होता है । इस अभिप्राय से कालिन्दी रूपी पिङ्गलागत प्राण की क्रिया से उनकी उपमा सिद्ध होती है ।।७७।।

શિવા ! તમારી રોમાવલી યમુનાના નાજુક તરંગ જેવી, તમારા પાતળા કટિપ્રદેશમાં જરાક જેટલી જણાય છે. તે હે જનની ! શુદ્ધ અંતર્દષ્ટિવાળા જનોને, તમારા કુચકલશો વચ્ચે રહેલું આકાશ, તેમના અન્યોન્ય ઘસાવાને લીધે દબુરઇને સૂક્ષ્મ થઇ તમારા નાભીકુહરમાં પ્રવેશતું હોય એમ જણાય છે. (૭૭)

Oh Spouse of Siva ! Oh Mother ! This thing, that appears on Thy slender waist in the shape of ripples in the river Kalindi (Yamuna) seems to the wise to be the ether in between Thy pot-like breasts, compressed by their pressing one against the other (and pushed out) and as though entering the hollow in the navel. [77]

---

**विशेष** - यमुना की पतली तरङ्गों से आकाश की उपमा दी गयी है । आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी की उत्पत्ति मानी जाती है । प्रत्येक तत्त्व का अर्ध भाग और दूसरे भाग में शेष चारों तत्त्वों का समान भाग से मिलना पञ्चीकरण द्वारा पञ्च महाभूतों की रचना होती है । आकाश तत्त्व का वेध होने पर ही अन्य चक्र बिद्ध हो सकते हैं ।

जगन्माता की रोमावलि सुधिय अर्थात् साक्षात् श्री महादेव को प्रिय लगती है यही कहना उचित है । यहाँ बहुवचन उपयुक्त नहीं होगा ।

## राजवश्यकर प्रयोग

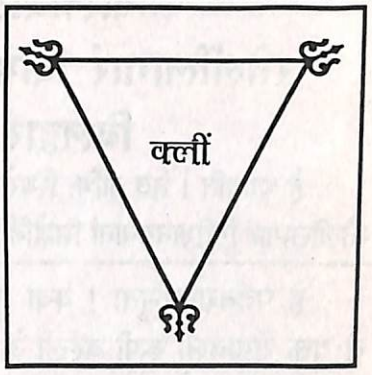


प्रस्तुत यन्त्र को कपिला गाय के घी और लाल कमल को साथ पीस कर अंगाल में यन्त्र और श्लोक लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१० दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर **'यं'** है । जप का दशांश हवन **'यं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'यं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'यं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, तिल, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **मधु** तथा **केले** का नैवेद्य विहित है ।

इस विधि से अनुष्ठान सम्पादित कर उस तिलक को धारण करने से **राजा भी वश में हो जाते हैं** ॥७७॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'यदेतत्कालिन्दी तनुतर' इति सप्तसप्तत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। यं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
यं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**धूम्रवर्णां महारौद्रीं षड्-भुजां रक्तलोचनां।**
**रक्ताम्बर-परीधानां नानालङ्कार-भूषितां।**
**महा-मोक्ष-प्रदां नित्यामष्ट-सिद्धि-प्रदायिनीं।**
**एवं ध्यात्वा यकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**त्रिशक्ति-सहितं वर्णं त्रिबिन्दु-सहितं प्रिये।**
**प्रणमामि सदा दिव्यं शक्तिं श्रीमोक्षमव्ययम्।**
**यकारं शृणु चार्वङ्गि चतुर्वर्ग-मयं सदा।**
**पलाल-धूम-सङ्काशं स्वयं परम-कुण्डली।**
**पञ्च-प्राण-मयं वर्णं पञ्च-देव-मयं तथा।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलता-**
**कलावालं कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतभुजः ।**
**रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते**
**बिलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते ।।७८।।**

हे भगवति ! तव नाभिः स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलताकलावालं कुसुमशरतेजोहुतभुजः कुण्डं रतेर्लीलागारं गिरिशनयनानां सिद्धेर्बिलद्वारं किमपि विजयते ।

---

हे पर्वतराज सुता ! क्या तुम्हारी नाभि 'गङ्गा में होने वाला भवँर है ? स्तन रूपी कलियों से युक्त रोमावली रूपी वल्ली के लिए (लता के लिए) उगने का मेंढ़ (गमला) है? क्या कामदेव के सौन्दर्य रूपी अग्नि को धारण करने वाला हवनकुण्ड है ? अथवा क्या रति के लिए क्रीडाङ्गण है? क्या शिवजी के नेत्रों ने जो सिद्धि प्राप्त करने के लिए तपस्या की थी उस सिद्धि की प्राप्ति का स्थान गुफा का द्वार है । वह तो अद्वितीय है । उसकी जय हो ।।७८।।

ગંગાનો સ્થિર વમળ સ્તનમુકુલ પર્વતની તમારી રોમાવલિ લતાનો કલાકોશ, પુષ્પધન્વાના તેજના યજ્ઞો માટેનો ખુંઠ, રતિનું લીલાગૃહ, ગોપી અવર્ણ્ય, હે ગિરિજા ! તમારી નાભી-ગિરિશની આંખોની લક્ષ્યસિદ્ધિની ગુફાનું દ્વાર-વિજયી છે. (૭૮)

Oh Daughter of the Mountain ! glory to Thy navel which may be described as a steady whirlpool of the river Ganga; the water-basin of the creeper of down having the breasts as buds; the pit of the sacrificial fire of the prowess of the flower-arrowed one; the pleasure-house of the Rati and the mouth of the cave of yogic success in the eyes of Girisha (Shiva). [78]

---

**विशेष** - उत्प्रेक्षा द्वारा देवी के विभिन्न अङ्गों का वर्णन करते हुए नाभि मण्डल का वर्णन करते हैं । अनेक उपमायें देखकर प्रतीत होता है कि वस्तुतः उन्हें नाभि मण्डल के वर्णन का संतोष नहीं हुआ । क्योंकि लौकिक उत्प्रेक्षा द्वारा अलौकिक पदार्थ का निदर्शन अप्रमाणिक सिद्ध होता है । वहीं ब्रह्म विष्णु और रुद्र के द्वारा वर्णन में अशक्य देवी का वर्णन उत्प्रेक्षा द्वारा लौकिक पुरुष के लिए असम्भव ही जान पड़ता है ।

कला शब्द का अर्थ विश्वप्रकाश में 'कला स्यान्मूलदे वृद्धौ शाल्यादावंशमात्रके । षोडशांशे च चन्द्रस्य कलनाकालयोः कले' की है । ललितासहस्रनाम में भी 'नाभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वयी' कहकर इसी अर्थ का समर्थन किया गया है । यहाँ एक ही नाभि के अनेकशः निरूपण से निरवयव मालारूपकालंकार है ।

## सर्वमोहन प्रयोग

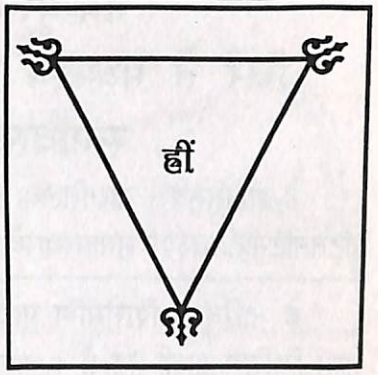


पन्नीर नामक पुष्प के अर्क से लाल चन्दन पीसकर चेलिकागन्धमिश्रित कर प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४० दिन** तक **प्रतिदिन १०८ बार** मन्त्र का जाप करें और फिर उस गन्ध का माथे पर तिलक करे । बीजाक्षर **'स्थिं'** है । जप का दशांश हवन **'स्थिं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'स्थिं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'स्थिं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **मधु,** तथा **माषापूप** का नैवेद्य विहित है ।

इससे **सर्वजनमोहन की शक्ति प्राप्त** होती है ॥७८॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'स्थिरो गङ्गाऽऽवर्तः' इति अष्टसप्ततमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। स्थिं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आ ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
स्थिं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**करीष-भूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बरम्। अस्थि-माल्यामष्ट-भुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्।। नागेन्द्र-हार-भूषाढ्यां जटा-मुकुट-मण्डिताम्। सर्वसिद्धि-प्रदां नित्यां धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।। एवं ध्यात्वा सकारं तु तन्मन्त्रं दशधाजपेत्।सकारं शृणु चार्वाङ्गि!शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमय संयुतम्।पञ्च-देव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा। रजसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा ।नील-वर्णां त्रिनयनां, षड्-भुजां वरदां परां। पीत-वस्त्र-परीधानां सदा सिद्धि-प्रदायिनी।एवं ध्यात्वा थकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। पञ्च-देव-मय वर्णं पञ्च-प्राण-मयं शिवे।तरुणादित्य-सङ्काशं थकारं प्रणमाम्यहं। थकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डली मोक्ष-रूपिणी। त्रिशक्ति-सहितं वर्णं त्रिबिन्दु-सहितं प्रिये। इ-कारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरि-ब्रह्म-मयं वर्णं सदाशिव-मयं प्रिये!। महा-शक्ति-मयं देवि! गुरु-ब्रह्म-मयं तथा। विश्व-त्रय-मयं वर्णं पर-ब्रह्म-समन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत् ।लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्र-वर्णां महा-रौद्रीं पीताम्बर-युतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साह-विवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरि-चन्दनभूषिताम्।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषो**
**नमन्मूर्त्तेर्नारीतिलकशनकैस्त्रुट्यत इव ।**
**चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा**
**समावस्थास्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये ।।७९।।**

हे शैलतनये ! नारीतिलक ! निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषः नमन्मूर्तेः शनकैः त्रुट्यत इव त्रुटिततटिनीतीरतरुणा समावस्थास्थेम्नः ते मध्यस्य चिरं कुशलं भवतु ।

---

हे नारिकुल शिरोमणि पार्वती ! स्वभाव से नाजुक तुम्हारी कमर स्तनों के भार से पीड़ित तथा किञ्चित् झुकी हुई है । बहती हुयी नदी के समान तुम्हारा सौन्दर्य है । नदी के किनारे स्थित टूटे हुये वृक्ष के समान झुकी हुई सी खड़ी रहने वाली और धीर-धीरे टूटती हुई सी दिखाई देती हो । तुम्हारी कमर दीर्घकाल तक मङ्गल प्राप्त करे ।।७९।।

પ્રકૃતિથી કૃશ, આગળ પડતા સ્તનના ભારથી થાકેલી, તમારી નમેલી શરીર-મૂર્તિ,જે નાભિ અને રોમાવલિ આગળથી ધીરે ધીરે જાણે તૂટી રહી છે અને ઘોધના તીરે આવેલા વૃક્ષની અવસ્થા જેટલી જ સ્થિરતા ધરાવે છે, તે મૂર્તિના કટિપ્રદેશનું, હે શૈલતનયા ! સદા કુશળ હો. (૭૯)

Oh Daughter of the Mountain ! May Thy naturally slim waist remain safe,- a waist which is in the condition of giving way under the weight of Thy breasts, which is bending in from, appearing as if on the verge of breaking down slowly at the navel and the folds, and in stability equalling the condition of a tree on a breached river bank. [79]

---

**विशेष** - कमर का पतला होना और स्तन का भारी होना स्त्री मात्र के सौन्दर्य का चिह्न है । कुशल प्रार्थना अकुशलता को इंगित करती है । वह अकुशलता क्या है? स्तन भार से दबी जा रही कृशकटि की पीड़ा । माता के स्तन भार से पीड़ित कमर पर पड़ी हुई रेखाएं देखकर भक्त चिन्तित हो उठा और उस कमर की कुशलता का प्रार्थी बन गया ।

अथवा सृष्टि के उत्पादन की कारणभूता माता कटिप्रदेश अवश्य कुशल होना चाहिए अन्यथा अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड मण्डल के अवस्थान प्रदेश के अभाव में जगत् की सृष्टि भी सम्भव न हो सकेगी और सृष्टि के अभाव में अनन्त कोटि योनियों के द्वारा प्राप्त शरीर के बिना भोग और मोक्ष दोनों की सिद्धि असम्भव हो जायेगी । इस चिन्ता से सकल लोक प्रसवित्री भगवती के मध्य भाग की कुशलता आवश्यक है । गिर रहे नदी के तीर पर झुके खडे और गिरने-गिरने को हो रहे वृक्ष की तरह भाराक्रान्ता माता का चित्रण अत्यन्त सहज है ।

## सम्मोहन प्रयोग

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **४५ दिन** तक किसी तीर्थ अथवा देवी मन्दिर में पूजन करते हुए **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें फिर गले में धारण करें। बीजाक्षर **'निं'** है । जप का दशांश हवन **'निं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'निं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'निं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शहद, दूध** तथा **खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **सम्मोहन विद्या में निपुणता** आती है तथा इन्द्रजाल विद्या में निपुणता प्राप्त होती है । ॥७९॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण' इति एकोनाशीतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। निं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं .....कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
निं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमःअञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

दलिताञ्जनवर्णाभां ललज्झिह्वां सुलोचनाम्। चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चिताम्। कृष्णाम्बरपरीधानां ईशद्धास्यमुखीं सदा। एवं ध्यात्वां नकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। नकारं शृणु चार्वङ्गि! रक्तविद्युल्लताकृतिः। पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली। त्रिगुणाशक्तिसंयुक्तं हृदि भावय पार्वति!।चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चितां।शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मितां । रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां। देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः। शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते ! रक्तवर्ण प्रभाकारं स्वयं परमकुण्डली । चतुर्वर्गप्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं । पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं प्रिये ! । रत्नपञ्चतमोद्युक्तं त्रिकूटसहितं सदा। त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतं ।। इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!। महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्। लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**कुचौ सद्यस्स्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ**
**कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता ।**
**तव त्रातुं भङ्गादलमितिवलग्नं तनुभुवा**
**त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव ।।८०।।**

हे भगवति ! सद्य: स्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ दोर्मूले कषन्तौ कनककलशाभौ कुचौ कलयता तनुभुवा भङ्गादलमिति वलग्नं त्रातुं त्रिवलि तव वलग्नं लवलीवल्लिभि: त्रिधा नद्धमिव ।

---

हे देवि ! तुम्हारे स्वर्ण कलश के समान आभा वाले स्तन इतने उभर जाते हैं कि उनके बोझ के कारण उत्पन्न रगड़ से पसीजकर तुम्हारी चोली फट गई है । तुम्हारी कमर में जो तीन वलय हैं वे ऐसे प्रतीत होती हैं मानों कामदेव के द्वारा आशंका से बाँधी गयी तीन लकीरें हैं कि तुम्हारी पतली कमर स्तनों के भार से कहीं टूट न जाय ।।८०।।

એકાએક પ્રસ્વેદયુક્ત વક્ષતટ ઉપર પહેરેલી ચોળી ફાટી જતાં, તમારા કનકકલશો જેવા સ્તન બગલ સાથે ઘસાય છે, એ જોઇ તમારી કમરને ભાંગી પડતી અટકાવવા મદને ત્રિવલિ, હે દેવી ! લવલીની વેલથી જાણે તેને ત્રિધા બાંધી છે. (૮૦)

Oh Effulgent One ! Observing that Thy breasts, brilliant as gold pots, are swelling (out of passion for Mahadeva) and rending Thy bodice at the sides perspiring suddenly and rubbing against the armpits: and feeling that it would suffice to save from breaking down ; Thy waist has been tied, as it were, by Cupid, in three coils with the lavali creeper, namely the three folds (on the waist) [80]

---

**विशेष** - कृशकटि पर गाढ़स्तनभार पिछले श्लोक में वर्णित है । यहाँ उसी भाव को और पल्लवित कर रहे हैं । स्तनों का भार इतना अधिक है कि पतली कमर कभी भी टूट सकती है। परन्तु पेट की तीन वलियाँ ऐसी प्रतीत हो रही हैं मानों कटि के सौन्दर्य की रक्षा हेतु कामदेव ने उसे लवली की बेल से तीन बार लपेट कर बांध दिया है ।

कामदेव ने यौवन वेग से व्याप्त कनक कलश की आभा वाले स्वभाव कठिन स्तनों को सजा दिया । भगवती के अन्य अंगों का शृंगार तो उन्होंने पहले ही कर रखा था । तभी कृशकटि की तरफ उनका ध्यान गया और उन्होंने देखा कि यह तो टूटकर कटिप्रदेश से ऊपर जितना भी सौन्दर्य विधान मैंने किया है उन सब को एक ही क्षण में मिट्टी में मिलाना चाहता है । ऐसा होते ही मेरा सारा शृंगार बेकार हो जायेगा । अत: उन्होंने वसन्तलता को तीन बार कमर में लपेट कर बांध दिया और इस तरह अपने द्वारा रचित सौन्दर्य की रक्षा का संतोष पा सके ।

प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर प्रथमपुष्पिणी (प्रथमरजोधर्मप्राप्ता स्त्री) की योनि में रखकर **५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें और फिर हाथ में यन्त्र को बाँध ले। बीजाक्षर '**कुं**' है । जप का दशांश हवन '**कुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**कुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**कुं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शहद** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **इन्दजाल दिखाने की शक्ति** प्राप्त होती है ॥८०॥

## स्तम्भन प्रयोग

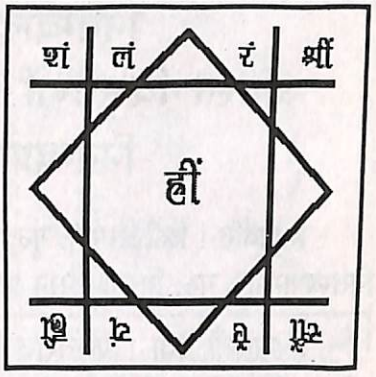


### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'कुचौ सद्यः स्विद्यत्तट' इति अशीतितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। कुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

हां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
कुं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्ली विराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तन-युग्म-विराजिताम्। रत्न-कङ्कण-केयूर-हार-नूपुर-भूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु हृन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्ख-कुन्द-समा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटि-विद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटि-चन्द्र-प्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्य-गर्भ-स्थिता काली कैवल्य-पद-दायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा। आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्च-देवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वं संस्थितः। त्रिकोणमेतत् कथितं योनि-मण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादि-विद्या चतुर्वर्ग-फल-प्रदा। पीत-कर्णा त्रिनयनां च पीताम्बर-धरां पराम्। द्वि-भुजां जटिलां भीमां सर्व-सिद्धि-प्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुर-श्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि! अधः कुण्डलिनी स्वयम्। पीतचम्पक-सङ्काशं पञ्च-देव-मयं सदा। पञ्च-प्राण-मयं देवि! चतुर्वर्ग-प्रदायकम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजात्**
**नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे ।**
**अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरयमशेषां वसुमतीं**
**नितम्बप्राग्भारः स्थगयति लघुत्वं नयति च ।।८१।।**

हे पार्वति ! क्षितिधरपतिः गुरुत्वं विस्तारं निजात् नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे । अतः ते अयं नितम्बप्राग्भारः गुरुः विस्तीर्णस्सन् अशेषां वसुमतीं स्थगयति लघुत्वं नयति च।

---

हे पार्वती देवी ! पर्वतराज हिमवान ने अपने में से भार तथा विशालता को निकालकर तुम्हें दहेज के रूप में दे दिया होगा । इसीलिए तो तुम्हारा नितम्ब इतना विशाल और भारी है कि वह जगत् भर को छिपा देने में सक्षम हैं । और उसकी तुलना में पृथ्वी छोटी दिखने लगती है । भाव यह है कि प्रकृति देवी ने पृथ्वी को अपना आसन बना रखा है और भूमि पर जो भी शोभा फैली हुई है, उसका सारा श्रेय पर्वतों को ही है जिनकी देन रूपी स्रोत समस्त पृथ्वी को हराभरा ही नहीं कर रहे, वरन् बड़े-बड़े देश भी उनके नितम्बों से काटकर लाई हुई मिट्टी की कृपाएँ हैं । अर्थात् भूमि की प्राकृतिक शोभा हिमाच्छादित पर्वतराज की ही तनुजा है ।।८१।।

હે પાર્વતી ! ક્ષિતિધરપતિએ ગુરુત્વ અને વિસ્તાર પોતાનાં નિતંબોમાંથી (શ્લેષમાં-ગિરિ તટોમાંથી) કાપી તમને કન્યાધનમાં આપ્યા તેથી તમારો વિસ્તીર્ણ અને ભારે નિતમ્બભાર આખી પૃથ્વીને સંતાડે છે ને લઘુતા અર્પે છે. (૮૧)

Oh Daughter of the Mountain ! The Lord of Mountains has presented to Thee, as dowry, heaviness and expanse cut out of his flanks. Hence Thy stupendous hips. extensive and massy, hide this entire earth and make it light as well. [81]

---

**विशेष** - यदि पृथ्वी को स्थिर माने तो भगवती को उस पर बैठ जाने से उसकी गति रुक गयी है यह मानना होगा और यदि उसे चल मानें तो उसकी गति स्थगित होकर नियम बद्ध हो गयी है यह मानना होगा ।

पर्वतराज हिमालय ने अपने नितम्बों से काटकर उसका भारीपन और विस्तार भगवती को दहेज में दिया था । यह बात अस्वाभाविक लगती है लेकिन हिमालय के पास दहेज में देने के लिए और क्या हो सकता है । अतः यह स्वाभाविक है कि जो वस्तु जिसके पास सुलभ और विशिष्ट होती है वही वस्तु वह अपने प्रिय को उपायन के रूप में प्रदान करता है । आखिर भगवान् विष्णु ने भगवती को अपने नेत्रकमल और रावण ने अपने शीश चढाए ही थे ।

## अग्निस्तम्भन प्रयोग

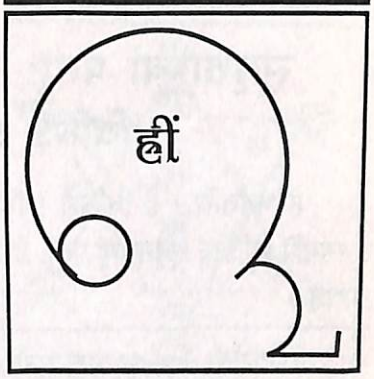


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **आग्नेयअभिमुख** हो **१६ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें फिर गले में धारण करें । बीजाक्षर '**गुं**' है। जप का दशांश हवन '**गुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**गुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**गुं तर्पयामि नमः**' सें करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **गुड की खीर, शहद** तथा **माषापूप** का नैवेद्य विहित है ।

यथाविधि अनुष्ठित इस मंत्र के प्रयोग से **अग्नि स्तम्भन की शक्ति** प्राप्त होती है तथा समक्ष आए व्यक्ति का तेजोहनन होता है ॥८१॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'गुरुत्वं विस्तारं क्षिति' इति एकाशीतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायः यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। गुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थें जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
गुं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**दाडिमी-पुष्प-सङ्काशां चतुर्बाहु-समन्वितां। रक्ताम्बर-धरां नित्यां रक्तालङ्कार-भूषिताम्। एवं ध्यात्वा गकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। पञ्च-प्राण-मयं वर्णं सर्व-शक्त्यात्मकं प्रिये!। तरुणादित्य-सङ्काशां कुण्डलीं प्रणमाम्यहं। अग्राकुञ्चित-रेखाया गणेशी सा प्रकीर्त्तिता। ततो दक्षगता या तु कमला तत्र संस्थिता। अधोगता गया या तु तस्यामीश सदा वसेत्। पीत-कर्णां त्रिनयनां च पीताम्बर-धरां पराम्। द्वि-भुजां जटिलां भीमां सर्व-सिद्धि-प्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुर-श्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि! अधःकुण्डलिनी स्वयम्। पीत-चम्पक-सङ्काशं पञ्च-देव-मयं सदा। पञ्च-प्राण-मयं देवि! चतुर्वर्ग-प्रदायकम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदलीकाण्डपटलीं**
**उभाभ्यामूरुभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवति ।**
**सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते**
**विधिज्ञे जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमसि ।।८२।।**

हे भगवति ! हे विधिज्ञे ! गिरिसुते ! करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदलीकाण्डपटलीं उभाभ्यामूरुभ्यां उभयमपि निर्जित्य सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमपि निर्जित्य असि वर्तसे स्फुरसीति यावत् ।

---

हे पार्वती ! श्रेष्ठ गजराजों की सूँडों के समान तुम्हारे दोनों जाँघों का अग्रभाग विशाल तथा नीचे उतरते-उतरते पतला है वे सुवर्ण के बने केले के वृक्षों के समान है । बार-बार अपने पति शिवजी को प्रणाम करने के अभ्यास के फलस्वरूप तुम्हारे दोनों घुटने कठोर तथा गोल-गोल है वे देवेन्द्र के वाहन ऐरावत के मस्तक स्थित कुम्भों के सौन्दर्य को पराजित कर देते हैं ।।८२।।

મહાગજરાજની સૂંડો અને સુવર્ણરંગી કેળાના સ્તંભ, એ બન્નેને તમારા બે ઊરુ વડે આપે જીતી લીધાં છે વળી હે ગિરિસુતા ! તમારા પતિને પ્રણામ કરતાં કઠણ થયેલા તમારા બે ગોળ જાનુ વડે દેવોના હાથીના કુંભસ્થળનું યુગ્મ પણ તમે જીતી ગયાં છો. (૮૨)

Oh Daughter of the mountain ! Having surpassed the lordly elephants trunks and the muititude of golden plantain stems with both Thy thighs, Thou that is well-versed in Vedic lore, hast conquered (excelled) the pair of temples of the celestial elephant, by Thy beautifully rounded knees hardened as they are by prostrations to Thy Lord. [82]

---

**विशेष** - हाथियों के सूँड़ उपमान के रूप में प्रसिद्ध हैं उसी तरह केले का खम्भा भी जंघाओं के उपमान के लिए प्रसिद्ध है । दोनों ही जंघाओं के स्वस्थ तथा सौन्दर्य का बोध कराते हैं । इसीलिए कालिदास ने कहा है -

'नागेन्द्रहस्तास्त्वचि कर्कशत्वादेकान्तशैत्यात्कदलीविशेषाः।
लब्ध्वापि लोके परिणाहिरूपं जातास्तदूर्वोरुपमानबाह्याः' ।।

हाथी के शुण्ड के समान पुष्ट तथा सोने के बने केले के पेड़ के समान चिकनी तथा आभायुक्त आपकी जाँघें ऐरावत के दम्भ को भी शमन कर देने वाली हैं । सहस्रनाम में भी कहा गया है कि - 'कामेशज्ञातसौभाग्यमार्दवोरुद्वयान्विता । माणिक्यमुकुटाकारजानुद्वयविराजिता'।

पति महेश को पञ्चाङ्ग प्रणाम करने से अन्योन्य संश्लिष्ट जंघायें कठोर हो गयी हैं ।

## जलगमनसामर्थ्य प्रयोग

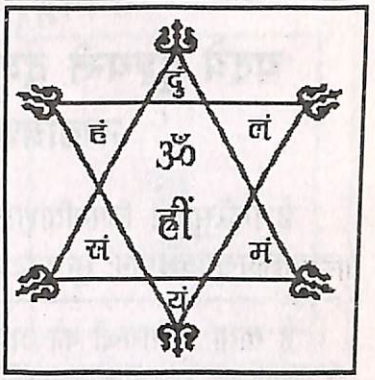


प्रस्तुत यन्त्र को **भोजपत्र** में **चन्दन** से लिखकर पादुकाओं में डालकर **पूर्वाभिमुख** हो **४० दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें और फिर वही पादुकाएं धारण करे । बीजाक्षर **'कं'** है । जप का दशांश हवन **'कं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'कं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्ज़न का दशांश तर्पण **'कं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शहद, नारियल** तथा **केला** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग के बाद उन पादुकाओं को पहनकर **जल में चल सकने की शक्ति** प्राप्त होती है ॥८२॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'करीन्द्राणां शुण्डान् कनक' इति द्व्यशीतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। कं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
कं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहु-वल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्न-कङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु ह्रन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा।आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः।त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**पराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भौ गिरिसुते**
**निषङ्गौ जङ्घे ते विषमविशिखो बाढमकृत ।**
**यदग्रे दृश्यन्ते दशशरफलाः पादयुगली-**
**नखाग्रच्छद्मानस्सुरमुकुटशाणैकनिशिताः ।।८३।।**

हे गिरिसुते ! विषमविशिखः रुद्रं पराजेतुं द्विगुणशरगर्भौ निषङ्गौ ते जङ्घे अकृत बाढम् । यदग्रे पादयुगलीनखाग्रच्छद्मानः सुरमकुटशाणैकनिशिताः दशशरफला दृश्यन्ते ।

---

हे माता ! शिवजी को अपने पाँच बाणों से जीतना असम्भव जानकर कामदेव तुम्हारे घुटनों की जोड़ी को अपने तरकशद्वय तथा तुम्हारे श्रीचरणों की दस उँगलियों को बाण बनाकर अपनी शक्ति को दुगुना बना देता है । तुम्हारे श्रीचरणों के प्रकाशवान नखों की नोक बाणों में लगाये जाने वाले लोहे के बने नुकीले भाग हैं । तुम्हारे नखों की नोक बारबार देवगणों के तुम्हारे चरणों में प्रणाम करते समय उनके नवरत्न जडित मुकुटों के लगते रहने के परिणाम स्वरूप धार किये गये बाणों के नोक के समान प्रतीत होते हैं । विषयों की दिव्य प्रवृत्ति उत्पन्न होने पर मन की स्थिरता का उदय होता है । इसलिए भगवती के चरणों के नखों का ध्यान योगी को सामान्य और दिव्य भोग देकर चित्त को एकाग्रता प्रदान करता है ।।८३।।

રુદ્રને જીતવાના હેતુથી, હે ગિરિસુતા ! જમણાં શરથી ભરેલાં ભાંથાંની જોડ, વિશમવિશિખે (કામદેવે) ચોક્કસ તમારી બે જંઘામાંથી બનાવી છે. તેમના છેઠે દસ શરનાં ફણાં દેખાય છે, તે નમેલા દેવોના મુગટોરૂપી સરાણ વડે ધારદાર કરાયેલા તમારા બે પગના નખાગ્રો જેવાં જણાય છે. (૮૩)

Oh Daughter of the mountain ! In order to overcome Rudra. Manmatha (the god of Love) surely has converted Thy two shanks into two quivers containing arrows doubled in number, at the ends of which are seen ten arrow points in the guise of the nail-ends of the pair of feet, exclusively sharpened by the whet-stones; namely the crowns of celestials. [83]

---

**विशेष** - कामदेव के पाँच बाण शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध आदि पाँच विषय हैं। यही पाँचों विषय सामान्य और दिव्य भेद से दस प्रकार के हो गये । योगदर्शन में 'विषयवती वा प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनसः स्थिति निबन्धिनी।' आदि कहकर दिव्य विषयों का वर्णन किया गया है। विषयों की दिव्य प्रवृत्ति उत्पन्न होने पर मन की स्थिरता का उदय होता है । इसलिए भगवती के चरणनख का ध्यान योगी को एकाग्र बना देता है ।

## सैन्यस्तम्भन प्रयोग

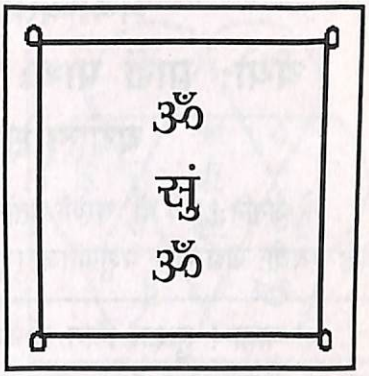


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१२ दिन** तक जपाकुसुम पुष्पों से पूजन करते हुए **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें फिर यन्त्र को गले में धारण करे । बीजाक्षर '**पं**' है । जप का दशांश हवन '**पं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**पं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**पं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शहद** तथा **गुड खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **हाथी, घोडा तथा सेना को** वश में करने की शक्ति प्राप्त होती है ॥८३॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'पराजेतुं रुद्रं द्विगुण' इति त्र्यशीतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। पं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**विचित्रवसनां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् ।**
**रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**मणिरत्नादि केयूररत्नहारैकविग्रहाम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यां नित्यानन्दमयीं पराम् ।**
**एवं ध्यात्वा पकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**अतः परं प्रवक्ष्यामि पकाराक्षरमव्ययम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदं वर्णं त्रिशक्तिसहितं प्रिये !**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शरच्चन्द्रमयप्रभम् ।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
पं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया**
**ममाप्येतौ मातश्शिरसि दयया धेहि चरणौ ।**
**ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी**
**ययोर्लाक्षालक्ष्मीररुणहरिचूडामणिरुचिः ।।८४।।**

हे जननि ! तव यौ चरणौ श्रुतीनां मूर्धानः शेखरतया दधति । हे मातः ! एतौ चरणौ ममापि शिरसि दयया धेहि । ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी ययोः लाक्षालक्ष्मीः अरुणहरिचूड़ामणिरुचिः ।

---

हे माता ! तुम्हारे जिन श्रीचरणों को वेदों का शिखर उपनिषद् अपने शिरों पर आभूषण के रूप में धारण करते हैं उन पाद कमलों को कृपाकर मेरे सिर पर भी रखने का अनुग्रह करो । उन श्रीचरणों का प्रक्षालित तीर्थ शिवजी की जटास्थित गङ्गाजल बन जाता है । उनमें लगाये गये लाक्षारस की काँतियुक्त लालिमा ऐसी प्रतीत होती है मानों विष्णु भगवान् के शरीर को सुशोभित करने वाला रक्तवर्ण का माणिक्य हो ।।८४।।

શ્રુતિઓના મૂર્ધન્યો તેમના શેખર રૂપે તમારા જે પગ ધારણ કરે છે, હે માતા ! તેમને કૃપા કરી મારા શિર ઉપર પણ મૂકો જે તેમનું પાદ્ય જલ છે તે પશુપતિની જટામાનો પ્રવાહ (ગંગાજળ) છે. અને તેમના ઉપરની લાક્ષાદ્યુતિ છે તે શ્રી હરિના મુગટના લાલ રત્નની શોભા છે. (૮૪)

Oh Mother ! Out of the bounty of Thy compassion, be pleased to place on my head too, these Thy two feet which the Upanisads (the crowns of the Vedas) wear as crest gem, the water washing which forms the Ganga in the hair locks of Pashupati, and the beauteous lac-dye on which feet is the cromson Lustre of Hari;s (Vishnu's) crest-jewel. [84]

---

**विशेष** - आपके चरण समस्त वेदान्त प्रतिपाद्य हैं । 'लोकस्य द्वारमर्चिमत् पवित्रम्' इत्यादि श्रुतियाँ इसमें प्रमाण हैं । ऐसे परमपवित्र चरण दीनों पर अनुकम्पा कर उनके सिर पर स्थापित करो यह भाव है । क्योंकि आपका स्वरूप ' यं कामये तं तमुग्रं कृणेमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् । अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्त वा उ' इत्यादि से भक्त वत्सल सिद्ध हो चुका है । अति महत्त्व सम्पादिका आपके द्वारा यह भक्त अनुग्रहीत होगा अगर आपके पतितपवित्रीकरण अशरणशरण चरण इसके सिर पर स्थापित हो जायेंगे ।

भगवती के चरण अलौकिकक्षालन लाक्षावान और शिव विष्णु के द्वारा नित्य प्रणाम पाने वाले हैं ऐसे सर्वदेव नमस्कृत भगवती के चरणों में हमारा प्रणाम है ।

## परकाय प्रवेश प्रयोग

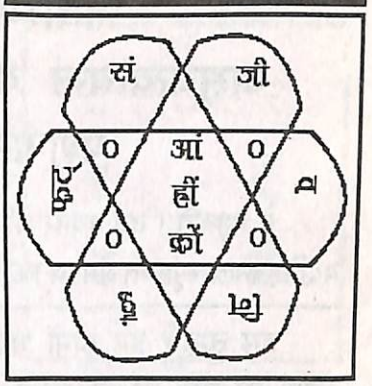


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१ वर्ष** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर '**श्रुं**' है। जप का दशांश हवन '**श्रुं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**श्रुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**श्रुं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है। **दूध, खीर, चित्रान्न** तथा **शहद** का नैवेद्य विहित है।

इस मंत्र के प्रयोग से **परकाय प्रवेश की शक्ति** मिलती है। भगवान् पूज्यपाद आदि शंकराचार्य जी महाराज को यह सिद्धि प्राप्त थी ॥८४॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'श्रुतीनां मूर्द्धानो दधति' इति चतुरशीत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। श्रुं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
श्रुं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारुचन्दनचर्चितां। शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मितां। रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां। देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः। शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते ! रक्तवर्ण प्रभाकारं स्वयं परमकुण्डली। चतुर्वर्गप्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं। पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं प्रिये! रत्नपञ्चतमोद्युक्तं त्रिकूटसहितं सदा। त्रिशक्तिसहितं वर्णं आत्मादितत्त्वसंयुतं। ललज्जिह्वां महारौद्रीं रक्तास्यां रक्तलोचनां। रक्तमाल्याम्बरधरां रक्तालङ्कारभूषिताम्। रक्तवर्णामष्टभुजां रक्तपुष्पोपशोभिताम्। महामोक्षप्रदां नित्यां अष्टसिद्धिप्रदायिकां। एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। रेफं च चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीद्वयसंयुतं। रक्तविद्युल्लताकारं पञ्चदेवात्मकं सदा। त्रिशक्तिसहितं देवि! आत्मादितत्त्वसंयुतं। सर्वतेजोमयं वर्णं सततं मनसि चिन्तयेत्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्। पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि! अधःकुण्डलिनी स्वयम्। पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि।

**नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयोः**
**तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते ।**
**असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते**
**पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे ।।८५।।**

हे भगवति ! तव नयनरमणीयाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते पदयोरस्मै द्वन्द्वाय नमोवाकं ब्रूमः । पशूनामीशानः यदभिहननाय स्पृहयते प्रमदवनकङ्केलितरवे अत्यन्तं असूयति ।

---

हम तुम्हारे इन दोनों चरणकमलों को प्रणाम करते हैं जो नयनों को रमणीय है, जिन पर लाक्षा की तीव्र कान्ति चमक रही है तथा जो स्निग्ध हैं । इन पाद कमलों द्वारा ताडित किये जाने के आकांक्षी अशोक वृक्षों से पशुपति (शिवजी) ईर्ष्या करते हैं । कभी-कभी अशोक वृक्ष पुष्पित नहीं होते । उस समय उत्तम स्त्रियों के चरणस्पर्श से अशोक वृक्ष प्रसन्न होकर पुष्पित होते हैं । अशोक का अर्थ वीतशोक अथवा शोकरहित है और पशुपति भी वीतशोक होने के कारण अशोक है जीवों को पशु कहते हैं क्योंकि वे संसार की आसक्तिरूप राग के पाश से बँधे हैं । भाव यह है कि देवी की वाटिका के अशोक वृक्ष को भगवती के चरण स्पर्श का सौभाग्य सदा प्राप्त है, इससे पशुपति अशोक से ईर्ष्या रखते हैं, क्योंकि वे भी चरण-स्पर्श से प्रफुल्लित होने के लिए लालायित हैं ।।८५।।

નયનોને આનંદ આપનાર તમારા આ પાદદ્વંદ્વને અમો "નમોવાણી" કહીએ છીએ. તેનું સ્પષ્ટ સૌંદર્ય પ્રવાહી લાક્ષાથી અદ્દકું થયું છે. જ્યારે કંકેલી તમારા પ્રાદપ્રહારની સ્પૃહા રાખે છે, ત્યારે પશુપતિ પ્રમદવનના કંકેલી વૃક્ષની અત્યંત અદેખાઇ કરે છે. (૮૫)

We express our respectful salutations to Thy feet which delight our eyes, having clearly lustrous wet lac dye. The Lord of Pashus (animals) is intensely jealous of the Kankeli tree, in Thy pleasure garden, which is eagerly desirous of the kicks of those feet. [85]

---

**विशेष** - अशोक का अर्थ वीतशोक अथवा शोकरहित है । इसलिए वीतशोक होने के कारण पशुपति को भी अशोक कहा जाता है । जीवों को पशु कहते है क्योंकि वह संसार की आसक्ति रूप राग के पाश में बँधे हैं ।

पाशबद्धस्तथा जीवः पाशमुक्तः सदाशिवः। पाशबद्धः पशु प्रोक्तः पाशमुक्तः पशूपतिः।।

जीवभाव और शिवभाव सदैव साथ रहते है । इसलिए बद्धजीव का अन्तरात्मारूपी शिव सदा असंग होने पर भी अपने को शोकरहित करना चाहता है ।

## सौभाग्यवर्धन प्रयोग

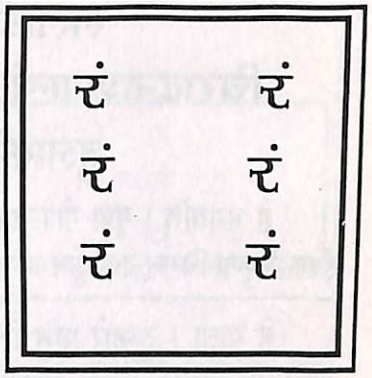


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१२ दिन** तक रक्तपुष्प से पूजन करते हुए **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर **'नं'** है। जप का दशांश हवन **'नं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'नं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'नं तर्पयामि नमः'** से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है। **दूध, खीर गुडोदक** तथा **कदलीफल** का नैवेद्य विहित है।

इस मंत्र के प्रयोग तथा यन्त्र के धारण करने से **भूत, पिशाचादि बाधाओं से निवृत्ति** होती है तथा सुख-सौभाग्य की अभिवृद्धि होती है ॥८५॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'नमोवाकं ब्रूमो नयन' इति पञ्चाशीतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। नं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**दलिताञ्जनवर्णाभां ललञ्जिह्वां सुलोचनाम्।**
**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारु-चन्दन-चर्चिताम्।**
**कृष्णामबर-परीधानां ईशद्धास्यमुखीं सदा।**
**एवं ध्यात्वां नकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**नकारं शृणु चार्वङ्गि! रक्तविद्युल्लताकृतिः।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली।**
**त्रिगुणाशक्तिसंयुक्तं हृदि भावय पार्वति!।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
नं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ वैलक्ष्यनमितं**
**लंलाटे भर्तारं चरणकमले ताडयति ते ।**
**चिरादन्तश्शल्यं दहनकृतमुन्मूलितवता**
**तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलितमीशानरिपुणा ।।८६।।**

हे भगवति ! मृषा गोत्रस्खलनं कृत्वा अथ वैलक्ष्यनमितं भर्तारं ते चरणकमले ललाटे ताडयति सति ईशानरिपुणा चिरात् दहनकृतं अन्तश्शल्यं उन्मूलितवता तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलितम् ।

---

हे माता ! तुम्हारे पति शिवजी द्वारा तुम्हारे गोत्र (मायके) का मजाक उड़ा देने पर और इससे रूठी हुई तुमको शान्त (मनाने) करने के उद्देश्य से शिवजी द्वारा तुम्हारे चरणों में नतमस्तक होते समय उनके ललाट पर तुम्हारे चरणकमलों के लग जाने के कारण तुम्हारे नूपुरों से 'झल-झल' ध्वनि उठती है । यह ध्वनि ऐसी प्रतीत होती है कि शिवजी के तृतीय नेत्र से भस्म हुए कामदेव के मन में बहुत समय से जो विरोध चुभ रहा था उसका बदला लेने के लिए तुम्हारे नूपुरों से मानों वह 'झल-झल' के रूप में जयघोष (हर्षध्वनि) कर रहा हो ।।८६।।

બનાવટ કરી શિવે તમને ખોટા નામે બોલાવ્યાં અને પછી ક્ષોભ થતાં તેઓ તમને નમ્યા, ત્યારે તમે ચરણકમળ વડે તમારા પતિના કપાળ ઉપર પ્રહાર કર્યો. આ રીતે, (શિવની ત્રીજી આંખના) અગ્નિથી હૃદયમાં લાંબા સમયથી દુઃખ કરતો કાંટો ઇશાનના અરિ (કામદેવે) ખેંચી કાઢી, તમારા નુપુરના ઝણકારથી પોતાના વિજયનો ઘોષ કર્યો. (૮૬)

When Thy lotus-like feet struck against the fore-head of Thy husband who having feignedly (inadvertently) blundered in (calling out) Thy name, bows in shame (embarrasment), the sounds kili kili were heard being uttered through the thinking of Thy anklets, by Thy Lord's for (Manmatha) who thus extricated the long-standing internal rankling caused by his being burnt to ashes (by Shiva). [86]

---

**विशेष** - गोत्र का अर्थ इन्द्रिय संयम किया जा सकता है । "गां इन्द्रियं त्रायते संयमते इति गोत्रम् ।" इसलिए गोत्रस्खलन से तात्पर्य इन्द्रिय संयम से च्युति है उसको मृषा कृत्वा अर्थात् झूठा करने से अभिप्राय इन्द्रिय संयम की कमी को पूरा करना है ।

लक्ष्य रहित अर्थात् नीचे झुकी दृष्टि को वैलक्ष्यनमित दृष्टि कहा जाता है । शाम्भवी मुद्रा में दृष्टि लक्ष्य ऐसा ही रहता है । जालन्धर बन्ध लग जाने से सिर आगे को झुक जाता है और चिबुक कण्ठ कूप पर जा लगती है यही वैलक्ष्यनमित दृष्टि है ।

## विजयप्राप्ति प्रयोग

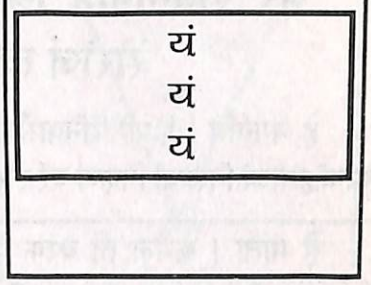


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **२१ दिन** तक पूजन करते हुए **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर '**मृं**' है । जप का दशांश हवन **'मृं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'मृं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'मृं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शहद, दूध, नारियल, केला** तथा **खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग, यन्त्र के धारण तथा कलश में जल रख अभिमन्त्रित कर उसे छिडकने से **समस्त पिशाच बाधा की निवृत्ति** होती है तथा शत्रु पर विजय प्राप्त होती है ॥८६॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ' इति षडशीत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। मृं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
मृं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**कृष्णां दशभुजां भीमां पीतलोहितलोचनाम्। कृष्णाम्बरधरां नित्यां धर्मकामार्थ मोक्षदाम्।एवं ध्यात्वा मकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। मकारं शृणु चार्वाङ्गि! स्वयं परमकुण्डली।तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राण मयं तथा। षड्भुजां नीलवर्णां च नीलाम्बरधरां परां। नानालङ्कार भूषाढ्यां सर्वालंकृतमस्तकां।भक्तिप्रदां भगवतीं भोगमोक्षप्रदायिनीं। एवं ध्यात्वा सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।पञ्चप्राणमयं वर्णं चतुर्ज्ञानमयं तथा। रक्तविद्युल्लताकारं ऋकारं प्रणमाम्यहं।ऋकारः परमेशानि! कुण्डलीमूर्तिमान् स्वयं। अत्र ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्रश्चैव वरानने।सदाशिवयुतं वर्णं सदा ईश्वरसंयुतं। ऊर्ध्वा दक्षगता वक्रा त्रिकोणा वामतस्ततः।पुनस्त्वधो दक्षगता मात्रा शक्तिः परा स्मृता। मात्रा तु ब्रह्मविष्ण्वीशाः तिष्ठन्ति क्रमतो परा।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**हिमानीहन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ**
**निशायां निद्राणं निशि चरमभागे च विशदौ ।**
**वरं लक्ष्मीपात्रं श्रियमतिसृजन्तौ समयिनां**
**सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम् ।।८७।।**

हे भगवति ! हिमगिरिनिवासैकचतुरौ निशि चरमभागे च विशदौ समयिनां श्रियमतिसृजन्तौ त्वत्पादौ हिमानीहन्तव्यं निशायां निद्राणं वरं लक्ष्मीपात्रं सरोजं जयतः ; इह किं चित्रं, आधिक्यस्य स्फुटत्वादित्यर्थः।

---

हे माता ! कमल तो बरफ में मुरझा जाता है, परन्तु तुम्हारे चरण हिमगिरि में निवास करने में कुशल हैं । कमल रात को पँखुड़ियों को समेटकर सो जाता है, परन्तु तुम्हारे चरण तो सदा प्रसन्न चित्त हैं । कमल लक्ष्मी देवी का निवास स्थान है, पर तुम्हारे चरणकमल तो समयाचार के उपासक अपने भक्तगणों को लक्ष्मी को ही प्रदान करते हैं । अतः तुम्हारे चरण, कमल पर विजय प्राप्त कर ले तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? अथवा तुम्हारे चरणों को कमल की उपमा कैसे दी जा सकती है ? कथमपि नहीं ।।८७।।

કમળ બરફમાં નાશ પામે છે, જ્યારે તમારા બે પગ હિમગિરિના ઢાબ ઉપર ચાલવા શક્તિમાન છે, કમળ રાત્રે બિડાઇ જાય છે, જ્યારે તમારા ચરણ રાત્રિ-દિવસ પ્રકાશિત રહે છે; કમળ માત્ર લક્ષ્મીને રહેવાનું પાત્ર છે, જ્યારે તમારાપગભક્તો ઉપર પ્રચુર સમૃદ્ધિ વરસાવે છે.- આમ તમારા જે પગ કમળને જીતે છે, એમાં હે જનની ! શું આશ્ચર્ય છે ? (૮૭)

Oh Mother ! Thy pair of feet, acclimatized to constant residence in the snowy moutain brilliant during the night, at daybreak and also by day, constantly bestowing their grace on devotees, surpasses the lotus which is liable to blight by the fall of snow (sleeps) during night and is dependent upon Lakshmi for its grace. What is strange in this ? [87]

---

**विशेष** - कमल और चरणकमल तौले जा रहे है । कमल अत्यधिक शीत में मुरझा जाता है, चरणकमल अनपहत सौभाग्य हैं । कमल रात को निमीलित हो जाता है, चरणकमल विरुद्ध कान्ति के संसर्ग से और भी कमनीय हैं । लक्ष्मी, जो ऐसे कृपण लोगों के पास भी रहती है जो न तो उसका स्वयं के लिए उपयोग करते है और न किसी अन्य के लिए । कमल ऐसी लक्ष्मी का आसन है, चरणकमल जितना मन में सोचा गया है उससे भी अधिक श्री और ऐश्वर्य देने वाले हैं । फिर दोनों में तुलना कैसी ? वस्तुतः भगवती के चरण मन में सोचे से अधिक देने वाले हैं । दुर्गासप्तशती में सुरथ को न केवल राज्य अपितु मनुत्व भी भगवती ने प्रदान किया है । उनकी महिमा अनन्त है ।

## सर्ववशीकरण प्रयोग

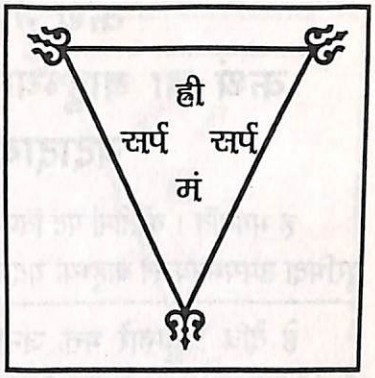


प्रस्तुत यन्त्र को **श्मशान की भस्म** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१० दिन** तक पूजन करते हुए **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर '**हिं**' है। जप का दशांश हवन '**हिं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**हिं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**हिं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है। **शहद, दूध, केला, नारियल** तथा **खीर** का नैवेद्य विहित है।

इस मंत्र के प्रयोग से **सपो को बुलाने की सामर्थ्य** प्राप्त होती है तथा सर्वभूतवशीकरण अर्थात् मनुष्य पशु आदि सभी वश में हो जाते हैं। ॥८७॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'हिमानीहन्तव्यं हिमगिरि' इति सप्ताशीत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। हिं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
हिं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**गन्धर्वसिद्ध देवाद्यैर्ध्यातां आद्यां सुरेश्वरीम्। एवं ध्यात्वा हकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**हकारं शृणु चार्वङ्गि! चतुर्वर्ग-प्रदायकम्। कुण्डलीद्वयसंयुक्तं रक्त-विद्युल्लतोपमम्।**
**रजस्सत्वतमोयुक्तं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणात्मकं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा।**
**त्रिबिन्दुसहितं वर्णं हृदि भावय पार्वति! ऊर्ध्वादाकुञ्चिता मध्ये कुण्डलीत्वगता त्वधः।**
**ऊर्ध्वं गता पुनस्सैव तासु ब्रह्मादयः क्रमात्। इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः।**
**हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!। महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा।**
**विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं। ऊर्ध्वाधः कृब्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत्।**
**लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत्। धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्।**
**कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि।

**पदं ते कीर्तीनां प्रपदमपदं देवि विपदां**
**कथं नीतं सद्भिः कठिनकमठीकर्परतुलाम् ।**
**कथं वा बाहुभ्यामुपयमनकाले पुरभिदा**
**यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा ।।८८।।**

हे भगवति ! कीर्तीनां पदं विपदामपदं ते प्रपदं सद्भिः कठिनकमठीकर्परतुलां कथं नीतम् ? दयमानेन मनसा पुरभिदा उपयमनकाले बाहुभ्यां यदादाय कथं वा दृषदि न्यस्तम्?

---

हे देवि ! तुम्हारे भक्त जनों की रक्षा करने की कीर्ति का स्थान तुम्हारे श्रीचरणों का अग्रभाग है और वह तुम्हारे भक्तों को सम्भाव्य कष्टों से भी सुरक्षित रखते हैं । न जाने सत्पुरुषों ने उसकी तुलना कछुओं के कठोर खपरे से कैसे की है ? वह इतना कोमल है कि विवाह के समय भगवान् शिवजी ने दयार्द्र मन से किसी प्रकार अर्थात् संकोच के साथ दोनों हाथों से उठाकर उसे पत्थर पर रखा था ।।८८।।

હે દેવી ! તમારું પાદાગ્ર સૌદર્યનું સ્થાન છે અને વિપત્તિઓનું સ્થાન નથી. તો સુજનો તેને કઠણ કુર્મના પીઠ સાથે કેમ સરખાવી શકે? અથવા તો દયાયુક્ત મનવાળા પુરભિદ(શિવે) લગ્નસમયે પોતાના બે હાથથી તેને ગ્રહણ કરી પત્થર ઉપર કેવી રીતે મૂક્યું ? (૮૮)

Oh Effulgent One ! How was Thy fore-foot, a seat of fame and bayond the reach of mishaps, reduced to equality with the hardened back (shell) of the tortoise ? How too at the time of marriage was it stone by the destroyer of the cities (Shiva) having a heart full of sympathy ? [88]

---

**विशेष** - भगवती के कुसुमकोमल चरणों को कठिन कूर्मपीठ से उपमित करना चकित कर देने जैसा है । आज भी विवाह के समय वर वधू के पैर उठाकर एक पत्थर पर रखता है और कहता है कि हे मेरी सहधर्मिणी! धर्म के पालन में तू इतनी दृढ़ होना जितना कि यह पत्थर है और परिवारजनों तथा सम्बन्धियों के लिए इतनी कोमल होना जितना कि तुम्हारा यह चरण । इसी लोक परम्परा का निदर्शन प्रस्तुत श्लोक में बड़े ही मनोहारी ढंग से किया गया है ।

गृह्यसूत्र में विवाह कालिक इस परम्परा का उल्लेख है । "आरोहेममश्मानमश्मेव त्वं स्थिरा भव" इस मन्त्र से कन्या के चरण पत्थर पर रखवाये जाते है ।

"सोमः शौचं ददौ तासाम्" " स्त्रियो मेध्यास्तु सर्वतः" इत्यादि वचन से स्त्रियाँ सदा पवित्र होती हैं । अनेक प्रामाणिक कवियों ने स्त्रियों के अनेक अंगों के चुम्बनादि का विधान इसी मेध्यता के बल से किया प्रतीत होता है ।इसलिए भगवती के चरण छूने में कोई दोष नहीं है ।

## सर्वमृगवशीकरण प्रयोग

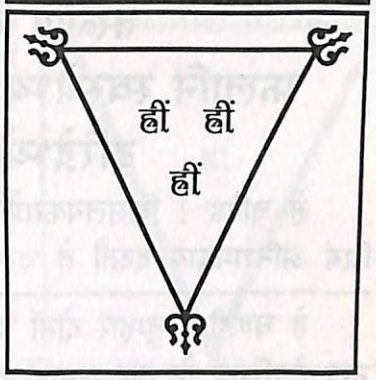


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र अथवा चाँदी के पत्र में चन्दन** से लिखकर नित्यपूजा करते हुए **पूर्वाभिमुख** हो **१५ दिन** तक **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें फिर गले में धारण करे । बीजाक्षर '**निं**' है। जप का दशांश हवन '**पं स्वाहा**'से, हवन का दशांश मार्जन '**पं मार्जयामि नमः**'से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**पं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है। **नारियल, केला** तथा **गुडखीर** का नैवेद्य विहित है।

इस मंत्र के प्रयोग से **जंगली पशुओं (मृग आदि)** को वश मे करने की शक्ति प्राप्त होती है ॥८८॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'पदं ते कीर्तीनां' इति अष्टाशीत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। पं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
पं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**विचित्रवसनां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् ।**
**रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**मणिरत्नादि केयूररत्नहारैकविग्रहाम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यां नित्यानन्दमयीं पराम् ।**
**एवं ध्यात्वा पकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**अतः परं प्रवक्ष्यामि पकाराक्षरमव्ययम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदं वर्णं त्रिशक्तिसहितं प्रिये !**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शरच्चन्द्रमयप्रभम् ।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**नखैर्नाकस्त्रीणां करकमलसङ्कोचशशिभिः**
**तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ ।**
**फलानि स्वस्थेभ्यः किसलयकराग्रेण ददतां**
**दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिशमह्नाय ददतौ ।।८९।।**

हे चण्डि ! किसलयकराग्रेण स्वस्थेभ्यः एव फलानि ददतां दिव्यानां तरूणां दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियं अनिशमह्नाय ददतौ ते चरणौ नाकस्त्रीणां करकमलसङ्कोचशशिभिः नखैः हसत इव ।

---

हे चण्डी ! तुम्हारे दोनों चरण अपने नखों से कल्पवृक्षों का परिहास सा कर रहे हैं, जो नख देवस्त्रियों के कर कमलों को जोड़ते समय लगता है मानों तुम्हारे नख रूपी चन्द्रमा के प्रकाश में कुम्हले हुए कमल हों । कल्पवृक्ष तो स्वर्ग में रहने वाले स्वाबलम्बी देवताओं को ही अपने पल्लव रूपी कराग्रों से फल देते हैं परन्तु तुम्हारे चरण दरिद्रियों को भी निरन्तर परम मंगलमयी सम्पत्ति देते रहते हैं ।।८९।।

તમારા નખ સ્વર્ગની સ્ત્રીઓના કરકમળોનો સંકોચ કરાવનાર (હાથ જોડાવનાર) ચંદ્ર જેવા છે. હે ચંડી ! તારા ચરણો દિવ્ય વૃક્ષોનો ઉપહાસ કરે છે. તે વૃક્ષો માત્ર સ્વસ્થ જનોને કિસલય રૂપી આંગળીઓ વડે ફળ આપે છે, જ્યારે તમારા ચરણો દરિદ્રોને સતત અને ઝડપથી વરદાન તેમજ સમૃદ્ધિ આપે છે. (૮૯)

Oh Chandi ! Thy feet granting auspicious wealth incessantly and instantly to the indigent, laugh as it were, with their toe-nails resembling moons which cause the lotus like hands of celestial women to close, at the celestial trees that grant the (desired) fruits to the celestials (fortunate only), through their finger like sprouts. [89]

---

**विशेष** - कल्पवृक्ष और भगवती के चरणों की तुलना प्रस्तुत पद्य का अभीष्ट है । कल्पवृक्ष वह विशिष्ट देववृक्ष है जो स्वर्ग में स्थित है तथा जीव के स्वर्ग में जाने पर कुछ दिनों के लिए नश्वर ऐश्वर्य और भोग पदार्थ देता है जबकि इसके विपरीत भगवती के कल्याणकारी चरण ऐहिक आमुष्मिक दोनों तरह की सिद्धियाँ प्रदान करने में सक्षम है ।

यद्यपि यहाँ भगवती के चरणों का वर्णन अभिप्रेत है परन्तु उसी क्रम में सकलदिक् चक्रवालापरान्धकार नाशक चन्द्रिका चमत्कारयुक्त चरण नख का भी वर्णन आ गया है । यह नख सामान्य नहीं हैं अपितु चन्द्र की चन्द्रिका को लज्जित करने वाले हैं । श्री ललितासहस्त्रनाम में भगवती के हाथ के नखों से दशावतार के उद्भव के बारे में बताया गया है-

'करांगुलिनखोत्पन्न नारायणदशाकृतिः'

## सर्वरोगनिवारण प्रयोग

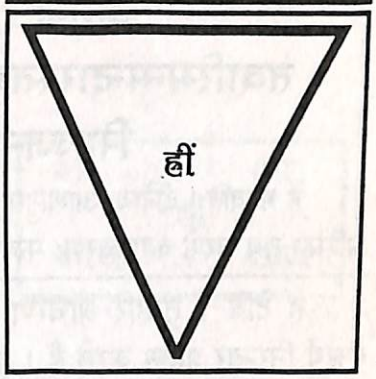


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **३० दिन** तक नित्य पूजन करते हुए **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें फिर उसे गले में धारण करे । बीजाक्षर '**नं**' है । जप का दशांश हवन '**नं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**नं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**नं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शहद** तथा **गुडखीर** का नैवेद्य विहित है ।

यथा विधि इस मंत्र के प्रयोग से **सभी रोगो का निवारण होता है** ॥८९॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'नखैर्नाकस्त्रीणां करकमल' इति नवाशीत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। नं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अँगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
नं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमःअञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**दलिताञ्जनवर्णाभां ललञ्जिह्वां सुलोचनाम्।**
**चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारु-चन्दन-चर्चिताम्।**
**कृष्णामबर-परीधानां ईशद्धास्यमुखीं सदा।**
**एवं ध्यात्वां नकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**नकारं शृणु चार्वङ्गि! रक्तविद्युल्लताकृतिः।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली।**
**त्रिगुणाशक्तिसंयुक्तं हृदि भावय पार्वति!।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**ददाने दीनेभ्यः श्रियमनिशमाशानुसदृशीं**
**अमन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति ।**
**तवास्मिन्मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे**
**निमज्जन्मज्जीवः करणचरणष्षट्चरणताम् ।।९०।।**

हे भगवति ! दीनेभ्यः आशानुसदृशीं श्रियं अनिशं ददाने अमन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति मन्दारस्तबकसुभगे अस्मिन् तव चरणे करणचरणः मज्जीवः निमज्जन् षट्चरणतां यातु ।

---

हे देवि ! तुम्हारे श्रीचरण दरिद्रता से पीड़ित दीनों को उनकी इच्छानुसार नाना प्रकार के ऐश्वर्य निरन्तर प्रदान करते हैं । वे सौन्दर्य रूपी पराग बिखेरते रहते हैं । तुम्हारे श्रीचरण जो मन्दार वृक्ष के नवविकसित पुष्पगुच्छों के समान हैं उनमें मेरा मन तथा पञ्चेन्द्रिय छः पैर वाले भ्रमर बनकर मग्न होकर उसका रस लेता रहे । अर्थात् नेत्रों से देवी के चरण कमलों का दर्शन कर, कानों से उसकी सुकीर्ति सुनकर, नाक से उसे अर्चित पुष्पों की सुगन्ध सूँघकर, वाणी से उसकी स्तुति कर, त्वचा से पादधूलि का स्पर्शसुख प्राप्त कर मन से ध्यानादि कर जीवन बिताना ही जन्म की सार्थकता हैं ।। ९०।।

હે દેવી ! તમારા ચરણો દરિદ્રતા થી પીડાયેલા લોકો ને તમામ ઐશ્વર્ય આપનારા છે. મન્દાર ના નવવિકસિત પરાગ ના માટે મારો મન સદાય પાંચ ઇન્દ્રિય અને છ પગ વાળો ભમરો બની જાય છે.(૯૦)

Let my soul (me), having the (six) sense organs as feet, become a (six-footed) honey-bee, plunging deep in this, Thy foot which is always bestowing on the helpless, wealth according to their desires, scattering abundant honey in the form of a swell of beauty and which is charming like a cluster of mandara flowers. [90]

---

**विशेष** - षट् चरणता अर्थात् छः चरणों वाला । भ्रमर के छः चरण होते है अतः भक्त अपने अन्तःकरण में त्वक्, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र और रसना आदि पञ्चज्ञानेन्द्रिय एवं इनके साथ अन्तःकरण को संयुक्त कर षट् चरणता आरोपित कर स्वयं को भ्रमर में परिवर्तित कर भगवती के मन्दारवृक्ष समुद्भूतपुष्पस्तवक चरण कमलों में लगा देता है । अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा मन तथा इन्द्रियों सहित अपना सर्वस्व भगवती के चरणों में समर्पित कर देता है ।

यहाँ दरिद्रता से अभिप्राय अर्न्तदरिद्रता और बाह्यदरिद्रता दोनों से है । अर्न्तदरिद्रता से तात्पर्य माया से मोहित है और बर्हिदरिद्रता से तात्पर्य धनधान्यचन्दनसुगन्धिभवनक्षेत्रपुत्रस्त्री-गजतुरगआदि बाह्यभोग हैं ।

## दारिद्र्य निवारण प्रयोग

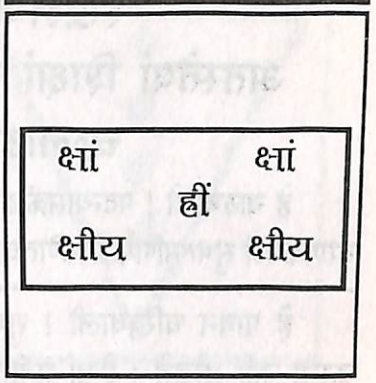


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१५ दिन** तक पूजन अर्चन करते हुए **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर '**दं**' है। जप का दशांश हवन '**दं स्वाहा**'से, हवन का दशांश मार्जन '**दं मार्जयामि नमः**'से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**दं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **देवीपुष्प, बिल्व, मधु, पायस** हवनीय द्रव्य है। **शहद, दूध** तथा **खीर** का नैवेद्य विहित है।

इस मंत्र के प्रयोग से **दरिद्रता का नाश** होता है तथा छोटी मोटी बाधाएं निवृत्त होती हैं । प्रत्येक साधक को यह प्रयोग अवश्य कर लेना चाहिए ॥९०॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'ददाने दीनेभ्यः' इति नवतितममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। दं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ध्यानम्**

**चतुर्भुजां पीतवस्त्रां नवयौवनसंस्थितां।**
**अनेकरत्नघटितहार-नूपुर-शोभितां।**
**एवं ध्यात्वा दकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**त्रिशक्तिसहितं देवि!त्रिबिन्दुसहितं प्रिये!।**
**आत्मादितत्त्वसंयुक्तं दकारं प्रणमाम्यहं।**
**दकारं शृणु चार्वाङ्गि चतुर्वर्गप्रदायकं।**
**पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणमयं सदा।**

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
दं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनसः**
**स्खलन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति ।**
**अतस्तेषां शिक्षां सुभगमणिमञ्जीररणित-**
**च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते ।।९१।।**

हे चारुचरिते ! पदन्यासक्रीडापरिचयं आरब्धुमनसः भवनकलहंसाः स्खलन्तः ते खेलं न जहति ; अतः चरणकमलं सुभगमणिमञ्जीररणितच्छलात् तेषां शिक्षां आचक्षाणमिव ।

---

हे पावन चरित्रवाली ! तुम्हारे भवन के राजहंस उछलते-कूदते निरन्तर तुम्हारा अनुकरण करना नहीं छोड़ते । ऐसा प्रतीत होता है मानों वे हंस पक्षी तुमसे सुन्दर चाल सीखने की इच्छा में हों । तुम्हारे चलते समय चरणकमलों में मङ्गलमयी रत्नजड़ित नूपुरों से जो ध्वनि निकलती है वह ऐसे प्रतीत होती है कि तुम उन्हें परोक्ष रूप से चलने की शिक्षा का उपदेश दे रही हो । भाव यह है कि परमहंस महापुरुषों की उन्मत्त-गति-विधि में शक्ति की क्रीडायुक्त मस्तीभरी चाल का आभास है । जीवन्मुक्त परमहंस ही भगवती के भवन के राजहंस है । दूसरा भाव स्त्रियों की चाल की उपमा हंस की गति (चाल) से दी जाया करती है, परन्तु भगवती की चाल से हंस स्वयं चलने की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं ।।९१।।

જાણે પાદન્યાસની ક્રીડાની સમજણ મળે એમ મનમાં ધારીને લીલાથી ચાલતા ભવનના કલહંસો તારા ચરણકમળને છોડતા નથી. હે સુન્દર ગતિવાળી તમને વિક્ષેપ થતાં સુંદર રત્નજડિત ઘૂઘરીઓ ના રણકાર ને બહાને તમારૂં ચરણકમળ તેમને શિક્ષા આપે છે. (૯૧)

Oh goddess of graceful gait ! Thy household swans, as if intent on practising to balance their stops with tripping gait, do not abandon Thy feet. So Thy lotus feet impart instruction, as it were, in the guise of the tinkling of Thy anklet embedded with brilliant gems. [91]

---

**विशेष** - प्रायः उत्तम स्त्रियों की चाल हंस से उपमित की जाती है लेकिन यहाँ तो भगवती की चाल से हंस स्वयं चलने की शिक्षा ले रहे है । अथवा परमहंस महापुरुषों की उन्मत्त गतिविधि में पराम्बा शक्ति की क्रीड़ायुक्त मस्ती भरी चाल का आभास है ।

पद से हं, क्रीड़ा से रेफ, ई हंसो हंसः, शिक्षा सोऽहं, चरणमणि के संचरण से मञ्जीरध्वनि से स्वाहा इस तरह ॐ ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहाः यह आत्माष्टाक्षर मन्त्र बनता है ।

चारुचरिते का तात्पर्य सुन्दर चरित्र की स्वामिनी से भी संभव है । जन्म-जन्मान्तर में भी मात्र शिव का वरण करने वाली भगवती के चरित्र का क्या कहना ?

## धन/भूमि लाभ प्रयोग

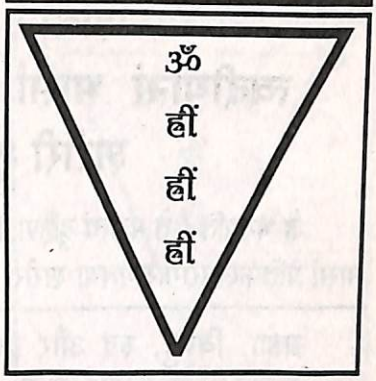


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो नित्यपूजनोपवासादि करते हुए **२५ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें । बीजाक्षर **'पं'** है । जप का दशांश हवन **'पं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'पं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'पं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है । **दूध** तथा **खीर** का नैवेद्य विहित है ।

विधान के अनुसार किए गए इस अमोघ मंत्र के के अनुष्ठान तथा यन्त्रधारण रूपी प्रयोग से **भूमि एवं धन** तथा **स्थायी सम्पत्ति** का का लाभ होता है ॥९१॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'पदन्यासक्रीडा परिचय' इति एकनवत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। पं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं .....कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
पं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**विचित्रवसनां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् ।**
**रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**मणिरत्नादि केयूररत्नहारैकविग्रहाम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यां नित्यानन्दमयीं पराम् ।**
**एवं ध्यात्वा पकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**अतः परं प्रवक्ष्यामि पकाराक्षरमव्ययम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदं वर्णं त्रिशक्तिसहितं प्रिये !**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शरच्चन्द्रमयप्रभम् ।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः**
**शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः ।**
**त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारुणतया**
**शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम् ।।९२।।**

हे भगवति ! ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः गताः ; शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटस्सन् त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारुणतया शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां कुतुकं दोग्धि ।

---

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और ईश्वर प्रभृति अधिकारी पुरुषों के द्वारा रक्षा किये जाने वाले तुम्हारे मंच के चार पाये बनने की स्थिति प्राप्त की है । उस पर बिछी हुई स्वच्छ (धवल) छाया की कपटरूपी माया की चादर शिव है जो तुम्हारी कांति की परछाईं से अरुण दिखते हैं मानों शृङ्गाररस ही शरीर धारण कर दृष्टि में कौतूहल उत्पन्न कर रहा है । श्रीचक्र भगवती का मंच है । जिसके 'ईशान कोण में ईश्वर, अग्निकोण में रुद्र, नैऋत्य कोण में विष्णु और वायव्य कोण में ब्रह्मा समझना चाहिए अथवा पूर्व में ईश्वरी, दक्षिण में रौद्री, पश्चिम में कौमारी और उत्तर में वैष्णवी प्रत्येक देव की शक्ति देव के वाम भाग में चारों द्वारों पर स्थित है ।।९२।।

દ્રહિણ (બ્રહ્મા), હરિ, રુદ્ર અને ઈશ્વરે પરિજન બની, તમારો પલંગ રચ્યો; શિવ, સ્વચ્છ શ્વેત પ્રભાવાણો કૃતિમ આચ્છાદ (ચાદર) રચે છે, તે તમારી ધુતિના પ્રતિભાસથી અરુણ થવાથી શિવ જાણે કે મૂર્તિમંત શૃંગાર રસ હોય, તેમ તમારી આંખોને આશ્ચર્યચકિત કરે છે. (૯૨)

Thy functionaries, Brahma, Vishnu, Rudra and Isvara have become Thy cot (pillars of the cot). Shiva with his clear lustre has transformed himself into an apparent bed-cover reddened by Thy reflected lustre, as the embodied erotic sentiment (sringara rasa), and yields joy to Thy eyes. [92]

---

**विशेष** - आज्ञाचक्र में शिवशक्त्यात्मक प्रथमस्पन्द, विशुद्धि चक्र में सदाशिव और नीचे के चारों चक्रों में क्रमशः ईश्वर, रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा अधिदैवत् है । ये चारों शुद्ध विद्या के अन्तर्गत है और जीव अर्थात् पुरुष माया के अन्तर्गत । अन्य चौबीस तत्त्वों के संघातरूपी देह को अशुद्ध करती हुई महाशक्ति विशुद्धि चक्र में विशुद्ध रूप में विराजती है ।

यहाँ व्योमेश्वर और व्योमेश्वरी चित्रित है । शिव को यदि स्वच्छ छाया घटित आकाशमयी मायावी चादर सदृश समझा जाय तो शक्ति को उस चादर में स्फटिक के समान झलकने वाली अरुणिमा समझनी चाहिए ।

यहाँ तक भगवती के एक एक अङ्ग का वर्णन है ।

## शासनक्षमतावर्द्धक प्रयोग

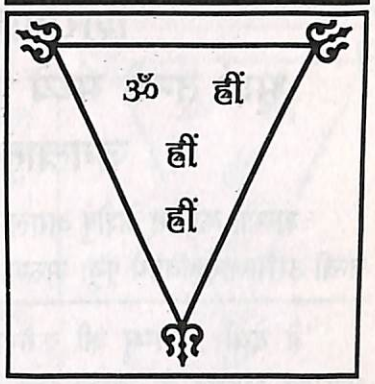


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **२५ दिन** तक पूजन करते हुए **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें और उसके बाद गले में धारण करे । बीजाक्षर **'गं'** है। जप का दशांश हवन **'गं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'गं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'गं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है । **चित्रान्न, दूध, दूधखीर** तथा **पान** का नैवेद्य विहित है ।

विधिपुरस्सर इस मंत्र के प्रयोग से **राज्य प्राप्ति** होती है तथा शासन की क्षमता बढती है ॥९२॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'गतास्ते मञ्चत्वं' इति द्वानवत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। गं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामना पूर्ज्यर्थें जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
गं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमःअञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**दाडिमी-पुष्प-सङ्काशां चतुर्बाहु-समन्विताम् ।**
**रक्ताम्बर-धरां नित्यां रक्तालङ्कार-भूषिताम् ।**
**एवं ध्यात्वा गकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।**
**पञ्च-प्राण-मयं वर्णं सर्वशक्त्यात्मकं प्रिये।**
**तरुणादित्य-सङ्काशां कुण्डलीं प्रणमाम्यहं।**
**अग्राकुञ्चित-रेखा या गणेशी सा प्रकीर्त्तिता।**
**ततो दक्षगता या तु कमला तत्र संस्थिता।**
**अधोगता गया या तु तस्यामीश सदा वसेत्।**

**पञ्चोपचार पूजन**

**लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै**
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
**हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै**
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते**
**शिरीषाभा चित्ते दृषदुपलशोभा कुचतटे ।**
**भृशं तन्वी मध्ये पृथुरुरसिजारोहविषये**
**जगत्रातुं शम्भोर्जयति करुणा काचिदरुणा ।।९३।।**

शम्भोः काचित् केशेषु अराला मन्दहसिते प्रकृतिसरला चित्ते शिरीषाभा कुचतटे दृषदुपलशोभा मध्ये भृशं तन्वी उरसिजारोहविषये पृथुः अरुणा करुणा जगत् त्रातुं जयति ।

---

हे देवी ! शम्भु की करुणा (अर्थात् दया) की, 'जगत् की रक्षा करने के लिए मानों जो काचित् अरुणा है' सर्वत्र जय हो रही है जिसके अर्थात् अरुणा भगवती के केश स्वाभाविक सरलता लिए हुए कुटिल हैं, स्वाभाविक मन्द-मन्द मुस्कान मुख पर हैं, मन में वही शक्ति शिरीष की आभा लिए हुए हैं, स्तनों में पत्थरों के समान कठोरता है जो स्फटिक की शोभा से युक्त है, मध्य में कटिभाग अति पतला है, तो स्तन तथा नितम्ब भारी हैं । शम्भु की करुणा और अरुणा दोनों एक ही है । अरुणा भगवती का एक नाम है और उसके अरुण वर्ण के कारण प्रसिद्ध है । करुणा भी 'क' कार पूर्वक अरुणा ही है । काचित् का कोई अर्थ होने से करुणा का अरुणा का ही एक अंश समझना चाजिए । अर्थात् परा शक्ति अरुणा जिसको कोई नहीं जान सकता, वह शम्भु की करुणा के रूप में ही जानी जा सकती है ।।९३।।

વાંકડિયા વાળવાળી, મધુર સ્મિત ધરાવતી, મનમાં શિરીષ પુષ્પ જેવી કોમળ, સ્તનતટમાં શિલા સમાન કઠોર, કટિતટે અત્યંત નાજુક, સ્તન અને નિતંબના પ્રદેશમાં વિશાળ એવી શંભુની કરુણા, દેવી અરુણા જગતના રક્ષણ માટે વિજયી હો.(૯૩)

Curly in hair and inherently artless in smile, soft as the Shirisha flower in frame, hard like the (rocky) grinding stone in the breasts, intensely slender in the waist, expansive in the regions of the breasts and hips, the indescribable Aruna Shakti, the grace of Shambhu shines gloriously for the protection of the universe. [93]

---

**विशेष** - शिरीष एक वृक्ष का नाम है जो कल्याण का सूचक है । "शृहिंसायां शृणाति शीर्यते वा इति शिरीषः" अर्थात् जो काटा जाता है अथवा फैलता है वह शिरीष कहलाता है । भगवती में भी हिंसा का ऐसा भाव भरा है जो काटने अर्थ में भक्तों के पास काटता है और फैलने अर्थ में सारे जगत में कल्याण की भावना का विस्तार करता है । भगवती का सारा शरीर शिरीष वृक्षवत् कल्याण वपु है ।

## सकलमनोरथसिद्धिद प्रयोग

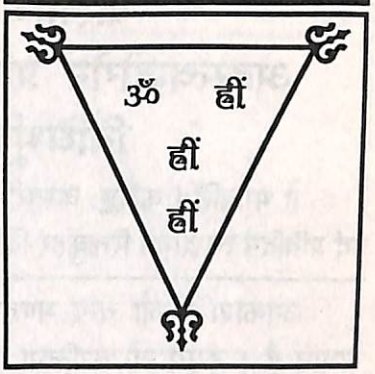


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **२५ दिन** तकपूजन करते हुए **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें । बीजाक्षर **'अं'** है । जप का दशांश हवन **'अं स्वाहा'** से हवन का दशांश मार्जन **'अं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'अं तर्पयामि नमः'** से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शहद** का नैवेद्य विहित है ।

श्रद्धापूर्वक तथा विधिपूर्वक किए गए इस मंत्र के प्रयोग से साधक के **सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं** क्योंकि श्रद्धा और विधि ही प्रयोगों में सफलता देती है ॥९३॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'अराला केशेषु प्रकृति सरला' इति त्रयोनवतमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। अं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**केतकीपुष्पगर्भाभां द्विभुजां हंसलोचनाम् ।**
**शुक्लपट्टाम्बरधरां पद्ममालाविभूषिताम् ।**
**चतुर्वर्गप्रदां नित्यमानन्दमयीं पराम् ।**
**वराभयकरां देवीं नागपाशसमन्विताम् ।**
**शृणुतत्वमकारस्य अतिगोप्यं वरानने ।**
**शरच्चन्द्रप्रतीकाशं पञ्चकोणमयं सदा ।**
**पञ्चदेवमयं वर्णं शक्तिद्वय समन्वितम् ।**
**निर्गुणं सगुणोपेतं स्वयं कैवल्यमूर्तिमान् ।**
**बिन्दुद्वयमयं वर्णं स्वयं प्रकृतिरूपिणी ।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
अं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि ।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं**
**कलाभिः कर्पूरैर्मरकतकरण्डं निबिडितम् ।**
**अतस्त्वद्भोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं**
**विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते ।।९४।।**

हे भगवति ! कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं कलाभिः कर्पूरैः निबिडितं मरकतकरण्डम् । अतः इदं प्रतिदिनं त्वद्भोगेन रिक्तकुहरं विधिः भूयोभूयः तव कृते निबिडयति नूनम् ।

---

आकाश में जो चन्द्र मण्डल है वह प्रतिबिम्बित जलयुक्त मरकत मणि के बने हुए पात्र के समान है । उसमें जो कालिमा (काला-धब्बा) है वह कस्तूरी का काला रंग है, और वह मरकत रूपी पात्र चन्द्रकिरण रूपी कर्पूर के चूर्णों से भरा हुआ है । प्रतिदिन तुम्हारे उपयोग करने से वह पात्र रिक्त (खाली) हो जाता है उसे ब्रह्माजी निश्चित रूप से तुम्हारे लिए बार-बार भरके रखते हैं। चरणों के पास सूर्यमण्डल और ऊपर विशुद्धि चक्र में षोडश कलायुक्त चन्द्रमण्डल दोनों भगवती के शृङ्गार के साधन हैं । सूर्यमण्डल मुकुट है तो चन्द्रमण्डल शृङ्गार का डिब्बा है । कृष्णपक्ष भगवती की रात्रि और शुक्लपक्ष दिवस है । शुक्ल और कृष्णपक्षों को देवताओं के दिन-रात कहते हैं ।।९४।।

ચંદ્રનુ કલંક કસ્તૂરી છે, તેનું બિંબ જલમય છે, સોળ કળાઓ રૂપી કર્પૂરખંડી વડે ચંન્દ્રરૂપી મરકત કરંડિઓ ભરાયેલો છે. તમારા હરરોજના ઉપયોગને લીધે આ કરંડિઓ ખાલી થઈ જાય છે. તેને ખરેખર તમારે ખાતર વિધિ (બ્રહ્મા) ફરી ફરી ભરે છે. (૯૪)

The dark spot (in the Moon) is musk. The moon's watery disc is the emerald container (cup), fully filed with refined camphor constituted by the Moon's digits, Hence it is true that Brahma refills again and again this cup which is emptied daily by Thy use (of its contents). [94]

---

**विशेष** - सर्वत्र अनुस्यूत देवता के रूप में प्रतिभासमान एक ही चिच्छक्ति उपाधि भेद से अनेक हो जाती है । एक ही चन्द्रमा तिथि भेद से अनेक रूप और नाम धारण करता है उसी तरह कृष्णपक्ष में कामेश्वरी से लेकर चित्रा नित्या तक प्रतिलोम गति से और शुक्लपक्ष में कामेश्वरी से लेकर चित्रा तक अनुलोम गति से उस-उस तिथि की नित्याएँ लक्षण कलाओं से प्रतिभाषित होती है । शङ्कराचार्य जी ने कहा है -

लास्यं सदा मनसि मे स्फुरतु त्वदीयं तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम् ।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं मध्ये त्रिकोणममृतं परमामृतार्द्रम् ।

## इष्टसाधक प्रयोग

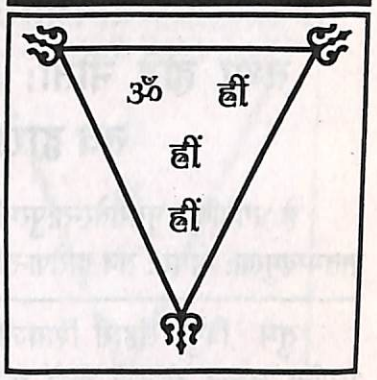


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **२५ दिन** तक यथोक्त विधान से पूजा करते हुए **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें। बीजाक्षर **'कं'** है। जप का दशांश हवन **'कं स्वाहा'** से, हवन का दशांश मार्जन **'कं मार्जयामि नमः'** से तथा मार्जन का दशांश तर्पण **'कं तर्पयामि नमः'** से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है। **मुग्दान्न, नारियल** एवं **केला** का नैवेद्य विहित है।

यथाविधि किए गए इस मंत्र के प्रयोग से **इष्ट की सिद्धि** होती है ॥९४॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'कलङ्क कस्तूरी' इति चतुर्नवत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। कं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
कं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहु-वल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्न-कङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु हन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा। आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः। त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि।

**पुरारातेरन्तः पुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः**
**सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा ।**
**तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलां**
**तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमाद्याभिरमराः ।।९५।।**

हे भगवति ! पुरारातेरन्तःपुरमसि । ततस्त्वच्चरणयोस्सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा । तथा हि- एते शतमखमुखाः अमराः तव द्वारोपान्तस्थितिभिः अणिमाद्याभिस्सह अतुलां सिद्धिं नीताः ।

---

तुम त्रिपुर संहारी शिवजी के अन्तःपुर की महाराज्ञी हो अतः तुम्हारे चरणों की पूजा की मर्यादा चञ्चल इन्द्रियों वाले मनुष्यों को सुलभ नहीं अर्थात् एकमात्र जितेन्द्रिय ही तुम्हारी पूजा कर सकते हैं । इन्द्रादि देवता जब तुम्हारी पूजा करने आये तब द्वार पर स्थित अणिमा आदि सिद्धियों के द्वारा रोक दिये गये । देवताओं के पास जो अणिमादि सिद्धियाँ होती है उनका स्थान भगवती के अन्तःपुर के बाहर ही है, जैसा कि श्रीचक्र के भूगृह के बहिर्द्वारों पर उनका स्थान बताया गया है । कहा है - 'देवो भूत्वा देवं यजेत्' और सिद्धियाँ भी अन्तःपुर में प्रवेश नहीं कर पाती । इसलिए असंयतेन्द्रिय चञ्चल चित्त वाले मनुष्यों की वहाँ तक गति ही दुर्लभ है । उनको भगवती की पूजा करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता ।।९५।।

**તમો પુરારાતિ (શિવ) નું અંતઃપુર છો, તેથી ચંચળ ઈન્દ્રિયોવાળા માટે તમારી ચરણ-પૂજાનું લક્ષ્ય સુલભ નથી. એમ છતાંય આ શતમખ (ઈન્દ્ર) જેમાં મુખ્ય છે તે અમરોએ અણિમા વગેરે અસામાન્ય દૈવી સિદ્ધિઓ તમારા દ્વારની બહાર ઊભા રહીને પ્રાપ્ત કરી ! (૯૫)**

Thou art the principal queen of the enemy of the cities. Hence the honour (privilege) of worshipping Thy feet is not easy for those whose senses are uncontrolled. Therefore it is that the celestials having Indra as their chief, have gained unequalled supernatural powers along with (or equal to those of) Anima and others abiding near Thy doorway. [95]

---

**विशेष** - प्रस्तुत श्लोक में असंयमी और अमर्यादित होते हुए भी सिद्धियों की कामना रखने वाले साधक की निन्दा और उसके विपरीत नितान्तनिर्मल अन्तःकरण वाले श्रद्धायुक्त साधक की प्रशंसा की गई है । वस्तुतः चञ्चल जल में चन्द्र प्रतिबिम्बित नहीं होता तो सहस्रार की स्वामिनी चञ्चलचित्त में कैसे दिखायी दे सकती है । वर्तमान समय में शक्ति की उपासना का रूप विकृत होता दिखाई दे रहा है जबकि साधक सिद्धियों के चक्कर में अपना जीवन होमते चले जा रहे हैं । यह मोक्ष का मार्ग नहीं ।

## व्रणापकरण प्रयोग

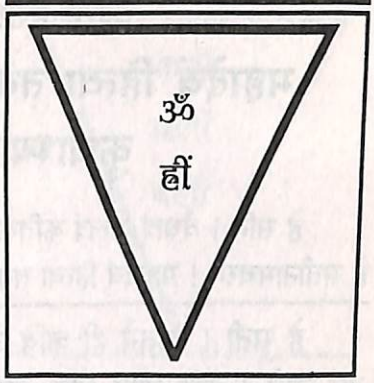


प्रस्तुत यन्त्र को **स्वर्णपत्र** में **चन्दन** से लिखकर तथा तिल के तेल मे डालकर **पूर्वाभिमुख** हो पूजनादि अनुष्ठान करते हुए **३ दिन** तक **प्रतिदिन १०८** मन्त्र का जाप करें और फिर वह तिल का तेल घाव पर लगावे । बीजाक्षर '**पुं**'है। जप का दशांश हवन '**पुं स्वाहा**'से, हवन का दशांश मार्जन '**पुं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**पुं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है। **तिल, अन्न** एवं **गुड** का नैवेद्य विहित है।

इस मंत्र के द्वारा अभिमन्त्रित तेल का घाव पर प्रयोग से **घाव (चोट) ठीक होते है** ॥९५॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'पुरारातेरन्तःपुरमसि' इति पञ्चनवत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। पुं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
पुं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमःअञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**विचित्रवसनां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम्। रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं पद्ममालाविभूषिताम् । मणिरत्नादि केयूररत्नहारैकविग्रहाम्। चतुर्वर्गप्रदां नित्यां नित्यानन्दमयीं पराम् । एवं ध्यात्वा पकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। अतः परं प्रवक्ष्यामि पकाराक्षरमव्ययम् । चतुर्वर्गप्रदं वर्णं त्रिशक्तिसहितं प्रिये! पञ्चदेवमयं वर्णं शरच्चन्द्रमयप्रभम् । कोटि-विद्युल्लताकारं, कुण्डली-मय-संयुतम्। पीत-कर्णां त्रिनयनां च, पीताम्बर-धरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत् । उकारं परमेशानि! अधःकुण्डलिनी स्वयम्। पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्च-प्राण-मयं देवि! चतुर्वर्ग-प्रदायकम्।।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**कलत्रं वैधात्रं कति कति भजन्ते न कवयः**
**श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः ।**
**महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे**
**कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः ।।९६।।**

हे सति ! वैधात्रं कलत्रं कतिकति कवयः न भजन्ते । श्रियो देव्याः कैरपि धनैः को वा पतिः न भवति । हे सतीनामचरमे ! महादेवं हित्वा तव कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः ।

---

हे सती ! कितने ही कवि अपने परिश्रम से ब्रह्म की सुपत्नी सरस्वती की कृपा के पात्र नहीं बन जाते ! और कौन थोड़ा-सा भी धनवान् होकर लक्ष्मीपति की सत्ता का अधिकरी नहीं बन जाता ? (धनाढ्य को धनपति या लक्ष्मीपति कहते हैं) । परन्तु हे पतिव्रताओं में अग्रणी! महादेव को छोड़कर तुम्हारे स्तनों (कुचों) का सम्पर्क (सङ्ग) तो कुरवक वृक्षों को भी दुर्लभ हैं ।।९६।।

કેટલા કવિઓએ વિધાતાની પત્ની (સરસ્વતી)ને નહિ ભોગવી હોય ? અથવા કાંઇક પણ ધન વડે કોણ દેવી નો પતિ ન બને ? સતીઓમા પ્રથમ, હે સતી ! તમારા સ્તનોનો આશ્લેષ મહાદેવ સિવાય કુરબક વૃક્ષને પણ અપ્રાપ્ય છે. (૯૬)

Oh Foremost among the chaste ! How many are the poets who do not court Brahma's wife ? who does not become the lord of Lakshmi with only some riches ? Except Mahadeva, the embrace of Thy breasts is not attainable even by the kuravaka tree. [96]

---

**विशेष** - यहाँ भगवती का आसङ्ग आलिङ्गन करने से शक्ति के जागृत होने पर उसकी क्रिया अथवा उसके आवेश का अपने शरीर में अनुभव करने से अभिप्राय है परन्तु वह कुरवक अर्थात् कषाययुक्त, कुतर्की, कुवादियों को सुलभ नहीं होता । शक्ति के जागृत होने पर तो मनुष्य शिव तुल्य हो जाता है ।

भगवती की कृपा से अणिमादि सिद्धियाँ प्राप्त कर लेना, बहुशास्त्र रचना कौशल अथवा कवित्व की असीम शक्ति प्राप्त कर लेना तथा अपार लक्ष्मी प्राप्त कर लेना इस संसार में निश्चय ही सरल कार्य है लेकिन भगवती पराम्बा की कृपा प्राप्त करना, उनका विश्वस्त बनना दुर्लभ है ।

कुरवक एक प्रकार का वृक्ष होता है जिसमें पीले, लाल और नीले रङ्ग के फूल होते हैं । लाल फूलों वाला कुरवक कहलाता है । पीले फूलों वाला कुरुण्टक कहलाता है और नीले फूलों वाले को झिण्टी कहा जाता है । कुत्सित रव अर्थात् शब्द वाला कुरवक है ।

## विद्याप्राप्ति प्रयोग

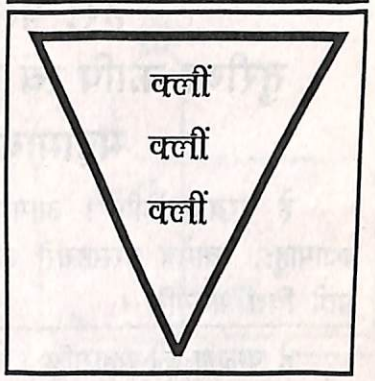


प्रस्तुत यन्त्र को **किसी पत्र पर** (जिसको धारण किया जा सके) **सफेद अकोना के दूध** से लिखकर नित्यपूजनपूर्वक **पूर्वाभिमुख** हो **८ दिन** तक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करे। बीजाक्षर '**कं**' है। जप का दशांश हवन '**कं स्वाहा**' से हवन का दशांश मार्जन '**कं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**कं तर्पयामि नमः**' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है। **शहद, दूध** एवं **खीर** का नैवेद्य विहित है।

सम्यगनुष्ठित इस मंत्र के प्रयोग से **विद्या प्राप्ति** होती है। विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए समान रूप से उपयोगी प्रयोग है। ॥९६॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'कलत्रं वैधात्रं कति' इति षण्णवत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। कं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
कं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्नकङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु ह्रन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा। आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः। त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि।

**गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदो**
**हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम् ।**
**तुरीया कापि त्वं दुरधिगमनिस्सीममहिमा**
**महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि ।।९७।।**

हे परब्रह्ममहिषि ! आगमविदः त्वामेव द्रुहिणगृहिणीं गिरां देवीमाहुः, त्वमेव हरेः पत्नीं पद्मामाहुः, त्वामेव हरसहचरीं अद्रितनयामाहुः, त्वं तुरीया कापि दुरधिगमनिस्सीममहिमा महामाया सती विश्वं भ्रमयसि ।

---

हे परब्रह्म की महाराज्ञि ! वेदों के ज्ञाता तुम्हीं को ब्रह्मा की पत्नी सरस्वती (वाग्देवी) कहते हैं, तुम्हीं को हरि की पत्नी लक्ष्मी तथा शिवजी की पत्नी पार्वती भी कहते हैं । परन्तु तुम इन तीनों से परे कोई चौथी महामाया ही हो । तुम्हारी महिमा अप्राप्य, अपार है, तुमने सारे विश्व को भ्रम में डाल रखा है, तुमको जानना कठिन है । सरस्वती का बीजमंत्र ऐं, लक्ष्मी का श्रीं, पार्वती का क्लीं, और महामाया का बीज मन्त्र ह्रीं है । वाग्भव कूट का तीसरा अक्षर शक्ति का वाचक है और वर्णमाला का चौथा अक्षर होने से तुरीय पद समाधि का द्योतक है और वह सब बीजाक्षरों के अन्त में रहता है । अनुस्वार भी सदा शक्ति के साथ रहता है, वह शिवात्मक है । इसे कामकला कहते हैं । कामकला का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर साधक जगदम्बा की कृपा सहज में ही प्राप्त कर लेता है ।।९७।।

શાસ્ત્રોના જાણકારો, દ્રુહિણ (બ્રહ્મા)ની પત્ની (સરસ્વતી)ને વાણીની દેવી કહે છે. હરિની પત્નીને પદ્મા (લક્ષ્મી) કહે છે અને હરની સહચરીને પાર્વતી કહે છે. તમે કોઇ અનન્ય ચતુર્થ, પહોંથી ન શકાય એવાં અને નિઃસીમ મહિમાવાળાં છો. હે મહામાયા ! હે પરબ્રહ્મ (સદાશિવ)નાં પત્ની ! તમે આખું વિશ્વ ભમાવો છો. (૯૭)

Oh Queen Consort of the Para-Brahman ! Those who know the Agamas call the goddess of Learning as the housewife of Brahma, call Padma as the wife of Hari and the daughter of the Mountain as the Companion of Hara. Thou, the indescribable Fourth, the great Maya with Thy unfathomble, limitless trancendence deludeth the universe. [97]

---

**विशेष** - भगवती ललिता ही कभी-कभी पुरुष बन राम अथवा कृष्ण की लीलाएँ करती हैं । जैसाकि तन्त्रराज में कहा गया है - कदाचिदाद्या ललिता पुरूषां कृष्णविग्रहा । वेणुनादसमारम्भादकरोद्विवशं जगदिति ।वस्तुतः सब एक ही हैं 'एक स्वरूप सदा द्वय नाम । आनन्द की आह्लादिनि श्यामा । आह्लादिनि के आनन्द श्याम ।'

## शारीरिकदृढ़ताकर प्रयोग

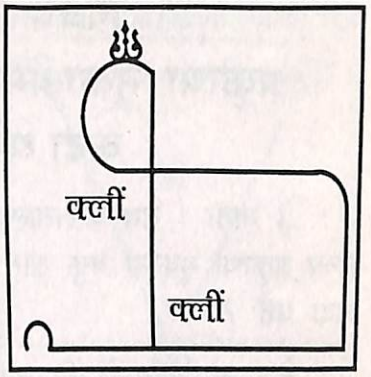


प्रस्तुत यन्त्र को **सोन अथवा ताँबे के किसी पत्र पर** (जिसको धारण किया जा सके) **चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **८ दिन** तक पूजनादि करते हुए **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें और फिर गले में धारण करे । बीजाक्षर '**कं**' है । जप का दशांश हवन '**कं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**कं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**कं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शाल्यन्न ,दूध** एवं **खीर** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **विद्या प्राप्ति** होती है तथा शारीरिक दृढता प्राप्त होती है ॥९७॥

**विनियोग**

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'गिरामाहुर्देवी द्रुहिण' इति सप्तनवत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। गिं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

**कराङ्गन्यासौ**

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

**ऋष्यादिन्यास**

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
गिं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

**ध्यानम्**

**दाडिमीपुष्पसङ्काशां चतुर्बाहुसमन्वितां। रक्ताम्बरधरां नित्यां रक्तालङ्कारभूषिताम्। एवं ध्यात्वा गकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। पञ्चप्राणमयं वर्णं सर्वशक्त्यात्मकं प्रिये!। तरुणादित्यसङ्काशां कुण्डलीं प्रणमाम्यहं। अग्राकुञ्चितरेखा या गणेशी सा प्रकीर्त्तिता। ततो दक्षगता या तु कमला तत्र संस्थिता। अधोगता गया या तु तस्यामीश सदा वसेत्।।इकारं परमानन्दं सुगन्धं कुङ्कुमच्छविः। हरिब्रह्ममयं वर्णं सदाशिवमयं प्रिये!।महाशक्तिमयं देवि! गुरुब्रह्ममयं तथा। विश्वत्रयमयं वर्णं परब्रह्मसमन्वितं।ऊर्ध्वाधः कृञ्जितामध्ये रेखा तत्सङ्गता भवेत् । लक्ष्मीर्वाणी तथेन्द्राणी क्रमात् तास्वेव संवसेत् ।धूम्रवर्णां महारौद्रीं पीताम्बरयुतां पराम्। कामदां सिद्धिदां सौम्यां नित्योत्साहविवर्द्धिनीं। चतुर्भुजां च वरदां हरिचन्दनभूषिताम्।।**

**पञ्चोपचार पूजन**

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं**
**पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम् ।**
**प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया**
**कदा धत्ते वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम् ।।९८।।**

हे मातः ! तव कलितालक्तकरसं चरणनिर्णेजनजलं विद्यार्थी अहं कदा काले पिबेयं कथय । तच्च प्रकृत्या मूकानां वक्तुं श्रोतुं अशिक्षितानामपि च कविताकारणतया वाणीमुखकमलताम्बूलरसतां कदा धत्ते ?

---

हे माता ! बताओ, कि वह समय कब आयेगा ! जब मुझ ब्रह्मविद्या के महत्त्वाकांक्षी विद्यार्थी को तुम्हारे चरणों का प्रक्षालन किया हुआ (चरणोदक), 'जो लाक्षारस (महावर) के मिश्रण से रक्त हो रहा है', प्राप्त होगा । सरस्वती देवी के मुँह में चबाए हुए ताम्बूल रस के समान तुम्हारा पादतीर्थ जो जन्म से ही गूँगे को भी माधुर्यपूर्ण कविता रचने की क्षमता प्रदान करने में समर्थ है, वह मुझे कब प्राप्त होगा ? ॥९८॥

મને કહો માતા ! કયા સમયે આપનું લાક્ષાભિશ્રિત પાદપ્રક્ષાલનજળ હું વિદ્યા પ્રાપ્તકરવાના હેતુથી પીઉં ? તે જળ જન્મથી મૂંગાને પણ કવિ બનાવવાના ગુણને લીધે વાણી (સરસ્વતી) ના કમળ વદનના તામ્બૂલનું રસત્વ ધરાવે છે.(૯૮)

Oh Mother ! Tell me when shall I, seeking knowledge, drink the water cleansing Thy feet (padodakam-water used for ablutions of the feet) which (water) is mixed with the juice of red lac and which resembles the juice of chewed betel (pansupari or tambula) of the lotus-like mouth of Sarasvati with the innate characteristic of being the cause for poesy in even the dumb. [98]

---

**विशेष** - गूँगों को भी मुखर बनाने वाला तुम्हारा यह चरणोदक है क्योंकि तुमने अनेक लोगों को मूक से वाचाल कर दिया है । देखा तो यह गया है कि तीनों कालों में बोलने में अशक्त पुरुष भी तुम्हारा चरणोदक पाते ही स्तुतिपटु हो गये । कालिदास आदि महाकवि की कथा से कौन अनभिज्ञ है । जो मूर्खता की सीमा को लाँघते थे वही आज तुम्हारे मुखकमलताम्बूल के लवलेश को प्राप्त कर महाकवि के रूप में प्रसिद्ध है । माता! शैशवकाल में तुमने कृपा कर मुझे अपने स्तन्यपान से कृतकृत्य किया था सम्भवतः उसी दुग्धपान के प्रभाव से आज मैं आपकी स्तुति कर पा रहा हूँ । परन्तु आज आपके चरणकमलों के प्रक्षालित जल की माधुरी के अनुभव को मन ललचा रहा है । विद्या चौदह, अट्ठारह अथवा चौसठ हैं जिनकी कामना करने वाला विद्यार्थी कहलाता है । यहाँ समस्त वेदशास्त्रादि में प्रौढ़ता अभीप्सित है ।

## सरस्वतीसिद्धिद प्रयोग

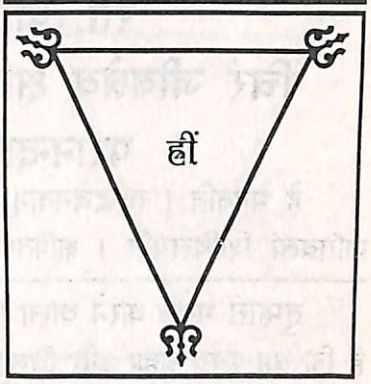


प्रस्तुत यन्त्र को **सोने के किसी पत्र पर** (जिसको धारण किया जा सके) **अनार की कलम तथा चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **८ दिन** तक पूजन करते हुए **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें फिर यन्त्र का गले में धारण करे । बीजाक्षर '**कं**' है । जप का दशांश हवन '**कं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**कं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**कं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें ।फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है । **शहद मात्र** का नैवेद्य भगवती का विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **विद्या प्राप्ति** होती है । स्त्रियों को गर्भधारण तथा पुरुषों को बहुवृष्यता होती है ॥९८॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'कदाकाले मातः कथय' इति अष्टानवत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। कं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आ ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं .....अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
कं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**जवापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्नकङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारं ध्यात्वा तु ह्रन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीर्तिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डली चांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा।आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः।त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रकीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते**
**रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा ।**
**चिरं जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः**
**परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान् ।।९९।।**

हे भगवति ! त्वद्भजनवान् सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नस्सन् विहरते । रम्येण वपुषा रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति । क्षपितपशुपाशव्यतिकरः चिरञ्जीवन्नेव परानन्दाभिख्यं रसं रसयति ।

---

तुम्हारा भजन करने वाला (पूजा करने वाला) भक्त इतनी विद्या तथा सम्पत्ति प्राप्त कर लेता है कि वह स्वयं ब्रह्मा और विष्णु की ईष्या का पात्र बनकर सुखी बनता है । भगवती के अनुग्रह से प्राप्त शारीरिक सौन्दर्य से युक्त कामदेव की पत्नी रतिदेवी का सतीत्व भी विचलित हो जाता है। पशुपाश (पशुत्व) तथा कर्मबन्धन से मुक्ति प्राप्तकर चिरञ्जीव बनकर परमानन्द के रस का रसास्वाद लेता हुआ जीवित रहता है । बन्धन में पड़ा हुआ जीव पशु कहलाता है और राग रूपी पाश संसार रूपी खूँटे से बाँधने की रस्सी है । कहीं कहीं आठपाशों का भी वर्णन मिलता है- घृणा, लज्जा, भय, निद्रा, शोक, जाति, कुल और शील । परन्तु भावोपनिषद् एवं श्वेताश्वेतरोपनिषद् में मोह को ही पाश माना है ।।९९।।

વિધિ અને હરિનો હરીફ થઇ તે સરસ્વતી અને લક્ષ્મી સાથે વિહાર કરે છે. રમ્ય શરીરથી તે રતિનું પાતિવ્રત્ય શિથિલ કરે છે.ચિરંજીવી તે આત્મા ના બંધન ને ઓગાળી નાંખે છે અને પરબ્રહ્મ નામનો રસ માણે છે – તે છે તમારો ભક્ત. (૯૯)

Thy worshipper lives with Sarasvati and Lakshmi as a rival to Brahma and Vishnu and with a handsome personality shatters Rati's devotion to her lord. Endowed with long life with his association with the Jiva and his ignorance cast away, he enjoys the sweetness of what is known as Supreme Bliss. [99]

---

**विशेष** - पशुत्व की निवृत्ति तो पशुपति ही कर सकते हैं । तैत्तिरीय संहिता में 'तेषामसुराणाम् 'से लेकर 'तस्माद्रुद्रः पशूनामधिपतिः' तक जीव को पशु के रूप में प्रतिपादित किया गया है । अतः जीव की अविद्या ही पशुपाश है,उनका परस्पर व्यतिरेक ही सम्बन्ध है , वही विदलित पशुपाशसम्बन्ध सदाशिव के रूप में अवस्थित होता है । तुम्हारा भक्त उसी परानन्दात्मक ज्योतिरूप रस का आस्वादन करता है ।

कुलालचक्रभ्रमणन्याय से अविद्या की निवृत्ति भी जीवन्मुक्त के लिए देह सम्बन्ध है । षष्ठीतन्त्र में इसकी व्याख्या यूँ की गयी है -

सम्यग्ज्ञानाधिगमाद्धर्मादीनामकारणप्राप्तौ । तिष्ठति संस्कार वशात् चक्रभ्रमवद्धृतशरीरः ।।

## शौर्यवर्द्धक प्रयोग

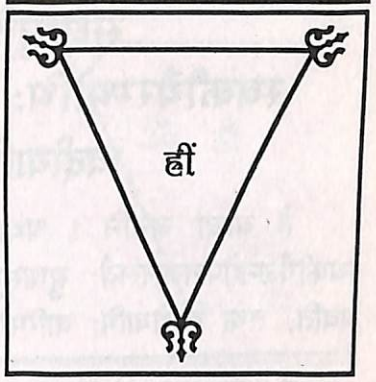


प्रस्तुत यन्त्र को **सोने के किसी पत्र पर** (जिसको धारण किया जा सके) **अनार की कलम तथा चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **८ दिन** तक पूजन पूर्वक **प्रतिदिन १०००** मन्त्र का जाप करें और फिर गले में धारण करे । बीजाक्षर '**कं**' है। जप का दशांश हवन '**कं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**कं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**कं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें । **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है । **त्रिमधु , उडद के बडे तथा शहद** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **विद्या प्राप्ति** के साथ-साथ ओज,तेज और शौर्य बढता है ॥९९॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरि' इति नवनवत मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामना पूर्ज्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ध्यानम्

**करीष-भूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्।**
**अस्थि-माल्यामष्ट-भुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्।**
**नागेन्द्र-हार-भूषाढ्यां जटा-मुकुट-मण्डिताम्।**
**सर्वसिद्धि-प्रदां नित्यां धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।**
**एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।**
**सकारं शृणु चार्वाङ्गि! शक्ति-बीजं परात्परम्।**
**कोटि-विद्युल्लताकारं कुण्डली-मय-संयुतम्।**
**पञ्च-देव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा।**
**रजस्सत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दु सहितं सदा।**

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः .....शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः..... हृदि।
सं बीजाय नमः.....लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै
..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

**प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधिः**
**सुधासूतेश्चन्द्रोपलजललवैरर्घ्यरचना ।**
**स्वकीयैरम्भोभिः सलिलनिधिसौहित्यकरणं**
**त्वदीयाभिर्वाग्भिस्तव जननि वाचां स्तुतिरियम् ।।१००।।**

हे वाचां जननि ! यथा स्वकीयाभिः प्रदीपज्वालाभिः दिवसकरनीराजनविधिः, यथा स्वकीयैश्चन्द्रोपलजललवैः सुधासूतेरर्घ्यरचना भवति, यथा स्वकीयैरम्भोभिस्सलिलनिधिसौहित्यकरणं भवति, तथा त्वदीयाभिः वाग्भिरेव तवेयं स्तुतिः ।

---

हे माता ! तुम्हारे द्वारा प्रदान की हुई वाक्शक्ति से की गई तुम्हारी स्तुति के शब्द इस प्रकार हैं जिस प्रकार कि कर्पूर की ज्वालाओं से सूर्य को नीराजन दिखाना, अमृत किरणों की वर्षा करते हुए चन्द्र को चन्द्रकान्त शिला से पसीजते हुए जल की बूँदों से अर्ध्य देना तथा जलधि के जल से ही जलधि को अर्ध्य प्रदान करना ।।१००।।

પ્રદીપની જ્વાળાઓથી સૂર્યની આરતી વિધિ કરવી, અમૃતના સ્રોત (ચંદને) ને ચંદ્રકાંત મણિના જલ લવથી અર્ઘ્ય અર્પવો, સલિલનિધિનું તેના પોતાના જ પાણીથી તર્પણ કરવું, તેના જેવી, હે વાણીની જનની ! તમારી વાણીથી રચાયેલી આ તમારી સ્તુતિ છે. (૧૦૦)

Oh Mother of Speech ! Like unto the waving (in adoration) of the flames of lamps before the Sun like offering unto the Moon (asoblation of water) the drops of water got from the moonstone, and similar to satisfying the occan (by offering) to it, its own water, is this Thy praise (hymn or stotra), in words that have emanated from Thee. [100]

---

**विशेष-** यह परा, पश्यन्ती ,मध्यमा और मातृकामयी वैखरी वाणी में अनुस्यूत स्तुति माता तूने ही रची है । मैं इसमें कथमपि कारण नहीं हूँ । क्योंकि दीपक तेल का सान्निध्य पा सभी वस्तुओं को प्रकाशित करता है । जैसे कोई सागर में निमज्जन कर उसी जल से सागर को अर्घ्य प्रदान करे ठीक उसी प्रकार तुम्हारे द्वारा दी गई वाणी और शक्ति से मैं तुम्हारी स्तुति करने का श्रेय मात्र ले रहा हूँ । नीराजन अन्धकार अथवा अमङ्गल की निवृत्ति के लिए परम्परा से अनुष्ठित अनुष्ठान है । वस्तुतः यह दोनों ही सूर्य में संभव नहीं हैं परन्तु सभी लोग अपने स्वार्थ के लिए सूर्य को नीराजनविधि करते हैं । अग्नि और सूर्य की एकता है जिसका निदर्शन वेदों में 'अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः' आदि मन्त्रों से प्रदर्शित है ।

हे भगवती ! मैं अज्ञ सदानन्द ब्रह्मचारी गुरुकृपा से आपकी यत्किञ्चित् सेवा में तत्पर हूँ ।

## सकलकार्यसाधक प्रयोग

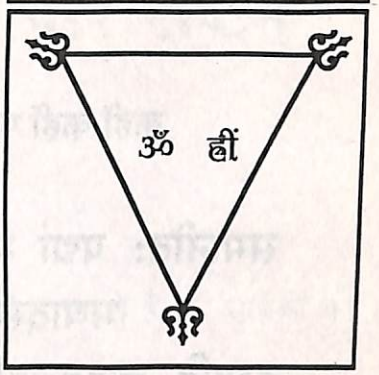


प्रस्तुत यन्त्र को **सोने के किसी पत्र पर** (जिसको धारण किया जा सके) **अनार की कलम तथा चन्दन** से लिखकर **पूर्वाभिमुख** हो **१६ दिन** तक पूजनादि करते हुए **प्रतिदिन १००० मन्त्र** का जाप करें और फिर गले में यन्त्र को धारण करे । बीजाक्षर '**कं**' है । जप का दशांश हवन '**कं स्वाहा**' से, हवन का दशांश मार्जन '**कं मार्जयामि नमः**' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण '**कं तर्पयामि नमः**' से करें । तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का जाप करें । फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति द । **रक्तकमल, बिल्वफल, द्राक्षा, पायस** हवनीय द्रव्य है । **नारियल एवं केले** का नैवेद्य विहित है ।

इस मंत्र के प्रयोग से **साधक की सकलकामनाओं की सिद्धि निश्चित रूप से होती** है ॥१००॥

### विनियोग

अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी महाविद्याशताक्षरी बीजमन्त्राणां 'प्रदीपज्वालाभिर्दिवस' इति शततम मन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायःत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। प्रं बीजं । ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकं । मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

### कराङ्गन्यासौ

ह्रां ..... अंगुष्ठाभ्यां नमः .... हृदयाय नमः।
ह्रीं ..... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।
ह्रूँ ..... मध्यमाभ्यां वषट् ... शिखायै वषट्।
ह्रैं ..... अनामिकाभ्यां हुं ..... कवचाय हुम्।
ह्रौं ..... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् . नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ..... अस्त्राय फट्।

### ऋष्यादिन्यास

ईशान भैरवाय ऋषये नमः ..... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टुप् छन्दोभ्यां नमः ..... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः ..... हृदि।
प्रं बीजाय नमः ..... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः ..... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः ..... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगायनमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

### ध्यानम्

**विचित्रवसनां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम् ।रक्तचन्दनलिप्ताङ्गीं पद्ममालाविभूषिताम्।**
**मणिरत्नादि केयूररत्नहारैकविग्रहाम् ।चतुर्वर्गप्रदां नित्यां नित्यानन्दमयीं पराम् ।**
**एवं ध्यात्वा पकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत् ।अतः परं प्रवक्ष्यामि पकाराक्षरमव्ययम्।**
**चतुर्वर्गप्रदं वर्णं त्रिशक्तिसहितं प्रिये !पञ्चदेवमयं वर्णं शरच्चन्द्रमयप्रभम् ।**
**ललज्जिह्वां महारौद्रीं रक्तास्यां रक्तलोचनाम्।रक्तमाल्याम्बरधरां रक्तालङ्कारभूषिताम्।**
**रक्तवर्णामष्टभुजां रक्तपुष्पोपशोभिताम्।महामोक्षप्रदां नित्यां अष्टसिद्धिप्रदायिकाम्।**
**एवं ध्यात्वा ब्रह्मरूपां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्।रेफं च चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीद्वयसंयुतम्।**
**रक्तविद्युल्लताकारं पञ्चदेवात्मकं सदा।त्रिशक्तिसहितं देवि! आत्मादितत्त्वसंयुतम्।**
**सर्वतेजोमयं वर्णं सततं मनसि चिन्तयेत्।**

### पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... गन्धं परिकल्पयामि ।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... पुष्पं परिकल्पयामि ।
यं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... दीपं परिकल्पयामि ।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै ..... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

कहीं कहीं पाठभेद से निम्न श्लोक भी प्राप्त होते हैं –

**समानीतः पद्मां मणिमुकुरतामम्बरमणिः**
**भयादस्यान्तः तिमितकिरणश्रेणिमसृणः ।**
**दधाति त्वद्वक्त्रप्रतिफलनमश्रान्तविकचं**
**निरातङ्कं चन्द्रान्निजहृदयपङ्केरुहमिव ।।१०१।।**

**समुद्भूतस्थूलस्तनभरमुरश्चारुहसितं**
**कटाक्षे कन्दर्पाः कतिचन कदम्बद्युति वपुः ।**
**हरस्य त्वद्भ्रान्तिं मनसि जनयन्ति स्म विमलाः**
**भवत्या ये भक्ताः परिणतिरमीषामियमुमे ।।१०२।।**

**निधे नित्यस्मेरे निरवधिगुणे नीतिनिपुणे**
**निराघाटज्ञाने नियमपरचित्तैकनिलये ।**
**नियत्या निर्मुक्ते निखिलनिगमान्तस्तुतपदे**
**निरातङ्के नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम् ।।१०३।।**

**इति श्रीमदाद्यशङ्कराचार्यविरचिता सौन्दर्यलहरी समाप्ता ।**

श्री सदानन्दब्रह्मचारिकृत संस्कृत-अंग्रेजी-गुजराती भावानुवाद तथा संकलनात्मक टिप्पणी से अलङ्कृत सौन्दर्यलहरी समाप्त ।

# परिशिष्टम्

# सौन्दर्य-लहरी

## (मूलपाठ)

सौन्दर्य-लहरी ऐसा स्तोत्र है जिसका साधकगण नित्यपाठ किया करते हैं उन साधकों को ध्यान में रखकर यहाँ मूलपाठ दिया जा रहा है ।

**शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं**
**न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि ।**
**अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्चादिभिरपि**
**प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ।।१।।**

**तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्केरुहभवं**
**विरिञ्चिः संचिन्वन्विरचयति लोकानविकलम्।**
**वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसां**
**हरः संक्षुद्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम् ।।२।।**

**अविद्यानामन्तस्तिमिरमिहिरद्वीपनगरी**
**जडानां चैतन्यस्तबकमकरन्दस्रुतिझरी ।**
**दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ**
**निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवति ।।३।।**

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण-
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ।।४।।

हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरानारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् ।
स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम् ।।५।।

धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पञ्च विशिखाः
वसन्तः सामन्तो मलयमरुदायोधनरथः।
तथाऽप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपा-
मपाङ्गात्ते लब्ध्वा जगदिदमनङ्गो विजयते ।।६।।

क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता
परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना ।
धनुर्बाणान् पाशं सृणिमपि दधाना करतलैः
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका ।।७।।

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे ।

शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम् ।।८।।

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि ।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्त्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे ।।९।।

सुधाधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितैः
प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरपि रसाम्नायमहसः ।
अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयं
स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि ।।१०।।

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।
त्रयश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय-
त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः ।।११।।

त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं
कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चिप्रभृतयः ।
यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम् ।।१२।।

नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं
तवापाङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः ।
गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्रस्तसिचया
हठात्त्रुट्यत्काञ्च्यो विगलितदुकूला युवतयः ।।१३।।

क्षितौ षट्पञ्चाशद्द्विसमधिकपञ्चाशदुदके
हुताशे द्वाषष्टिश्चतुरधिकपञ्चाशदनिले ।
दिवि द्विःषट्त्रिंशन्मनसि च चतुःषष्टिरिति ये
मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम् ।।१४।।

शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमुकुटां
वरत्रासत्राणस्फटिकघटिकापुस्तककराम् ।
सकृन्न त्वा नत्वा कथमिव सतां सन्निदधते
मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणाः फणितयः ।।१५।।

कवीन्द्राणां चेतः कमलवनबालातपरुचिं
भजन्ते ये सन्तःकतिचिदरुणामेव भवतीम् ।
विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतरशृङ्गारलहरी-
गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी ।।१६।।

सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभि-
र्वशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि सञ्चिन्तयति यः ।

स कर्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गिरुचिभि-
र्वचोभिर्वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः ।।१७।।

तनुच्छायाभिस्ते तरुणतरणिश्रीसरणिभि-
र्दिवं सर्वामुर्वीमरुणिमनिमग्नां स्मरति यः ।
भवन्त्यस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयनाः
सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाणगणिकाः ।।१८।।

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
हरार्धं ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम् ।
स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम् ।।१९।।

किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरुम्बामृतरसं
हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः ।
स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव
ज्वरप्लुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधाधारसिरया ।।२०।।

तटिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं
निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम् ।
महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा
महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लादलहरीम् ।।२१।।

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा-
मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः ।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदाम् ।।२२।।

त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा
शरीरार्धं शम्भोरपरमपि शङ्के हृतमभूत् ।
यदेतत्त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं
कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमुकुटम् ।।२३।।

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते
तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति ।
सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्णाति च शिव-
स्तवाज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः ।।२४।।

त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव शिवे
भवेत्पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता ।
तथा हि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे
स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः ।।२५।।

विरिञ्चिः पञ्चत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं
विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम् ।

वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि संमीलितदृशा
महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ ।।२६।।

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ।।२७।।

सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं
विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः ।
करालं यत्क्ष्वेलं कवलितवतः कालकलना
न शंभोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा ।।२८।।

किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभभिदः
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारिमकुटम्।
प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभमुपयातस्य भवनं
भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते ।।२९।।

स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाद्याभिरभितः
निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः ।
किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतः
महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम् ।।३०।।

चतुष्षष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः ।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना-
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम् ।।३१।।

शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः ।
अमी हल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिताः
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम् ।।३२।।

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनो-
र्निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः ।
भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः
शिवाग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराहुतिशतैः ।।३३।।

शरीरं त्वं शंभोः शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं
तवात्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनघम् ।
अतः शेषः शेषीत्ययमुभयसाधारणतया
स्थितः सम्बन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः ।।३४।।

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम् ।

त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन बिभृषे ।।३५।।

तवाज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरं
परं शंभुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता ।
यमाराध्यन् भक्त्या रविशशिशुचीनामविषये
निरालोकेऽलोके निवसति हि भालोकभुवने ।।३६।।

विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं
शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम् ।
ययोः कान्त्या यान्त्याः शशिकिरणसारूप्यसरणे-
र्विधूतान्तर्ध्वान्ता विलसति चकोरीव जगती ।।३७।।

समुन्मीलत्संवित्कमलमकरन्दैकरसिकं
भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम् ।
यदालापादष्टादशगुणितविद्यापरिणति-
र्यदादत्ते दोषाद्गुणमखिलमद्भ्यः पय इव ।।३८।।

तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं
तमीडे संवर्तं जननि महतीं तां च समयाम् ।
यदालोके लोकान्दहति महति क्रोधकलिते
दयार्द्रा या दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति ।।३९।।

तटित्त्वन्तं शक्त्या तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया
स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्धेन्द्रधनुषम् ।
तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणं
निषेवे वर्षन्तं हरमिहिरतप्तं त्रिभुवनम् ।।४०।।

तवाधारे मूले सह समयया लास्यपरया
नवात्मानं मन्ये नवरसमहाताण्डवनटम् ।
उभाभ्यामेताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमज्जगदिदम् ।।४१।।

गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितं
किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः ।
स नीडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं
धनुः शौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम् ।। ४२।।

धुनोतु ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्दीवरवनं
घनस्निग्धश्लक्ष्णं चिकुरनिकुरुम्बं तव शिवे ।
यदीयं सौरभ्यं सहजमुपलब्धुं सुमनसो
वसन्त्यस्मिन्मन्ये बलमथनवाटीविटपिनाम् ।।४३।।

तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी-
परीवाहस्रोतः सरणिरिव सीमन्तसरणिः ।

वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर-
द्विषां वृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम् ।।४४।।

अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्रीभिरलकैः
परीतं ते वक्त्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम् ।
दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचिकिञ्जल्करुचिरे
सुगन्धौ माद्यन्ति स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः ।।४५।।

ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यत्
द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम् ।
विपर्यासन्यासादुभयमपि संभूय च मिथः
सुधालेपस्यूतिः परिणमति राकाहिमकरः ।।४६।।

भ्रुवौ भुग्ने किञ्चिद्भुवनभयभङ्गव्यसनिनि
त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररुचिभ्यां धृतगुणम् ।
धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः
प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तरमुमे ।।४७।।

अहस्सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया
त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया ।
तृतीया ते दृष्टिर्दरदलितहेमाम्बुजरुचिः
समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम् ।।४८।।

विशाला कल्याणी स्फुटरुचिरयोध्या कुवलयैः
कृपाधाराऽऽधारा किमपि मधुराऽऽभोगवतिका ।
अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया
ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते ।।४९।।

कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकं
कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम् ।
अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरलौ
असूयासंसर्गादलिकनयनं किञ्चिदरुणम् ।।५०।।

शिवे शृङ्गारार्द्रा तदितरजने कुत्सनपरा
सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते विस्मयवती ।
हराहिभ्यो भीता सरसिरुहसौभाग्यजननी
सखीषु स्मेरा ते मयि जननि दृष्टिस्सकरुणा ।। ५१।।

गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव पक्ष्माणि दधती
पुरां भेत्तुश्चित्तप्रशमरसविद्रावणफले ।
इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके
तवाकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः ।।५२।।

विभक्तत्रैवर्ण्यं व्यतिकरितलीलाञ्जनतया
विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते ।

पुनस्स्रष्टुं देवान् द्रुहिणहरिरुद्रानुपरतान्
रजस्सत्त्वं बिभ्रत्तम इति गुणानां त्रयमिव ।।५३।।

पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये
दयामित्रैर्नेत्रैररुणधवलश्यामरुचिभिः ।
नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं
त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि सम्भेदमनघम् ।।५४।।

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
तवेत्याहुस्सन्तो धरणिधरराजन्यतनये ।
त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः
परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दृशः ।।५५।।

तवापर्णे कर्णे जपनयनपैशुन्यचकिताः
निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाश्शफरिकाः ।
इयं च श्रीर्बद्धच्छदपुटकवाटं कुवलयं
जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति ।।५६।।

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ।।५७।।

अरालं ते पालीयुगलनगराजन्यतनये
न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम् ।
तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लङ्घ्य विलस-
न्नपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसन्धानधिषणाम् ।।५८।।

स्फुरद्गण्डाभोगप्रतिफलिततताटङ्कयुगलं
चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम् ।
यमारुह्य द्रुह्यत्यवनिरथमर्केन्दुचरणं
महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते ।। ५९।।

सरस्वत्यास्सूक्तीरमृतलहरीकोशलहरीः
पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरलम् ।
चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः कुण्डलगणो
झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ते ।।६०।।

असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशध्वजपटि
त्वदीयो नेदीयः फलतु फलमस्माकमुचितम् ।
वहत्यन्तर्मुक्ताः शिशिरकरनिश्वासगलितं
समृद्ध्या यत्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः ।।६१।।

प्रकृत्या रक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता ।

न बिम्बं तद्बिम्बप्रतिफलनरागादरुणितं
तुलामध्यारोढुं कथमिव विलज्जेत कलया ।।६२।।

स्मितज्योत्स्नाजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां
चकोराणामासीदतिरसतया चञ्चुजडिमा ।
अतस्ते शीतांशोरमृतलहरीमाम्लरुचयः
पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काञ्जिकधिया ।। ६३।।

अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाम्रेडनजपा
जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा ।
यदग्रासीनायाः स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी
सरस्वत्या मूर्तिः परिणमति माणिक्यवपुषा ।।६४।।

रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरस्त्रैः कवचिभि-
र्निवृत्तैश्चण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः ।
विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकलाः
विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूलकबलाः ।।६५।।

विपञ्च्या गायन्ती विविधमपदानं पशुपतेः
त्वयारब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने ।
तदीयैर्माधुर्यैरपलपिततन्त्रीकलरवां
निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम् ।।६६।।

कराग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया ।
करग्राह्यं शम्भोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते
कथङ्कारं ब्रूमस्तव चुबुकमौपम्यरहितम् ।।६७।।

भुजाश्लेषान्नित्यं पुरदमयितुः कण्टकवती
तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम् ।
स्वतः श्वेता कालागुरुबहुलजम्बालमलिना
मृणालीलालित्यं वहति यदधो हारलतिका ।।६८।।

गले रेखास्तिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे
विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसंख्याप्रतिभुवः ।
विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवां
त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते ।। ६९।।

मृणाली मृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणां
चतुर्भिस्सौन्दर्यं सरसिजभवस्स्तौति वदनैः ।
नखेभ्यः सन्त्रस्यन् प्रथममथनादन्धकरिपोः
चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया ।।७०।।

नखानामुद्योतैर्नवनलिनरागं विहसतां
कराणां ते कान्तिं कथय कथयामः कथमुमे ।

कयाचिद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं
यदि क्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारसचणम् ।।७१।।

समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुगं
तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुतमुखम् ।
यदालोक्याशङ्काकुलितहृदयो हासजनकः
स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झटिति ।।७२।।

अमू ते वक्षोजावमृतरसमाणिक्यकुतुपौ
न सन्देहस्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः ।
पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसङ्गरसिकौ
कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौञ्चदलनौ ।।७३।।

वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः
समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम् ।
कुचाभोगो बिम्बाधररुचिभिरन्तश्शबलितां
प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते ।।७४।।

तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः
पयःपारावारः परिवहति सारस्वतमिव ।
दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्
कवीनां प्रौढानामजनि कमनीयः कवयिता ।।७५।।

हरक्रोधज्वालावलिभिरवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गो मनसिजः ।
समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति ।। ७६।।

यदेतत्कालिन्दी तनुतरतरङ्गाकृति शिवे
कृशे मध्ये किंचिज्जननि तव यद्भाति सुधियाम् ।
विमर्दादन्योन्यं कुचकलशयोरन्तरगतं
तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभिं कुहरिणीम् ।।७७।।

स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलता-
कलावालं कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतभुजः ।
रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते
बिलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते ।।७८।।

निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषो
नमन्मूर्त्तेर्नारीतिलकशनकैस्त्रुट्यत इव ।
चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा
समावस्थास्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये ।।७९।।

कुचौ सद्यस्स्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता ।

तव त्रातुं भङ्गादलमितिवलग्नं तनुभुवा
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव ।।८०।।

गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजात्
नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे ।
अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरयमशेषां वसुमतीं
नितम्बप्राग्भारः स्थगयति लघुत्वं नयति च ।।८१।।

करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदलीकाण्डपटलीं
उभाभ्यामूरुभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवति ।
सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
विधिज्ञे जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमसि ।।८२।।

पराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भौ गिरिसुते
निषङ्गौ जङ्घे ते विषमविशिखो बाढमकृत ।
यदग्रे दृश्यन्ते दशशरफलाः पादयुगली-
नखाग्रच्छद्मानस्सुरमुकुटशाणैकनिशिताः ।।८३।।

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातश्शिरसि दयया धेहि चरणौ ।
ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
ययोर्लाक्षालक्ष्मीररुणहरिचूडामणिरुचिः ।।८४।।

नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयोः
तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते ।
असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते
पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे ।।८५।।

मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ वैलक्ष्यनमितं
ललाटे भर्तारं चरणकमले ताडयति ते ।
चिरादन्तश्शल्यं दहनकृतमुन्मूलितवता
तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलितमीशानरिपुणा ।।८६।।

हिमानीहन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ
निशायां निद्राणं निशि चरमभागे च विशदौ ।
वरं लक्ष्मीपात्रं श्रियमतिसृजन्तौ समयिनां
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम् ।।८७।।

पदं ते कीर्तीनां प्रपदमपदं देवि विपदां
कथं नीतं सद्भिः कठिनकमठीकर्परतुलाम् ।
कथं वा बाहुभ्यामुपयमनकाले पुरभिदा
यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा ।।८८।।

नखैर्नाकस्त्रीणां करकमलसङ्कोचशशिभिः
तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ ।

फलानि स्वस्थेभ्यः किसलयकराग्रेण ददतां
दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिशमह्नाय ददतौ ।।८९।।

ददाने दीनेभ्यः श्रियमनिशमाशानुसदृशीं
अमन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति ।
तवास्मिन्मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे
निमज्जन्मज्जीवः करणचरणष्षट्चरणताम् ।।९०।।

पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनसः
स्खलन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति ।
अतस्तेषां शिक्षां सुभगमणिमञ्जीररणित-
च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते ।।९१।।

गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः
शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः ।
त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारुणतया
शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम् ।।९२।।

अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते
शिरीषाभा चित्ते दृषदुपलशोभा कुचतटे ।
भृशं तन्वी मध्ये पृथुरुरसिजारोहविषये
जगत्रातुं शम्भोर्जयति करुणा काचिदरुणा ।।९३।।

कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं
कलाभिः कर्पूरैर्मरकतकरण्डं निबिडितम् ।
अतस्त्वद्भोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं
विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते ।।९४।।

पुरारातेरन्तः पुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः
सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा ।
तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलां
तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमाद्याभिरमराः ।।९५।।

कलत्रं वैधात्रं कति कति भजन्ते न कवयः
श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः ।
महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे
कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः ।।९६।।

गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदो
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम् ।
तुरीया कापि त्वं दुरधिगमनिस्सीममहिमा
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि ।।९७।।

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं
पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम् ।

प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
कदा धत्ते वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम् ।।९८।।

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा ।
चिरं जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान् ।।९९।।

प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधिः
सुधासूतेश्चन्द्रोपलजललवैरर्घ्यरचना ।
स्वकीयैरम्भोभिः सलिलनिधिसौहित्यकरणं
त्वदीयाभिर्वाग्भिस्तव जननि वाचां स्तुतिरियम् ।।१००।।

समानीतः पद्मां मणिमुकुरतामम्बरमणिः
भयादस्यान्तः तिमितकिरणश्रेणिमसृणः ।
दधाति त्वद्वक्त्रप्रतिफलनमश्रान्तविकचं
निरातङ्कं चन्द्रान्निजहृदयपङ्केरुहमिव ।।१०१।।

समुद्भूतस्थूलस्तनभरमुरश्चारुहसितं
कटाक्षे कन्दर्पाः कतिचन कदम्बद्युति वपुः ।
हरस्य त्वद्भ्रान्तिं मनसि जनयन्ति स्म विमलाः
भवत्या ये भक्ताः परिणतिरमीषामियमुमे ।।१०२।।

निधे नित्यस्मेरे निरवधिगुणे नीतिनिपुणे
निराघाटज्ञाने नियमपरचित्तैकनिलये ।
नियत्या निर्मुक्ते निखिलनिगमान्तस्तुतपदे
निरातङ्के नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम् ।।१०३।।

इति श्रीमदाद्यशङ्कराचार्यविरचिता सौन्दर्यलहरी समाप्ता ।

व्याख्याकार

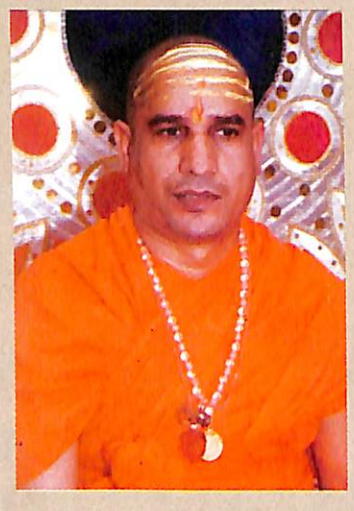

## सदानन्द ब्रह्मचारी

**जन्म** : मध्य प्रदेश के नरसिंह पुर जिले के एक ग्राम बरगी (करकबेल) में भाद्रकृष्ण द्वितीया सं. २०१५ (३१ अगस्त सन् १९५८ ई.)

**माता-पिता** : सौ. मानकुंवर देवी एवं आयुर्वेद रत्न पं. विद्याधर अवस्थी जी।

**पूर्वनाम** : रमेश कुमार अवस्थी

**शिक्षा** : प्राथमिक शिक्षा बरगी तथा नरसिंहपुर में, वही संस्कृत शिक्षा का आरम्भ, ऋषिकुल संस्कृत विद्यालय, झोंतेंश्वर तथा पूज्यपाद शंकराचार्य जी महाराज के सान्निध्य में एवं वाराणसी में संस्कृत विद्या एवं व्याकरण-वेदान्तादि शास्त्रों का अध्ययन

**दीक्षा** : प्रयाग महाकुम्भ (सन् १९७७ ई.) के अवसर पर

**दीक्षागुरु** : अनन्त श्री विभूषित ज्योतिष् एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

**प्रवृत्ति** : वैयक्तिक आध्यात्मिक साधना एवं चिन्तन के अतिरिक्त ज्योतिष्पीठ एवं द्वारका शारदापीठ द्वारा संचालित जनकल्याण की अनेक प्रवृत्तियों में समर्पण भाव से निरन्तर सेवा।

**कृतित्व** : -राजराजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी नित्याराधन स्तोत्राणि।
-जीवन-संदेश
-आद्य शंकराचार्य जीवन परिचय (गुजराती)
-दिव्य द्वारका भव्य शारदापीठ
-सौन्दर्य लहरी।
-मणिदीप सन्देश।
-क्या हिन्दुत्व खतरे में।
-श्री विद्या समाराधना
-भागवत प्रवचन (संकलन)
-गीता प्रवचन (संकलन)
-भज गोविन्दम् (व्याख्या)
-परमार्थ पथ (संकलन)
-मठाम्नाय महानुशासनम् (गुजराती व्याख्या)
-गुरुदीक्षाक्रम
-शंकराचार्य स्तोत्रावलि
-प्रस्थानत्रयी (हिन्दी अनुवाद)
-नवभारती (गुजराती) पत्रिका के स्वत्वाधिकारी
-शारदापीठ विद्या सभा की शोध पत्रिका **शारदापीठ प्रदीप** का प्रकाशन
-शारदापीठ आर्टस् कामर्स एवं एजुकेशन कालेज की वार्षिक पत्रिका **शारदा** का प्रकाशन